UNDERSTANDING MUHAMMAD and MUSLIMS

HINDI

Ali Sina

अंडरस्टैंडिंग मुहम्मद

‘मुहम्मद को समझिए’

अल्लाह के रसूल का मनोवैज्ञानिक जीवन वृत्त

लेखकः

अली सीना

ISBN 13: 9780980994803
ISBN 10: 0980994803

यूएसए में प्रकाशित

अंडरस्टैंडिंग मुहम्मद

प्रथम संस्करण : 2018

Understanding Muhammad
by Ali Seena

मूल्य
1,000.00

निर्भीक और उत्कृष्ट साहसिक रचना!

यह पुस्तक पाठक के गहरे संदेहों, क्षणिक व्यग्रता और मन को झकझोरने वाले प्रश्नों के सरल उत्तर प्रस्तुत करती है। इससे लेखक के मौलिक कार्य की अद्‌भुतछाप भी मानसपटल पर अंकित होती है।'अंडरस्टैंडिंग मुहम्मद' पुस्तक अब तक हाहाकारी और घातक अराजकता का मिश्रण प्रतीत हुए सिद्धांतों की तार्किक विवेचना करती है। इस्लाम के इतिहास में एक के बाद एक विध्वंशक क्षण आते जा रहे हैं। इससे इस्लाम के मध्यकालीन संस्थापक से लेकर आज के उसके अनुयायियों के लिए एक कारणवाचक श्रृंखला तैयार हो रही है। खून जमा देने वाला यह ग्रंथ ऐसी व्यापक, विचारोत्तेजक और रोमांचकारी ऐतिहासिक चित्रमाला है, जो विभिन्न क्षेत्रों जैसे इतिहास, मनोविज्ञान, धर्मशास्त्र, तर्क और भी बहुत कुछ के माध्यम से दोषरहित अंतदृष्टि प्रदान करता है।

सैम वैकनिन

मार्च, 2009

Dr. Sam Vaknin (http://samvak.tripod.com) is the author of Malignant Self Love - Narcissism Revisited and After the Rain - How the West Lost the East. He served as a columnist for Global Politician, Central Europe Review, PopMatters, Bellaonline, and eBookWeb, a United Press International (UPI) Senior Business Correspondent, and the editor of mental health and Central East Europe categories in The Open Directory and Suite101.

अनुक्रमाणिका

धन्यवाद ज्ञापन

मैं उन सभी लोगों का आभारी हूं, जिन्होंने इस पुस्तक को लिखने में मेरी सहायता की। इन्होंने अपनी सकारात्मक आलोचना से पुस्तक को बेहतर बनाने में सहायता की, व्याकरणीय अशुद्धियों की ओर इंगित किया। दुर्भाग्य से मैं ऐसे सभी लोगों का नाम नहीं ले सकता। क्योंकि ऐसा करने से उन गुमनाम लोगों का जीवन संकट में पड़ सकता है और इनके वास्तविक नाम मैं जानता भी नहीं हूं। भले ही ये लोग गुमनाम हैं, पर मैं इन सभी के प्रति सदा ऋणी रहूंगा।

मैं उन साथियों को भी धन्यवाद कहना चाहूंगा, जिन्होंने faithfreedom.org के संचालन में इस फोरम के साइट एडमिनिस्ट्रेटर, संपादक और एडमिनिस्ट्रेटर के रूप में स्वेच्छा से आगे आकर अपना कीमती वक्त दिया। इससे मुझे यह पुस्तक लिखने के लिए पूरा वक्त मिला।

इस्लामी आतंकवाद के खिलाफ जंग ऐसे नायकों द्वारा लड़ी जा रहा है, जिनकी कभी चर्चा नहीं होती। ये लोग दुनिया को इस्लाम के खतरे से आगाह करने के लिए अपनी प्रतिभा और वक्त दे रहे हैं। ये बदले में कुछ नहीं मांगते और गुमनाम बने रहते हैं।

अली सीना,
अप्रैल, 2008

संक्षिप्त परिचय

दुनियाभर में सितम्बर, 2001 के बाद 13000 से अधिक आतंकवादी हमले हो चुके हैं। इन हमलों में हजारों निर्दोष नागरिक लहूलुहान हो गए और न जाने कितनों की जान चली गई। कत्लेआम करने वाले कोई दैत्य नहीं थे, बल्कि मुसलमान थे। वो मुसलमान जो अपने धर्म के पक्के थे और ईमान का पालन करने के लिए सामूहिक नरसंहार जैसी वारदातों को अंजाम दे रहे थे। इन पक्के मुसलमानों की तरह सोचने वाले दुनिया में अभी भी लाखों हैं और वे भी मजहब के नाम पर ऐसा ही नरसंहार करने के लिए तैयार हैं।

अगर आप सोचते हैं कि मुस्लिम आतंकवाद कोई नई समस्या है तो फिर से विचार कीजिए। इस्लाम अपनी सफलता आतंकवाद के हथियार से ही नापता है। मदीना में पैर रखने के दिन से ही मुहम्मद ने आतंक का अभियान शुरू कर दिया था। तब से आज तक उसके अनुयायी इसी अभियान को आगे बढ़ा रहे हैं।

मुसलमान असहिष्णु, श्रेष्ठतावादी, स्वेच्छाचारी, अराजक और हिंसक होते हैं। वे उद्दंड होते हैं और यदि कोई **उनकी बात को काटे या उनको प्रमुखता व सम्मान देकर व्यवहार न करे, तो फट पड़ते हैं। जबकि वे खुद दूसरों को अपशब्द कहते रहते हैं और दूसरे धर्मावलंबियों, सम्प्रदायों या पंथों के लोगों के अधिकारों का हनन करते हैं।**

मुसलमानों को समझने के लिए उनके रसूल यानी पैगम्बर मुहम्मद को समझना पड़ेगा। मुसलमान मुहम्मद की इबादत करते हैं और उसका अनुकरण करते हैं। इस्लाम दरअस्ल मुहम्मदवाद है। मुहम्मद को समझकर ही इस्लाम की पर्तों को जाना जा सकता है।

यह पुस्तक अंडरस्टैंडिंग ऑफ मुहम्मद मनोविज्ञान की दृष्टि से अल्लाह के रसूल का जीवनवृत्त है। इसमें मुहम्मद नामक व्यक्ति के रहस्यों को उजागर किया गया है। इतिहासकार बताते हैं कि मुहम्मद खोह में चला जाता था और घंटों, हफ्तों अपने विचारों में खोया रहता था। वह घंटियों की आवाज सुनता था और भूत-प्रेत के सपने देखता था। उसकी बीबी खदीजा ने जब तक उसे यह यकीन नहीं दिलाया था कि वह पैगम्बर हो गया है, वह सोचता था कि उसके ऊपर शैतान का साया आ गया है। अपनी इस हैसियत का अंदाजा होते ही उसके रंगढंग बदल गए। **जिन्होंने उसे अस्वीकार किया, वह उनके प्रति असहिष्णु हो गया। जिन्होंने उसकी आलोचना की, उनकी हत्या कर दी। वह हमले, लूटपाट और पूरी की पूरी आबादी का नरसंहार करने लगा। मुहम्मद ने हजारों लोगों को दास बनाया, अपने आदमियों को बंदी औरतों का बलात्कार करने की अनुमति दी और ये सब बिना किसी हिचक और अधिकार के साथ किया।**

मुहम्मद उन लोगों के प्रति बड़ा उदार था जो उसकी तारीफ करते थे, लेकिन वह असहमति जताने वालों के प्रति प्रतिशोध की भावना से ग्रस्त हो जाता था। वह खुद को प्राणियों में सर्वश्रेष्ठ और ब्रह्मांड के अस्तित्व का कारण मानता था। मुहम्मद कोई साधारण इंसान नहीं था। वह एक नार्सिसिस्ट (आत्ममुग्ध, आत्मप्रवंचित इंसान) था।

इस पुस्तक में हम किस्सों से अलग तथ्यों पर बात करेंगे। इसमें मुहम्मद की सच्चाई से तथ्यपरक ढंग से पर्दा उठाया गया है। इस पुस्तक में 'क्या' के बजाय 'क्यों' पर जोर दिया गया है। इसमें उस व्यक्ति के रहस्यों से पर्दा उठाने की कोशिश की गई है जो इतिहास के सर्वाधिक रहस्यमयी और प्रभावशाली व्यक्तियों में एक था।

मुहम्मद अपने खुद के बनाए मकसद पर ही भरोसा करता था। वह अपने विभ्रम को इस कदर वास्तविकता मानता था कि वह प्रत्येक व्यक्ति से उस पर भरोसा करने की अपेक्षा करता था। मुहम्मद ने अपने अल्लाह से क्रोध में कहलवाया, 'तो क्या! वह (रसूल) जो कुछ देखता है, उस पर तुम लोग उससे (मुहम्मद) विवाद करोगे?' यह मनोविकृति विज्ञान है। **क्यों किसी को उस पर भरोसा करना चाहिए, जो मुहम्मद ने देखा? क्या यह जिम्मेदारी मुहम्मद पर नहीं थी कि उसने जो देखा, उसकी सच्चाई साबित करता?** केवल एक नार्सिसिस्ट (आत्ममुग्ध) व्यक्ति ही यह अपेक्षा कर सकता है कि दूसरे लोग उसके दावों पर बिना सबूत मांगे भरोसा करें।

मुहम्मद अनाथ था और उसका बचपन कठिन था। बहुत छोटी अवस्था में ही उसकी मां ने उसका तिरस्कार कर दिया था और एक खानाबदोश जोड़े के पास उसे छोड़कर चली गई थी। फिर उसे उसके दादा और चाचा की देखभाल में रखा गया। दादा और चाचा ने उस पर दया दिखाते हुए आवश्यकता से अधिक लाड़-प्यार दिया और उसका जीवन बर्बाद कर दिया। जब उसे वात्सल्य-प्रेम की आवश्यकता थी तो उसे प्यार नहीं मिला। जब उसे मर्यादा सीखनी थी, तो उसे अनुशासन का पाठ नहीं पढ़ाया गया। इससे उसमें 'नार्सिस्टिक पर्सनैलिटी डिस्ऑर्डर' पनप गया और इस मनोविकृति की वजह से वह आत्महीन और अहंकारोन्मादी हो गया। वह असीमित ताकत हासिल करने की कल्पना करने लगा और सराहना व प्रशंसा की अपेक्षा करने लगा। उसने धारणा बना ली कि वह विशिष्ट है और अपेक्षा करने लगा कि दूसरे भी उस पर भरोसा करें, उसके विचारों और योजनाओं पर साथ चलें। वह स्वयं दूसरों से लाभ लेता था, उनसे द्वेष भी रखता था, फिर भी उसे लगता था कि दूसरे लोग उससे जलते हैं। **जब कोई उसे अस्वीकार कर देता था तो वह बहुत आहत होता था। वह साथ छोड़ने वालों की हत्या तक करा देता था। वह झूठ बोलता था, धोखा देता था और ऐसा करना न्यायोचित और अपना अधिकार मानता था। ये सब नार्सिस्टिक पर्सनैलिटी डिस्ऑर्डर के लक्षण हैं।**

एक और मानसिक बीमारी 'टैम्पोरल लोब इपीलैप्सी' से ग्रस्त होने के कारण इस्लाम के रसूल (पैगम्बर) को मतिभ्रम कुछ अधिक था, जिसे वह रहस्यवादी और ईश्वरीय प्रेरणा के रूप में पेश करता था। जब वह यह दावा करता था कि उसने दैवीय आवाजें सुनी हैं, देवदूतों या रूहानी ताकतों को देखा है तो वह झूठ नहीं बोल रहा होता था, अस्ल में वह कल्पना और वास्तविकता में भेद कर पाने में समर्थ नहीं था। मुहम्मद 'ऑब्सेस्सिव पर्सनैलिटी डिस्ऑर्डर' से भी पीड़ित था, जिसके चलते वो संख्याओं, रस्मो-रिवाज और कठोर नियमों में अटक जाता था। यह बताता है कि मुहम्मद इतना कठोर-हृदयहीन जीवन क्यों जी रहा था और क्यों उसका मजहब इतने सारे बेतुके नियम-कायदों से भरा पड़ा है। बाद के वर्षों में मुहम्मद अतिकायता या असंतुलित काया की बीमारी की चपेट में आ गया। यह बीमारी मनुष्य के शरीर की वृद्धि के हार्मोन के आवश्यकता से अधिक बनने से होती है। ऐसे मनुष्यों की हड्डियां बड़ी हो जाती हैं, हाथ-पैर काफी रूखे और मांसल हो जाते हैं। होंठ, नाक और जीभ असामान्य रूप से बढ़कर लटक जाते हैं, जिससे मनुष्य कुरूप दिखने लगता है। यह बीमारी सामान्यत: 40 साल की अवस्था के बाद होती है। इससे पीड़ित मनुष्य की मौत 60 वर्ष की अवस्था आते-आते हो जाती है। यह बीमारी एक ओर इरेक्टाइल डिस्फंक्शन (लिंग शिथिलता) से नपुंसकता पैदा कर देती है तो दूसरी ओर टैम्पोरल लोब हाइपर एक्टिविज्म कामलिप्सा भी बढ़ा देती है।

यह उम्र के आखिरी पड़ाव में मुहम्मद की यौनिक सनक के मूल कारण को बताता है और यह भी कि बाद के जीवन में मुहम्मद के भीतर काम की अतृप्त भूख इतनी अधिक क्यों बढ़ गई थी। **वह एक ही रात में अपनी नौ**

बीबियों के पास जाता था और उन्हें छूता और सहलाता था, लेकिन संतुष्ट नहीं हो पाता था। उसकी नपुंसकता असुरक्षा, मानसिक उन्माद (संभ्रांति) व अपनी युवा बीबियों के प्रति घोर ईर्ष्या का कारण बनी। कहीं उसकी बीबियों पर किसी की नजर न पड़ जाए, इसलिए उसने अपनी बीबियों व औरतों को पूरी तरह पर्दे में रहने का हुक्म दिया। आज की दुनिया में करोड़ों महिलाएं बुर्के में रहती हैं, और सिर्फ इसलिए कि मुहम्मद नपुंसक था। मुहम्मद की बीमारियां इस्लाम के तमाम रहस्यों की पर्तें उघाड़ती हैं।

इन सारी बीमारियों के मेल और असामान्य मुखाकृति ने मुहम्मद को एक ऐसी परिघटना बना दिया, जो उसे साधारण मनुष्यों से अलग करती है। उसके जाहिल अनुयायी मुहम्मद के विचित्र व्यवहार की व्याख्या उसके पैगम्बर होने के संकेत के रूप में करते हैं। अन्य सम्प्रदायों के अनुयायियों की तरह ये भी मुहम्मद के मकसद को आगे बढ़ाने के लिए समर्पित भाव से तत्पर रहते हैं। मौत का सामान बनकर और दूसरों का गला काटकर इन लोगों ने इस्लाम को दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा धर्म बना दिया। अब यही इस्लाम विश्व शांति और मानव सभ्यता के लिए सबसे बड़ा खतरा बन चुका है।

मुहम्मद को जानना जरूरी क्यों है? क्योंकि करोड़ों लोग उसकी तरह बनने की कोशिश कर रहे हैं, जैसा उसने किया, वैसा ही करने की कोशिश कर रहे हैं। परिणाम यह हो रहा है कि एक व्यक्ति का पागलपन उसके करोड़ों अनुयायियों का जुनून बन गया है। मुहम्मद को समझकर ही हम आर-पार देख सकेंगे और भविष्य को लेकर इन अप्रत्याशित लोगों के बारे में अनुमान लगा सकेंगे। हम खतरनाक दौर में जी रहे हैं। **मानवता का पाँचवां भाग एक पागल को पूज रहा है, आत्मघाती बम हमलों की वाहवाही कर रहा है और सोच रहा है कि हत्या और शहादत सर्वाधिक पुण्य का काम है। दुनिया एक खतरनाक जगह हो गई है।** जब इन लोगों के पास आणविक हथियार होंगे तो धरती राख का ढेर बन जाएगी। इस्लाम कोई धर्म नहीं, बल्कि एक सम्प्रदाय है। अब हमें जाग जाना चाहिए और मान लेना चाहिए कि यह सम्प्रदाय मानव जाति के लिए खतरा है और मुस्लिमों के साथ सभ्य समाज का सहअस्तित्व असंभव है। जब तक मुसलमान मुहम्मद में विश्वास करेंगे, वो दूसरों और अपने खुद के लिए भी खतरा बने रहेंगे।

मुसलमानों को या तो इस्लाम छोड़ देना चाहिए और घृणा की संस्कृति त्याग कर मानव जाति के साथ सभ्य साथी की तरह रहना शुरू कर देना चाहिए या फिर गैर-मुस्लिमों को इन लोगों से खुद को अलग कर इस्लाम पर प्रतिबंध लगा देना चाहिए, अपने देश में मुसलमानों का प्रवेश रोक देना चाहिए और उन्हें उनके देश वापस भेज देना चाहिए जो देश के लोकतंत्र के खिलाफ साजिश रचते हैं और दूसरों के साथ समरस होने से इंकार करते हैं।

इस्लाम लोकतंत्र का विरोधी है। मुसलमान ऐसी लड़ाका जाति है, जो लोकतंत्र का प्रयोग लोकतंत्र को ही समाप्त करने और खुद को विश्वव्यापी तानाशाही के रूप में स्थापित करने के लिए करती है। बर्बरता और सभ्यता के बीच संघर्ष एवं विश्व आपदा को रोकने के लिए इस्लाम की भ्रांतियों को उजागर किया जाना और इसे बेनकाब किया जाना एकमात्र उपाय है। मानवता के शांतिपूर्ण जीवन के लिए आवश्यक है कि मुसलमानों से इस्लाम नामक गंदगी को दूर किया जाए।

मुसलमानों और गैर-मुसलमानों दोनों के लिए मुहम्मद के चरित्र को समझना जरूरी है। यह पुस्तक इस काम को आसान बनाती है।

प्रस्तावना

- इब्ने-वर्राक

डॉ. अली सीना ईरान में पैदा हुए और उनके कुछ रिश्तेदारों का संबंध ईरान में इस्लामी विप्लव के जनक अयातुल्ला खोमैनी के परिवार से था। अधिकांश शिक्षित ईरानियों की तरह वह भी मानते थे कि इस्लाम मानवतावादी मजहब है, जो मानव अधिकारों का सम्मान करता है। लेकिन डॉ. सीना का स्वभाव बचपन से ही अन्वेष्णात्मक, जिज्ञासु, तर्क करने वाला, निडर होकर प्रश्न पूछने वाला और तथ्यों को भेदभावरहित होकर देखने वाला रहा है। धीरे-धीरे जब उन्होंने सच्चा इस्लाम जाना तो वे नैतिक और बौद्धिक रूप से हिल गए। सितम्बर, 2011 से बहुत पहले ही उन्हें यह अहसास हो गया था कि जब तक इस धर्म विशेष में पैदा हुआ व्यक्ति अपने धर्म की खामियों और रहस्यों से पर्दा उठाने की कोशिश नहीं करेगा, दुनिया को उस धर्म के ठेकेदारों द्वारा गढ़ी कहानियों पर ही भरोसा करना पड़ेगा। यह न केवल पाश्चात्य जगत के लिए, बल्कि पूरी सभ्यता के लिए विनाशकारी स्थिति पैदा कर देगा।

जिस क्षण डॉ. सीना को अपने धर्म की अमानवीय प्रकृति का पता चला, उसी समय उन्होंने अपना जीवन अपनी व्यापक चर्चित वेबसाइट 'फेथ फ्रीडम इंटनरेशनल' पर इस्लाम के अवांछनीय पक्षों के पर्दाफाश, चर्चा और आलोचना के लिए समर्पित कर दिया।

विश्व डॉ. सीना जैसे मुर्तदों (इस्लाम छोड़ने वाले साहसी व्यक्तियों) के कार्यों से उसी तरह फायदा ले सकता है, जैसा कि उसने वामपंथ के खिलाफ पूर्व वामपंथियों से लिया था।

जैसा कि मैंने 'लीविंग इस्लाम'[1] में लिखा था कि इस्लाम और वामपंथ में तमाम समानताएं देखी जा सकती हैं। जैसा कि मैक्सिम रोडिंसन और बरट्रैंड रसेल[2] ने 1930 के वामपंथ और 21वीं सदी के 1990 के इस्लामवादियों की मानसिकता का उल्लेख किया है। रसेल ने कहा था, 'धर्मों में बोलशेविज्म अर्थात वामपंथ को मुहम्मदवाद के साथ गिना जाना चाहिए, न कि ईसाई धर्म या बौद्ध धर्म के साथ।' ईसाइयत और बौद्ध प्राथमिक तौर पर व्यक्तिगत धर्म हैं, जो रहस्यमयी सिद्धांतों और चिंतन-मनन पर आधारित हैं। मुहम्मदवाद और बोलशेविकवाद (वामपंथ) समूहवादी, अध्यात्म से दूर और पूरी दुनिया में साम्राज्य स्थापित करने की मंशा रखने वाले हैं।''[3] इसलिए पश्चिमी जगत में मुहम्मदवाद और 1930 के वामपंथ के बीच समानताओं को जानने में रुचि बढ़ी।

कोस्लर ने कहा था, 'तुम चाहे हमारे खुलासे से नफरत करो और अपना पूर्व सहयोगी मानकर हम पर लानत भेजो, पर सच यही है कि हम पूर्व-वामपंथी ही ऐसे हैं जो तुम्हारी सारी अच्छी-बुरी हकीकत को जानते हैं।'[4] जैसा कि क्रॉसमैन अपने परिचय में लिखते हैं, 'सिलोन (एक पूर्व वामपंथी) ने मजाक में टॉगलियत्ती (Togliatti) से कहा कि अंतिम युद्ध वामपंथियों और पूर्ववामपंथियों के बीच लड़ा जाएगा। लेकिन जब तक कोई वामपंथ को एक दर्शन मानकर और वामपंथियों को राजनैतिक प्रतिद्वंद्वी मानकर इनसे दो-दो हाथ नहीं करेगा, तब तक वह पश्चिमी लोकतंत्र

के मूल्य को सही तरीके से नहीं समझ पाएगा। शैतान स्वर्ग में रहता था, पर जिसने उसको नहीं देखा था, वह सामने आने पर देवदूत को नहीं पहचान पाएगा, क्योंकि उसे शैतान और देवदूत में फर्क ही नहीं पता।'[5]

वामपंथ पराजित हो चुका है, कम से कम आज तो वामपंथ पराजित अवस्था में ही है, लेकिन इस्लामवाद नहीं। अंतिम युद्ध संभवतः पश्चिमी लोकतंत्र और इस्लाम के बीच ही होगा। और इस युद्ध में पश्चिमी लोकतंत्र की तरफ से कोस्लर की आवाज बुलंद करने के लिए ये पूर्व मुस्लिम होंगे, जो इस्लाम की गंदी हकीकत बखूबी जानते हैं। तब हम इन पूर्व मुस्लिमों द्वारा सच के पक्ष में उठाए जा रहे सवालों को सुनेंगे।

स्वतंत्र पश्चिमी दुनिया में रहने वाले हम जैसे लोग अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, वैज्ञानिक सोच रखते हैं और हमें इस्लाम पर तार्किक दृष्टि और कुरान की आलोचना को प्रोत्साहित करना चाहिए। कुरान की तार्किक आलोचना ही अपने पवित्र धर्मग्रंथ को अधिक तार्किक और वस्तुनिष्ठ तरीके से देखने तथा कुरआन की असहिष्णु आयतों के जरिए धर्मांध बन रहे युवाओं को रोकने में मुसलमानों की मदद कर सकती है।

मुसलमान युवाओं को इस्लाम की सच्चाई बताना पश्चिम में रह रहे प्रत्येक व्यक्ति का नागरिक कर्तव्य है। इस्लाम को जानने के लिए मेगास्टोर में उपलब्ध किताबें पढ़ेंगे तो इस्लाम का अस्ली चेहरा नहीं देख पाएंगे, क्योंकि इन किताबों में इस्लाम का बचाव करते हुए इसकी झूठी तस्वीर पेश की गई है। इसके लिए हमें डॉ. सीना की वेबसाइट को खंगालना होगा, जहां डॉ. सीना और उनकी विद्वान लेखकों की टीम ने इस्लाम पर बारीक अध्ययन करने के बाद प्रमाणिक दस्तावेजों और लाजवाब तर्कों के साथ इस्लाम को नंगा किया है। तब जाकर हम इस्लाम की हकीकत को ठीक से जान पाएंगे। अब मैं यकीनन उन सभी लोगों से अली सीना की इस पुस्तक को ध्यान से पढ़ने का आह्वान करूंगा, जिनकी बुद्धि षडयंत्रकारी नारे '*इस्लाम शांति का धर्म है*' को सुन-सुनकर कुंद व संभ्रमित नहीं हुई है। डॉ. सीना जैसे स्वतंत्र विचारकों के साहसिक प्रयासों की बदौलत अब आपके सपनों और आपके अपनों को नष्ट करने की ओर तेजी से बढ़ रहे मजहब की हकीकत नहीं मालूम होने का बहाना नहीं चलेगा।

*इब्ने-वर्राक़ **'लीविंग इस्लाम, व्हाट द कुरान रियली सेज, द क्वेस्ट फॉर द हिस्टारिकल मुहम्मद, द ओरिजिन आफ कुरान एंड व्हाई आइ एम नॉट ए मुस्लिम'** नामक पुस्तकों के लेखक हैं। इस पुस्तक ने बहुत से मुसलमान युवाओं को जागने और अपने मजहब पर तार्किक सवाल उठाने की प्रेरणा दी है।*

---

1 Ibn Warraq. Leaving Islam. Apostates Speak Out. Amherst: Prometheus Books. p.136

2 Maxime Rodinson: Islam et communisme, une ressemblance frappante, in Le Figaro [Paris, daily newspaper], 28 Sep. 2001

3 B.Russell, Theory and Practice of Bolshevism, London, 1921 pp .5, 29, 114

4 A.Koestler, et al, The God That Failed, Hamish Hamilton, London, 1950, p.7

5 Ibid. p16

लेखक के बारे में

बचपन से ही मुझे अन्याय से घृणा थी। क्रूरता भरे किस्से और दृश्य मेरी आत्मा को झंकझोरते थे। अधिकांश लोग अन्याय के शिकार होते हैं। इनमें से कुछ विद्रोही बनकर हिंसा के खिलाफ और अधिक हिंसा का सहारा लेने लगते हैं। इस तरह ये लोग आग में घी डालकर दुनिया में और समस्याएं खड़ी करते हैं। मैं शांति का साधक बनने के लिए प्रार्थना करता था।

शुरू में मुझे लगता था कि बुराई लालच से पैदा होती है। जब मैंने कुरान पढ़ा, तो पता चला कि यह पुस्तक भी बुरी आस्थाओं से उपजी है। बुरे सिद्धांतों के प्रभाव में अच्छे लोग भी बुरे काम प्रसन्नता से और अपनी इच्छा से करने लगते हैं। **इस्लाम एक बुरी आस्था है। इस बुराई का स्रोत इस्लाम के 'पवित्र' ग्रंथों के अशुद्ध अर्थों में नहीं, बल्कि इसके शुद्ध अर्थ और इस पर अमल करने में है। मुसलमान जितना अधिक अपने पैगम्बर का अनुकरण करता है और इस्लाम को मानता है, उतना ही वह बुराई की ओर बढ़ता है। जब मुझे यह हकीकत और वह भी इस्लाम के अपने स्रोतों से पता चली, तो मुझे लगा कि इस्लाम के खिलाफ खड़े होकर धरती पर हिंसा व नफरत के सबसे इस बड़े स्रोत को नष्ट करने के लिए आगे बढ़ने की अब मेरी बारी है, ताकि अपनी प्रार्थना पूरी कर सकूं और शांति का वास्तविक साधक बन सकूं।**

पर कैसे ? कैसे कोई एक ऐसे ताकतवर धर्म का विरोध कर पाएगा, जिसके अनुयायियों की संख्या करोड़ों में है ?

धरातल पर यह कार्य असंभव भले न प्रतीत होता हो, पर भयभीत करने वाला तो है, हालांकि वास्तव में यह कार्य आसान है। इसके लिए बस एक ही काम तो करना था, वह यह कि लोगों को सच बताना...। मुझे बस कुरान और इस्लाम के अन्य पवित्र ग्रंथों से तथ्य निकालकर इस मजहब के घिनौने चेहरे को बेनकाब कर देना था।

जैसे दीपक जला देने से अंधकार खत्म हो जाता है, वैसे आप सच से ही झूठ को नष्ट कर करते हैं। यह कोई भी कर सकता है। एक यहूदी बढ़ई ने कभी कहा था, 'सत्य हमें स्वतंत्र करेगा। मैं उसी सत्य के साथ हूं।'

सत्य को कैसे ढूंढें ? अल्बर्ट आइंस्टीन ने लिखा है, 'जब कोई स्वयं को सत्य व ज्ञान के न्यायाधीश के रूप में स्थापित करने का प्रयास करता है तो परमपिता की हँसी में उसके इस अहंकार की नाव खंड-खंड हो जाती है।' सत्य खोजा नहीं जा सकता है। बस झूठ को बेनकाब कर दीजिए, सत्य दिखने लगेगा और मानव के वश में यही है। मैंने अपना जीवन इस्लाम के झूठ से पर्दा उठाने के लिए समर्पित कर दिया। यही सत्य करोड़ों मुसलमानों को जिहालत, हिंसा, उन्माद, नफरत और मतिभ्रम से उबारेगा। सत्य राजनैतिक नहीं हो सकता, इसलिए अक्सर सत्य को नकारा जाता है। सच झंकझोर देता है और लोगों में बेचैनी पैदा कर देता है लेकिन यदि झूठ को चुनौती नहीं दी गई तो इससे जो समस्या पैदा होगी, उसकी तुलना में यह परेशानी कुछ भी नहीं है। सच हमारी भावनाओं को आहत करता है, लेकिन झूठ हमें मार डालता है। मुझे लगता है कि 'आहत' भावनाओं के साथ जीना मरने से बेहतर है।

परिचय

अमरीका में 9/11 के हमले के बाद एक दुखी महिला ने मुझे बताया कि उसके 23 साल के बेटे ने उस समय जब वह 14 साल का था, इस्लाम कबूल कर लिया। अब उसने एक मुसलमान औरत से शादी कर ली है। उसके इमाम (इस्लामी पुरोहित) ने शादी तय कराई थी। शादी से पहले उसने उस लड़की को देखा तक नहीं था। अब उन दोनों के एक बच्चा है। दोनों बच्चे के साथ अफगानिस्तान जाकर तालिबान के साथ युद्ध में शामिल होकर अमरीकी सैनिकों को मारना चाहते हैं और शहीद होना चाहते हैं। उस महिला ने बताया कि कुछ साल पहले उसके बेटे ने कहा था कि एक बार अमरीका इस्लाम के कब्जे में आ जाए, फिर इस्लाम को न मानने वालों का सिर कलम करने का आदेश आएगा और तब वह अपनी मां का सिर धड़ से अलग करने में भी नहीं हिचकेगा।

25 वर्षीय समैरा नजीर पाकिस्तानी मूल की होनहार और पढ़ी-लिखी ब्रिटिश नागरिक थी। उसके 30 साल के भाई और 17 साल के चचेरे भाई ने मिलकर घर में ही चाकुओं से उसका गला रेत डाला। बेचारी समैरा का कसूर बस यह था कि वह अफगानी मूल के एक लड़के से प्यार कर बैठी थी। समैरा के घरवालों को लगता था कि जिस लड़के से वह प्यार करती है, वह नीची जाति का था। समैरा के घर वालों को लगा कि इससे उनके परिवार की इज्जत चली गई। समैरा के घरवालों ने पाकिस्तान में उसके लिए लड़के देखे थे, लेकिन उसने इन रिश्तों को स्वीकार करने से इंकार कर दिया था। अप्रैल, 2005 में परिवार वालों ने उसे एक पारिवारिक कार्यक्रम के बहाने से पाकिस्तान बुलाया। जैसे ही वह पहुंची, घात लगाकर बैठे उसके परिवार के ही लोगों ने उसे मार डाला। इस दर्दनाक घटना के चश्मदीद एक पड़ोसी के मुताबिक समैरा को आशंका हो गई थी कि वे लोग उसे मार डालेंगे। वह बचकर भागने की कोशिश करने लगी कि उसके बाप ने उसके बालों को पकड़ा और घसीटते हुए घर के अंदर ले गया और दरवाजा बंद कर बाहर से सांकल चढ़ा दी। समैरा चीखती रही, चिल्लाती रही, मगर उसकी किसी ने न सुनी। समैरा चीख रही थी, 'तुम मेरी मां नहीं हो, अब मेरा तुमसे कोई नाता नहीं है।' इससे पता चलता है कि समैरा की मां भी हत्या की साजिश में शामिल थी। समैरा के दो और चार साल के दो भतीजों को हत्या की पूरी वारदात को दिखाया जा रहा था। समैरा की चीखें सुनकर ये बच्चे सहम गए थे और जोर-जोर से रो रहे थे। पड़ोसियों को इन बच्चों की चीख सुनाई पड़ रही थी। इन बच्चों के पैरों पर पड़े खून के छींटे बयान कर रहे थे कि जब समैरा का गला रेता जा रहा होगा तो वे उससे बमुश्किल एक मीटर की दूरी पर रहे होंगे। यह परिवार बेहद शिक्षित और समृद्ध था।

सऊदी अरबपति का बेटा मुहम्मद अली अल-आयद (23) अमरीका में रहता था। 2003 में अगस्त के महीने में उसने मोरक्को मूल के पुराने यहूदी दोस्त सैलॉक को शाम को बुलाया और एक छोटी सी पार्टी के लिए कहा। दोनों एक बार में गए और फिर आधी रात के करीब अल-आयद के फ्लैट पर गए। फ्लैट के भीतर अल-आयद ने चाकू से अपने दोस्त सैलॉक पर हमला किया और उसका सिर धड़ से लगभग अलग कर दिया। अल-आयद के साथ फ्लैट में एक और दोस्त रहता था। इस रूम मेट ने पुलिस को बताया कि जब अल-आयद ने सैलॉक की हत्या की तो उससे पहले दोनों में कोई बहस नहीं हुई थी। अल-आयद के वकील ने कहा कि इस सनसनीखेज हत्या का कारण मजहबी मतभेद था।

ईरान का 25 वर्षीय मोहम्मद ताहेरी-अजहर नॉर्थ कैरोलिना विश्वविद्यालय से स्नातक था। मार्च, 2006 में एक दिन उसने एक एसयूवी किराए पर ली और विश्वविद्यालय परिसर में आराम से दाखिल हुआ। फिर अचानक उसने गति बढ़ा दी और उस ओर स्टीयरिंग मोड़ दी जिधर विद्यार्थियों की अधिक भीड़ थी। इसका इरादा अधिकाधिक विद्यार्थियों को कुचलकर मारने का था। इसने 9 विद्यार्थियों को मार दिया और 6 विद्यार्थियों को गंभीर रूप से घायल कर दिया।

पाकिस्तान के कराची में रहने वाले हिंदू दंपत्ति सनाओ मेघवार और उनकी पत्नी का जख्म अब भी रिसता है। नवंबर, 2005 की एक शाम मेघवार घर आए तो उनकी पत्नी घबराई हुई थीं। उन्होंने बताया कि उनकी तीनों बेटियां लापता हैं। दो दिन तक यह दंपत्ति अपनी बेटियों को ढूंढता रहा। फिर पता चला कि उनका अपहरण कर लिया गया है और जबरन इस्लाम कबूल करा दिया गया है। पुलिस ने इस मामले में तीन मुसलमान युवकों को गिरफ्तार किया, हालांकि अदालत ने इन तीनों को नाबालिग होने के आधार पर जमानत दे दी। तीनों लड़कियां आज तक नहीं मिली हैं।

कराची में ही रहने वाले एक हिंदू लालजी कहते हैं, 'हिंदू लड़कियों का अपहरण हो जाना यहां आम बात है। फिर इन लड़कियों से स्टाम्प पेपर पर जबरन दस्तखत करा लिया जाता है, जिसमें लिखा होता है कि वे मुसलमान बन गई हैं।' लालजी का कहना था, 'यहां हिंदू इतना डर कर जी रहे हैं कि अपने ऊपर हो रहे अत्याचारों के खिलाफ रोष तक जाहिर करने की हिम्मत नहीं कर पा रहे हैं। उन्हें डर है कि इससे उन पर अत्याचार बढ़ जाएगा।'

पाकिस्तान में अधिकांश हिंदू लड़कियां इसी तरह बदकिस्मत हैं। उनका अपहरण होता है, बलात् धर्मांतरण होता है और मुसलमान से उनकी जबरन शादी कराई जाती है। इन बेगुनाह लड़कियों को अपने परिवार वालों से मिलना तो दूर बात तक करने का हक नहीं होता है।' एक मुसलमान अपहर्ता की तरफ से अदालत में जिरह करते हुए एक मौलवी का कहना था, 'मुस्लिम लड़की को किसी काफिर के साथ रहने या संबंध रखने का हक कैसे दिया जा सकता है?'

पाकिस्तान में हालत यह है कि जब किसी हिंदू लड़की को जबरन मुसलमान बनाया जाता है तो सैकड़ों की तादाद में मुसलमान सड़कों पर धार्मिक नारे लगाते हुए जुलूस निकालते हैं। इन हिंदू लड़कियों के माता-पिता का चीत्कार और उनका दर्द पाकिस्तान के शासकों और प्रशासनिक अमले को सुनाई नहीं देता है। या यूं कहें कि वे हिंदुओं के चीत्कार को जानबूझकर अनसुना कर देता है।

इन हिंदू लड़कियों को यह धमकी भी दी जाती है कि अब वे मुसलमान हैं और इस्लाम छोड़ने का खयाल भी न करें, वर्ना उन्हें धर्मद्रोही मानकर शरिया कानून के तहत ऐसी सजा दी जाएगी कि रूह कांप जाएगी। माता-पिता और भाई-बहनों की शक्ल न देख पाने की पीड़ा से जूझ रही इन बदकिस्मत लड़कियों की आंखों से लगातार बहने वाले आंसुओं पर हमदर्दी दिखाने को कौन कहे, इनके अपराधियों की ओर से पैरवी करने वाले इन हिंदू लड़कियों पर थोपी गई बंदिशों और पाबंदियों को ही जायज ठहराते हैं। अक्सर वकील ऐसी लड़कियों या उनके परिजनों की ओर से मुकदमा तक लड़ने को तैयार नहीं होते हैं, क्योंकि उन्हें डर होता है कि चरमपंथियों के गुस्से का शिकार होना पड़ेगा।

अक्टूबर 2005 की बात है। इंडोनेशिया के पोसो शहर में तीन लड़कियां बेफिक्र, अपनी मस्ती में कोकोआ प्लांटेशन के निकट टहल रही थीं। ये तीनों स्थानीय मिशनरी स्कूल की छात्राएं थीं। अचानक मुसलमानों के एक समूह ने धावा बोला और तीनों का सिर धड़ से अलग कर दिया। पुलिस का कहना था कि दो लड़कियों का सिर शरीर से दूर पड़ा मिला, जबकि एक लड़की का सिर स्थानीय चर्च के सामने पड़ा मिला। यह वारदात मुस्लिम

आतंकवादी संगठनों द्वारा अंजाम दी गई थी, जिन्होंने यहां के सुलावेसी प्रांत में यह सोचकर हमला किया था कि यह घटना इंडोनेशिया में इस्लामिक स्टेट की बुनियाद तैयार करेगी। 2001 और 2002 में मुसलमानों ने इस प्रांत के ईसाइयों पर भयानक हमले किए। पूरे इंडोनेशिया से मुस्लिम आतंकवादियों ने इस प्रांत पर हमला बोला था और इसमें 1000 से अधिक ईसाइयों को जान गंवानी पड़ी।

38 साल की बेल्जियन महिला मारियल डेगेक बचपन में सामान्य लड़कियों की तरह हँसती थी, खिलखिलाती थी और बिंदास जिंदगी जीती थी। किशोरावस्था में आते-आते एक ऐसी घटना हुई, जिससे वह बर्बादी की राह पर शैतानी भूमिका निभाने लगी। एक मुसलमान युवक से उसकी आंखें चार हो गईं, और एक दिन वह जिंदादिल मारियल डेगेक इस्लाम कबूल करके कट्टरता की आग में जलने लगी। वह अपने शौहर के साथ सीरिया के रास्ते ईराक गई और वहां 9 नवंबर, 2005 को पुलिस गश्ती दल को निशाना बनाते हुए खुद को बम से उड़ा लिया। मारियल के इस आत्मघाती हमले में पांच पुलिसकर्मी मौके पर ही मारे गए, जबकि 6 अधिकारी और 4 नागरिक गंभीर रूप से घायल हो गए। उसका एक पड़ोसी बताता है, 'मैं तो उसे बचपन से देख रहा हूं। वह तो बिलकुल सीधी-साधी, बेलौस व बिंदास जीने वाली सामान्य लड़की थी। उसे बर्फबारी के दौरान स्लेड राइड पसंद था। वह अन्य सामान्य लड़कियों की तरह गाती थी, गुनगुनाती थी और पंख फैलाकर उड़ना चाहती थी।'

ये सारे कृत्य पागलपन की श्रेणी में आते हैं, लेकिन इनको अंजाम देने वालों में से एक भी इंसान पागल नहीं था। ये लोग बिलकुल सामान्य लोग थे। इनको इतने जघन्य अपराध की प्रेरणा कहां से मिली? इसका उत्तर है इस्लाम। इस्लामी दुनिया में मारकाट रोजाना की घटनाएं हैं। हर जगह मुसलमान अपने धार्मिक विश्वास का अनुसरण करते हुए लोगों की हत्याएं करने में मशगूल हैं।

फिर वही सवाल, पर ऐसा क्यों? कौन सा तत्व है, जिसके प्रभाव में ये समझदार लोग भी इतने बुरे काम करते हैं? मुसलमान (अधिकांश) समूह में दूसरों के प्रति इतने क्रोध में क्यों रहते हैं, ये दुनिया के साथ इस कदर संघर्ष पर क्यों उतारू रहते हैं कि पल भर में ही हिंसक हो उठते हैं? मुहम्मद के बारे में कोई कुछ कह दे तो लाखों की संख्या में मुसलमान विरोध-प्रदर्शन व दंगा करने लगते हैं, निर्दोष लोगों का कत्ल करने लगते हैं। क्या इस तरह का व्यवहार उचित है? फिर भी ये अपराधी पूरी तरह स्वस्थ चित्त लोग हैं! हम इस विरोधाभास की व्याख्या कैसे करें?

इसे समझने के लिए हमें यह जानना होगा कि मुसलमानों से अपने रसूल की तरह बनने और उन्हीं की तरह सोचने की अपेक्षा की जाती है। इसलिए मुसलमानों के जीवन, कार्य व व्यवहार, आचार-विचार में रसूल की शख्सियत और सोच झलकती है। चूंकि इस्लाम में प्रत्येक धर्मपरायण मुस्लिम व्यक्ति का रोल मॉडल मुहम्मद है, इसलिए यह उम्मीद की जाती है कि वे जीवन के हर पहलू में मुहम्मद की नकल करेंगे। इसका परिणाम यह है कि मुसलमान समग्रता में मुहम्मद के जीवन को ओढ़ने के चक्कर में अपना जीवन छोड़ देते हैं, अपनी मानवता छोड़ देते हैं, और काफी हद तक अपनी विशिष्टता छोड़ देते हैं। चूंकि मुसलमान अपने रसूल की नार्सिस्टिक आत्मासक्ति को अपनी आदतों में शुमार करने लगते हैं और इस हद तक मुहम्मद के उदाहरणों का अनुसरण करने लगते हैं कि वे मुहम्मद के 'विस्तार' बन जाते हैं।

मुसलमान इस्लाम नामक वृक्ष की टहनियां हैं और इस वृक्ष की जड़ मुहम्मद है। मुसलमान मुहम्मद के चरित्र, प्रवृत्ति और सोच को धारण करते हैं। या यूं कहें कि प्रत्येक मुसलमान एक प्रकार का मिनी मुहम्मद होता है। इनके लिए वो ब्रह्मांड की सर्वोत्तम रचना, सर्वश्रेष्ठ व संपूर्ण मनुष्य और उसी का जीवन अनुसरण योग्य है। ये मानते हैं कि अगर उसने (मुहम्मद ने) कुछ किया है, भले ही वह भयानक हो, फिर भी वह वाजिब और बेहतरीन माना जाना चाहिए। कोई सवाल नहीं पूछा जाता है और न ही प्रासंगिकता का परीक्षण करने की अनुमति होती है।

एक विषय के रूप में मुहम्मद वह बला है, जिस पर न के बराबर लोग बात करना चाहते हैं। कोई मुहम्मद का अनादर करे तो मुसलमान आहत हो जाते हैं। मुहम्मद पर कोई भी टिप्पणी, भले ही कितनी भी स्वस्थ हो, निंदा ही मानी जाती है। एक बार वे इस्लाम के अनुयायियों की आलोचना की इजाजत तो दे सकते हैं, पर पैगम्बर की आलोचना उन्हें बिलकुल बर्दाश्त नहीं होती। आप अल्लाह की आलोचना करके तो बच सकते हैं, लेकिन आप पैगम्बर मुहम्मद की आलोचना नहीं कर सकते।

किसी व्यक्ति की मौत के सैकड़ों साल बाद उसकी मनोवैज्ञानिक रूपरेखा का संम्पूर्ण मूल्यांकन कर पाना संभव नहीं है। हमारा उद्देश्य इस्लाम के रसूल को समझने की बेहतर दृष्टि प्रदान करना है, न कि इस्लाम नाम की बीमारी के इलाज की दवा बताना। मुहम्मद के जीवन और पैगामों के बारे में ढेर सारी सामग्री और सूचनाएं हैं, और ये सब गहन अध्ययन और विश्लेषण के बाद लिखी गई हैं। इनमें बहुत सारे विवरण अतिश्योक्ति व अतिरंजना से भरे हुए हैं। मुसलमानों से अपेक्षा की जाती है कि वे अपने पैगम्बर की शख्सियत को और ऊंचाई प्रदान करेंगे, चाहे इसके लिए झूठे किस्से गढ़कर रसूल के चमत्कारों को दिखाना पड़े और उसे संत के रूप में पेश करना पड़े।

हालांकि **मुहम्मद के जीवनवृत्त को पढ़ते हुए मुझे हजारों ऐसे प्रामाणिक दस्तावेज मिले, जो मुहम्मद का चित्रण पवित्र इंसान के रूप में नहीं करते, बल्कि एक दुष्ट, निर्दयी, धूर्त और यौनकुंठित विकृत इंसान के रूप में करते हैं। ये दस्तावेज झूठे होंगे, ऐसा मानने का कोई कारण नजर नहीं आता है।** मुसलमानों की यह विशेषता नहीं होती कि वे अपने रसूल को खलनायक के रूप में प्रस्तुत करें। इसलिए यदि मुहम्मद के उन साथियों द्वारा कहे गए किस्से इतनी बड़ी संख्या में हैं, जो उसे प्यार करते थे, उस पर भरोसा करते थे तो ये किस्से संभवतः सत्य हैं।

लंबे समय से इतने बड़े पैमाने पर चली आ रही परंपराओं को मुत्तवत्तीर कहा जाता है। ये परंपराएं एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक संप्रेषण के विभिन्न माध्यमों से कथा-कहानियों की लंबी श्रृंखलाओं के माध्यम से पहुंचती हैं। यह लगभग नामुमकिन है कि अलग-अलग स्थानों पर रहने वाले और अलग-अलग विचारों (कभी-कभी बहुत कट्टर) को मानने वाले लोग एक ही तरह का झूठ गढ़ने और रसूल के नाम पर चलाने के लिए एक साथ आए होंगे।

ये किस्से कुरान और हदीसों में मिलते हैं। प्रत्येक मुसलमान कुरान को अल्लाह की वाणी मानता है। हम कुरान और हदीसों के जरिए मुहम्मद के दिलो-दिमाग को समझने की कोशिश करते हुए यह जानने की कोशिश करेंगे कि मुहम्मद ने जो किया, वह क्यों किया। मैं कई मनोविज्ञानियों और मनोचिकित्सकों के सिद्धांतों व विचारों को भी उद्धृत करूंगा और मुहम्मद ने जो किया, उसकी तुलना इन विशेषज्ञों के कथन से करूंगा। जिन स्रोतों में मैं उद्धृत करने जा रहा हूं वे सभी मनोविकृति विज्ञान के प्रख्यात विशेषज्ञ हैं। ये विशेषज्ञ जो कहते हैं, उसे अनुभव जनित ज्ञान कहा जाता है और इस क्षेत्र के अधिकांश जानकारों द्वारा बताया जाता है।

यह पुस्तक 1400 साल पहले के किसी व्यक्ति के मनोविश्लेषण के लिए नहीं है, बल्कि इसमें उस व्यक्ति के रहस्यों से पर्दा उठाने की कोशिश की गई है। मुहम्मद बहुतों के लिए पहेली है और ख़ासकर अपने अनुयायियों के लिए, जो इस मिथक को स्वीकार करते हैं और इससे अलग कुछ भी देखने से इंकार करते हुए इस छवि को उसकी छवि अंगीकार करते हैं।

मुहम्मद का आचरण अधर्मी था, फिर भी उसने यह जताने की कोशिश की कि वह अपने लक्ष्य को ही समर्पित था। कैसे इस प्रकार का घोर प्रतिशोधी, क्रूर और पथभ्रष्ट इंसान इतना करिश्माई हो सकता है कि वह न केवल अपने साथियों को, बल्कि सैकड़ों सालों से करोड़ों लोगों को सम्मोहित किए हुए है ?

माइकल हार्ट ने अपनी पुस्तक 'द 100: ए रैकिंग ऑफ द मोस्ट इंफ्लुएंशियल पर्सन्स इन हिस्ट्री' में मुहम्मद

को शीर्ष पर रखा। इसके बाद सूची में ईसाक न्यूटन, जीसस क्राइस्ट, बुद्ध, कन्फ्यूसियस और सेंट पॉल हैं। हार्ट की सूची इस आधार पर नहीं बनाई गई है कि इसमें शामिल शख्सियतों का प्रभाव सकारात्मक था या नकारात्मक। इस सूची में तमाम अत्याचारी जैसे एडोल्फ हिटलर, माओ त्से-तुंग व जोसफ स्टालिन भी शामिल हैं। सूची में निकोल मैकियावेली भी हैं। मुहम्मद जैसा मानवताहीन व्यक्ति इतिहास का सर्वाधिक प्रभावशाली व्यक्ति कैसे हो सकता है? जैसा कि यह पुस्तक दर्शाने की कोशिश करती है, इस सवाल का उत्तर मुहम्मद की शख्सियत से अधिक मानव के चित्त से जुड़ा है।

दुनिया में इस्लाम के अलावा किसी और कारण से इतना रक्त नहीं बहाया गया है। कुछ इतिहासकारों के मुताबिक अकेले भारत में ही इस्लाम की तलवार से 8 करोड़ हिंदुओं को मौत के घाट उतारा गया। फारस, मिस्त्र और उन सभी देशों में जहां लुटेरे मुसलमानों का आक्रमण हुआ, लाखों लोगों को काट डाला गया। गैर मुसलमानों के सामूहिक कत्ल का यह सिलसिला उस वक्त तो चला ही जब ये लुटेरे हमला कर रहे थे, इसके बाद भी सदियों तक यह जारी रहा। ये रक्तपात आज भी जारी है।

मुसलमान अक्सर डींग हांकते हैं, 'जितनी तुम जिंदगी से मुहब्बत करते हो, उससे कहीं अधिक हम मौत से प्यार करते हैं।' हाल के वर्षों में हजारों आतंकवादी हमलों को अंजाम देकर मुसलमानों ने यह साबित भी किया है। कैसे एक इंसान का किसी पर इतना प्रभाव हो सकता है कि वो उसके लिए खुशी-खुशी मरने को तैयार हो जाता है, अपने बच्चों को कुर्बान करने में भी संकोच नहीं करता? क्यों दुनिया में चल रहे संघर्षों में हर 10 घटनाओं में से 9 में मुसलमान संलिप्त हैं, जबकि मुसलमानों की आबादी दुनिया में केवल पांचवां हिस्सा ही है? आंकड़ों का औसत देखें तो पता चलता है कि मुसलमान एक समूह के रूप में बाकी मनुष्यों से 36 गुना अधिक हिंसक होता है। यह होता कैसे है?

दरअस्ल, इस्लाम मुहम्मद के दिमाग की उपज है। मुसलमान कुरान व हदीसों में मुहम्मद के शब्दों को पढ़ते हैं और उसके जीवन की हर एक चीज पर अमल करने की कोशिश करते हैं। उनके लिए मुहम्मद इस ब्रह्मांड की सर्वोत्तम रचना और सर्वाधिक संपूर्ण मनुष्य है तथा उसका ही जीवन अनुसरण योग्य है। वे मानते हैं कि अगर मुहम्मद ने कुछ किया है, भले ही वह भयानक हो, उसे उचित व उत्कृष्ट समझा जाना चाहिए। उसमें किसी सवाल की गुंजाइश नहीं होती और किसी को उसकी प्रासंगिकता या अप्रासंगिकता परखने का अधिकार नहीं है। यह पुस्तक दो चीजें पेश करती है। पहला मुहम्मद नार्सिस्टिक पर्सनैलिटी डिस्ऑर्डर (आत्मपूजक व्यक्तित्व विकृति) से ग्रस्त था। दूसरा वह टैम्पोरल लोब इपीलैप्सी की बीमारी से पीड़ित था। वह अन्य मानसिक विकारों का भी शिकार था, लेकिन उसकी शारीरिक व मानसिक अवस्था ने इस्लाम को एक परिघटना बना दिया, जिसे मुहम्मद के रूप में जाना जाता है।

यह पुस्तक प्रामाणिक साक्ष्यों के आधार पर सिद्ध करती है कि मुहम्मद मानसिक रूप से विक्षिप्त था। हालांकि उसे लगता था कि वह अपने उद्देश्य के लिए समर्पित है और उसके दावे बिलकुल सच हैं। मुहम्मद वास्तविकता और कल्पना में भेद नहीं कर पाता था। मुहम्मद के समकालीन और ऐसे लोग जो उसे अच्छे से जानते थे, उसे मजनूं (पागल, सनकी और जिन्न के वश में) कहते थे। हालांकि ऐसे लोग या तो उसकी क्रूर ताकत के आगे झुक गए, या फिर इन लोगों के विवेक की आवाजें दबा दी गई। मानव मस्तिष्क की नई खोजें ऐसे लोगों को सही साबित कर रही हैं। लेकिन हमें यह भी ध्यान रखना चाहिए कि नार्सिसिस्ट व्यक्ति बखूबी जानता है कि वह झूठ बोल रहा है और इसके बावजूद वह अपने झूठ पर विश्वास करने वाला पहला व्यक्ति होता है।

मुहम्मद की आलोचना करने वाली बहुत सी किताबें मौजूद हैं और जिनमें उसके हिंसक व विकृत चरित्र का

विवरण दिया गया है। हालांकि इनमें से कुछ ही यह व्याख्या कर पाई हैं कि मुहम्मद के दिमाग में क्या चल रहा था। इस पुस्तक का उद्देश्य यही बताना है कि मुहम्मद की सोच क्या थी।

वैसे तो यह पुस्तक मुसलमानों के नाम नहीं है, पर मैंने इसे मुख्यतः उन्हीं के लिए लिखा है। एक फारसी कहावत है कि दीवारों के भी कान होते हैं। **मुहम्मद के बारे में लुटेरों के गिरोह के सरदार होने, सामूहिक नरसंहार करने वाला, बच्चों के साथ यौन संबंध बनाने को आतुर यौन कुंठित, कामी, औरतखोर और काफी कुछ कहा जा चुका है। मुसलमान ये सब सुनते भी हैं, फिर भी बिना किसी संशय के मुहम्मद में विश्वास करते हैं।** विचित्र बात तो यह है कि कुछ लोगों ने यह भी दावा किया कि इंटरनेट पर मेरे लेख को पढ़ने के बाद इस्लाम में उनका विश्वास और मजबूत हो गया। मुसलमान मुहम्मद को एक श्रेष्ठ शख्सियत और मानव जाति के लिए अल्लाह के तोहफे के रूप में स्वीकार कर चुके हैं। मुसलमान मुहम्मद के बारे में सही–गलत का फैसला मानवीय नैतिकता और आत्म चेतना के मानकों के आधार पर नहीं लेते हैं। इसके उलट ये मानते हैं कि मुहम्मद ने नैतिकता के मानक स्थापित किए। इनके लिए सही या गलत, अच्छे या बुरे का निर्णय स्थापित और सर्वमान्य नियम–कायदों (गोल्डन रूल) से नहीं होता है, बल्कि तर्क, मूल्य या नैतिकता से परे हलाल (जिसकी अनुमति हो) और हराम (जिसकी इजाजत न हो) नामक लंपट मजहबी मूल्यों से निर्धारित होता है। गोल्डन रूल तो मुसलमानों के लिए परायी चीज है। **मुसलमान इस्लाम पर सवाल उठाने में पूर्णतः अक्षम होता है। वह इस्लाम पर किसी भी संदेह को सिरे से खारिज कर देता है और जो मजहबी बातें उसकी समझ से बाहर होती हैं, उन्हें 'इम्तहान' समझता है। इस 'इम्तहान' को पास करने और आस्था को सिद्ध करने के लिए उसे बिना सवाल किए इस्लाम के हर बेतुकेपन और बकवास पर भरोसा करना ही होता है।**

अध्याय 1

मुहम्मद कौन था?

तुम्हारे अल्लाह ने न तो तुम्हें छोड़ा और न ही तुमसे नाराज हुआ, नफरत की। तुम्हारा भविष्य यकीनन अतीत से बेहतर है। तुम्हें अल्लाह जल्द ही इतना देगा कि तृप्त हो जाओगे। क्या जब भी अल्लाह ने तुमको यतीम पाकर पनाह नहीं दी? क्या भटकता पाकर अल्लाह ने तुमको राह न दिखाई? क्या जब जरूरत हुई, अल्लाह ने तुम्हें दौलत नहीं दी? (कुरान-93:3-8)[6]

आइये, मुहम्मद की कहानी सुनाते हैं। उसके जीवन में झांकें। वह कौन था और उसकी सोच क्या थी? इस अध्याय में हम एक ऐसे इंसान के जीवन के विभिन्न पक्षों को संक्षिप्त रूप से देखेंगे, जिसकी करोड़ों की तादाद में दूसरे इंसान इबादत करते हैं। दरअस्ल, इस्लाम और कुछ नहीं, केवल मुहम्मदवाद है। मुसलमान दावा करते हैं कि वे केवल एक अल्लाह की इबादत करते हैं। चूंकि अल्लाह और कुछ नहीं, केवल मुहम्मद के अहंकार से पैदा हुई कल्पना और मुहम्मद का ही प्रतिरूप अदृश्य कृत्रिम हौवा है। इसलिए यह मुहम्मद ही है, जिसकी वे इबादत करते हैं। इस्लाम मुहम्मद की व्यक्ति पूजा है।

हम मुहम्मद के शब्दों को पढ़ेंगे, जो उसने कुरान में लिखा है और दावा किया है कि ये शब्द अल्लाह के हैं। हम मुहम्मद को उसके साथियों और बीबियों की नजर से देखेंगे। हम यह भी जानेंगे कि कैसे महज एक दशक में मुहम्मद एक परित्यक्त से अरब का वास्तविक शासक बन बैठा। कैसे मुहम्मद ने लोगों को नियंत्रित करने के लिए उनके दिलों में दरार पैदा की और यह भी कि कैसे मुहम्मद ने अपने विचारों से सहमत न होने वाले लोगों के खिलाफ जंग करने के लिए लोगों में विद्रोह की आग लगा दी, कैसे युद्ध छेड़ने के लिए लोगों में नफरत और क्रोध की ज्वाला भड़का दी। हम यह भी देखेंगे कि मुहम्मद ने कैसे विरोधियों को दबाने और उनके मन में भय पैदा करने के लिए घात, बलात्कार, शारीरिक यातना और हत्याओं को अंजाम दिया। हम मुहम्मद द्वारा किए गए नरसंहार और धोखे व चालबाजी की उस रणनीतिक प्रवृत्ति को भी जानेंगे। आज के मुसलमान आतंकी-समूह मुहम्मद की इसी रणनीति का इस्तेमाल करते हैं। मुहम्मद को समझने के बाद आप जान पाएंगे कि आतंकवादी वही कर रहे हैं, जो उनके रसूल ने किया था।

मुहम्मद का जन्म व बचपन

अरब के मक्का में वर्ष 570 ई. में एक विधवा युवा महिला आमना ने एक पुत्र को जन्म दिया। आमना ने बेटे का नाम मुहम्मद रखा। हालांकि मुहम्मद आमना की इकलौती संतान था, फिर भी उसने पालन-पोषण के लिए मुहम्मद को रेगिस्तान में रहने वाले एक खानाबदोश दंपत्ति को सौंप दिया। उस वक्त मुहम्मद बमुश्किल छह माह का था।

अरब में कभी-कभी अमीर महिलाएं अपने नवजात शिशु की देखभाल के लिए कुछ पैसे पर आया (परिचारिका)

रख लेती थीं। इससे उन्हें बच्चे की देखभाल करने से फुर्सत मिल जाती थी और वे फौरन दूसरा गर्भ धारण करने के लिए तैयार हो जाती थीं। अधिक बच्चे समाज में ऊंची हैसियत दिखाते थे। पर आमना के साथ ऐसा कुछ नहीं था। आमना विधवा थी। उसे केवल एक ही संतान का लालन-पालन करना था और दूसरे वो अमीर भी नहीं थी। मुहम्मद के पैदा होने के छह माह पहले ही उसके पिता अब्दुल्ला दुनिया से चले गए थे। इसके अलावा नवजात को दूसरे के पास छोड़ने की प्रथा आम भी नहीं थी। मुहम्मद की पहली बीबी खदीजा मक्का की सबसे अमीर महिला थी। खदीजा की पहली दो शादियों से तीन बच्चे थे। मुहम्मद से शादी के बाद उसके छह बच्चे और हुए। खदीजा ने अपने सारे बच्चों को खुद ही पाल-पोसकर बड़ा किया था।[7]

फिर आमना ने अपनी इकलौती संतान को पालने के लिए किसी और को क्यों दे दिया? मुहम्मद की मां आमना के बारे में बहुत कम जानकारी उपलब्ध है। इसलिए उसको और उसके इस निर्णय को समझ पाना मुश्किल है।

अमीना की मनोवैज्ञानिक प्रकृति और मुहम्मद से उसके रिश्ते पर प्रकाश डालने वाली एक रोचक बात यह जरूर है कि उसने मुहम्मद को कभी अपना दूध नहीं पिलाया। जन्म के बाद ही मुहम्मद को देखभाल के लिए उसके चाचा अबू लहब की नौकरानी सुऐबा को दे दिया गया। अबू लहब वही व्यक्ति हैं जिन्हें मुहम्मद ने उनकी बीबी सहित कुरान के सूरा 111 में लानत भेजी है। यह उल्लेख कहीं नहीं मिलता कि आमना ने खुद बच्चे को क्यों नहीं पाला। हम इस बारे में केवल अनुमान लगा सकते हैं।

क्या वह अवसाद में थी कि इतनी कम उम्र में विधवा हो गई? या फिर उसे यह लगता था कि यह बच्चा उसकी दूसरी शादी की संभावना में बाधा बनेगा?

परिवार में किसी की मृत्यु दिमाग में रासायनिक परिवर्तन करती है, जो अवसादग्रस्त बना सकती है। किसी महिला के अवसाद में जाने के अन्य कारण अकेलापन, गर्भ को लेकर चिंता, शादीशुदा जिंदगी में कलह या धन-दौलत की समस्या और कम उम्र में मां बनना भी हो सकते हैं। आमना ने हाल ही में अपना पति खोया था। वह बिलकुल अकेली, गरीब और नवयौवना थी। इतना सब जानने के बाद यह अनुमान लगाना कठिन नहीं है कि आमना उन सारी समस्याओं की जद में थी, जिससे अवसाद उसे आसानी से अपना शिकार बना सके। अवसाद ऐसी मानसिक अवस्था है जो महिला को अपने नवजात शिशु से भी भावनात्मक रूप से दूर कर देती है। महिला यदि गर्भावस्था के दौरान अवसाद में है तो प्रसव के बाद लंबे समय तक अवसाद में जाने की आशंका बनी रहती है और यह गर्भवती महिला के लिए जोखिम भरा हो सकता है।[8] कुछ अनुसंधान बताते हैं कि गर्भवती महिला का अवसाद ग्रस्त होना उसकी कोख में पल रहे बच्चे पर सीधा असर डालता है। इस स्थिति में पैदा होने वाले बच्चे अक्सर तुनक मिजाज और लद्दधड़ (आलसी) प्रवृत्ति के हो जाते हैं। ऐसे बच्चे के सीखने की क्षमता भी मंद पड़ जाती है और ये भावनात्मक रूप से निष्क्रिय और हिंसक व्यवहार वाले हो सकते हैं।[9]

मुहम्मद अजनबियों के बीच पला-बढ़ा। जब उसे थोड़ी समझ हुई तो जान सका कि जिसके साथ रह रहा था, वह उस परिवार का नहीं हैं। उसके मन में यह सवाल जरूर कौंधा होगा कि क्यों उसकी अपनी मां उसे अपने पास नहीं रखना चाहती। मुहम्मद साल में दो बार अपनी मां से मिलने भी जाता था।

कई दशकों बाद हलीमा कहती भी थी कि पहले वह मुहम्मद को नहीं लेना चाहती थी, क्योंकि वह एक गरीब विधवा का अनाथ बेटा था और उसके पास कुछ नहीं था। चूंकि उसे किसी अमीर परिवार का बच्चा नहीं मिल सका, इसलिए उसने मजबूरी में मुहम्मद को लिया, क्योंकि उसके परिवार को पैसे की जरूरत थी। हालांकि मुहम्मद की देखभाल के एवज में उसे अधिक कुछ नहीं मिलता था। क्या इससे पता नहीं चलता कि हलीमा मुहम्मद का कितना

ध्यान रखती होगी ? उम्र के उस नाजुक रचनात्मक दौर में जब बच्चे का चरित्र गढ़ा जाता है, क्या मुहम्मद को उस परिवार में प्यार मिला ?

हलीमा ने कहा है कि मुहम्मद गुमसुम अकेला रहने वाला बच्चा था। वह अपने विचारों की दुनिया में खोया रहता था। दोस्तों से भी इस तरह चोरी-छिपे बातचीत करता था कि उसे कोई और न देख पाए। क्या यह उस बच्चे की प्रतिक्रिया थी, जो वास्तविक दुनिया में प्यार नहीं पा सका और इसलिए उसने एक ऐसी काल्पनिक दुनिया बसानी शुरू कर दी, जहां उसका खालीपन दूर होता था और प्यार मिलता था ?

मुहम्मद की मानसिक दशा हलीमा के लिए चिंता का सबब बनने लगी। जब वह पांच साल का हुआ तो हलीमा उसे आमना के पास लौटा आई। अमीना को अभी दूसरा शौहर नहीं मिला था और वह मुहम्मद को वापस नहीं लेना चाहती थी।

हलीमा ने आमना को मुहम्मद के अजीब व्यवहार और कल्पनाओं से वाकिफ कराया, तब वह उसे वापस लेने को तैयार हुई। इब्ने-इसहाक ने हलीमा के शब्दों को इस तरह दर्ज किया है: उसके (हलीमा के अपने बेटे) पिता ने मुझसे कहा, 'मुझे लगता है कि इस बच्चे को दौरा पड़ता है। मामला और बिगड़े, उससे पहले इस बच्चे को उसके घर पहुंचा दो।'... वह (मुहम्मद की मां) पूछती रही कि हुआ क्या और तब तक चैन नहीं लेने दिया, जब तक मैंने पूरी बात नहीं बता दी। जब उसने कहा कि क्या उसे बच्चे पर शैतान का साया होने का शक है तो मैंने कहा, हां।'[10]

छोटे बच्चों का बिस्तर पर पड़े रहकर शैतान को देखना या काल्पनिक दोस्तों से बात करना सामान्य बात है। लेकिन मुहम्मद के मामले में यह आपवादिक रूप से चेतावनी भरा था। हलीमा के शौहर ने कहा, 'मुझे लगता है कि इस बच्चे को दौरा पड़ता है। यह जानकारी अहम है। सालों बाद मुहम्मद ने खुद अपने बचपन के अजीबोगरीब अनुभव के बारे में बताते हुए कहा:

सफेद वस्त्र में दो आदमी आए, और उनके हाथ में सोने का प्याला था, जिसमें बर्फ भरी हुई थी। वे मुझे ले गए और मेरे शरीर को खोल डाला, फिर मेरा कलेजा निकाला और इसे भी खोला, फिर इसमें से काले रंग का थक्का निकाला और दूर फेंक दिया। इसके बाद मेरे दिल को और मेरे पूरे शरीर को उस बर्फ से तब तक साफ करते रहे, जब तक कि वह पूरी तरह पाक नहीं हो गया।[11]

एक बात तो सौ टका सच है कि मन के विकार हृदय में थक्के के रूप में नहीं दिखते। यह भी सच है कि बच्चे पापमुक्त होते हैं। पाप किसी सर्जरी से खत्म नहीं किया जा सकता है और न ही बर्फ सफाई करने वाला साधन होता है। यह पूरा किस्सा या तो कोरी कल्पना है या मिथ्याभास।

मुहम्मद अब अपनी मां के पास रहने लगा था, लेकिन उसकी किस्मत में यह सुख लंबा नहीं लिखा था। सालभर बाद ही आमना की भी मौत हो गई। मुहम्मद आमना से अधिक बात नहीं करता था। आमना की मौत के 50 साल बाद जब मुहम्मद ने मक्का पर फतह हासिल की तो वो मक्का और मदीना के बीच स्थित अब्वा नामक जगह पर अपनी मां की कब्र पर गया और रोया।

मुहम्मद ने अपने साथियों को बताया:

यह मेरी मां की कब्र है, अल्लाह ने मुझे यहां आने की इजाजत दी है। मैंने उसके लिए दुआ करनी चाही, लेकिन अल्लाह ने मंजूर नहीं किया। तो मैंने मां को याद किया और उसकी यादों में डूब गया और रोने लगा।[12]

अल्लाह मुहम्मद को अपनी मां के लिए दुआ मांगने की इजाजत क्यों नहीं देगा ? उनकी मां ने ऐसा क्या किया था कि वह माफी बख्शी जाने के काबिल नहीं थी ? फिर तो अल्लाह अन्याय करने वाला है, यह न मानें तो इस बात को हजम कर पाना मुश्किल है। जाहिर है, अल्लाह का इससे कोई लेना-देना नहीं था। मुहम्मद अपनी मां को माफ

नहीं कर पाया था और वह भी उनकी मौत के पचास साल बाद भी। शायद मुहम्मद के जहन में उसकी याद एक प्रेमहीन रूखी महिला के रूप में अंकित थी और उसका मन अपनी मां को लेकर क्षुब्ध था। शायद मुहम्मद के दिलो-दिमाग पर गहरे जख्म थे, जो कभी नहीं भर सके।

आमना की मौत के बाद मुहम्मद ने दो साल अपने दादा अब्दुल मुत्तलिब के घर बिताए। उसके दादा को इस बात का खयाल था कि उनके पोते ने अभी तक अनाथ जीवन जिया है, तो वे अपने मरे हुए बेटे अब्दुल्ला की इस निशानी के ऊपर प्यार और धन-दौलत लुटाने लगे। इब्ने-साद लिखता है कि अब्दुल मुत्तलिब ने इस बच्चे को वह लाड़-प्यार दिया जो उन्होंने कभी अपने बेटों को भी नहीं दिया था।[13] मीर ने मुहम्मद के जीवनवृत्त में लिखा है: ''इस बच्चे को उसके दादा ने बेपनाह दुलार दिया। काबा की छाया में गलीचा बिछाया जाता था और उस पर बैठकर यह वृद्ध मुखिया (मुहम्मद के दादा) सूरज की तपिश से बचने के लिए आराम फरमाता था। इस गलीचे के चारों ओर थोड़ी दूर पर उसके बेटे बैठते थे। छोटा सा मुहम्मद इस मुखिया के पास भागकर आता था और गलीचे पर बैठ जाता था। मुखिया के बेटे मुहम्मद को हटाने की कोशिश करते तो अब्दुल मुत्तलिब उन्हें रोक देता और कहता: 'मेरे बच्चे को अकेला छोड़ दो।' फिर वह मुहम्मद की पीठ सहलाता और उनकी बालसुलभ क्रीड़ाएं देखकर आनंदित होता। मुहम्मद अभी भी बराका नाम की आया की देखरेख में रहता था। पर वह उसके पास से भागने लगता और अपने दादा के कक्ष में घुस जाता, यहां तक कि जब वे अकेले होते या सो रहे होते तब भी।''[14]

मुहम्मद अक्सर अपने दादा अब्दुल मुत्तलिब के उस लाड़-प्यार को याद करता था। बाद में उसने कल्पना का तड़का लगाते हुए कहा कि दादा उसके बारे में कहा करते थे, ''उसे अकेला छोड़ दो, वह बड़ा किस्मत वाला है। एक साम्राज्य का मालिक होगा।' वे बराका से कहते, 'ध्यान रखना, कहीं यह बच्चा यहूदियों या ईसाइयों के हाथों न पड़ जाए, क्योंकि वे लोग इसे ढूंढ रहे हैं और पाते ही इसे नुकसान पहुंचाएंगे।''[15]

हालांकि किसी को मुहम्मद के दादा की ये बातें याद नहीं थी और मुहम्मद का कोई चाचा सिवाय हमजा के, उसके दावों को स्वीकार करने को तैयार नहीं हुआ। हमजा मुहम्मद का हमउम्र था। अब्बास जरूर मुहम्मद के गिरोह में शामिल हो गया था, पर तब जबकि उसके सितारे बुलंद हो चुके थे और वह हमला करने के लिए घेरा डालकर मक्का के द्वार पर बैठा था।

पर मुहम्मद पर बदकिस्मती अभी खत्म नहीं हुई थी। यहां रहते अभी दो साल भी नहीं बीते थे कि 82 वर्ष की अवस्था में मुहम्मद के दादा की भी मौत हो गई। मुहम्मद अपने चाचा अबू तालिब के संरक्षण में आ गया। दादा का दुनिया से चले जाना इस अनाथ बच्चे को बहुत खला। जब दादा का जनाजा हजून के कब्रिस्तान ले जाया जा रहा था तो मुहम्मद बहुत रोया था; और उसे दादा की याद सालों तक सताती रही। चाचा अबू तालिब ने शिद्दत से अपनी जिम्मेदारी निभाई। मीर लिखता है: 'अबू तालिब ने मुहम्मद को उसी तरह लाड़-प्यार दिया, जैसे उनके पिता देते थे। वे इस बच्चे को बिस्तर पर ले जाकर सुलाते थे, उसे साथ बिठाकर खाना खिलाते थे। उसे बाहर घुमाने ले जाते थे। तालिब का यह सिलसिला तब तक जारी रहा, जब तक मुहम्मद बचपन की दुश्वारियों से बाहर नहीं आ गया।'[16] इब्ने-साद वाक़दी के हवाले से लिखते हैं: हालांकि अबू तालिब बहुत अमीर नहीं थे, फिर भी उन्होंने मुहम्मद को अपने बच्चों से अधिक लाड़-प्यार दिया।

बचपन में इस तरह के भावनात्मक झंझावातों को झेलने के कारण मुहम्मद को अकेले पड़ने से डर लगने लगा था। यह बात उस घटना से स्पष्ट होती है, जो तब हुई जब मुहम्मद 12 साल का था। एक दिन अबू तालिब व्यापार के सिलसिले में सीरिया जाने को तैयार हुए। 'लेकिन जब कारवां सफर के लिए तैयार हुआ और अबू तालिब ऊंट

पर सवार होने लगे तो मुहम्मद को लगा कि वह बहुत दिन के लिए उनसे दूर जा रहे हैं। यही सोचकर मुहम्मद उनसे बहुत देर तक लिपट कर रोता रहा। अबू तालिब से भतीजे के आंसू नहीं देखे गए और वे उसे अपने साथ लेते गए।'[17]

मुहम्मद का अपने चाचा के प्रति इस हद तक मोह यह सुराग देता है कि उसके मन में हमेशा अपने प्यार करने वालों को खोने का डर बना रहा। पर आखिर में मुहम्मद ने अपने उस चाचा के प्रति अहसानफरामोशी दिखाई, जो उससे इतना स्नेह रखते थे और यहां तक कि जीवन भर अपने बच्चों से अधिक उसका पक्ष लेते रहे। अबू तालिब की मौत नजदीक आ गई तो मुहम्मद उन्हें देखने गया। अबू तालिब के सभी भाई वहां मौजूद थे। हमेशा मुहम्मद की भलाई सोचने वाले अबू तालिब ने मरते वक्त भी अपने भाइयों से गुजारिश की कि वे मुहम्मद का ध्यान रखें। हालांकि इस समय मुहम्मद की उम्र 53 बरस थी। सभी भाइयों ने अबू तालिब से वादा किया कि वे हमेशा मुहम्मद की रक्षा करेंगे। वचन देने वालों में अबू लहब भी शामिल थे, जिन्हें मुहम्मद ने लानत भेजी थी। इसके बाद मुहम्मद ने मृत्युशैया पर पड़े अपने चाचा अबू तालिब को इस्लाम कबूल करने को कहा।

मुहम्मद को हमेशा यह बात परेशान करती थी कि उसके अनुयायी कमजोर और निचले तबके के हैं। अपना कद और प्रतिष्ठा बढ़ाने के लिए मुहम्मद को किसी जहीन व प्रतिष्ठित व्यक्ति को अपनी जमात में शामिल करने की जरूरत थी। इब्ने-इसहाक बताता है: 'जब भी मेलों में भीड़ आती, या मक्का में किसी महत्वपूर्ण या दिव्य पुरुष के आने की आहट होती तो मुहम्मद उनके पास अपने पैगाम लेकर जाता।'[18]

इतिहास लेखक बताते हैं कि जब अबू बक्र और उसके बाद उमर मुहम्मद उसके साथ आ गए तो उसने खूब जश्न मनाया। अबू तालिब ने यदि धर्म परिवर्तन कर लिया होता तो चाचाओं और उसकी कुरैश जनजाति में मुहम्मद की प्रतिष्ठा बढ़ जाती। कुरैश जनजाति मक्का के चारों ओर रहती थी और काबा की संरक्षक थी। इसलिए अबू तालिब का धर्मांतरण होते ही मुहम्मद को वह साख व सम्मान चुटकी में मिल जाता, जिसका वह भूखा था। लेकिन मृत्युशैया पर पड़े अबू तालिब मुस्कुराए और बोले कि वे अपने पूर्वजों के धर्म में अटल विश्वास रखते हुए मरना अधिक पसंद करेंगे। यह जवाब सुनकर मुहम्मद की उम्मीदों पर पानी फिर गया और वह बड़बड़ाते हुए कमरे से निकल गया: 'मैं उनके लिए माफी की दुआ करना चाहता था, लेकिन अल्लाह ने मुझे ऐसा करने से रोक दिया।'[19]

यह मानना कठिन है कि जिसने उसे पाल-पोसकर बड़ा किया, पूरी जिंदगी जिसका संरक्षण किया और जिसने इतना त्याग किया, अल्लाह ने अपने रसूल को उस इंसान के लिए दुआ करने से रोक दिया होगा। इससे तो अल्लाह का स्तर इतना नीचे गिर जाएगा कि वह इबादत के लायक ही नहीं रहेगा। अबू तालिब और उनके परिवार ने मुहम्मद के लिए बहुत त्याग किए थे। यह इंसान अबू तालिब अपने भतीजे मुहम्मद के दावे पर भले ही रत्ती भर भरोसा नहीं करता था, पर मुहम्मद के विरोधियों के सामने वह हमेशा चट्टान बनकर खड़ा रहा और 38 सालों तक उसका कद्दावर समर्थक रहा। लेकिन तालिब ने इस्लाम कबूलने से इंकार कर दिया तो मुहम्मद को इतना बुरा लगा कि वह उसकी मौत पर प्रार्थना करने तक नहीं गया।

बुखारी लिखता है: जैसा कि अबू-साद-अल खुद्री ने बयान किया है, कि किसी ने उसके चाचा (अबू तालिब) का जिक्र किया तो पैगम्बर को कहते सुना गया, 'शायद कयामत के दिन मेरी दखलंदाजी से उनकी मदद हो। जब उनको आग के दरिया में घुटनों तक झोंका जाएगा और उनका दिमाग उबलेगा।'[20]

युवावस्था में मुहम्मद का जीवन अपेक्षाकृत घटनाविहीन सा रहा, और ऐसी कोई विचारणीय बात नहीं हुई, जिसका जिक्र वो या उसका जीवनवृत्त लिखने वाले कर सकें। वह शर्मीला, गुमसुम रहने वाला और दीन-दुनिया से बेखबर रहने वाला इंसान था। भले ही उसके चाचा ने लाड़-प्यार में कमी नहीं रहने दी और यहां तक कि अत्यधिक छूट देकर उसे बिगाड़ भी दिया, पर मुहम्मद हमेशा अपने अनाथ वाली स्थिति के प्रति अधिक संवेदनशील रहा।

अकेलेपन और प्यार–दुलार से वंचित जीवन की यादें जीवनभर उसका पीछा करती रहीं। साल बीतते गए। मुहम्मद अकेला अपनी ही दुनिया में पड़ा रहा, अपने हमउम्रों से बिलकुल दूर और अलग–थलग।

बुखारी[21] में बताया गया है कि 'मुहम्मद एक शर्मीली, ढंकी–छिपी कुंवारी लड़की से भी अधिक शर्मीला था।'[22] वह जीवन भर ऐसा ही रहा, असुरक्षित और डरपोक। इस कमजोरी को छिपाने के लिए उसने अपने चारों ओर तड़क–भड़क वाला एक कृत्रिम आभामंडल तैयार किया। किसी काम में उसका मन नहीं लगता था। कभी–कभी वो भेड़ चराने जरूर जाता था, जो अधिकतर लड़कियां करती थीं और अरबी इसे मर्दों वाला काम नहीं मानते थे। उसकी अपनी कोई खास कमाई नहीं थी। आजीविका के लिए वह अपने चाचा अबू तालिब पर निर्भर था।

खदीजा से शादी

अबू तालिब ने 25 बरस की उम्र में मुहम्मद को एक नौकरी दिलवा दी। उसे अपनी एक रिश्तेदार और अमीर व्यापारी खदीजा के यहां साज–संभाल के काम पर रखवा दिया। खदीजा करीब 40 साल की सफल व्यापारी और विधवा थी। खदीजा के हुक्म पर एक बार मुहम्मद खदीजा का सामान बेचने और कुछ सामान खरीदने के लिए सीरिया गया। मुहम्मद जब लौट के आया तो खदीजा उसके प्यार में गिरफ्तार हो चुकी थी। खदीजा ने अपनी एक नौकरानी के माध्यम से मुहम्मद के पास शादी का प्रस्ताव भेजा।

मुहम्मद को धन की भी जरूरत थी और एक ऐसे साथी की भी, जिसके साथ वो अपना सुख–दुख साझा कर सके। खदीजा के साथ विवाह करना मुहम्मद के लिए खजाना पाने जैसा था। मुहम्मद खदीजा में अपनी उस मां का अक्स और प्यार देख रहा था, जिसके लिए वह बचपन से तरसा था। दूसरे इस शादी से उसे आर्थिक सुरक्षा भी मिल जाती और उसे फिर कोई कामधाम करने की जरूरत नहीं पड़ती।

खदीजा अपने युवा पति की जरूरतों का कुछ अधिक ही ध्यान रखने लगी। वह मुहम्मद की देखभाल करने, उसके लिए अपना सबकुछ लुटाने और आत्मबलिदान में खुशी हासिल करने लगी।

मुहम्मद न तो सामाजिक था और न ही उसे कोई काम करना अच्छा लगता था। वह दुनिया से अलग–थलग रहकर अपने विचारों में खोया रहने वाला इंसान था। जब वह बच्चा था, तो उस समय भी अपने हमउम्रों से बचता फिरता था और उनके साथ नहीं खेलता था। वह अक्सर अकेला और विषादग्रस्त दिखता था। वह शायद ही कभी हँसता था, और यदि कभी हँसा भी तो लड़कियों की तरह मुंह छिपा लेता था। तब से अपने रसूल की रिवायत का पालन करते हुए मुसलमान हँसी–ठहाके को अच्छा नहीं मानते हैं।

अपने एकाकी काल्पनिक संसार में मुहम्मद अब निठल्ला व अवांछित बच्चा नहीं था, जैसा कि जीवन के प्रारंभिक वर्षों में उसने स्वयं को पाया था। बल्कि उसे इस संसार में प्यार, सम्मान, प्रशंसा मिलती थी, और उसका भयमिश्रित प्रभाव भी था। जब उसे जीवन भारी लगने लगता और अकेलापन हावी हो जाता तो वह फंतासी में चला जाता था, जहां वह खुद को किसी भी भूमिका में आ सकता था या अपना पसंदीदा कुछ भी कर सकता था।

उसने बहुत कम उम्र में उसी समय यह सहारा ढूंढ़ लिया होगा, जब वो अपने लालन–पालन करने वाले परिवार (फोस्टर फैमिली) के साथ रहता था और रेगिस्तान में अपने अकेलेपन के साथ दिन बिताता था। कल्पनाओं की यह रमणीय और आरामदायक दुनिया जीवन भर उसका सहारा बनी रही। यह उसे उतना ही वास्तविक लगने लगा, जितना कि वास्तविक दुनिया सुखद हो सकती थी। बीबी और 9 बच्चों को घर पर छोड़ कर मुहम्मद मक्का के पास स्थित खोह में चला जाता था और दीन–दुनिया से विरत अपने विचारों व दिवास्वप्न में समय काटता था।

रहस्यमयी अनुभव

40 साल की आयु में एक दिन मुहम्मद को खोह में कई दिन बिताने के बाद अजीब अहसास हुआ। उसकी मांसपेशियों में जबरदस्त खिंचाव होने लगा, पेडू में असहनीय दर्द होने लगा और उसे ऐसा लगा कि कोई उसके शरीर को जोर से निचोड़ रहा है। उसकी मांसपेशियां अकड़ने लगीं और सिर व होंठ असामान्य तरीके से हिलने लगे, वह पसीने से लथपथ था और हृदय की धड़कन तेज हो गई थी। इस अवस्था में उसने अदृश्य आवाजें सुनीं और भूत जैसी आकृति देखी।

डर से कांपते हुए और पसीने से लथपथ वह घर की ओर भागा और बीबी खदीजा के सामने गिड़गिड़ाने लगा, 'मुझे छिपाओ, मुझे छिपाओ। अरे ओ खदीजा, देखो मुझे क्या हो रहा है ?' मुहम्मद ने खदीजा को बताया कि उसके साथ क्या हुआ और बोला, 'मुझे डर लग रहा है, मुझे कुछ हो जाएगा।' उसे लगा कि उसे फिर से शैतान ने जकड़ लिया है। खदीजा ने मुहम्मद को हिम्मत दी और बोली, 'डरो मत। कुछ नहीं होगा।' खदीजा ने मुहम्मद को समझाया कि उसके पास फरिश्ता आया था और उसे पैगम्बर बनाने के लिए चुना गया है।

उस आकृति से सामना होने के बाद, जिसे खदीजा ने जिब्राईल कहा था, मुहम्मद यकीन करने लगा कि उसका दर्जा अब पैगम्बर का हो गया है। यह काल्पनिक संसार मुहम्मद को उपयुक्त भी लगा, क्योंकि आडम्बरपूर्ण व भव्य जीवन जीने की उसकी इच्छा इसके माध्यम से पूरी हो सकती थी। मुहम्मद ने अल्लाह के पैगाम पर उपदेश देना शुरू किया।

पर उसका पैगाम क्या था ? पैगाम यह था कि वह अब अल्लाह का पैगम्बर हो गया है और लोगों को उस पर विश्वास करना पड़ेगा। इसका अर्थ यह था कि अब लोगों को उससे मुहब्बत करनी होगी, उसका सम्मान करना होगा, उसके हुक्म का पालन करना होगा, उसके बताए मार्ग पर चलना होगा और उससे डरना भी होगा। इसके बाद 23 साल तक वह लगभग यही पैगाम लोगों को सुनाता रहा। इस्लाम का मुख्य पैगाम यही है कि मुहम्मद पैगम्बर है और सबको उनकी आज्ञा का पालन करना होगा। इसके अलावा इस्लाम में कोई संदेश नहीं है। उसको पैगम्बर स्वीकार नहीं करने वाले के लिए इस लोक में भी और मरने के बाद परलोक में भी सजा मिलेगी। **अद्वैतवाद, जो अब इस्लाम का मुख्य तर्क है, मुहम्मद के मूल पैगाम का हिस्सा नहीं है।**

मुहम्मद सालों तक मक्का निवासियों के मूल धर्म व देवताओं का उपहास उड़ाता रहा और अपमान करता रहा। मक्का के लोगों ने मुहम्मद और उनके अनुयायियों से सारे संबंध खत्म कर लिए। इसके बाद मुहम्मद के हुक्म पर उसके अनुयायी अबीसीनिया चले गए। बाद में मक्का वालों को संतुष्ट करने के लिए मुहम्मद उनसे समझौता करने को मजबूर हो गया।

इब्ने-साद लिखता है: एक दिन रसूल काबा के पास लोगों के बीच सूरा अल-नज्म (सूरा-53) पढ़कर सुना रहे थे। जब वे आयत 19-20 पर पहुंचे और कहा, ' तो भला तुम लोगों ने लात व उज़्ज़ा और तीसरे पिछले मनात को देखा।' तो शैतान ने रसूल के मुंह में डालकर नीचे की दो आयतें कहलवाई:'ये तीनों देवियां सुखदायी हैं और इनकी मध्यता से बख़्शिश की उम्मीद है।'[23]

इन शब्दों से मक्का की प्रभावशाली कुरैश बहुत खुश हुए। इन्होंने मुहम्मद का बहिष्कार और उससे दुश्मनी खत्म कर दी। यह खबर अबीसीनिया में रह रहे मुसलमानों तक पहुंची तो वे प्रसन्नतापूर्वक मक्का लौट आए।

कुछ समय बाद मुहम्मद को अहसास हुआ कि अल्लाह की तीन बेटियों को देवी की मान्यता देकर वो खुद का नुकसान कर रहा है। क्योंकि इससे अल्लाह और इंसान के बीच एकमात्र संदेशवाहक होने का उसका दावा कमजोर

होता था। उसके नए मजहब को प्रचलित मूर्तिपूजकों के धर्म से अलग व श्रेष्ठ दिखाने की मेहनत पर पानी फिर रहा है तो मुहम्मद फिर से पलट गया। फिर उसने कहा कि अल्लाह की बेटियों को मान्यता देने वाली आयतें शैतानी हैं। मुहम्मद ने इन दोनों आयतों की जगह दूसरी आयत में कहा, 'क्या! तुम्हारे लिए बेटे और उसके लिए बेटियां! यह तो नाइंसाफी का बंटवारा है!'[24] मतलब यह था कि तुमने अल्लाह के मत्थे बेटियां मढ़ने की हिमाकत कैसे की, जबकि तुम खुद बेटे पैदा करने में गर्व महसूस करते हो? औरतों की बुद्धि कम होती है और अल्लाह के पास बेटियां होंगी, यह कहना सरासर अनुचित है। यह बंटवारा बिलकुल अन्यायपूर्ण है।

यह सुनकर मुहम्मद के कुछ अनुयायियों ने उसका साथ छोड़ दिया। अपने इस यू-टर्न को सही साबित करने और उनका विश्वास दोबारा हासिल करने के लिए मुहम्मद ने दावा किया कि शैतान ने पहले के पैगम्बरों को भी बेवकूफ बनाया था। शैतान ने उन पैगम्बरों के मुँह से ऐसी राक्षसी आयतें कहलवाई थीं, जो अल्लाह के पैगाम होने का भ्रम पैदा करती थीं।

और (ऐ रसूल) हमने तुमसे पहले जब कभी कोई रसूल और नबी नहीं भेजा। पर ये ज़रूर हुआ कि जिस वक्त उसने धर्मप्रचार के हुक्म की आरजू की तो शैतान ने उसकी आरज़ू में लोगों को बहका कर खलल डाल दिया। फिर जो आशंका शैतान डालता है अल्लाह उसे रद्द कर देता है फिर अपने हुक्म को मज़बूत करता है। अल्लाह तो सब जानता है। और शैतान जो आशंका डालता भी है तो इसलिए ताकि अल्लाह उन लोगों की आजमाइश का जरिया करार दे, जिनके दिलों में कुफ्र का मरज़ है। (कुरान22:52-53)

मुहम्मद ने ये आयतें इसलिए लिखीं क्योंकि उसके बहुत से अनुयायी यह जानकर उसे छोड़ गए थे कि वह कुरान किसी अल्लाह का पैगाम नहीं है, बल्कि ये मुहम्मद की परिस्थितियां थोपने वाले (सिचुएशन डिक्टेटेड) हैं। इन आयतों के वास्तविक तत्व क्या हैं? साफगोई से कहें तो ये कहती हैं कि 'यदि तुम अहमक (मूर्ख) मुझको (मुहम्मद) गंदी हालत में भी पकड़ लेते हो तो यह भी तुम्हारा ही दोष है, क्योंकि तुम्हारा मन व्याधिग्रस्त है।'

30 साल बीत चुके थे, लेकिन वह 70-80 लोग ही ऐसे जुटा सका, जो उसके मजहब पर विश्वास करते थे। उसकी बीबी खदीजा उसकी पहली अनुयायी थी, जो न केवल उसकी जरूरतें पूरी करती थी, बल्कि उसकी खुशामद भी करती थी और उसकी दासी बनकर हर तरीके से उसे देवता बनाने की कोशिश भी करती थी।

उसकी बीबी खदीजा की सामाजिक प्रतिष्ठा ने अबू बक्र, उस्मान व उमर जैसे औसत लोगों को मुहम्मद के साथ जुड़ने में अहम भूमिका निभाई। इनके अलावा मुहम्मद के अनुयायियों में बाकी गुलाम थे और थोड़े से असंतुष्ट युवा थे।

जुल्म-ओ-सितम का मिथक

मक्का में मुहम्मद के आह्वान पर लोगों ने ध्यान नहीं दिया। आज के गैर-मुस्लिमों की तरह ही उस वक्त के मक्का के निवासी सभी धर्मों के प्रति सहिष्णु होते थे। उस धरती पर किसी का धार्मिक आधार पर उत्पीड़न सुना नहीं गया था। बहुदेववादी समाज सामान्यत: सहिष्णु प्रकृति का होता है।

जब मुहम्मद ने मूर्तिपूजकों के देवी-देवताओं का अपमान किया तो यह मक्का के लोगों के बर्दाश्त से बाहर था, इसलिए इन लोगों ने मुहम्मद व उसके अनुयायियों का बहिष्कार कर दिया। इन्होंने निर्णय लिया कि मुहम्मद व उसके अनुयायियों को न तो कोई वस्तु बेचेंगे और न इनसे कुछ खरीदेंगे। यह बहिष्कार करीब दो साल तक चला। इससे मुसलमानों के सामने बड़ी कठिनाई आई, पर बहिष्कार हत्याओं जैसा नहीं होता है। इसलिए हम बहिष्कार को जुल्मो-सितम नहीं कह सकते हैं। जुल्मो-सितम तो वह था जो मुसलमानों ने बहाई धर्म के मानने वालों के साथ

किया। ईरान में पिछले दो दशकों में हजारों की संख्या में बहाई लोगों पर अत्याचार किया गया, उन्हें निर्ममता से काट डाला गया, जबकि इन बहाइयों ने न तो कभी इस्लाम का अनादर किया था और न ही किसी इस्लामी लेखक या इस्लामी किताब का अपमान किया था।

मुहम्मद ने अपने अनुयायियों से मक्का छोड़ने को कहा। इससे वे लोग, जिनके बच्चों या गुलामों ने इस्लाम कबूल कर लिया था, परेशान हो गए, घबरा गए। कुछ गुलाम बचकर भागते हुए पकड़ लिए गए और उनकी पिटाई की गई। यह निश्चित रूप से धार्मिक सितम नहीं कहा जा सकता। मक्का के लोग बस उन चीजों को बचाने की कोशिश कर रहे थे, जिसे वह अपनी संपत्ति मानते थे। उदाहरण के लिए, जब बिलाल पकड़ा गया तो उसके मालिक उमय्या ने उसको पीटा और जंजीरों से बांध दिया। अबू बक्र ने दाम दिया तो वह मुक्त कर दिया गया। बिलाल को धर्म बदलने के लिए सजा नहीं दी जा रही थी, बल्कि इसलिए दी जा रही थी, क्योंकि वह वह भाग रहा था और इससे उसके मालिक को आर्थिक नुकसान हो रहा था। और भी किस्से सुनाए जाते हैं कि मुसलमानों को उनके परिवार ने पीटा, क्योंकि उन्होंने इस्लाम स्वीकार कर लिया था। एक हदीस कहती है कि तब उमर मुसलमान नहीं बना था। एक दिन उसने अपनी बहन को बांध दिया और दबाव डालने लगा कि वह इस्लाम छोड़ दे।[25] हालांकि बाद में उमर भी मुसलमान बन गया था। उमर मुसलमान बनने से पहले भी सख्त और हिंसक इंसान था और मुसलमान बनने के बाद भी वह ऐसा ही रहा। इन किस्सों को धार्मिक जुल्म की श्रेणी में रखा जाना मुश्किल है। मध्यपूर्व में व्यक्तिगत स्वतंत्रता अपरिचित और अजनबी विचार है। आपकी आस्था क्या है और आप क्या करते हैं, इस पर सबकी नजर होती है। खासकर महिलाएं अपने निर्णय बिलकुल नहीं ले सकतीं। आज भी परिवार के सम्मान के नाम पर उस औरत की हत्या की जा सकती है, जो अपनी पसंद से और परिवार की इच्छा के विपरीत शादी करना चाहती है।

सुमय्या नाम की महिला को लेकर मुसलमानों पर जुल्म का एक और किस्सा सुनाया जाता है। इब्ने-साद एकमात्र इतिहासकार है, जिसने कहा कि अबू जाल के हाथों सुमैय्या की शहादत हुई। साद का हवाला देते हुए अल-बयहाकी लिखता है: 'अबू जहल ने सुबैय्या की योनि को चाकुओं से गोद डाला था।'[26] यदि शहादत की यह घटना वाकई हुई होती तो मुहम्मद की बड़ाई लिखने वाला हर जीवनी लेखक इसका ढिंढोरा पीटता और मुस्लिम लोक परंपराओं में भी इस शहादत का महिमामंडन किया गया होता। यह एक तरह का उदाहरण है कि शुरुआत से ही मुसलमान कैसी-कैसी अतिरंजनाएं पेश करते रहे हैं।

दरअस्ल, इसी लेखक ने यह भी दावा किया है कि इस्लाम की राह में शहीद होने वाला पहला शख्स बिलाल था। जबकि बिलाल उस कथित धार्मिक जुल्म के बाद भी लंबे समय तक जिंदा रहा और जब मुहम्मद ने मक्का पर अधिकार कर लिया तो वह वहां आया और काबा की मीनार से अजान भी देता था। बिलाल की प्राकृतिक मौत हुई थी।

कुछ इस्लामी स्रोत दावा करते हैं कि सुमय्या, उसका पति यासिर और बेटा अम्मार मक्का में मारा गया। हालांकि मुईर ने बताया है कि यासिर बीमारी के कारण मर गया तो सुमय्या ने एक यूनानी गुलाम अज़रक़ से शादी कर ली और उससे एक बेटी सलमा हुई।[27]

फिर यह कैसे मान लिया जाए कि सुमय्या को काफिरों ने मार डाला था? अज़रक़ तायफ का रहने वाला था और उन गुलामों में से एक था, जो मक्का शहर पर कब्जे के 15 साल बाद मुहम्मद के खेमे में गए थे। इसका मतलब साफ है कि यासिर की मौत के बाद सुमय्या ने अज़रक़ से शादी की और तायफ में रहती थी और इसलिए सुमय्या पर जुल्मो-सितम और उसकी शहादत के किस्से झूठे हैं।

मुहम्मद दासता (गुलामी) के विरुद्ध नहीं था। जब मुहम्मद के हाथ में सत्ता की लगाम आई तो उसने हजारों लोगों को दास बनाया। हालांकि मक्का छोड़ने के मुहम्मद के हुक्म से सामाजिक तानाबाना बिगड़ने लगा और उसके

खेमे में बगावत पनपने लगी। मुहम्मद ने मक्का छोड़ने का आदेश दिया तो इससे सामाजिक व्यवस्था छिन्न-भिन्न होने की स्थिति आ गई और विद्रोह पनपने लगा। स्थानीय लोगों को मक्का छोड़ने का आदेश देने और उनके धर्म का उपहास उड़ाने के कारण मुहम्मद अपने ही लोगों के बीच अवांछित हो गया। हालांकि मक्का के लोगों ने उसे धर्म के आधार पर कभी परेशान नहीं किया। मुसलमान अनेक आधारहीन दावे करते हैं। बहुदेववादी सामान्यत: दूसरे की आस्था व विश्वास पर चोट नहीं पहुंचाते। बहुदेववादियों का स्वभाव ही विविधता का सम्मान करने वाला होता है। काबा में 360 मूर्तियां थीं और ये मूर्तियां अलग-अलग जनजातियों के संरक्षकों की थीं। उस समय अरब में यहूदी, ईसाई, जोराष्ट्रियन (Zoroastrians), सैबियंस (लुप्त हो चुका अद्वैतवादी सम्प्रदाय) और सभी तरह के धर्मावलंबी रहते थे। ये सभी स्वंत्रतापूर्वक अपने-अपने धर्म को निभाते थे। अरब में दूसरे पैगम्बर भी थे, जो अपने धर्म पर उपदेश देते थे। इस्लाम के आने के साथ ही अरब में धार्मिक असहिष्णुता पैदा हुई।

मक्का में मुहम्मद या मुसलमानों पर अत्याचार का कोई प्रमाण नहीं मिलता है। फिर भी मुसलमान ऐसा दावा करते हैं, क्योंकि मुहम्मद ने यह दावा किया था। आश्चर्यजनक रूप से कुछ गैर-मुस्लिम इतिहासकार, जो इस्लाम से जरा भी सहानुभूति नहीं रखते थे, मुहम्मद व मुसलमानों के इन झूठे दावों के मकड़जाल में उलझ गए और उन्हीं के झूठ को दोहराने लगे।

मुहम्मद ने पीड़ित होने का ढोंग किया, जबकि वास्तविकता में वह खुद अत्याचारी था। मुसलमान भी यही कर रहे हैं। सभी जगह मुसलमान हत्याएं कर रहे हैं, लोगों को सता रहे हैं और जुल्म कर कर रहे हैं, पर फिर भी चिल्लाते हैं कि उनके ऊपर जुल्म हो रहा है, उन्हें दबाया जा रहा है। इस परिघटना को समझने के लिए मुहम्मद और उसके अनुयायियों का मनोविज्ञान समझना पड़ेगा। अगले अध्याय में हम इस मनोविज्ञान को समझाएंगे। तथ्य यह है कि मुहम्मद ने उस समय से ही जब वह मक्का में रहता था, असहिष्णुता का पाठ पढ़ाना शुरू कर दिया था। मुसलमान अक्सर मुहम्मद की सहिष्णुता के साक्ष्य के रूप में सूरा 108 का हवाला देते हैं, जिसमें लिखा है:

ऐ मुहम्मद इनसे कह दो:
इनसे कह दो ओ, तुम जो हमारे विश्वास को नकारते हो!
मैं उसकी पूजा नहीं करता हूं, जिसे तुम पूजते हो,
न तुम उसकी इबादत करोगे, जिसकी मैं करता हूं।
और मैं उसकी बंदगी नहीं करूंगा, जिसकी तुम करते आए हो।
तुम्हें तुम्हारा रास्ता मुबारक और मुझे मेरा।

मौदूदी, कुतुब और दूसरे मुस्लिम विद्वान इसे बेहतर जानते हैं। वे इस सूरा को असहिष्णुता का संकेत नहीं मानते हैं। मौदूदी कुरान की अपनी व्याख्या में लिखता है:

यह सूरा पढ़ते समय अगर पृष्ठभूमि ध्यान में रखी जाए तो यह मालूम होता है कि इसे धार्मिक सहिष्णुता के लिए नहीं लिखा गया, जैसा कि आज के कुछ लोग दावा करते हैं, बल्कि यह इसलिए लिखा गया ताकि मुसलमानों को गैर मुस्लिमों (काफिर) के महजब, पूजा पद्धति और आराध्यों से दूर किया जा सके। यह बताया जा सके कि गैर मुस्लिम पापी हैं, घृणित हैं और यह फैलाया जा सके कि इस्लाम और कुफ्र में न कोई समानता हो सकती है और न ही किसी व्यक्ति के इस्लाम और कुफ्र (इस्लाम को न मानना) के बीच का मिश्रित रास्ता अपनाने की गुंजाइश है। हालांकि यह सूरा शुरुआत में इसलिए जोड़ा गया ताकि इस्लाम के विरोध में आ चुके मक्का के मूल निवासी कुरैशों के साथ समझौता किया जा सके। फिर भी यह केवल क़ुरैश के लिए नहीं था, बल्कि इसे कुरान का हिस्सा बनाया गया। कहा गया कि अल्लाह ने मुसलमानों को शाश्वत शिक्षा दी है कि वे, जैसे चाहें और जहां चाहें, कुफ्र

के धर्म से खुद को शब्दों व कार्यों के जरिए मुक्त करें। और बिना किसी हिचक के ऐलान करें कि वे धर्म के मामले में गैरमुस्लिमों के साथ कोई समझौता नहीं कर सकते। यही कारण है कि यह सूरा तब और प्रचारित किया जाने लगा जब उन लोगों की मौत हो गई, या वे लोग विस्मृत हो चुके थे, जिनको जवाब देने के लिए यह बनाया गया था और वह मुसलमान भी इसका लगातार उच्चारण करते थे, जो उस समय मुसलमान नहीं बने थे, जब ये रचा गया।

और जब इन लोगों को मरे-खपे सदियां बीत चुकी हैं तो भी मुसलमान इस सूरा को बार-बार पढ़ते (जाप करते) हैं, ताकि खुद को यह भरोसा दिला सकें कि दीन तभी मुकम्मल हो सकता है जब कुफ्र और उसके तौर-तरीकों से नफरत की जाए और इससे दूर रहा जाए।[28]

मदीना के प्रवास पर जाना

इतने सारे बच्चों की देखभाल करने और अपने में खोये रहने वाले शौहर का साथ निभाते हुए खदीजा का ध्यान अपने व्यापार से हट गया। परिणाम यह हुआ कि जब खदीजा की मौत हुई तो परिवार निर्धनता में आ चुका था। खदीजा की मौत के कुछ ही दिन बाद मुहम्मद के एक और अभिभावक, उसके चाचा अबू तालिब की भी मृत्यु हो गई। इन दोनों के साथ छोड़ जाने और मक्का के लोगों की उपेक्षा के चलते मुहम्मद ने मदीना जाने का निर्णय किया, जहां उसे कुछ लोगों से भरोसा मिला था। उसने पहले अपने अनुयायियों को मदीना पहुंचने का आदेश दिया। उसके कुछ अनुयायी मक्का छोड़ने को तैयार नहीं थे। तब मुहम्मद ने कहा कि यदि नहीं गए तो ''उन्हें जहन्नुम में ही जगह मिलेगी।''[29]

मुहम्मद खुद सबसे पीछे खड़ा रहा। फिर एक रात, उसने दावा किया कि अल्लाह ने उसे बताया है, दुश्मन उसे नुकसान पहुंचाएंगे। उसने अपने वफादार दोस्त अबू बक्र से कहा कि वो छिपकर उसके साथ मदीना चले। नीचे की आयत इसी के बारे में है:

ऐ रसूल याद करो किस तरह काफिर (नास्तिक: मुसलमान अन्य धर्मों के मानने वालों को नास्तिक कहते हैं) तुम्हारे (मुहम्मद) खिलाफ साजिश, फरेब कर रहे थे, ताकि तुम्हें कैद कर सकें, तुम्हें मार डालें, तुम्हें तुम्हारे घर से निकाल फेकें। वे फरेब कर रहे थे और अल्लाह भी उन्हें फरेब (झांसा) दे रहा था, और अल्लाह तो सब फरेब करने वालों से बेहतर फरेब करने वाला है। सबसे अच्छा फरेब तो अल्लाह ही कर सकता है। (कुरान 8:30)

मालूम होता है अल्लाह भी केवल अनुमान लगा रहा था कि मक्कावासी मुहम्मद के खिलाफ साजिश रच रहे हैं, लेकिन अल्लाह खुद भी इस बारे में पक्का नहीं था। क्या यह आयत एक पागल इंसान के भीतर के भय को प्रकट करती है? मुहम्मद तीस साल तक मक्का में रहा और मक्कावासियों को ताना मारता रहा, उसी तरह उनके धर्म का अपमान करता रहा, जैसा कि आज का मुसलमान करता है। फिर भी मक्कावासी उसे बर्दाश्त करते रहे। **मुहम्मद के कथित दावों के अलावा इस बात का कोई प्रमाण नहीं कि मक्कावासियों ने मुहम्मद को कोई हानि पहुंचाई हो।**

मुसलमानों द्वारा लिखे गए इतिहास में भी मुहम्मद के साथ अत्याचार होने का प्रमाण नहीं मिलता है। कुरैश कबीले के बड़े-बुजुर्ग मुहम्मद से चिढ़े जरूर थे और मुहम्मद के बुजुर्ग चाचा अबू तालिब के पास शिकायत लेकर भी गए थे और कहा था, 'आपका यह भतीजा हमारे आराध्यों, हमारे धर्म और हमारे देवी-देवताओं के बारे में अपमानजनक बोलता है। हम लोगों को मूर्ख बताते हुए अपशब्द कहता है, हमारे पुरखों को पथभ्रष्ट बताता है। अब या तो आप खुद इसे अपना विरोधी समझते हुए हमारी तरफ से अपमान का प्रतिशोध लीजिए, (क्योंकि आप के साथ भी वही हो रहा है) या फिर छोड़ दीजिए, तो हम ही कुछ उपाय करें।'[30]

अत्याचार करने वाले की भाषा क्या ऐसी होती है? यह तो एक फरियाद थी, मुहम्मद के लिए चेतावनी थी कि

उनके आराध्यों को अपशब्द कहना बंद करे। इसकी तुलना आज के मुसलमानों के उस कृत्य से करें, जब इनके पैगम्बर के कुछ कॉर्टून बने थे। मुसलमानों ने दंगा किया, और यहां तक कि नाइजीरिया और तुर्की जैसे दूरदराज के स्थानों पर भी मुसलमानों ने उन सैकड़ों लोगों की जान ले ली, जिनका उस कॉर्टून से कोई वास्ता ही नहीं था। जबकि कुरैश कबीले के लोगों ने 30 सालों तक अपने देवी-देवताओं का अपमान सहा।

जिस रात मुहम्मद अपने वफादार साथी अबू बक्र के साथ मदीना भागा था, उसी को इस्लामिक कैलेंडर की शुरुआत माना जाता है। मदीना में मुहम्मद ने पाया कि वहां के अरबी मक्कावासियों की तुलना में बौद्धिक रूप से कमजोर थे। दूसरा फायदा यह था कि यहां के लोग उसकी उस पृष्ठभूमि व चरित्र के बारे में बिलकुल नहीं जानते थे, जिससे मक्का के लोग भलीभांति परिचित थे। इसलिए मदीना में मुहम्मद के संदेश अधिक स्वीकार्य रहे।

मुहम्मद अरब का पहला पैगम्बर नहीं था। अरब के दूसरे हिस्सों में और भी पैगम्बर लगभग मुहम्मद के समकालीन थे। इन लोगों में सबसे जाना-पहचाना नाम मुसैलमा का था, जो मुहम्मद के कुछ साल पहले से ही पैगम्बर के रूप में ईश्वर का संदेश लोगों को सुना रहे थे और मुसैलमा अपने क्षेत्र में और अपने क्षेत्र के लोगों के बीच काफी मशहूर व सम्मानित थे, जबकि इस्लाम के पैगम्बर मुहम्मद का अपने ही क्षेत्र में सबसे अधिक विरोध हुआ। रोचक बात यह है कि सिजाह नाम की एक महिला भी पैगम्बर की उपाधि की दावेदार थीं और उनके भी अनुयायियों की संख्या अच्छी-खासी थी। ये दोनों पैगम्बर एकेश्वरवाद का उपदेश दे रहे थे। **इस बात के पक्के साक्ष्य हैं कि इस्लाम के प्रभाव में आने से पूर्व अरब में महिलाओं के पास न केवल अधिक अधिकार थे, बल्कि वे अधिक सम्मानित भी मानी जाती थीं।** अन्य पैगम्बरों ने अपने धर्म के प्रसार के लिए न तो हिंसा का सहारा लिया और न ही लूटा। ये पैगम्बर भूभाग नहीं जीतना चाहते थे और न ही अपना साम्राज्य खड़ा करना चाहते थे, बल्कि बाइबिल की परंपरा के ये पैगम्बर केवल उपदेश देने और लोगों को ईश्वर की शरण में आने के लिए प्रेरित करने में रुचि रखते थे। अरब के पैगम्बरों में केवल मुहम्मद ही ऐसा था, जो हिंसा में विश्वास रखता था और लड़ाका था। उपरोक्त अन्य पैगम्बर एक दूसरे के विरोधी नहीं थे। ये पैगम्बर एक-दूसरे का सहयोग करते थे, न कि प्रभुत्व के लिए आपस में लड़ते थे।

मदीना के अरबियों ने मुहम्मद को आसानी से इसलिए नहीं स्वीकार कर लिया, कि ये लोग उसकी शिक्षाओं (जैसा कि ऊपर बताया गया है, यह शिक्षा केवल एक थी कि मुहम्मद में भरोसा करो) से प्रभावित हुए, बल्कि इसलिए आए क्योंकि ये यहूदियों से प्रतिद्वंद्विता रखते थे। मदीना उस वक्त यहूदी बाहुल्य नगर था। यहूदी अपने धार्मिक विश्वास के आधार पर स्वयं को 'सर्वोत्तम' मानते थे। वे अरबों से अधिका शिक्षित व समृद्ध थे, इसलिए अरबों के मन में यहूदियों के प्रति ईर्ष्या होनी स्वाभाविक थी।

मदीना के अधिकांश भाग पर यहूदियों का अधिकार था। यह शहर यहूदी शहर था। किताब-अल-अग़ानी[31] में वर्णन है कि मदीना में यहूदियों की पहली बस्ती मूसा के समय बसी थी। हालांकि दसवीं सदी की पुस्तक फुतूह अल-बलदन (नगरों का विजय) में अल बलादुरी लिखते हैं कि यहूदियों के मुताबिक ईसा पूर्व 587 में वे (यहूदी) यहां आकर तब बसे, जब बेबीलोन के राजा नेबूख़ज नसर (Nebuchadnezzar) ने जेरुसलम को नष्ट कर दिया और यहूदियों को दुनियाभर में अलग-अलग बिखरने को मजबूर कर दिया। मदीना में यहूदी व्यापारी, सुनार, लोहार, शिल्पकार और किसान थे, जबकि अरबी लोग मजदूर थे और यहूदियों के यहां लिए मजदूरी करते थे। अरबी यहूदियों के आने के करीब हजार साल बाद (वर्ष 450 या 451 ईसवी) में उस समय आए, जब यमन में आई भयानक बाढ़ के कारण सबा क्षेत्र की कई अरब जनजातियां अरब के दूसरे भागों में पलायन कर गईं। अरबी मदीना में 5वीं सदी में आर्थिक शरणार्थी के रूप में आए। इस्लाम कबूल करने के बाद अरबों ने अपने अन्नदाताओं की ही सामूहिक हत्या की और उन्हें समाप्त कर दिया, फिर उनके नगर पर कब्जा कर लिया।

अरबों ने जब यसरब, जिसे बाद में मदीना कहा गया, में पांव जमा लिए तो उन्होंने यहूदियों पर हमला करना और उनके साथ लूटपाट करना शुरू कर दिया। अरबों के अत्याचार पर एक पीड़ित की तरह यहूदी बस यही कहते रहे: जब हमारा मसीहा आएगा हम इन जुल्मों का हिसाब लेंगे। जब इन मदीनावासी अरबों ने सुना कि मुहम्मद अल्लाह के पैगम्बर होने का दावा कर रहा है और स्वयं को उसी पैगम्बर के रूप में पेश कर रहा है, जिनके बारे में मूसा (यहूदियों के पैगम्बर) कह गए थे तो उन्होंने सोचा कि मुहम्मद और इस्लाम को स्वीकार करने से वे यहूदियों से बहुत आगे हो जाएंगे।

इब्ने-इसहाक बताता है: 'अब अल्लाह ने अरबों के लिए इस्लाम का रास्ता उसी जमीन (मदीना) पर तैयार कर दिया, जहां वे उन यहूदियों के साथ रहते थे, जिनका वर्णन इंजील (धर्मग्रंथ) में ज्ञानियों के रूप में था। हालांकि उस वक्त अरबी खुद बहुदेववादी व मूर्तिपूजक थे। अरबी यहूदियों की बस्ती पर हमला करते थे और जब यहूदी इससे मायूस होते तो कहते, 'एक पैगम्बर जल्द ही आएगा। वह दिन दूर नहीं। हम सब उसका अनुसरण करेंगे और तुम सबको सबक सिखाएंगे।' इसलिए जब मदीना वासी अरबों ने जब अल्लाह के रसूल का संदेश सुना तो उन्होंने एक-दूसरे से कहा, 'यह वही पैगम्बर है, जिसका नाम लेकर यहूदी हमें चेतावनी देते हैं। इस पैगम्बर की शरण में यहूदियों से पहले हम चले चलें!''[32]

यह विडम्बना थी कि यहूदी धर्म और मसीहा के आने का इसका विश्वास इस्लाम की ताकत और अरब में यहूदियों के नरसंहार का कारण बना। यह कारण न होता तो इस्लाम वैसे ही बेमौत मारा जाता, जैसा कि दूसरे संप्रदायों के साथ हुआ था।

फिर से जान लीजिए, **मुहम्मद के इस दावे का कोई प्रमाण नहीं है कि मक्कावासियों ने मुसलमानों पर जुल्म किए थे।** हालांकि मुसलमान और कुछ गैर-मुसलमान इतिहासकार बिना कुछ पूछे बार-बार इस दावे को दोहराते हैं। मुसलमानों के प्रति वह गुस्सा और बैर मुहम्मद के व्यवहार के कारण उपजी लोगों की प्रतिक्रिया थी और यह प्रतिक्रिया उस हिंसा व अत्याचार के मुकाबले कुछ नहीं हैं, जो मुसलमान अन्य धर्मों के लोगों के साथ करते हैं।

मक्कावासियों ने नहीं, बल्कि मुहम्मद ने ही मुसलमानों को अपना घर छोड़ने का आदेश दिया था। उसी ने लालच देते हुए यह वादा किया था:

जिन्होंने काफिरों का दमन सहते हुए अल्लाह की राह में अपने घरों को छोड़ा, हिजरत की, उन्हें हम बिला शक दुनिया में अच्छी जगह बिठाएंगे; और सच यह है कि यदि तुम लोग आइंदा अल्लाह की राह में सब्र करोगे, परवरदिगार पर भरोसा रखोगे तो इनाम इससे भी बेहतरीन होगा! (कुरान. 16:41)

इन अप्रवासी अरबियों के पास आय का कोई साधन नहीं था। मुहम्मद उन सबको 'सुंदर घर' और पुरस्कार देने का वादा पूरा कैसे करता, जो उनके कहने पर अपने घर-बार छोड़कर मदीना की ओर निकले थे? ये अप्रवासी गरीब हो चुके थे और मदीना के स्थानीय लोगों की भीख पर जिंदा थे। मुहम्मद की विश्वसनीयता दांव पर लग गई थी। मुहम्मद के प्रति उसके अनुयायियों में असंतोष का बुलबुला फूटने लगा था। कुछ तो मुहम्मद का खेमा छोड़कर जाने लगे। तब मुहम्मद ने जो आयत दी, उसमें साफ-साफ धमकी दी गई थी। यह आयत थी:

वे (इस्लाम को न मानने वाले) चाहते हैं कि तुम भी उन्हीं की तरह काफिर बन जाओ, ताकि तुममें और उनमें कोई भेद न रहे। इसलिए उनमें से किसी को दोस्त न बनाओ, जब तक कि वे अल्लाह की राह में अपने घरों को त्यागने (हिजरत करने) को तैयार न हो जाएं; यदि वे ईमान लाने से इंकार करें तो उन्हें जहां पाओ उठा लाओ और मार डालो और उनमें से न तो किसी से दोस्ती करो और न किसी को अपना मददगार बनाओ। (कुरान. 4:89)

गैर-मुस्लिमों से दोस्ती पर पाबंदी और काफिरों को दी गई धमकी वाली इस आयत को देखते हुए उस दावे पर

कैसे विश्वास कर लें कि मक्कावासियों ने मुहम्मद व उनके अनुयायियों को उनके घरों से भगाया था? इस आयत में मुहम्मद अपने अनुयायियों को इस्लाम छोड़ने या मक्का वापस जाने वालों की हत्या करने को कह रहा है। यह गुयाना के जोन्स टाउन कम्पाउंड में जिम जोन्स के उस भयानक आदेश की याद दिलाता है, जिसमें उसने अपने आदमियों को परिसर से भागने की कोशिश करने वालों को गोली मार देने का आदेश दिया था। मुहम्मद ने ये सब इसलिए किया, ताकि वह अनुयायियों को परिवार से अलग-थलग करके उन पर नियंत्रण मजबूत कर सके और अपने उसूल थोप सके। जब कभी कोई इंसान अपने परिवार और दोस्तों से अलग होकर ऐसे सम्प्रदाय में शामिल होता है, जहां हर व्यक्ति सम्मोहन की अवस्था में हो तो उसके लिए अपने नेता की प्रभुत्व पर सही या गलत का सवाल उठाना मुश्किल होता है।[33]

फूट डालो और राज करो

जो उसे छोड़ेगा, उसे अल्लाह सजा देगा जैसी उन्मादी धमकियां देने के बावजूद, मुहम्मद को अपने अनुयायियों की आजीविका का कोई स्त्रोत ढूंढना था। इस समस्या से निपटने के लिए उसने अपने अनुयायियों को मक्का के कारवां को लूटने के लिए कहा। उसने अपने अनुयायियों को भड़काया कि मक्कावासियों ने उन्हें घर से भगाया है, इसलिए उनको लूटना जायज है।

अल्लाह ने ईमान वालों को उनसे (काफिरों से) लड़ने (जिहाद) की इजाजत दी है, क्योंकि उन पर युद्ध फर्ज किया गया, वे सताये गए थे और निश्चित ही अल्लाह उन लोगों की मदद करेगा। उन्हें बिना किसी न्यायसंगत वजह के अपने घरों से भगा दिया गया; सिर्फ इसलिए कि उन्होंने कहा: अल्लाह हमारा परवरदिगार है। (कुरान.22:39-40)

इस बीच, मुहम्मद ने मुसलमानों को गैर-मुस्लिमों से लड़ने के लिए उकसाने वाली कई आयतें दीं:

ऐ रसूल! मुसलमानों को जिहाद के वास्ते तैयार करो। घबराओ मत, अल्लाह तुमसे वादा करता है कि यदि तुम्हारे साथ 20 भी ऐसे होंगे, जिनमें धीरज और जुनून है, तो ये 20 दो सौ को मिटा देंगे: यदि तुम्हारी तादाद 100 होगी तो तुम एक हजार काफिरों को मिटाने में कामयाब होगे: इन मोमिनों को जिहाद के लिए समझाओ, क्योंकि इनके पास समझ नहीं है। (कुरान.8:65)

मुहम्मद ने गैर-मुस्लिमों पर हमले को उसी तरह जायज ठहराया, जिस तरह आज उसके अनुयायी विक्टिम कार्ड खेलकर हत्या, विस्फोट व आंतकी कार्रवाइयों को अंजाम देते हैं। उसने दावा किया कि गैर-मुस्लिम मुसलमानों को सता रहे हैं और उनके खिलाफ युद्ध छेड़ रहे हैं। जबकि हकीकत यह थी कि जैसे ही मुहम्मद के अनुयायियों की संख्या ठीक हो गई, और उसके आदमी उसके लिए हथियार उठाने को तैयार हो गए तो उसने मक्का के कारवां पर हमला करके और कारवां के लोगों की हत्या करके दुश्मनी शुरू की।

मुहम्मद के दावे में विरोधाभास स्पष्ट है। एक आयत में मुहम्मद अपने अनुयायियों से मदीना कूच करने का आह्वान करता है और साथ ही मदीना नहीं जाने का इरादा रखने वाले अपने अनुयायियों को हत्या व जहन्नम की धमकी भी देता है। वहीं दूसरी आयत में मुहम्मद झूठा दावा करता है कि मुसलमानों को न्यायसंगत वजह के बिना मक्का से निकाला गया और उनकी ओर इशारा करते हुए कहता है कि 'वे जिन पर युद्ध थोपा गया।' मुसलमान भी आज यही करते हैं। मुसलमान अपने बीच रहने वाले गैर-मुस्लिमों को सताते हैं, डराते हैं, अल्पसंख्यकों का सुनियोजित सफाया करते हैं और फिर भी वे खुद को पीड़ित के रूप में पेश करते हुए ऐसा दिखाते हैं कि मानो बाकी सब उन पर अत्याचार कर रहे हैं।

पीड़ित होने के इसी दावे के सहारे वे गैर-मुस्लिमों पर अत्याचार करने को उचित ठहराते हैं। अरबी कहावत है:

''दराबनी व, वाबका; सबाकनी, वाशतका।'' मतलब: 'आगे चलें तो धूल उड़ावैं, पीछे चलें तो ठोकर मारें!' यह कहावत मुहम्मद की की कार्यशैली को बखूबी बयान करती है। मुहम्मद के अनुयायी वही गंदा खेल आज भी खेल रहे हैं। इस रणनीति ने मुहम्मद को बहुत कामयाबी दी। मुहम्मद ने भाई को भाई से, बेटे को बाप से लड़वा दिया और कबीलों के बीच की पारस्परिक सद्भावना को छिन्न-भिन्न करवा कर सामाजिक ताना-बाना बिगाड़ दिया। इस युक्ति का इस्तेमाल करते हुए मुहम्मद पूरे अरब को अपने प्रभुत्व में ले आया।

यह मत सोचिए कि अरबी प्रजाति में कुछ गड़बड़ी थी, इसलिए वे मुहम्मद के प्रभुत्व को स्वीकार करने की मूर्खता कर बैठे। पश्चिमी देशों के इस्लाम कबूल करने वाले लोग भी अपने लोगों और अपने देश के प्रति उतने ही बड़े शत्रु बन बैठते हैं, जैसा कि अरबों ने 1400 साल पहले किया था। जॉन वाकर लिंद ने इस्लाम कबूल किया और अल-कायदा की ओर से अपने ही देश अमरीका के खिलाफ लड़ने के लिए अफगानिस्तान चला गया। जोसफ कोहेन एक रुढ़िवादी यहूदी था और उसने इस्लाम स्वीकार किया; आज वह कहता है कि इजराइलियों की हत्या करना, यहां तक कि अपने यहूदी बच्चों का कत्ल करना जायज है।[34] बीबीसी की पत्रकार यूवान रिड्ले 2001 में अफगानिस्तान गई थीं, जहां उसे तालिबान ने पकड़ लिया था। जब वह मुक्त हुई तो इस्लाम कबूल कर चुकी थी और आज वो अपने ही देश ब्रिटेन से इतना नफरत करती है कि उसे (अमरीका और इजराइल के बाद) सर्वाधिक घृणित देश बताती है। वह आत्मघाती हमलों का समर्थन करती है और इसे 'शहादत के कार्य' बताती है। वह कुख्यात आतंकवादी अबू मुसब अल-जरकावी को 'हीरो' कहती है। अबू मुसब अल-जरकावी वही शैतान है, जिसने ईराक में अभियान चलाकर हजारों लोगों का कत्ल कर दिया था, जार्डन के शादी समारोह में बम धमाका कराकर 60 लोगों की जान ले ली थी और 115 लोगों को अपंग करने वाली आतंकवादी वारदात का मास्टरमाइंड था। यह महिला रिड्ले कहती है कि रूस के मास्को में थिएटर बंधक कांड और बेसलान स्कूल सामूहिक हत्याकांड का मास्टरमाइंड चेचन्या का आतंकवादी नेता शमिल बैसयेव एक शहीद है और उसे जन्नत नसीब होगी।[35] नफरत के इस कारोबार से अरबियों और आज खुद को मुसलमान कहने वाले लोगों को अब कामयाबी मिली है और यह दूसरों के लिए भी कारगर है।

जन्नती इनाम का वादा

कुरान की बहुत सी आयतें मुसलमानों को इस दुनिया में और मरने के बाद दूसरी दुनिया में पुरस्कार का लालच देकर निर्दोषों पर हमला करने और उन्हें लूटने को उकसाती हैं। 'अल्लाह ने तुमसे बहुत सी गनीमतों (माल) का वायदा फरमाया था। अल्लाह ने ये माल (लूट का) तुम्हारे लिए भेजा है, तुम इस पर काबिज हो गए तो जितना चाहो लो।' (कुरान.48:20)

मुहम्मद ने गलत कार्य करने वालों को आत्मधिक्कार से बचाने के लिए अपने अल्लाह से कहलवाया, 'युद्ध में जो भी तुम्हारे कब्जे में आए, उस पर मौज करो, वो सब जायज और अच्छा है।'[36]

मुसलमानों द्वारा सदियों से किए जा रहे अत्याचार की दुष्प्रेरणा इस आयत और इससे मिलती-जुलती आयतों से मिलती है। तैमूर लंग (1336-1405 ईसवी) एक क्रूर इंसान था और डकैती व मारकाट की बदौलत सुल्तान बना। तैमूर ने अपने आत्मकथात्मक संस्मरण 'भारत के खिलाफ कूच का इतिहास' में लिखा है:

इतनी कड़ी मेहनत और परेशानी से गुजरते हुए हिंदुस्तान आने के मेरे दो प्रमुख उद्देश्य है। पहला मकसद इस्लाम के दुश्मन काफिरों से जंग करना है; और इस मजहबी लड़ाई के जरिए आगे की जिंदगी के लिए अल्लाह से अपने लिए इनाम हासिल करना। मेरा दूसरा मकसद सांसारिक है; वह यह कि इस्लाम की सेना इस जंग में काफिरों के धन-दौलत व मूल्यवान चीजों को लूटकर मालदार हो सकेगी: जो मुसलमान मजहब के लिए जंग लड़ते

हैं, उनके लिए जंग में लूटपाट उतना ही पाक है, जितना कि मां का दूध और इस माल का उपभोग करना पूरी तरह जायज है और अल्लाह की इनायत है।[37]

अगर एक बार हम यह मान भी लें कि मक्का से मुहम्मद और उसके 70-80 अनुयायियों को जबरन भगाया गया था, तो भी इससे मक्का के लोगों के कारवां पर हमले को उचित कैसे ठहराया जा सकता है ? उन कारवां में केवल उन्हीं का माल नहीं होता था, जिन्होंने कथित रूप से मुहम्मद व उनके अनुयायियों को देश निकाला दिया था। यदि किसी को लगता भी हो कि किसी शहर में उसके साथ अत्याचार हो रहा है तो भी क्या सिर्फ इस आधार पर उस शहर के सभी नागरिकों से बदला लेने की कार्रवाई को उचित ठहराया जा सकता है ? मुसलमान जब किसी निर्दोष की हत्या करते हैं, या बम विस्फोट करते हैं तो यही तर्क देते हैं। यदि मुसलमानों को लगता है कि कोई देश उनके साथ मित्रवत् नहीं है तो वे उस देश के निर्दोष नागरिकों की हत्या करना उचित मानते हैं। **मुसलमान आज दुनिया को हैरान-परेशान करने वाला जो भी काम कर रहे हैं, वो उसी का अनुसरण है, जो मुहम्मद ने किया था।**

अध्याय 22 में, कुरान की 39वीं आयत में अल्लाह जंग (जिहाद) की इजाजत देता है। यह वही आयत है जिससे ओसामा बिन लादेन ने अमरीका को लिखे धमकी भरे खत की शुरुआत की थी। क्या हम वास्तव में यह कह सकते हैं कि इस्लाम का आतंकवाद के साथ कोई लेना-देना नहीं है ?

हिंसा को उकसाना

मदीना में मक्का से आए अप्रवासी मुट्ठीभर थे। हमले को कामयाबीपूर्वक अंजाम देने के लिए मुहम्मद को मदीना के उन स्थानीय लोगों की भी आवश्यकता थी, जो हाल ही मुसलमान बने थे। ऐसे नए मुसलमानों को मुहम्मद 'अंसार' (मददगार) कहकर बुलाता था। हालांकि मदीना वालों ने इस्लाम इसलिए नहीं कबूल किया था कि वे मक्का से आने वाले कारवां पर हमले करें या लूटें। अल्लाह में विश्वास करना एक बात है पर हमला करना, लूटपाट करना और लोगों की हत्याएं करना अलग बात है। मुहम्मद से पहले अरब के लोग धार्मिक जंग के आदी नहीं थे। आज भी ऐसे बहुत से मुसलमान हैं, जो अल्लाह को मानते हैं, लेकिन धर्म के नाम पर दूसरों की हत्या करना या जंग करना ठीक नहीं मानते। ऐसे उदार अनुयायियों के दिमाग में कट्टरता भरने के लिए मुहम्मद ने अपने अल्लाह से यह हुक्म जारी करवाया:

(मुसलमानो) तुम पर जिहाद फर्ज़ किया गया, यह तुम्हारी भलाई के लिए है। यह कोई अजूबा नहीं कि तुम किसी चीज़ (जिहाद) को नापसन्द करो, हालांकि वह तुम्हारे हक में बेहतर हो और तुम किसी चीज़ को पसन्द करो हालॉकि वह तुम्हारे हक में बुरी हो, और अल्लाह (तो) जानता ही है मगर तुम नहीं जानते हो। (कुरान.2:216)

शीघ्र ही पैगम्बर के ये प्रयास कामयाब होने लगे। लूटपाट से मालामाल होने का लालच और कयामत के दिन इनाम के वादे से आकर्षित होकर मदीना के मुसलमान मुहम्मद के लूटपाट और डकैती के व्यवसाय से जुड़ने लगे। मुहम्मद की फौज बढ़ी तो उसकी महत्वाकांक्षा भी हिलोरें मारने लगीं और यह डकैत सुल्तान बनने के ख्वाब सजाने लगा। मुहम्मद ने अनुयायियों को न केवल 'अल्लाह की राह' का वास्ता देकर अपने लिए जंग लड़ने को तैयार किया, बल्कि उन्हें जंग में होने वाला खर्च देने के लिए भी तैयार कर लिया।

और अल्लाह की राह में ख़र्च करो और अपने हाथ जान हलाकत में न डालो और नेकी करो। बेशक अल्लाह नेकी करने वालों को दोस्त रखता है। (कुरान 2:195)

देखिए जरा कि मुहम्मद ने लूटपाट, खौफ और हत्याओं को 'भलाई' को कैसे जोड़ा। तोड़-मरोड़ कर पेश की गई नैतिकता की वजह से ही मुसलमान अपनी अंतरात्मा मारने और दूसरे समूहों के प्रति सामाजिकता असहिष्णुता

के साथ वाली स्थितिजन्य नीति अपनाने में सफल होते हैं। मुसलमानों के लिए वो स्थिति अच्छी मानी जाती है, जिसमें वह फायदे में हो।

मुहम्मद ने अपने अनुयायियों को यह विश्वास दिलाया कि इस्लाम के लिए जंग में धन-दौलत से सहायता करना और आतंकवादी वारदातों को अंजाम देना वह सर्वश्रेष्ठ पुण्य कार्य है, जिससे अल्लाह खुश होता है।

आज भी जो मुसलमान आतंकवादी वारदातों में सीधे भाग ले पाने में सक्षम नहीं होते, वे इस्लामी जकात (दान) के रूप में धन देकर इसकी भरपाई करते हैं। ये जकात अस्पताल, अनाथालय, विद्यालय या वृद्धाश्रम बनाने के लिए नहीं दी जाती है, बल्कि इस्लाम के विस्तार के उद्देश्य से मस्जिद व मदरसे बनाने, आतंकवादियों को प्रशिक्षण देने और वित्तीय जिहाद के लिए दी जाती है। इस्लामी जकात से उन्हीं गरीबों की सहायता की जाती है, जो मुसलमानों के राजनीतिक मकसद में सहायक होते हैं। इस्लामी रिपब्लिक ऑफ ईरान द्वारा लेबनान के हिज़बुल्ला समूह को बड़े पैमाने पर धन दिया जाना इसका एक उदाहरण है। जबकि ईरान की बड़ी आबादी गरीबी व दुश्वारी में जीवन काट रही है। ईरान में जो किस्मत वाले हैं, वो कुछ काम पा जाते हैं, पर इन्हें भी 100 डालर प्रति माह यानी पांच-छह हजार मासिक पगार में जिंदा रहना पड़ता है। ईरान में लोग रोटी, कपड़ा व रोजगार की किल्लत से जूझ रहे हैं। ऐसे में भी ईरान द्वारा लेबनानियों पर धन लुटाने का क्या मतलब है ? दरअस्ल, ईरान लेबनानियों को इस्लाम की अच्छी सूरत दिखाकर इजराइल के विरुद्ध युद्ध में इस्तेमाल करना चाहता है।

जब लोग मुहम्मद के सैन्य अभियानों के लिए पर्याप्त धन नहीं देते थे तो वह गुस्से में उन्हें झिड़कते हुए कहता था: और तुम्हें क्या हो गया है, जो तुम अपने माल अल्लाह की राह में खर्च नहीं कर रहे ? अल्लाह ही दोनों जहान (जमीन व आसमान) का मालिक व वारिस है। तुममें से जिसने फतह से पहले (धन-दौलत) खर्च किए, जंग लड़े (जिहाद किए), उनका दर्जा उनसे कहीं बढ़कर है, जो लोग बाद में लड़े, खर्च किए। अल्लाह ने नेकी का वादा सबसे किया है; और अल्लाह तुम्हारे हर किए या न किए से वाकिफ है। (कुरान.57:10)

मुहम्मद ने बहुत चालाकी से अपनी जंग के लिए मुसलमानों द्वारा खर्च किए जा रहे धन को अल्लाह को दिए गए ऋण के रूप में पेश कर दिया, और वादा किया कि इसका फल ब्याज सहित मिलेगा।

तुममें से कौन-कौन ऐसे हैं जो अल्लाह को कर्जा देने की इच्छा रखता है ? जान लो! अल्लाह इस उधार के बदले कई गुना देगा और वह भी जन्नत के सिला के साथ। (कुरान.57:11)

मुहम्मद ने अपने अल्लाह से कहलवाया कि उसके जंगी अभियानों में धन से मदद करने वालों को बड़ा इनाम मिलेगा, पर वह यह नहीं चाहता था कि उसको धन देने वाले अपने योगदान व बलिदान को किसी से बताएं। मतलब यह कि कुर्बानी लेना मुहम्मद का विशेषाधिकार था। वह चाहता था कि मुसलमान उस पर अपना धन भी लुटाएं और अहसानमंद भी रहें कि उसने सेवा का मौका दिया:

जो लोग अपने माल ख़ुदा की राह में ख़र्च करते हैं और फिर ख़र्च करने के बाद किसी तरह का अहसान नहीं जताते हैं और न जिन पर अहसान किया है उनको जताते हैं उनका अज्र (सवाब) उनके परवरदिगार के पास है। उन पर न कोई ख़ौफ़ होगा और न वह ग़मगीन होंगे। (कुरान.2:262)

गैर-मुस्लिमों के खिलाफ जंग छेड़ने और उनकी गरदनें तोड़ देने के लिए उकसाने के बाद मुहम्मद आश्वस्त करता है कि उन्हें इसका इनाम मिलेगा।

तो जब जंग में तुम्हारे सामने काफिर आए, तो उसकी गर्दन मरोड़ दो और जब उस पर काबू पालो तो जब तक जंग खत्म न हो जाए उन्हें कैदी बनाए रखो, और इसके बाद चाहो तो अहसान दिखाते हुए आज़ाद कर दो या फिर छोड़ने के बदले फिरौती लो; याद रखो कि अल्लाह चाहता तो काफिरों से और तरह से

बदला लेता और उनसे वसूलता, पर उसने चाहा कि तुम्हारी आजमाइश इस तरह की जाए; अल्लाह अपनी राह में शहीद हुए लोगों के कार्यों को जाया नहीं होने देगा। (कुरान.47:4)

दूसरे शब्दों में अल्लाह मुसलमानों की मदद के बिना भी काफिरों को कत्ल करने में सक्षम है, लेकिन वह आस्था परखने के लिए यह काम मुसलमानों से कराना चाहता है। इस प्रकार **अल्लाह उस माफिया या ठगों के गिरोहों के गॉडफादर की तरह है, जो अपने आदमियों को अपनी निष्ठा साबित करने के लिए हत्या करने को कहता है। इस्लाम में आस्तिकता की परख खून का प्यासा होने और कत्ल करने के लिए तैयार रहने से की जाती है।** तभी उसने कहा:

और मुसलमानो, गैर-मुस्लिमों के खिलाफ हथियार उठा लो, जिहाद के लिए जंग के मैदान में दौड़ाने के लिए घोड़े तैयार करो, इससे अल्लाह के दुश्मनों (व इनके मददगारों) और तुम्हारे अपने दुश्मनों में तुम्हारा खौफ पैदा होगा और साथ ही दूसरों पर भी तुम्हारी धाक जमेगी। तुम भले ये न समझ पाओ, लेकिन अल्लाह इसे जानता है। अल्लाह की राह में तुम जो भी खर्च करोगे, तुम्हें वह पूरा वापस मिलेगा और तुम्हारे साथ कोई नाइंसाफी नहीं होगी। (कुरान.8:60)

मुहम्मद ने उसकी तरफ से गैर-मुस्लिमों के खिलाफ लड़ने वाले और उसको अल्लाह का रसूल स्वीकार करने वालों को मौत के बाद भारी-भरकम इनाम मिलने का खोखला वादा किया। इनाम का निरुपण करने में मुहम्मद बहुत उदार और खुले दिल का था। उसने दावा किया कि ये इनाम दुनिया की बेहतरीन चीजों, सुख-सुविधा के रूप में होगा। मुहम्मद ने दावा किया कि जन्नत में कभी न खत्म होने वाला यौन सुख मिलेगा। मुहम्मद ने चेतावनी भी दी कि उसके जंगी अभियानों में धन-दौलत से मदद करने में कंजूसी बरतने वालों को कयामत के दिन कठोर सजा मिलेगी:[38]

ऐ ईमान वालो! मैं तुम्हें वह फायदेमंद तरीका फरमाऊं, जिससे तुम अल्लाह के दरबार में सज़ा पाने से बचोगे? अल्लाह में यकीन करो और उसके पैगम्बर में भी। अपने जान और माल से अल्लाह के मकसद से जंग करो, जिहाद करो। अगर तुम समझ जाओ तो यही तुम्हारे लिए अच्छा होगा। वह तुम्हें तुम्हारे गुनाहों के लिए माफ कर देगा और तुम्हारे लिए खूबसूरत जन्नत के दरवाजे खोल देगा, उन बागों में दाखिल करेगा जिसके नीचे नहरें बहती हैं।

वह तुम्हें पाकीजा मकानात में जगह देगा। यह तुम्हारी बड़ी कामयाबी होगी। (कुरान 1.61:10-11)

(जन्नत में) तुम अपने परवरदिगार की किस-किस नेमत का इंकार करोगे। वहां आरामदायक गद्दे पर मसनद लगाकर बैठोगे और दोनों बागों के मेवे इस कदर करीब होंगे (कि बैठे-बैठे पेड़ों पर से खा लो)। वहां तुम्हारे लिए ऐसी अप्सरा सी खूबसूरत कुंवारी औरतें होंगी, जिन्हें तुमसे पहले न तो किसी इंसान ने छुआ होगा, न नजर उठाकर देखा होगा और न किसी जिन्न ने। तुम परवदिगार के किस-किस नेमतों को ठुकराओगे। वहां तुम्हारे लिए ये औरतें ऐसी गोरी व हसीन होंगी, जैसे मोती-मूंगा। तुम अल्लाह की किस-किस नेमत को झुठलाओगे। (कुरान.55:53-55)

(जन्नत में) सुंदर बाग-बागीचे होंगे, जिनमें अंगूर लगे होंगे। तुम्हारे साथ हमजोली ऐसी औरतें होंगी, जिनकी जवानी चढ़ रही होगी; और शराब के लबरेज सागर होंगे। (कुरान 78:32-33)

अल्लाह और उसके रसूल में ईमान लाओ, और जिस माल का अल्लाह ने तुमको नाईब किया है, उसमें से अल्लाह की राह में, जिहाद में खर्च करो: क्योंकि तुममें से जो भी अल्लाह व उसके रसूल में विश्वास करेगा और अल्लाह की राह में खर्च करेगा, उसे बड़ा अज्र मिलेगा। (कुरान.57:7)[39]

ये और इस तरह की दूसरी आयतें यह समझने के पर्याप्त हैं कि इतनी सारी इस्लामिक दीनी संस्थाएं आतंकवादी संगठनों का वित्तपोषण करते क्यों पकड़ी गई हैं।[40] सामान्य इंसान सोचता होगा कि दान और आतंकवाद दोनों एक

दूसरे की बिलकुल विरोधी हैं, लेकिन मुसलमान ऐसा नहीं सोचता। इस्लामी दीनी-संस्थाएं इस्लाम के प्रचार और जिहाद के समर्थन के लिए बनाई गई हैं। **हमारे लिए यह आतंकवाद है, जबकि मुसलमानों के लिए यह एक फर्ज है, पवित्र जंग है और अल्लाह की नजर में सर्वाधिक प्रशंसनीय कार्य है।**

इसलिए अल्लाह की राह में जंग करना मुसलमानों के लिए अध्यादेश है, जिसे सारे मुसलमानों को मानना अनिवार्य है। मुहम्मद ने अप्रवासियों को अपने ही लोगों के खिलाफ भड़काया, उकसाया और उन लोगों से बदला लेने का आह्वान किया।

मुसलमानों काफिरों से लड़ आओ। यहां तक कि कोई फसाद बाकी न रहे, ताकि सारी दुनिया अल्लाह के दीन के रंग में रंग जाए। (कुरान.8-39)

जब मुहम्मद के कुछ अनुयायियों ने जंग में भाग लेने से अनिच्छा जाहिर की, तो उसने इनको खूब कोसा और मनमाफिक हुक्म सुनाते हुए अल्लाह के हवाले नई 'हिदायत' जारी करवाई, जिसमें उन लोगों को भयानक नतीजे भुगतने की चेतावनी दी गई, जो मुहम्मद के आदेश की अवहेलना कर रहे थे।

और कुछ मोमिन कहते हैं: (जिहाद) के बारे में कोई सूरा नाजिल क्यों नहीं होती ? लेकिन जब इस बारे में एक स्पष्ट सूरा नाजिल हुई, और उसमें जिहाद की बात कही गई तो कुछ लोग जिनके दिल में मरज है, तुम्हारी ओर ऐसी शक्ल बनाकर देखते हैं, जैसे मौत के डर से उनमें मुर्दनी-बेहोशी छायी हो। ऐसे लोगों को भी अपना दुश्मन समझो और उनसे भी जंग करो। (कुरान.47:20)

ये आयतें सिर्फ एक बात बताती हैं कि इस्लाम की प्रकृति ही लड़ाका है। जब तक लोग इस्लाम में यकीन रखेंगे और कुरान को अल्लाह के शब्द मानते रहेंगे, तब तक इस्लामी आतंकवाद इसी तरह नंगा नाच करता रहेगा। इस्लाम के भीतर के जो लोग सुधार, सहिष्णुता और सभ्यता के साथ संवाद स्थापित करने के लिए आवाज उठाते हैं, उनकी आवाज को गैर-मुस्लिमों के विरुद्ध जंग छेड़ने का हुक्म देने वाली तमाम आयतों वाले कुरान के जानकार आसानी से दबा देते हैं।

अल्लाह की राह में जंग (जिहाद) करो; तुम अपनी जात के सिवा किसी और के लिए जिम्मेदार नहीं हो, ईमान वालों को काफिरों को जलाने के लिए तैयार करो। अल्लाह काफिरों की ताकत को रोक देगा और अल्लाह की ताकत सबसे अधिक है, अल्लाह की सजा भी बड़ी सख्त होती है। (कुरान.4:84)

कामयाबी का आश्वासन देना: और अल्लाह कभी काफिरों को ईमान वालों से आगे नहीं रहने देगा। (कुरान.4:141)

जन्नती इनाम का वादा: जिन लोगों ने ईमान कबूल किया और (अल्लाह के लिए) तिजारत (घरों को छोड़ा), अपने जान और माल से अल्लाह की राह में जिहाद किया, वे लोग अल्लाह के नजदीक दर्जे में कहीं बढ़कर हैं और वे लोग आला दर्जे में शुमार होने वाले हैं।(कुरान.9:20)[41]

मुस्लिम विद्वान हर जगह इस हिंसा को उकसाते हैं। सऊदी अरब के नामचीन मज़हबी शख्सियत, उसके बड़े मुफ्ती जिहाद की भावना का बचाव करते हुए इसे अल्लाह द्वारा प्रदत्त अधिकार बताते हैं।

सऊदी अरब की सरकारी न्यूज एजेंसी एसपीए पर चलाए गए शेख अब्दुल अजीज अल शेख के बयान में कहा गया, 'इस्लाम का विस्तार कई चरणों में हुआ, पहले गुप्त रूप से (मक्का में)और फिर सार्वजनिक रूप से (मदीना में)।'' ये दोनों स्थान इस्लाम में पवित्रतम माने जाते हैं। उन्होंने कहा, 'अल्लाह ने ईमान वालों को अपनी रक्षा करने और उनसे लड़ने का अधिकार दिया है जो उनसे लड़ते हैं, और यह अल्लाह द्वारा जायज किए गए अधिकारों में शामिल है, यह बिलकुल तर्कसंगत है और अल्लाह इससे बिल्कुल नफरत नहीं करता है।'[42]

सऊदी अरब के सबसे वरिष्ठ धार्मिक विद्वान व्याख्या करते हैं कि जंग मुहम्मद की पहली पसंद नहीं थी। 'मुहम्मद

ने दो विकल्प दिए: या तो इस्लाम कबूल कर लो अथवा आत्मसमर्पण कर दो और जज़िया (इस्लामी क्षेत्र में जीवित रहने के लिए काफिरों द्वारा दिया जाने वाला कर) दो, और इसके बदले हमारी ज़मीन पर रहने की इजाजत लो और मुसलमानों की निगरानी में अपने धर्म को मानो।'[43] ये मुफ्ती बिल्कुल ठीक कहते हैं। गैर-मुस्लिमों के प्रति हिंसा अंतिम विकल्प है और तब जब वे धर्म बदलने को न तैयार हों या शांति से खुद को इस्लाम की सेना के हवाले न कर दें। यह मुहम्मद की देन नहीं है। बहुत कम हथियारबंद लुटेरे उस परिस्थिति में भी हिंसा का सहारा लेते हैं, जब उनका शिकार शांति से उनसे लुटने को राजी हो जाए। अपराधी मारकाट का सहारा तब लेते हैं, जब उनका शिकार प्रतिरोध करता है। मैंने इंटरनेट पर पाकिस्तान के प्रमुख इस्लामी विद्वान जावेद अहमद गामिदी से उनके विद्यार्थी डॉ. खालिद जहीर के जरिए डिबेट की थी, जिसमें गामिदी ने कहा, 'संभवत: कुरान में हत्याओं का ज़िक्र उन लोगों के लिए किया गया है, जो या तो कत्ल के दोषी थे अथवा वे उत्पात मचा रहे थे, या फिर उनके लिए जिन्हें दुनिया में जिंदा नहीं रहने लायक घोषित किया गया होगा, क्योंकि उन्होंने अल्लाह के स्पष्ट और ग्राह्य संदेश को मानने से इनकार किया था।' गामिदी उदारवादी मुसलमान हैं। हालांकि वे अपने मजहब को अच्छी तरीके से जानते हैं और इससे भी वाकिफ हैं कि इस्लाम को नकारने वाले इंसान को जिंदा रहने का अधिकार नहीं है और ऐसे इंसान को मार दिया जाना चाहिए।[44]

हमले

मुसलमान अक्सर बड़े गर्व से मुहम्मद के 'जिहाद' का जिक्र करते हैं। यह गर्व भ्रांतियों पर आधारित है। मुहम्मद आमने-सामने की जंग लड़ने से बचता था। वह घात लगाकर हमला करने और अचानक धावा बोलने को प्राथमिकता देता था, ताकि निहत्थे व बेफिक्र शिकार को अचानक धोखे से पकड़ कर कत्ल किया जा सके।

मदीना कूच करने के बाद की दस साल की जिंदगी में मुहम्मद ने अनुयायियों के बीच खुद को ताकतवर महसूस किया और मुहम्मद ने निरीह गैर-मुस्लिमों पर 74 हमले करवाए।[45] इनमें से कुछ हमलों में सामूहिक हत्याएं की गईं और कुछ हमलों का परिणाम यह निकला कि हजारों की संख्या में गैर-मुस्लिमों को घर-बार छोड़कर भागने पर मजबूर होना पड़ा। इनमें से केवल 27 में ही मुहम्मद खुद शामिल हुआ। जिन जिहाद में मुहम्मद ने खुद भाग लिया, उसे ग़ज़वा कहा जाता है।

उन जिहाद (जंग) को सरिय्यह कहा जाता है, जिसका हुक्म मुहम्मद ने दिया, लेकिन इसमें स्वयं भाग नहीं लिया। ग़ज़वा व सरिय्यह दोनों का मतलब हमला, घात और अचानक धावा बोलना होता है। बुखारी अब्दुल्ला बिन काब की उस हदीस का हवाला देते हुए कहता है: अब्दुल्ला बिन काब ने कहा, 'जब भी अल्लाह के रसूल के मन में गजवा करने की इच्छा होती तो वे अपने अस्ली इरादे छिपा लेते थे और दूसरी तरह के गज़वा की ओर इशारा करते।'[46]

जब मुहम्मद ने जंग में भाग लिया, वह हमेशा अपनी फौज के साथ विशेष सुरक्षित घेरे में पीछे ही खड़ा रहा। मुहम्मद के किसी भी प्रामाणिक जीवन वृत्त में यह पढ़ने को नहीं मिलता है कि वह कभी खुद लड़ा हो।

मक्का में लड़ी गई एक जंग, जिसे सैक्रीलीजियस वार यानी धर्मद्रोह युद्ध कहा जाता है, में मुहम्मद ने अपने चाचाओं की सुरक्षित आड़ में भाग लिया। मुहम्मद तब करीब 20 वर्ष का था और, इस जंग में उसका काम संघर्ष के दौरान दुश्मन द्वारा छोड़े गए तीरों को इकट्ठा कर अपने चाचाओं को देना था। जैसा कि म्यूर व्याख्या करते हैं: जीवन काल के किसी हिस्से में शारीरिक साहस और जंगी दिलेरी के गुण पैगम्बर की विशेषता नहीं रहे।[47]

मुहम्मद और उसके आदमियों ने नगरों में निवासियों को चेतावनी दिए बिना घात लगाकर हमले किए। निहत्थे नागरिकों पर चढ़ाई की और जितनों को मार सकते थे, मार डाला। इन समुदायों के धन-दौलत, पशु धन, हथियार व अन्य सामानों को लेकर चले गए, साथ में उनके बीबी-बच्चों को भी उठा ले गए। ये हमलावर कभी-कभी

महिलाओं व बच्चों को फिरौती लेकर छोड़ते थे, या फिर महिलाओं व बच्चों को गुलाम बनाकर रखते थे अथवा बेच देते थे। आगे इन हमलों का विवरण दिया गया है:

रसूल ने अचानक बनू मुस्तलिक पर बिना चेतावनी दिए हमला कर दिया। हमले के वक्त बनू मुस्तलिक के लोग बेपरवाह थे और उनके पशु जलस्रोत पर पानी पी रहे थे। हमले से बचाव करने निकले लोग मार दिए गए और हमलावर उनकी महिलाओं व बच्चों को बंदी बनाकर उठा ले गए; रसूल को उस दिन जुबैरिया मिली। नाफ़े ने कहा कि इब्ने-उमर ने उन्हें घटना की तफ्सील ऐसी बताई है और इब्ने-उमर उन हमलावरों की फौज में शामिल था।[48]

मुस्लिम इतिहासकार बताते हैं, इस जंग में मुसलमानों ने 600 लोगों को कैदी बनाया। लूट के माल के रूप में 2000 ऊंट और 5000 बकरियां थीं।'[49]

मुसलमान आतंकवादी जब बच्चों को मार डालते हैं तो दुनिया सदमे में आ जाती है। लेकिन तब भी मुसलमानों के हिमायती इस्लाम में बच्चों की हत्या हराम जैसे जुमले सुनाकर इस्लाम के नाम पर हो रहे अपराधों पर पर्दा डालने लगते हैं। जबकि **हकीकत यह है कि मुहम्मद खुद रात के हमलों में बच्चों को मारने का आदेश देता था।**

साब बिन जस्सामा के हवाले से यह बताया जाता है कि अल्लाह के रसूल (उन्हें जन्नत में शांति मिले) से जब रात के हमलों में बहुदेववादी यानी गैर-मुस्लिमों की औरतों व बच्चों के कत्ल के बारे में पूछा गया तो मुहम्मद ने कहा: वे काफिरों की महिलाएं और बच्चे हैं।[50]

मुहम्मद के हमलों का अस्ली मकसद लूटना था। मुसलमानों द्वारा प्रामाणिक माने जाने वाले कई स्रोत इसकी पुष्टि करते हैं कि रसूल ने जीतने के लिए अचानक हमला करने को फायदेमंद माना:

इब्ने-औन ने बताया है: मैंने नाफ़े को लिखकर यह पूछा कि क्या गैर-मुस्लिमों के खिलाफ जिहाद (जंग) छेड़ने से पहले उनको इस्लाम कबूल करने के लिए दावत देना मुनासिब है। उन्होंने जवाब में मुझे लिखा कि ऐसा इस्लाम के शुरुआती दिनों में आवश्यक था। अल्लाह के रसूल ने (उनको शांति मिले) बनू मुस्तलिक पर उस वक्त हमले किए थे, जबकि वे सब बेपरवाह थे और अपने पशुओं को पानी पिला रहे थे। रसूल ने उन लोगों को मार डाला और जो बच गए उन्हें कैदी बना लिया। उसी दिन रसूल ने जुबैरिया बिन अल-हारिस को बंदी बना लिया। नाफ़े ने कहा कि यह रिवायत उनको अब्दुल्ला बिन उमर ने बताई जो खुद हमलावर दल में शामिल था।[51]

नागरिकों पर इस तरह के इस कायरानापूर्ण ढंग से हमले करने को जायज ठहराने के लिए मुस्लिम इतिहासकार अक्सर पीड़ितों को ही इस्लाम के खिलाफ साजिश रचने का आरोपी ठहराते हैं। हालांकि इस पर विश्वास करने का आधार नहीं दिखता कि अरब की किसी जनजाति को डकैतों के मजबूत गिरोह बन चुके मुसलमानों पर हमला करके कोई लाभ होता। इस दावे के विपरीत, बहुत सी जनजातियों ने अपने को सुरक्षित रखने के लिए तुष्टीकरण की नीति अपनाते हुए मुहम्मद से संधि कर ली थी। जब मुहम्मद ताकतवर हो गया तो उसने इन संधियों को तोड़ दिया।

लूटपाट से डकैतों के इस गिरोह को केवल धन-दौलत ही नहीं मिलती थी, बल्कि सैक्स गुलाम भी मिलते थे। जुबैरिया एक खूबसूरत युवा महिला थी, मुहम्मद के आदमियों ने उसके पति की हत्या कर दी। इसके बाद जुबैरिया को सैक्स गुलाम बनाकर ले जाया गया और उसे मुसलमान बनने पर मजबूर किया गया। मुहम्मद की सबसे युवा और चहेती बीबी आयशा इस दरम्यान उसके साथ थी और बाद में इस घटना को बताया (अनेक स्रोतों के अनुसार आयशा की उम्र महज छह साल थी, जब 51 साल के मुहम्मद ने उससे शादी की। आयशा केवल नौ साल की थी, जब मुहम्मद ने उसके साथ शारीरिक संबंध बनाए):

जब रसूल-उन्हें शांति मिले- ने बनू अलमुस्तलिक में बंदी बनाए गए लोगों का बंटवारा किया, तो वह (जुबैरिया) साबित बिन कैस के हिस्से में आई थी। उसकी शादी चचेरे भाई से हुई थी, जो जंगी हमले में मुसलमानों

के हाथों मारा गया था। खुद को कैद से मुक्त कराने के लिए उसने साबित को वचन दिया कि वह उसे सोने की नौ मुहरें देगी। वह बेहद खूबसूरत थी। जिसने भी उसे देखा, उसकी खूबसूरती का दीवाना हो गया। वह रसूल के पास आई और खुद को आजाद करने की गुहार लगाई। मैंने जब उसे अपने कमरे के दरवाजे पर देखा तो मुझे इस औरत से चिढ़ होने लगी। क्योंकि मैं जानती थी कि इस औरत को जिस नजर से मैंने देखा है, उसी नजर से रसूल भी देखेंगे। वह कमरे के भीतर गई और बताया कि वह कौन है। उसने रसूल को बताया कि वह उसके कबीले के मुखिया हारिस बिन अबी जरार की बेटी है। उसने कहा, 'आप देखिए कि किन हालात में मैं यहां लाई गई हूं। मैं साबित के हिस्से में आई हूं और रिहाई के लिए फिरौती दी है। मैं आपसे मदद मांगने आई हूं।' इस पर रसूल ने कहा, 'क्या तुम उससे बेहतर कुछ चाहती हो? मैं तुम्हें ऋण से मुक्त कर दूंगा और तुमसे शादी करूंगा।' उसने कहा, 'हां'। फिर अल्लाह के रसूल ने जवाब दिया, 'तो पक्का।'[52]

यह विवरण मुहम्मद की बहुत सारी शादियों के पीछे के मकसद को स्पष्ट करता है। मुहम्मद व उसके आदमियों ने जुबैरिया के पति को बिना किसी उकसावे के हमला करके मार डाला। वह बनू मुस्तलिक कबीले के मुखिया की बेटी थी और वह होने वाली राजकुमारी थी। उसे गुलामों जैसी स्थिति में ला दिया गया और वह मुहम्मद के डकैतों के गिरोह के एक ठग के कब्जे में रही। हालांकि उसकी खूबसूरती को देखते हुए मुहम्मद ने उसे आज़ाद करने का प्रस्ताव दिया, पर इस शर्त के साथ कि उससे शादी करनी होगी। क्या इसे आज़ादी कहेंगे? उसके पास और क्या विकल्प था? यदि मुहम्मद उसे आजाद भी कर देता तो वह जाती कहां?

इस्लाम के हिमायती कहते हैं कि मुहम्मद की बीबियों में अधिकतर विधवा औरतें थीं। इससे ऐसा भ्रम होने लगता है कि मुहम्मद ने शादी करके उन पर दया की थी। लेकिन ये लोग यह बात गोल कर जाते हैं कि ये सारी विधवाएं युवा व खूबसूरत थीं और ये सब विधवा इसलिए हुई थीं, क्योंकि मुहम्मद ने उनके पतियों की हत्या कर दी थी। उस वक्त जुबैरिया 20 साल की थी, जबकि मुहम्मद 58 साल का था। इस्लामी इतिहासकार यह स्वीकार करते हैं कि मुहम्मद केवल उन्हीं औरतों से शादी करता था, जो जवान, खूबसूरत और बिना बच्चे वाली होती थीं। केवल एक अपवाद है सऊदा का, मुहम्मद ने अपने बच्चों की देखरेख के लिए इससे जब शादी की थी तो वह 30 साल की थी।

एक हदीस के अनुसार मुहम्मद को जब दूसरी खूबसूरत व जवान औरतें मिल गईं तो उसने सऊदा के साथ सोना बंद कर दिया।[53] मुहम्मद की सभी बीबियां या तो किशोरावस्था में थीं या फिर नवयौवना, जबकि मुहम्मद अपनी उम्र के 50वें या 60वें दशक में था। इतिहासकार तबरी[54] बताता है कि मुहम्मद ने अपनी सगी चचेरी बहन हिंदा बिंते-अबू तालिब से अपनी शादी के लिए मनुहार की, लेकिन जब उसने बताया कि उसके एक बच्चा है तो उसने उससे दूरी बना ली। एक और औरत ज़ियाअह बिंते-आमिर थी। मुहम्मद ने किसी से कहा कि उससे शादी के लिए ज़ियाअह को मनाए।

ज़ियाअह ने यह प्रस्ताव कबूल कर लिया, लेकिन जब मुहम्मद को उसकी उम्र के बारे में बताया गया तो उसने इरादा बदल दिया।[55] जरीर इब्ने-अब्दुल्लाह नाम के एक मोमिन ने वर्णन किया है कि एक बार मुहम्मद ने उससे पूछा, 'क्या तुम्हारी शादी हो गई?' जरीर ने कहा, 'हां।' तब मुहम्मद ने पूछा, 'किसी कुंवारी से की या शादीशुदा से?' जरीर ने कहा, 'शादीशुदा थी वह।' फिर मुहम्मद ने उससे पूछा, 'तुमने किसी कुंवारी से शादी क्यों नहीं की, ताकि तुम उसके साथ खेलते और वह तुम्हारे साथ?'[56] अल्लाह के रसूल के लिए औरत केवल यौन सुख की वस्तु थी। मुहम्मद की नजर में औरत केवल एक चल संपत्ति थी और औरत नाम की इस संपत्ति का काम केवल पति को यौनसुख देना और बच्चे पैदा करना था।

बलात्कार

मुहम्मद ने अपने आदमियों को हमले में बंदी बनाई गई औरतों के बलात्कार की इजाजत दी थी। हालांकि औरतों को कैद करने के बाद मोमिन द्वंद्व में पड़ जाते थे। वे इन औरतों के साथ यौन संबंध भी बनाना चाहते थे, लेकिन उन्हें फिरौती पाने के लिए छोड़ना भी चाहते थे। इसलिए वे नहीं चाहते थे कि ये औरतें गर्भवती हो जाएं। इनमें से कई औरतें पहले से शादीशुदा होती थीं, जिनके पति किसी तरह बच निकलने में कामयाब हो गए थे और अभी भी जिंदा थे। इसके तोड़ के लिए उन्हें कोआइटस इंटरप्टस (वीर्यपात होने से पहले ही लिंग निकाल लिया जाए) का रास्ता सूझा। पर वे इस बात को लेकर निश्चिंत नहीं हो पा रहे थे कि इस तरीके से बलात्कार करने पर औरतें गर्भवती होंगी या नहीं। वे मुहम्मद के पास इस बारे में सलाह लेने गए। बुखारी में बताया गया:

अबू सईद ने कहा: 'हम अल्लाह के रसूल के साथ बनू अल-मुस्तलिक के ज़ावा पर गए थे और हमें वहां पकड़ी गई अरबी औरतों में अपने हिस्से की औरतें मिलीं। औरतों को पाने की हमारी इच्छा भी खूब थी। ऐसे में ब्रह्मचर्य का पालन करना हमें मुश्किल लगने लगा, तब हमें योनि के बाहर वीर्यपात का तरीका ठीक लगा। जब हमने इस तरीके से संभोग करने का इरादा किया तो हमने कहा, 'अल्लाह का रसूल हमारे बीच है तो हम उससे पूछे बिना इन औरतों से इस तरह का सहवास (योनि से बाहर वीर्यपात कर) कैसे करें? हमने रसूल से इस बारे में पूछा तो उन्होंने कहा, 'बेहतर होगा कि तुम वो न करो (बल्कि खुलकर सहवास करो), क्योंकि कयामत के दिन तक जिसको आना है, वह तो आएगा।'[57]

ध्यान दीजिए कि मुहम्मद ने जिहाद में पकड़ी गई औरतों का बलात्कार करने से मना नहीं किया। बल्कि इसके उलट वह कह रहा है कि जब अल्लाह कुछ सृजन चाहता है तो उसे कोई नहीं रोक सकता। दूसरे शब्दों में, शुक्राणुओं के न होने पर भी गर्भ होने से कोई नहीं रोक सकता। इसलिए मुहम्मद कहता है कि वीर्यपात रोककर सहवास बेकार है और यह गलत सलाह भी है क्योंकि ऐसा करना अल्लाह की अपरिहार्य इच्छा को चुनौती देने जैसा है। मुहम्मद ने इन कैदी औरतों में जबरन वीर्यरोपण के खिलाफ एक लफ्ज भी नहीं कहा। दरअस्ल, योनि में वीर्यपात हीन सहवास की निंदा कर मुहम्मद ने बंदी औरतों में जबरन वीर्यरोपण का समर्थन किया। कुरान में मुहम्मद के अल्लाह ने गुलाम औरतों अर्थात लूट के माल के बंटवारे में अपने हिस्से की बंदी औरतों के साथ यौनाचार को जायज बताया, भले ही बंदी बनाई गई औरतें शादीशुदा हों।[58]

उत्पीड़न

इब्ने-इसहाक यहूदीनगर खैबर की फतह का वर्णन करते हुए लिखता है कि मुहम्मद ने बिना कोई चेतावनी दिए, इस किलाबंद नगर पर हमला किया और निहत्थे नगरवासियों को उस समय चुन-चुन कर मार डाला, जब वे जान बचाकर भाग रहे थे। यहां से बंदी बनाए गए लोगों में क़िनाना नामक व्यक्ति भी था।

क़िनाना अल-रबी के पास बनू नज़ीर के खजाने की चाबी थी। उसे रसूल के पास लाया गया और उससे खजाने की चाबी मांगी गई। क़िनाना ने कहा कि उसे नहीं मालूम कि चाबी कहां है ? एक यहूदी रसूल के पास आया (तबरी बताता है कि इस यहूदी को पकड़कर लाया गया था) और बोला कि वह रोज सुबह क़िनाना को एक खंडहर में जाते हुए देखता था।

मुहम्मद ने क़िनाना से कहा, 'तुम्हें पता है, यदि पता चल गया कि खजाने की चाबी तुम्हारे पास है, तो तुम्हारी जान ले लूंगा। इस पर क़िनाना ने कहा, 'हां।' रसूल ने अपने आदमियों को खंडहर की खुदाई करने का हुक्म दिया, वहां थोड़ा सा खजाना मिला। मुहम्मद ने पूछा कि बाकी खजाना कहां है तो क़िनाना ने बताने से इंकार कर दिया।

इस पर रसूल ने अल-जुबैर-अल-अवाम को आदेश दिया, 'इसे ले जाओ, तब तक इसे यातना दो, जब तक कि खजाने का पता न बता दे।' अल-जुबैर ने आग में एक पत्थर दहकाया और उसे क़िनाना के सीने पर रख दिया। क़िनाना चीखता रहा, लेकिन अल-जुबैर अंगारा तब तक उसके सीने पर रखे रहा, जब तक कि वह मरणासन्न नहीं हो गया। फिर रसूल ने क़िनाना को मुहम्मद अबी मुसैलमा को सौंप दिया और उसने अपने भाई महमूद का बदला लेने के लिए उसकी गरदन उड़ा दी।[59]

जिस दिन मुहम्मद ने किनाना का बेरहम क़त्ल करवाया, उसी दिन वो उसकी 17 साल की बीबी सफिया को बलात्कार करने के लिए अपने तम्बू में उठा ले गया। इस घटना के दो साल पहले मुहम्मद ने यहूदी जनजाति बनू कुरैज़ा के अन्य मर्दों के साथ सफिया के पिता का भी कत्ल कर दिया था। इब्ने-इसहाक लिखता है:

रसूल यहूदियों के किलों पर एक के बाद एक कब्जा करते जा रहे थे और वहां की औरतों और बच्चों को बंदी बनाते जा रहे थे। ऐसे ही एक कैदियों में खैबर के मुखिया क़िनाना की बीबी सफिया और उसकी दो चचेरी बहनें थीं। रसूल ने सफिया को अपने हिस्से में रख लिया। दूसरी कैदी औरतों को मोमिनों में बांट दिया। बिलाल सफिया को रसूल के पास लाया था और ये लोग रास्ते में यहूदी मर्दों की लाशों पर चढ़कर आए थे। जब मोमिन सफिया को पकड़ कर रसूल के पास ला रहे थे तो उसकी सहेलियां उसके लिए चीख रही थीं और रेत उठा-उठा कर उनपर फेंक रही थीं। जब रसूल ने यह देखा तो उन्होंने कहा, 'इन चुड़ैलों को यहां से हटाओ।' पर रसूल ने सफिया को वहीं खड़ी रहने का फरमान सुनाया और उसके ऊपर लबादा फेंका, ताकि मोमिन जान सकें कि उसे रसूल ने अपने लिए चुन लिया है। रसूल ने बिलाल को झिड़कते हुए कहा, 'क्या तुम्हारे भीतर जरा भी रहम नहीं है कि इन औरतों को उनके पतियों की लाशों पर से ले जा रहे हो?'

बुखारी ने भी कुछ हदीसों में मुहम्मद की खैबर पर फतह और सफिया के बलात्कार के बारे में लिखा है।

अनस ने कहा, 'जब अल्लाह के रसूल ने खैबर पर हमला किया, तो हमने तड़के फज्र की नमाज पढ़ी। रसूल घोड़े पर सवार हुए और अबू तलहा भी, हम अबू तलहा के पीछे घोड़े पर थे। रसूल हवा की तरह शहर की गलियों में आगे बढ़ रहे थे और मेरा घुटना रसूल की जांघों से रगड़ रहा था। उन्होंने अपनी जांघें उघाड़ीं तो उसकी सफेदी दिखी। जब रसूल ने शहर में प्रवेश किया तो उन्होंने कहा, अल्लाहू-अकबर! हमने खैबर को मिटा दिया। जैसे ही हम उन लोगों की बस्ती के निकट पहुंचेंगे, जिन पर हमला करना है तो उनके लिए सुबह कयामत लेकर आएगी।' रसूल ने यह बात तीन बार कही। सुबह हुई तो उस शहर के लोग अपने रोजमर्रा के काम के लिए निकले और डर से चीखने लगे, 'मुहम्मद आ गया।' (हमारे कुछ साथियों ने कहा, अपनी फौज के साथ)।

इतने में दिह्या आया और बोला, 'हमने खैबर जीत लिया, लोगों को कैद कर लिया है और खूब माल इकट्ठा किया है।' 'हे, अल्लाह के रसूल! मुझे एक गुलाम लड़की दो।' रसूल ने कहा, 'जाओ और कैदियों में से किसी लड़की को ले लो।' उसने सफिया बिंते हुयई को लिया। एक व्यक्ति रसूल के पास आया और बोला, 'हे, अल्लाह के रसूल! आपने दिह्या को सफिया दे दी, अरे वह तो यहूदी कुरैजा अन-नजीर कबीले की मुखिया की मुख्य सेविका है। वह सिर्फ आपके पास शोभा देती है।' तो फिर रसूल ने कहा, 'दिह्या को सफिया सहित ले लाओ।' दिह्या सफिया साथ आये और जब रसूल ने सफिया को देखा तो दिह्या से कहा, 'कैदियों में से किसी और औरत को ले लो।' अनस ने आगे कहा, 'रसूल ने उसे कैद से आज़ाद कर दिया और उससे शादी कर ली।'

साबित ने अनस से पूछा, 'ओ अबू हमज़ा! रसूल ने सफिया को मेहर (दहेज) में क्या दिया?' उन्होंने कहा, 'सफिया खुद मेहर थी, क्योंकि रसूल ने उसे आजाद किया और फिर शादी की।' अनस ने फिर कहा, 'रास्ते में, उम्मे सलैम ने उसे दुल्हन के रूप में तैयार किया और रात में वह रसूल के पास दुल्हन की तरह भेजी गई।'[60]

मुहम्मद के साथी अनस ने एक और हदीस में उल्लेख किया है कि अरब के एक कबीले के आठ आदमियों का एक समूह मुहम्मद के पास आया, लेकिन मदीना की आबो-हवा उन्हें रास नहीं आई। तब मुहम्मद ने ऊंट के पेशाब को दवा के रूप में बताया और उन्हें शहर के बाहर ऊंटों की रखवाली कर रहे नौकर से मिलने भेज दिया। इन आदमियों ने उस नौकर का कत्ल कर दिया और ऊंट हांक ले गए। जब मुहम्मद को इसका पता चला तो उसने अपने आदमियों को इनके पीछे लगा दिया। ये पकड़े गए तो मुहम्मद ने उनके हाथ-पांव कटवा दिए और गर्म सलाखें उनकी आंखों में डाल दी गईं। ये दोनों इस पठारी जमीन पर तड़प-तड़प कर मरने के लिए छोड़ दिए गए। अनस ने कहा कि ये दोनों पानी-पानी कहकर बेहोश हो जाते थे, लेकिन किसी ने एक बूंद नहीं दिया और आखिरकार ये मर गए।[61]

इन अरबियों ने चोरी और हत्या की वारदात को अंजाम दिया था और इन्हें सजा भी देनी थी, मगर मौत देते वक्त भी इतनी भयानक पीड़ा क्यों दी गई? क्या मुहम्मद भी ऐसा ही अपराध नहीं कर रहा था?

मुहम्मद को ये ऊंट कहां से मिले थे? क्या ये ऊंट चोरी के नहीं थे? क्या मुहम्मद ने हमले नहीं किए थे और मासूम लोगों का कत्ल नहीं किया था? मुसलमानों का यह दोहरा चरित्र इस्लाम की शुरुआत से ही है। मुसलमानों की सोच में नियम-कायदे या न्यायसंगतता है ही नहीं। गैर-मुस्लिम देशों में मुसलमान विशेषाधिकार की मांग करते हैं, जबकि जहां वे बहुसंख्यक होते हैं वहां गैर-मुस्लिमों को न्यूनतम मानव अधिकार भी देने से इंकार करते हैं। वे इसके हिमायती ही नहीं होते, बल्कि उनको लगता है कि सारे अधिकार किसी गैर-मुस्लिम के पास नहीं केवल मुसलमानों के पास होने चाहिए।

कत्लेआम

आज तक अधिकांश मुसलमान मानते हैं कि इस्लाम की आलोचना करने वालों से निपटने का एक ही तरीका है कि उनका कत्ल कर दिया जाए। 1989 में ईरान के खुमैनी ने फतवा जारी कर सलमान रुश्दी के कत्ल का हुक्म दिया, क्योंकि रुश्दी ने 'शैतानी आयतें (द सैटेनिक वर्सेज)' किताब लिखी थी और मुसलमानों को लगा कि इस किताब के जरिए रुश्दी ने इस्लाम का अपमान किया है। कुछ लोगों ने खुमैनी के इस फतवे की निंदा की और उन पर अतिवादी होने का आरोप लगाया। हालांकि हैरत इस बात पर हुई कि अधिकतर लोगों ने रुश्दी पर ही दोषारोपण करते हुए उन्हें मुसलमानों के प्रति असंवेदनशील होने का आरोप लगाया। 14 फरवरी, 2006 को ईरान की सरकारी समाचार एजेंसी ने रिपोर्ट किया कि खुमैनी का यह फतवा स्थायी रूप से रहेगा। स्थापना के बाद से ही ईरान के इस्लामिक शासन ने अपने विरोधियों की हत्या कराकर, ये विरोधी चाहे ईरान में रहते रहे हों या ईरान से बाहर निर्वासन में, सुनियोजित ढंग से खत्म कराया। सैकड़ों की संख्या में असंतुष्टों को इसी तरीके से मार डाला गया। ईरान के इस्लामी शासन के शिकार सच्चे लोकतंत्रवादी और शाह द्वारा नियुक्त आखिरी प्रधानमंत्री डॉ. शापूर बख्तियार भी हुए और उन्हें भी कत्ल कर दिया गया।

अधिकतर लोग यह नहीं जानते हैं कि कत्ल करना विरोधियों से निपटने का मुहम्मद का ही तरीका है। आज मुसलमान केवल अपने रसूल का अनुसरण करते हुए ही कत्लो-गारत करते हैं।

काब बिन अशरफ मुहम्मद के शिकार लोगों में से एक थे। जैसा कि मुस्लिम इतिहासकार रिपोर्ट करते हैं, काब बिन अशरफ मदीना के यहूदी कबीले बनू नज़ीर के मुखिया के दरबार में प्रतिभाशाली कवि और युवा सुंदर मर्द थे। जब मुहम्मद ने मदीना के एक और यहूदी कबीले बनू क़ैनक़ा को मिटा दिया तो काब बिन अशरफ अपने कबीले के लोगों की सुरक्षा के लिए चिंतित हो उठे और वह सुरक्षा की मदद मांगने मक्का गए। उन्होंने मक्का के लोगों की

बहादुरी व सम्मान बताने वाली नज्में बनाईं। जब मुहम्मद ने यह सुना तो वह मस्जिद गया और नमाज के बाद बोला:

'कौन है जो उस काब बिन अशरफ का कत्ल करेगा, जिसने अल्लाह और उसके रसूल की तौहीन की है?' इसके बाद मुहम्मद बिन मुसैलमा खड़ा हुआ और बोला, 'हे अल्लाह के रसूल! अगर मैं उसे कत्ल करूं तो आप खुश होंगे?' रसूल ने कहा, 'आमीन।' मुहम्मद बिन मुसैलमा ने कहा, 'तो फिर मुझे एक झूठ बोलने की इजाजत दीजिए, ताकि मैं काब बिन अशरफ को चालबाजी से जाल में फंसा सकूं।' रसूल ने कहा, 'आमीन।' इसके बाद मुसैलमा काब बिन अशरफ के पास गया और बोला, 'वह इंसान (मुहम्मद) हमसे ज़कात (चुंगी) मांगता है और उसने हमें परेशान कर रखा है, और मैं आपसे कुछ मांगने आया हूं।' तब काब बिन अशरफ ने कहा, 'एक दिन तुम उस इंसान से ऊब जाओगे।' मुहम्मद बिन मुसैलमा ने कहा, 'चूंकि हम उसके चेले बन गए हैं और तब तक उसका साथ नहीं छोड़ना चाहते, जब तक कि उसका अंत न देख लें। अब हम आपसे एक-दो ऊंट भरकर अनाज उधार मांगना चाहते हैं।' मुहम्मद बिन मुसैलमा ने काब बिन अशरफ से वादा किया कि वह फिर उनके पास आएगा। वह रात में काब बिन अशरफ के पास उनके सौतेले भाई अबू नायेला को लेकर आया। काब बिन अशरफ ने उसे अपने किले में बुलाया, और वह सीधे उनके पास पहुंच गया। काब की बीबी ने पूछा कि आप इस वक्त कहां जा रहे हैं? काब ने कहा, 'कुछ नहीं, वो मुहम्मद बिन मुसैलमा और मेरा सौतेला भाई अबू नायेला आए हैं।' उनकी बीबी ने कहा, 'मैंने कुछ आवाज सुनी है, लगा जैसे उससे खून टपक रहा हो।' इस पर काब बिन अशरफ ने कहा, 'रात में कोई पुकार रहा हो तो भले मानुष को जरूर जाना चाहिए, भले ही वह कत्ल करने के लिए बुला रहा हो।' फिर मुहम्मद बिन मुसैलमा दो आदमियों के साथ अंदर गया और उनसे बोला, 'जब काब बिन अशरफ आएगा तो मैं उसके बाल पकड़कर सूंघूंगा और तुम देखना कि जब उसकी गरदन पर मेरी पकड़ मजबूत हो गई है तो तुम टूट पड़ना, फिर मैं उसका सिर तुम्हें दे दूंगा। काब बिन अशरफ अपने कपड़ों में लदा-फंदा आया और उसके बदन से इत्र की खुशबू आ रही थी। मुहम्मद बिन मुसैलमा ने कहा, 'मैंने कभी इतनी अच्छी इत्र की खुशबू महसूस नहीं की।' काब बोले, 'मैंने यह इत्र एक अरबी औरत से लिया है, जो इत्र की अच्छी परख रखती है।' मुहम्मद बिन मुसैलमा ने काब बिन अशरफ से गुजारिश करते हुए कहा, 'क्या मैं आपके सिर को सूंघ कर इस खूशबू का आनंद ले लूं?' काब अशरफ ने कहा, 'जरूर।' मुहम्मद बिन मुसैलमा ने सूंघा और अपने आदमियों को भी यह मौका दिया। फिर उसने काब बिन अशरफ से गुजारिश की, 'क्या आप मुझे अपना सिर देंगे, ताकि मैं खुशबू को और महसूस कर सकूं।' काब बिन अशरफ ने कहा, 'क्यों नहीं, जरूर।' जब मुहम्मद मुसैलमा ने काब की गरदन पर मजबूत पकड़ बना ली तो उसने अपने साथियों से कहा, 'टूट पड़ो इस पर!' इस तरह मुसैलमा के साथियों ने काब अशरफ को मार डाला और वे रसूल को पास जाकर इसकी इत्तिला की। काब बिन अशरफ के बाद अबू रफी का भी कत्ल कर दिया गया।[62]

अल्लाह के रसूल ने न केवल कत्ल को प्रोत्साहित किया, बल्कि उसने धोखेबाजी और फरेब की वकालत भी की और फरेब को स्वीकृति भी दी। मुहम्मद के कत्ल के एक और शिकार एक बुजुर्ग अबू आफाक थे, जिनके बारे में कहा जाता है कि वे 120 साल के थे। वह भी कविताएं लिखते थे, उनकी कुछ कविताओं में मुहम्मद के अनुयायी बनने वालों की आलोचना की गई थी। उन्होंने लिखा कि मुहम्मद एक सनकी-पागल इंसान है, जिसने अपने मन से हलाल और हराम की व्याख्या की है, अपने अनुयायियों की मति भ्रष्ट कर दी है और उसके अनुयायी अपने ही लोगों से दुश्मनी निभा रहे हैं। इब्ने-साद इस घटना को ऐसे बयान करता है:

तब यहूदी अबू आफाक के खिलाफ सलीम इब्ने उमैर अल-अमरी का सरिय्यह (हमला) हुआ। यह शरिया अल्लाह के रसूल के हिजरत से बारहवें महीने यानी शव्वाल के महीने की शुरुआत में हुआ। हिजरत 622 ईसवी में

उस तारीख को कहा जाता है, जब मुहम्मद मक्का छोड़कर मदीना आया था। अबू आफाक बनू अम्र इब्ने-ओफ़ कबीले के यहूदी थे और 120 साल की उम्र पार कर चुके थे। वे लोगों को अल्लाह के रसूल के खिलाफ भड़काते थे और मुहम्मद के बारे में उपहास करने वाली कविताएं लिखते थे। मुहम्मद के एक पक्के चेले सलीम इब्ने-उमैर, जिसने बद्र में हिस्सा लिया था, कहा, 'मैं कसम खाता हूं कि या तो अबू आफाक को मार डालूंगा या फिर खुद मर जाऊंगा।' वह आफाक को शिकार बनाने की घात में था और गर्मी की एक रात, सलीम इब्ने-उमैर को पता था अबू आफाक खुले में सोये हैं। वह अबू आफाक के पास दबे पांव पहुंचा और उनके पेट पर तलवार की नोंक रखकर आर-पार कर दिया। अल्लाह का यह दुश्मन दर्द से चिल्लाया। आफाक की आवाज सुनकर उनके अनुयायी भागे आए, लेकिन तब तक वह मर चुके थे। लोग उन्हें घर ले गए और दफना दिया।[63]

अबू आफाक का अपराध बस इतना था कि उन्होंने मुहम्मद की आलोचना वाली कविताएं लिखी थीं। जब एक यहूदी और पांच छोटे-छोटे बच्चों की मां असमा बिंते-मरवान ने यह सुना तो वह गुस्से से पागल हो गई और उसने कविता लिखकर मदीना के लोगों को एक अजनबी द्वारा लोगों को बांटने और एक कमजोर बुजुर्ग का कत्ल करते हुए देखते रहने पर खूब कोसा। मुहम्मद फिर मंच पर गया और चिल्लाया:

'इस मरवान की बच्ची से छुटकारा कौन दिलाएगा? उसके साथ खड़े उमैर बिन अदी ने यह सुना और उसी रात असमा बिंते-मरवान के घर जाकर उसका कत्ल कर दिया।' सुबह वह रसूल के पास आया और इसकी जानकारी दी। तब मुहम्मद ने कहा, 'तुमने अल्लाह की मदद की है और उसके रसूल की मदद की है।' जब उमैर बिन अदी अल-खातमी ने पूछा कि इस वारदात को अंजाम देने से उसे कोई बुरा परिणाम तो नहीं भुगतना पड़ेगा तो रसूल ने कहा, 'उसकी (असमा) ओर से दो बकरियां भी लड़ने नहीं आएंगी।'[64]

कत्ल करने पर मुहम्मद की तारीफ पाकर, हत्यारा उमैर बिन अदी असमा बिंते-मरवान के बच्चों के पास गया और बताया कि उनकी मां की हत्या उसने की है। उसने असमा के कुनबे व उन छोटे बच्चों को ताना मारा।

उस दिन यहूदी बनू खत्मा कबीले में यही चर्चा रही कि असमा की बेटी का क्या होगा। असमा के पांच बेटे थे, और जब उमैर रसूल के पास से होकर उनके घर गया तो बोला, 'अरे ओ, खत्मा कबीले की औलादो! मैंने बिंते-मरवान को मार दिया। सामने आ; मुझे इंतजार मत करा।' वह पहला दिन था, जब इस्लाम बिंते-खत्मा कबीले में मजबूत हुआ; इसके पहले उस कबीले में जो मुसलमान थे, वे जाहिर नहीं करते थे।

यहूदी बनू खत्मा कबीले में इस्लाम कबूल करने वाला पहला शख्स उमैर बिंते अदी था जिसको 'कारी' कहा गया फिर अब्दुल्लाह बिंते-ओस और खुजैमा बिंते-साबित मुसलमान हुए। जिस दिन बिंते-मरवान की हत्या हुई, बनू-खत्मा कबीले के आदमी मुसलमान बन गए, क्योंकि उन्होंने इस्लाम की ताकत का अंदाजा लगा लिया था।[65]

इन हत्याओं को अंजाम देने के बाद मदीना के मुसलमान आत्मश्लाघी, घमंडी और धृष्ट हो गए। क्योंकि उन्हें अपने विरोधियों के दिल में खौफ पैदा करने में कामयाबी मिल गई थी। मुहम्मद यह संदेश देना चाहता था कि उसकी आलोचना का मतलब मौत है।[66] आज भी मुसलमान हर उस जगह इसी रणनीति को अपनाते हैं, जहां उन्हें इसकी जरूरत महसूस होती है। वे अपने उस रसूल द्वारा स्थापित मॉडल और मिसाल का अनुकरण करते हैं, जिसे वे अपना महानतम रणनीतिकार मानते हैं। वे भय की दीवार खड़ी कर देना चाहते हैं, ताकि उनकी सर्वोच्चता खौफ के रास्ते स्थापित हो सके। इसमें कोई शक नहीं है कि मुसलमान आतंकवादियों के मन में यही कपटविद्या चलती है। गैर-मुस्लिमों के मन में खौफ पैदा करने की कुरानी हिदायत उनके लिए जीत का पक्का रास्ता है। यह मुहम्मद के लिए भी कारगर था। मुहम्मद कहा करता था, 'मैं खौफ पैदा कर विजेता रहा हूं।[68]

यही कपटविद्या तब काम आई, जब आतंकवादियों ने 11 मार्च, 2004 को स्पेन की सवारी गाड़ी में 200 मासूम

नागरिकों को मार डाला और प्रतिक्रिया में स्पेनवासियों ने एक ऐसी समाजवादी सरकार को वोट किया, जिसने सत्ता संभालने के फौरन बाद मुस्लिम तुष्टीकरण की नीति अपनाई। मुहम्मद और उनके वैचारिक उत्तराधिकारियों द्वारा स्थापित सफल उदाहरणों से मुसलमान यह निष्कर्ष निकालते हैं कि खौफ पैदा करने की उनकी रणनीति हर जगह और हर कालावधि में कारगर है।

वे तब तक नहीं रुकेंगे, जब तक या तो दुनिया उनके कदमों में न हो जाए, या फिर उनसे अधिक शक्ति से चोट कर उनको गलत न साबित कर दिया जाए। **इस्लामी दुनिया बीमार है और इस बीमारी का अस्ली कारण इस्लाम मानने से इंकार करना खतरे से मुंह मोड़ने जैसा है। मुसलमानों द्वारा किया गया लगभग हर अपराध, हर अमानवीय कार्य, हर प्रयास, मुहम्मद के शब्दों व कार्यों से प्रेरित और उसी कारण न्यायसंगत ठहराया गया है।** यह एक पीड़ादायक सच है और दुख इस बात का है कि दुनिया की बड़ी आबादी इस सच को देखना नहीं चाहती है।

नरसंहार

यसरब के इलाके के मूल बाशिंदे तीन यहूदी जनजातियां बनू कैनका, बनू नज़ीर और बनू कुरैजा थीं। मुहम्मद की खामख्याली थी कि ये तो बहुदेववादी नहीं हैं और पहले ही बाइबिकल पैगम्बरों को गले लगा चुके हैं, तो मेरे पीछे आ ही जाएंगे और शागिर्दी करेंगे। कुरान के शुरू के अध्यायों में मूसा और बाइबिकल कहानियों की भरमार भी है। दरअस्ल, मुहम्मद ने मूलतः अपनी इबादतों में जेरुसलम को किबला के रूप में स्वीकार किया था, ताकि यहूदियों की आस्था को ही बुनियाद बनाकर चालबाजी कर सके। मुस्लिम विद्वान डब्ल्यू. एन. अराफात लिखते हैं, 'पैगम्बर मुहम्मद को तो यह फौरी यकीन था कि यसरब के यहूदी दैवीय मजहब को मानते हैं, इसलिए वे नए अद्वैतवादी मजहब इस्लाम को समझने में दिलचस्पी दिखाएंगे।'[69] पर मुहम्मद के हाथ निराशा लगी, क्योंकि मक्का के कुरैश कबीले की तरह मदीना के यहूदियों ने भी उसकी बातों को महत्व नहीं दिया। मुहम्मद की उम्मीदों पर पानी फिर गया तो उसका सब्र टूट गया और वह इन यहूदियों के विरुद्ध हो गया। यहूदियों की आस्था अपने पुरखों के धर्म में मजबूत थी, इसलिए यह स्वाभाविक था कि इन्होंने मुहम्मद के नए मजहब में दिलचस्पी नहीं दिखाई। यह बात मुहम्मद को बड़ी नागवार गुजरी। मुहम्मद बदले की आग में जलने लगा। अबू आफाक और असमा के कत्ल तो यहूदियों के प्रति मुहम्मद की दुश्मनी की शुरुआत थी। मदीना में आने वाले कारवां को लूटने का मुहम्मद के दुस्साहस को लगातार कामयाबी मिल रही थी तो अब उसकी निगाह यसरब के यहूदियों के धन पर गड़ी थी। मुहम्मद अब ऐसा कोई बहाना ढूंढ रहा था, ताकि यहूदियों से छुटकारा मिल सके और उनके धन पर कब्जा कर सके। यहूदियों के प्रति मुहम्मद की नफरत और गुस्सा कुरान की उन आयतों में भी झलकने लगा, जिन्हें वो नाजिल कर रहा था। इन आयतों में मुहम्मद यहूदियों पर अल्लाह के प्रति कृतघ्न होने और रसूल की हत्या करने एवं उनके अपने नियम-कायदे तोड़ने का आरोप मढ़ने लगा। मुहम्मद कहने लगा कि चूंकि यहूदियों ने 'सबत' के नियम को तोड़ा, इसलिए ईश्वर ने उनको लंगूर और सुअर बना दिया।[70] इसके बाद बहुत से मुसलमान यह मानने लगे कि यहूदी बंदर और सुअर के वंशज हैं।

बनू कैनका पर हमला

बनू कैनका यहूदियों का वह पहला समूह था जो मुहम्मद के गुस्से का शिकार हुआ। ये लोग यसरब में घर बनाकर रहते थे। इन यहूदियों का मुख्य पेशा शिल्पकारी, स्वर्णकारी, लुहारी, घरों में रोजाना प्रयोग होने वाले सामान और हथियार बनाना था। ये लोग युद्ध की कला में निपुण नहीं थे और यह काम उन्होंने अरबों पर छोड़ रखा था।

यहूदियों की यही गलती उनके अस्तित्व के लिए घातक सिद्ध हुई। बनू कैनका समूह अरब जनजाति ख़ज़रज के साथ जुड़ा था और ये प्रतिद्वंद्वी अरब जनजाति आस से संघर्ष में ख़ज़रज जनजाति का समर्थन करता था।

मुसलमानों को तब यहूदियों पर हमले का मौका मिल गया जब कुछ यहूदियों और मुसलमानों के बीच झड़प हुई। हुआ यह कि यहां के बाजार में स्थित आभूषण की दुकान में एक मुस्लिम महिला गहने खरीद रही थी। बनू कैनका समुदाय के एक सदस्य ने मजाक में चुपके से उस महिला के स्कर्ट के जमीन पर फैले भाग पर पिन ठोक दिया। जब वह महिला उठी तो उसका स्कर्ट फट गया और वह निर्वस्त्र हो गई। मुहम्मद मुसलमानों के मन में यहूदियों के प्रति नफरत पहले ही भर चुका था। इसी नफरत की आग में वहां से गुजर रहा एक मुसलमान उस यहूदी के ऊपर टूट पड़ा और उसकी हत्या कर दी। उस यहूदी के रिश्तेदारों ने बदले में उस मुसलमान को मार डाला।

मुहम्मद को ऐसे ही किसी बहाने का इंतजार था। इसलिए मामले को शांत करने के बजाय मुहम्मद ने अन्यायपूर्ण ढंग से सारे यहूदियों को इसका जिम्मेदार ठहरा दिया और ऐलान कर दिया कि या तो वे इस्लाम कबूल कर लें या जंग का सामना करें। यहूदी मुहम्मद की इस धमकी को अनसुना करते हुए अपने-अपने घरों में चले गए। मुहम्मद ने यहूदियों की घेराबंदी कर ली, उनके जल स्रोतों को बाधित कर दिया और उन सबका कत्ल करने का प्रण किया।

कुरान के आयत 3:12 में मुहम्मद ने उस धमकी को दोहराया: ''तुम सब हारोगे और एक साथ जहन्नुम भेजे जाओगे।'' मुहम्मद डींगें हांक रहा था कि किस तरह उसने बद्र में कुरैशों को हराया था।

एक पखवाड़ा बीतने के बाद यहूदियों ने आत्मसमर्पण करने के लिए समझौता करने की कोशिश की, लेकिन मुहम्मद टस से मस न हुआ। मुहम्मद इन सबका कत्ल करना चाहता था। ख़ज़रज कबीले के सम्मानित संरक्षक अबदुल्ला बिन उबई ने मुहम्मद का कॉलर पकड़ कर कहा कि वे अकारण अपने सहयोगियों और दोस्तों का कत्ल नहीं होने देंगे। मुहम्मद जानता था कि ख़ज़रज कबीले के लोग अबदुल्ला बिन उबई का कितना सम्मान करते हैं और यह भी कि यदि ख़ज़रज के लोग इकट्ठा हो गए तो मुहम्मद बुरी तरह परास्त होगा। गुस्से में लाल मुहम्मद ने अबदुल्ला बिन उबई को पीछे धकेला, लेकिन फिर उसे समझ आ गया कि वह उस वक्त उनसे जीत नहीं सकता, इसलिए मुहम्मद ने इज्जत बचाने के लिए कहा कि उन यहूदियों की हत्या नहीं करेगा, बशर्ते कि वे सब के सब शहर छोड़ दें।

इब्ने-इसहाक ने यह किस्सा यूं बताया हैः

बनू कैनका कबीला उन पहले यहूदियों में से था, जिसने रसूल के साथ हुए समझौते को तोड़ा। बद्र और उहद के बीच यह युद्ध हुआ। रसूल व उनके आदमियों ने यहूदियों की तब तक घेराबंदी किए रखी, जब तक कि उन्होंने बिना शर्त आत्मसमर्पण नहीं कर दिया। जब अल्लाह ने इन यहूदियों को उनके (मुहम्मद) कदमों में झुका दिया तो अब्दुल्ला बिन उबई बिन सलूल मुहम्मद के पास गए और बोले ओ, मुहम्मद! मेरे लोगों के साथ दयापूर्वक व्यवहार करें (अब वे ख़ज़रज के सहयोगी थे।)। लेकिन रसूल ने उनकी बातों को कोई महत्व नहीं दिया। अब्दुल्ला उबई बिन सलूल ने मुहम्मद से फिर दरियाफ्त की, लेकिन वह मुंह फेर कर चले गए। इतने में अब्दुल्ला ने पीछे से मुहम्मद के जामे का कालर पकड़ लिया। यह देखकर मुहम्मद का मुंह गुस्से से लाल हो गया। मुहम्मद ने कहा, 'भाड़ में जाओ, मुझे जाने दो।' अब्दुल्ला ने कहा, 'नहीं, ईश्वर के लिए, मैं तुम्हें तब तक नहीं जाने दूंगा, जब तक कि तुम मेरे लोगों से उदारता से नहीं पेश आओगे।' अब्दुल्ला ने कहा, '400 लोग बिना असलहे और तीन सौ हथियारबंद आदमी दुश्मनों से मेरी रक्षा के लिए तैनात थे। क्या तुम उन सब को एक ही दिन में काट डालोगे ? ईश्वर

के लिए, मैं वो इंसान हूं, जिसे पता है कि परिस्थितियां बदल सकती हैं।' रसूल ने कहा, 'तुम उन आदमियों को रखो अपने पास।' [71]

जीवनी लिखने वालों ने यह भी कहा है कि मुहम्मद ने मुंह फुलाते हुए कहा था, 'उन्हें जाने दो, अल्लाह सजा देगा उन्हें भी और अब्दुल्ला को भी! इस तरह मुहम्मद ने उन लोगों को जिंदगी बख्श दी थी, पर शर्त यह थी कि वे निर्वासन में चले जाएं।'[72]

मुहम्मद ने मांग की कि बनू कैनका कबीले के लोग अपना सारा माल और हथियार उनके हवाले कर दें। बनू कैनका कबीले से मिले माल का पांचवां हिस्सा मुहम्मद ने खुद अपने लिए रख लिया और बाकी अपने आदमियों में बांट दिया। इसके बाद बनू कैनका कबीला लुप्त हो गया। मुस्लिम इतिहासकार ऐसा भी कहते हैं कि ये शरणार्थी सीरिया के अज़रुआत चले गए, जहां कुछ दिन ठहरे और कुछ समय बाद मर-खप गए।[73]

बनू नज़ीर कबीले पर धावा

अब अगला नंबर बनू नज़ीर कबीले का था। यसरब में रहने वाला यहूदियों का यह एक और कबीला था। बनू कैनका कबीले के साथ मुहम्मद ने जो किया था, उसे देख इस कबीले के मुखिया काब इब्ने-अशरफ क़ुरैश से शरण मांगने गए। लेकिन जैसा कि ऊपर बताया गया है कि काब इब्ने-अशरफ का कत्ल कर दिया गया।

मक्कावासियों और मुसलमानों में प्रतिकारात्मक युद्ध (ओहद) हुआ था, जिसमें मुसलमान बुरी तरह हारे थे। मुहम्मद को इस नुकसान की भरपाई करनी थी और दूसरी जंगों को जीतकर अपने अनुयायियों में यह भरोसा भी जगाना था कि अल्लाह ने काफिरों को माफ नहीं किया है।

मुहम्मद के इस उद्देश्य के लिए बनू नज़ीर कबीला आसान लक्ष्य था। पाकिस्तानी मुस्लिम इतिहासकार और कुरान का व्याख्याकार, मौदूदी, जो आज के इस्लामी पुनरुत्थानवाद का विचारक भी है, इस किस्से को यूं सुनाता है: 'इन दंडात्मक उपायों (कैनका कबीले का समाप्त हो जाना और यहूदी कवियों की शृंखलाबद्ध हत्याओं) के बाद कुछ समय तक तो यहूदी इस तरह डरे हुए थे कि उन्होंने कोई और बदमाशी करने की हिम्मत नहीं की। लेकिन बाद में शव्वाल (अरबी महीना) में क़ुरैश ने बद्र में हुई अपनी हार का बदला लेने के लिए मजबूत तैयारी के साथ मदीना के लिए कूच किया। यहूदियों ने देखा कि तीन हजार कुरैशों के मुकाबले मुहम्मद के नेतृत्व में केवल एक हजार आदमी आगे बढ़ रहे हैं और उनमें से 300 लोग ऐसे थे जो बीच में मुहम्मद को छोड़कर मदीना लौट गए थे। ये वो लोग थे जो ख़ज़रज कबीले के मुखिया अब्दुल्ला इब्ने उबई के अनुयायी थे। इन लोगों ने शहर की सुरक्षा के लिए पाक रसूल के साथ जाने से मना कर संधि का खुलेआम उल्लंघन किया था, जबकि समझौते के मुताबिक इन लोगों के लिए रसूल का साथ देना बाध्यकारी था।'74

यह बात चकित करने वाली है कि इस तथ्य के बावजूद मुसलमान सोचते हैं कि मक्का के खिलाफ मजहबी जंग में मुहम्मद का साथ देने के लिए वे यहूदी बाध्य थे, जिनके एक कबीले को मुहम्मद ने समाप्त कर दिया था और कबीले के मुखिया व दो कवियों को मौत के घाट उतार दिया था। यहूदियों का मुहम्मद और क़ुरेश के बीच जंग से कुछ लेना देना नहीं था। वैसे भी बनू कैनका कबीले को समाप्त करने और कबीले के लोगों व कवियों का कत्ल करके मुहम्मद ने पहले ही समझौता तोड़ दिया था। बावजूद इसके मुहम्मद के अत्याचारी कार्यों को न्यायोचित ठहराने के लिए मुस्लिम पक्षकार समझौता तोड़ने का जिम्मेदार यहूदियों को बताते हुए दोषारोपण करते हैं। मुहम्मद अब बनू नज़ीर पर धावा बोलने के लिए बहाना ढूंढ रहा था। बनू नज़ीर कबीले के पास यसरब की ऊपजाऊ भूमि और खजूर के बाग हुआ करते थे। नज़ीर कबीले के लोगों ने खेती व बागों के रखरखाव के लिए अरब के लोगों को

रोजगार दे रखा था। तद्नुसार, मुहम्मद की कृपा से पूरी तरह डकैत बन चुके कुछ मुसलमानों ने बनू कल्ब कबीले के दो आदमियों को मार दिया। जबकि इस कबीले ने मुहम्मद से संधि की थी कि उसके आदमी कबीले के लोगों के साथ हत्या या लूटपाट की वारदात नहीं करेंगे और बदले में वे मुहम्मद को समर्थन देंगे। अस्ल में मुहम्मद के आदमियों ने गलती से दूसरे कबीले का समझकर बनू कल्ब कबीले के लोगों को मार दिया। अब रिवायत के मुताबिक मुहम्मद की बाध्यता थी कि इस रक्तपात के लिए मुआवजा दे। बनू कैनका कबीले से छीना गया बहुत सारा धन होने के बावजूद वह बनू नज़ीर कबीले के पास गया और उनसे कहा कि संधि के मूल समझौते के मुताबिक उन्हें भी यह मुआवजा अदा करने में मदद करना चाहिए। यह मांग नज़ीर कबीले में गुस्सा भड़काने वाली थी। मुहम्मद को भी लगा कि बनू नज़ीर कबीले के लोग इस मांग का विरोध करेंगे और उसे कबीले पर हमला करने के लिए अच्छा बहाना मिल जाएगा। मगर ऐसा कुछ नहीं हुआ। नज़ीर कबीले के लोग इतने डरे हुए थे कि इस अन्यायपूर्ण मांग के विरोध में जाने की उनकी हिम्मत नहीं पड़ी।

नज़ीर कबीले के लोग इस सहायता में शामिल होने को तैयार हो गए और रकम एकत्र करने चले गए। मुहम्मद और उसके साथी एक दीवार के पास बैठकर इंतजार करने लगे। लेकिन मुहम्मद तो चाहता नहीं था कि ऐसा हो। उसने तो इसलिए ऐसी अनुचित मांग की थी और उसे उम्मीद थी कि इस पर कबीले की नकारात्मक प्रतिक्रिया आएगी, जिससे उसे अपनी खुराफात को अंजाम देने का मौका मिल जाएगा। अब उसे किसी और रणनीति की आवश्यकता थी।

अचानक उसे कुछ नया सूझा। मुहम्मद उठ खड़ा हुआ और अपने साथियों से कुछ कहे बिना वहां से निकलकर घर चला गया। बाद में जब उनके साथी उससे मिले और पूछा कि ऐसा क्यों किया तो उसने कहा कि उसे फरिश्ते जिब्राईल ने बताया, जिस दीवार के पास वो बैठा था, उसके ऊपर से यहूदी उनके सिर पर पत्थर गिराने की साजिश रच रहे थे। यह बहाना बनाकर मुहम्मद बनू नज़ीर पर हमला करने की तैयारी करने लगा।

हालांकि, मुहम्मद के किसी साथी ने दीवार पर न तो किसी को चढ़ते देखा था और न ही उन्हें अपनी जान पर किसी खतरे का आभास हुआ था। फिर भी ये लोग चूंकि मुहम्मद का अनुसरण करने और उनकी बात पर भरोसा करने से आर्थिक फायदा पाते थे, इसलिए उसकी इन बातों पर अविश्वास करने का उनके पास कारण नहीं था।

कोई भी विवेकशील प्राणी मुहम्मद की इन कहानियों के बेतुकेपन को समझ सकता है। यदि बनू नज़ीर कबीले के लोग वास्तव में मुहम्मद को मारना चाहते या ऐसा करने का साहस करते तो उन्हें दीवार पर चढ़कर पत्थर मारने की जरूरत नहीं थी। यह आरोप बिलकुल झूठा है। क्योंकि उस वक्त मुहम्मद के साथ मुट्ठीभर लोग, जिसमें अबू बक्र, अली और शायद एक या दो लोग और थे। ऐसे में यदि नज़ीर कबीले के लोग मुहम्मद की हत्या करना चाहते तो आसानी से कर सकते थे।

रसूल, जो यह मानता था कि अल्लाह खैरुल माकेरीन (धोखा देने वाले कपटी लोगों में से सर्वोत्कृष्ट) है (कुरान. 3:54), खुद एक धूर्त इंसान था। जिब्राईल द्वारा उसे यहूदियों द्वारा जान से मारने की साजिश की सूचना देना उतना ही विश्वसनीय है, जितना कि मुहम्मद का जन्नत और जहन्नुम की यात्रा का किस्सा। फिर भी मुहम्मद के निरे बेवकूफ अनुयायियों ने उसकी बात पर भरोसा किया और यह मनगढ़ंत कहानी सुनकर वे इतने गुस्से में आ गए कि निर्दोष लोगों की हत्या करने के लिए उसके साथ आ गए।

मौदूदी ने अपनी बात यह कहते हुए खत्म की: 'अब उन लोगों पर कोई रियायत बरतने का सवाल ही नहीं था। रसूले-पाक ने उन लोगों को तुरंत यह पैगाम भिजवाया कि उन्होंने जो द्रोह उनके खिलाफ की थी, उसका पता उन्हें चल गया है। इसलिए वे दस दिन में मदीना छोड़कर चले जाएं। इसके बाद यदि उनमें से कोई अपने घरों में मिल

गया तो उसे तलवार का सामना करना पड़ेगा।' मौदूदी जब मुहम्मद के विश्वासघात को इस तरह पेश करता है, जैसे कि यह स्वाभाविक और सामान्य व्यवहार था तो वह मुस्लिमों द्वारा दिए जाने वाले कुतर्क का अच्छा उदाहरण पेश करता है।

अब्दुल्ल्ला बिन-उबई ने बनू नज़ीर कबीले की मदद के लिए हर संभव प्रयास किया। लेकिन तब तक उनका प्रभाव कम हो चला था और मुहम्मद के आदमी कट्टरता में इस कदर अंधे हो चुके थे कि उन्होंने अब्दुल्ला को मुहम्मद के शिविर में घुसने तक नहीं दिया और उन्हें हक्का-बक्का व अपमानित किया।

कुछ दिन बाद नज़ीर कबीले के लोगों ने बीच का रास्ता निकालते हुए अपने सारे सामान-संपत्ति मुहम्मद को देकर नगर छोड़ दिया। उनमें से कुछ सीरिया चले गए और कुछ खैबर। लेकिन उस इलाके में भी समृद्ध और हरेभरे यहूदी किलों पर मुहम्मद की गिद्ध दृष्टि पड़ चुकी थी और कुछ समय बाद इन इलाकों से भी नज़ीर कबीले के लोगों को नष्ट कर दिया गया। भले ही मुहम्मद ने इन लोगों को जाने दिया हो, लेकिन उसके दिमाग में सबसे पहले इनका नरसंहार करने का ही खयाल आया था। सीरा के निम्नलिखित उद्धरण से यह साफ हो जाता है।

जहां तक बनू बी. अल-नज़ीर के निर्वासन के सूरा का संबंध है तो इसमें यह दर्ज है कि अल्लाह ने नज़ीर कबीले के लोगों पर कहर बरपाया था और अपने रसूल को उनको काबू में करने और उनके साथ निपटने की ताकत दी थी। अल्लाह ने कहा: 'वो जो कुरान पर विश्वास नहीं करते थे, उन्हें मैंने (अल्लाह) घरों से निकाल बाहर कर पहले निर्वासन पर भेजा... । इसलिए जो समझदार हैं वे जान लें कि अल्लाह ने उनके लिए निर्वासन तय कर दिया।' यह अल्लाह का बदला है, 'अल्लाह उनको इस दुनिया में भी सजा देगा, (कुरान: 59:3) तलवारों से और उस दूसरी दुनिया में उन्हें जहन्नुम की आग की सजा देगा।' [75]

इस हमले में मुहम्मद ने बनू नज़ीर के सभी वृक्षों को काटकर जला देने का आदेश दिया। इस तरह की क्रूरता पहले कभी भी नहीं देखी गई थी, यहां तक कि प्राचीन काल में अरबों में भी नहीं। मुहम्मद को अपने अपराध को जायज ठहराने के लिए बस इतना करना था कि वह अपने कृत्यों को अल्लाह का आदेश बताकर पेश करे। यह काम तब बहुत आसान है, जब आपका अल्लाह आपकी हथेली पर हो।

तुम (ओ मुसलमानो) दुश्मन के खजूर के पेड़ों को काटकर गिरा दो, नहीं तो दुश्मन इन्हीं पेड़ों के दरख्तों के सहारे खड़े हो जाएंगे। यह अल्लाह का हुक्म है। (कुरान. 59:5)

यह समझना कठिन नहीं है कि अरब के लोग अरब के झुलसाने वाले रेगिस्तान में पेड़ काटने या कुओं में जहर डालने के अपराध करने वाले को मौत की सजा का हकदार क्यों मानते थे? इस तरह की क्रूरता अरबी नैतिकता और सिद्धांतों के विरुद्ध थी। पर मुहम्मद किसी कायदे या सिद्धांत को नहीं मानता था। अपने उद्देश्य की प्राप्ति के लिए वह किसी बात की परवाह नहीं करता था। वह अपने रास्ते में आने वाले किसी व्यक्ति या वस्तु की कुर्बानी देने के लिए हमेशा तैयार रहता था। उसके अनुयायी इसे दैवीय इच्छा पूरा करने के मुहम्मद के संकल्प के रूप में देखते थे। मुस्लिम विद्वान अल-मुबारकपुरी कहता है: 'अल्लाह के पैगम्बर ने उनके हथियार, जमीन, मकान और धन सब छीन लिए। लूट के माल में उन्हें 50 कवच, 50 टोप और 340 तलवारें भी मिली थीं।'

लूट का यह पूरा माल रसूल के लिए था, क्योंकि इन पर कब्जा करने के लिए कोई लड़ाई नहीं लड़ी गई थी। उसने लूट का कुछ माल अपनी इच्छा से शुरुआत में मक्का आए कुछ अप्रवासियों और दो गरीब मजदूरों अबू दुजाना और सुहैल बिन हनीफ को दे दिया। साथ ही लूटी गई संपदा का एक हिस्सा अपने पास रख लिया, ताकि सालभर परिवार का दाना-पानी चल सके। बाकी धन को आगे अल्लाह की राह में आने वाली जंगों की तैयारी करते हुए मुसलमानों की फौज के लिए हथियार की व्यवस्था में व्यय किया गया। सूरा अल-हश्र की लगभग सभी आयतें

(अध्याय 59–भीड़) यहूदियों के समाप्त होने का वर्णन करती हैं और मुसलमानों के छल–कपट के विद्रूप तरीकों व ढोंग की जानकारी देती हैं। ये आयतें लूट के माल के नियमों को बताती हैं। इस अध्याय में अल्लाह प्रवासियों और मजदूरों की तारीफ करता है। क़ुरान का यह अध्याय जंगी मकसद के लिए दुश्मन की जमीन और पेड़ों को काटने व जलाने को धर्मसम्मत ठहराता है। इस तरह के कार्य यदि अल्लाह की राह में किए जाएं तो इन्हें भ्रष्टाचार या अनाचार नहीं माना जाएगा।'[76]

मौदूदी की तरह मुबारकपुरी की बातें भी उम्मत के विवेकशून्य और स्वार्थी चरित्र को उजागर करती हैं। मुसलमान वही करते हैं जो उनके पैगम्बर ने किया। ये दोनों इस्लामिक विद्वान मानते हैं कि संघर्ष में गैर मुस्लिमों की संपत्ति को जलाना और लूटना वैध है, क्योंकि ऐसा इनके रसूल ने किया था और रसूल ने इसकी अनुमति दी थी। **मुहम्मद के कार्यकलापों के आधार पर यह निष्कर्ष निकालना उचित ही है कि इस्लामिक हिंसा दुर्भाग्य से सच्चे इस्लाम से विचलन नहीं है। हत्या करना, बलात्कार करना और नरसंहार करना इस्लाम की प्रथा है। जब इस्लाम के प्रचार की बात हो तो कुछ भी वर्जित नहीं है।**

विडंबना यह है कि सूरा अल–हश्र ईमान वालों को पवित्र रहने की प्रेरणा देता हुआ समाप्त होता है और यह भी स्पष्ट करता है कि मुसलमानों के लिए पवित्रता का अर्थ बिल्कुल अलग है। मुस्लिम समर्थक कहते हैं कि आज की नैतिकता को 1400 साल पहले आए हुए मुहम्मद पर लागू नहीं किया जाना चाहिए। विडंबना यह है कि यही लोग 1400 साल पूर्व की उस तथाकथित नैतिकता को मानक मानते हैं और हर दौर में उसे सभी मनुष्यों पर थोपने की कोशिश करते हैं। एक मुसलमान ने मुझे लिखा, 'नैतिक रूप से क्या सही है और क्या गलत, इसकी धारणा के कारण बहुत से लोगों के लिए यह पूरी रिवायत समस्या पैदा करने वाली बन गई है।' इस मानसिक रुग्णता का मूल सीधे तौर पर उस ईसाइयों की 'दूसरा गाल आगे करने' और 'ईसा मसीह के मोक्ष दिलाने वाले कष्ट' वाली मानसिकता में है। सदियों से आज तक ये दोनों मानसिकताएं यूरोप के मन–मस्तिष्क में बीमारी की तरह बैठ गई हैं।' मैं नहीं मानता कि नैतिकता और सिद्धांत बीमारी हैं। ये दोनों मनुष्य की अंतरात्मा से जुड़ी होती हैं और इनकी परिधि गोल्डन रूल होती है। जब हम इस पर विचार करते हैं कि हमारे साथ दूसरों का व्यवहार कैसा होना चाहिए तो सही और गलत का फर्क पता चलता है।

बनू कुरैजा पर हमला

यसरब में मुहम्मद के खतरनाक इरादों का शिकार होने वाली अंतिम यहूदी जनजाति बनू कुरैजा थी। ट्रेंच (खंदक) की जंग समाप्त होने के बाद से ही मुहम्मद की नजर बनू कुरैजा पर गड़ गई थी। अल मुबारकपुरी लिखता है, 'मुहम्मद ने दावा किया कि सबसे बड़ा फरिश्ता जिब्राईल उसके पास आया था और बोल रहा था, 'हे रसूल! तुम अपनी म्यान से तलवार निकालो और बनू कुरैजा की बस्ती की ओर कूच करो, उनसे जंग करो। जिब्राईल बोला, वह अपने फरिश्तों के दल के साथ आगे–आगे चलकर दुश्मन के किले को हिला देगा और वहां के निवासियों में खौफ पैदा कर देगा।''77 अल मुबारकपुरी आगे लिखता है, 'अल्लाह के पैगम्बर ने अजान लगाने वाले को बुलाया और बनू कुरैजा कबीले पर हमले का ऐलान करने का हुक्म दिया।'[78]

इस्लाम का अध्ययन करते समय यह ध्यान देने वाली बात है कि अजान देने का एक अर्थ जंग के लिए आवाज लगाना भी है। मुसलमानों के दंगे व उपद्रव हमेशा मस्जिद में नमाज पढ़ने के बाद ही शुरू होते हैं। खासकर रमजान के महीने में और शुक्रवार को नमाज के बाद मुसलमान अधिक विद्वेषपूर्ण हो जाते हैं। 1981 में मुहम्मद के जन्मदिन के मौके पर तकरीर में अयातुल्ला खुमैनी ने कहा:

'मेहराब (मस्जिद) का मतलब है जंग की जगह। मेहराबों से जंग आगे बढ़नी चाहिए। जैसा कि इस्लाम की सभी जंगों की कार्यवाही मेहराबों से शुरू हुई। रसूल के पास दुश्मनों को मारने के लिए तलवार थी। हमारे पवित्र इमाम लड़ाका रहे हैं। वे सब फौजी थे। वे लोगों की हत्याएं करते थे। हमें एक खलीफा की जरूरत है, जो हाथों को काट सके, सिर धड़ से उड़ा सके और पत्थर मारकर लोगों की हत्या करने का हुक्म दे सके।'[79]

मुहम्मद के पास तीन हजार हरावल दस्ते वाली फौज थी और अंसार (सहायक) व मुहाजिरीन (अप्रवासी) के तीस घुड़सवार थे। बनू कुरैजा कबीले पर आरोप लगाया गया कि ये मक्कावासियों के साथ मिलकर मुसलमानों के खिलाफ साजिश रच रहे हैं। जबकि इन्हीं मुस्लिम इतिहासकारों ने इस आरोप को खारिज करते हुए कहा है कि मक्कावासियों ने इसलिए बिना लड़े ही मुहम्मद के समक्ष आत्मसमर्पण कर दिया था, क्योंकि इन्हें बनू कुरैजा कबीले से समर्थन नहीं मिला था।

मुहम्मद ने जब बनू कुरैजा पर हमले का इरादा जाहिर किया तो उसके कट्टर समर्थक और चचेरे भाई अली ने कसम खाई कि वो अब या तो इस कबीले के लोगों के ठिकानों पर हमला करके इन्हें खत्म करने में कामयाबी हासिल करेगा अथवा अपनी जान दे देगा।

बनू कुरैजा कबीले के खिलाफ मुहम्मद की जंग 25 दिन चली। अंत में इस कबीले के लोगों ने बिना शर्त आत्मसमर्पण कर दिया। मुहम्मद ने आदेश दिया कि इस कबीले के पकड़े गए पुरुषों के हाथ-पैर बांध दिए जाएं, जबकि महिलाओं व बच्चों को अलग एक जगह रखा जाए। बनू कुरैजा कबीले का यह हश्र देखकर अब तक इस कबीले की मदद कर रहे ओस कबीला हिम्मत हार गया और इसने मुहम्मद से रहम की भीख मांगी। मुहम्मद ने अपने बीच के गुंडे साद बिन मुआविया, जो तीर से गंभीर रूप से घायल हो गया था, से कहा कि वह यहूदियों पर निर्णय दे। साद कभी बनू कुरैजा कबीले का सहयोगी था, लेकिन इस्लाम स्वीकार करने के बाद इस कबीले के प्रति उसके मन में शत्रुता पनप गई थी। साद ने यह भी आरोप लगाया कि ट्रेंच की जंग के दौरान मक्कावासियों ने तीर चलाए थे, जो उसे लगे। साद मुहम्मद का अंगरक्षक था और मुहम्मद जानता था कि बनू कुरैजा के बारे में उसके मन में क्या है।

साद का निर्णय था कि ओस कबीले के आदमियों का कत्ल कर दिया जाए और औरतों व बच्चों को कैदी बनाकर इनकी संपत्ति को मुसलमान लड़ाकों में बांट दिया जाए।

मुहम्मद इस क्रूर निर्णय पर प्रसन्न हुआ और बोला कि साद ने अल्लाह के निर्देश पर यह फैसला सुनाया है।[80] वह अक्सर स्वयं के निर्णयों का श्रेय अल्लाह को देता था। इस बार उसने अपनी सनक पूरी करने के लिए साद को मोहरा बनाया।

अल मुबारकपुरी कहता है 'वास्तव में इन यहूदियों को अपने विश्वासघात के लिए ऐसी सख्त सजा ही मिलनी चाहिए थी। ये लोग इस्लाम के खिलाफ इकट्ठा हुए थे और इस्लाम से लड़ने के लिए इन्होंने बड़ा शस्त्रागार बनाया था, जिसमें 1500 तलवारें, 2000 भाले, 300 हथियारबंद, 500 कवच थे। अब ये सब साजो-सामान मुसलमानों के कब्जे में थे।'

जो महत्वपूर्ण बात अल मुबारकपुरी गोल कर गया, वह यह था कि बनू-कुरैजा ने अपने हथियार और कुदाल व फावड़े मुसलमानों को ही उधार दिए थे, ताकि वे खाई खोदकर अपनी हिफाजत कर सकें। यह बताता है कि मुसलमान कभी उसके प्रति कृतज्ञ नहीं होंगे, जिन्होंने इनकी मदद की होगी। मुसलमान कभी उसके प्रति अहसानमंद नहीं होते हैं, जो इनकी मदद करता है। ये आपकी सहायता भी लेंगे और जब इन्हें लगेगा कि अब आपकी जरूरत नहीं है तो पीछे से छुरा भोंक देंगे। हम अगले अध्याय में इस मानसिक विकृति का मनोविज्ञान बताएंगे।

मुसलमान इतिहासकार नरसंहार को जायज ठहराने के लिए आधारहीन आरोप लगाकर बनू कुरैजा को ही इसका जिम्मेदार बताने को तत्पर रहते हैं। इन्होंने इस कबीले पर दुष्ट होने, विद्रोह करने, विश्वासघात करने और इस्लाम के खिलाफ साजिश करने के आरोप लगाए हैं। हालांकि यह ब्यौरा कहीं नहीं दिया गया कि इनके द्वारा किए गए पाप की प्रकृति कैसी थी कि इनका नरसंहार करने और इतना कठोर दंड देने की जरूरत पड़ी। मदीना के बाजार में गड्ढे खोदे गए और 600 से 900 यहूदियों का सिर कलम कर उनकी लाशों को इसमें डाल दिया गया।

खैबर पर हमले में बंदी बनाए गए लोगों में बनू नज़ीर कबीले के मुखिया खुयई इब्ने-अखतब के साथ इनकी विवाहित बेटी सफिया भी थी। मुहम्मद ने सफिया को लूट के माल के रूप में अपने हिस्से में ले लिया।

इब्ने-अखतब के दोनों हाथ पीछे बांधकर चौराहे पर लाया गया। दुस्साहस करते हुए उसने मुहम्मद का हुक्म मानने से इंकार कर दिया और इस क्रूर इंसान के सामने झुकने के बजाय मरना पसंद किया। उसे घुटने के बल बैठने का हुक्म दिया गया और फिर सिर धड़ से अलग कर दिया गया।

यह तय करने के लिए कि किसे कत्ल करना है, युवाओं के कपड़े उतरवाकर जांचा गया। जिन युवकों के गुप्तांगों पर बाल पाए गए, उनका सिर कलम कर दिया गया। इस नरसंहार में बच गए एक व्यक्ति अतिया अल-कुरैज नामक यहूदी ने बाद में इस घटना को याद करते हुए कहा, 'मैं बनू कुरैजा के बंदियों में से एक था। उन्होंने (मुसलमानो ने) पूरा जांचा और जिनके गुप्तांगों पर बाल दिखे, उनकी हत्या कर दी गई। जिनके गुप्तांगों पर बाल नहीं आए थे, उनकी हत्या नहीं की गई। मैं भी उन्हीं में से एक था, जिनके गुप्तांगों पर बाल नहीं उगे थे।'[81]

मुहम्मद ने बहुत सारी यहूदी जनजातियों को मार डाला और समाप्त कर दिया। इन यहूदी कबीलों में बनू कैनका, बनू नज़ीर, बनू कुरैजा, बनू मुस्तलिक, बनू जौन और खैबर के यहूदी शामिल थे। मृत्यु शैया पर पड़े मुहम्मद ने अरब प्रायद्वीप के सभी गैर मुस्लिमों का सफाया करने का हुक्म दिया था।[82] मुहम्मद के इस हुक्म को दूसरे खलीफा उमर ने अपने शासनकाल में पूरा किया। इसने यहूदियों, ईसाइयों और मूर्तिपूजकों को पूरी तरह नष्ट कर दिया और इस्लाम कबूल करने, अपना देश छोड़कर भाग जाने या मरने पर मजबूर कर दिया।

इधर, मुहम्मद लूटपाट से इतना सम्पन्न हो चुका था कि अपनी वाहवाही करने वालों पर उदारता दिखा सके। अनस लिखता है: 'बनू कुरैजा और बनू अल-नज़ीर की जीत से पहले लोग रसूल को उपहार के रूप में खजूर देते थे। इसके बाद वे अब लोगों को उनके उपहार वापस करने लगे।'[83]

कुरान में बनू कुरैजा के नरसंहार पर एक आयत है, जो इस कबीले की पुरुषों की हत्याओं और औरतों व बच्चों को बंदी बनाकर ले जाने के मुहम्मद के कृत्य को अनुमोदित करता है।

'और अहले-किताब में से जिन लोगों (बनू कुरैजा) ने उन (कुरैश) की मदद की थी, अल्लाह उनको उनके क़िलों से (बेदखल करके) नीचे उतार लाया और उनके दिलों में (तुम्हारा) ऐसा रौब बिठा दिया कि तुम उनके कुछ लोगों को क़त्ल करने लगे।' (कुरानः 33:26)

तक़िय्याः पवित्र धोखा

ऊपर हमने देखा कि मुहम्मद ने अपने अनुयायियों को झूठ बोलने और यहां तक कि खुद को भी बुरा-भला कहने का अधिकार दे रखा था, ताकि शिकार का विश्वास जीत कर उसकी हत्या की जा सके। ऐसी बहुत सी घटनाएं हैं, जिनमें मुसलमानों ने गैर-मुस्लिमों के साथ दोस्ती करने का दिखावा किया और जैसे ही विश्वास जम गया, उसकी हत्या कर दी।

हुदैबिया में मुहम्मद ने मक्कावासियों के साथ एक संधि की और वादा किया कि वह मक्का के उन युवाओं और

गुलामों को वापस भेज देगा, जो पलायन कर गए थे और उसके साथ हो लिए थे। इब्ने-इसहाक मक्का निवासी अबू बसीर का किस्सा बताता है, जो इस संधि के बाद मुहम्मद के पास चला गया था। मक्कावासियों ने इस संधि की याद दिलाते हुए एक खत लेकर दो व्यक्तियों को मुहम्मद के पास भेजा। मुहम्मद ने इन दो व्यक्तियों के समक्ष ऐसा जाहिर किया, जैसे वह बहुत कृतज्ञ हो। मुहम्मद ने अबू बसीर को बुलाया और कहा, 'जाओ, अल्लाह तुम्हारी और तुम्हारे साथ ये जो दो मजबूर हैं, उनकी मदद करेगा, रास्ता सुझाएगा।' अबू बसीर मुहम्मद के इशारे को समझ गया। बसीर इन दूतों के साथ लौट चला। करीब छह मील की दूरी तय हुई होगी कि एक जगह ये आदमी आराम करने के लिए रुके। अबू बसीर बोला,, 'ओ भाई! क्या तुम्हारी तलवार में धार है?' जवाब आया हां तो बसीर ने कहा कि वह तलवार देखना चाहता है। उस व्यक्ति ने कहा, 'तुम्हारी इच्छा है तो देख लो।' बसीर ने तलवार म्यान से निकाला और उस व्यक्ति पर उसी तलवार से हमला कर दिया, जिससे उसकी मौत हो गई। फिर वह मुहम्मद के पास आया और बोला, 'रसूल आपका वादा पूरा हुआ। अल्लाह ने अब आपको उस संधि से मुक्त कर दिया है। आपने मुझे यथासमय उन आदमियों के हवाले कर दिया और कहीं वे लोग मुझे फिर से बहका न लें, यह सोचकर मैंने अपने धर्म की रक्षा की।' मुहम्मद ने इस हत्यारे को सजा देने के बजाय हुक्म दिया कि वह अल-ईस जाए और कुरैश के काफिलों को लूटे। अल-ईस समुद्र तट के किनारे का वह क्षेत्र था, जहां से गुजरने वाले सड़क मार्ग का इस्तेमाल कुरैश सीरिया जाने के लिए करते थे। मुहम्मद ने मक्कावासियों के साथ जो संधि की थी, उसमें एक शर्त यह भी थी कि वह कुरैशों के कारवां पर घात लगाकर हमला नहीं करेगा। इस तरह मुहम्मद ने संधि तोड़ दी। इब्ने-इसहाक कहता है: 'जो मुसलमान मक्का चले गए थे, उन्होंने जब मुहम्मद द्वारा बसीर के बारे में कही गई बात सुनी तो वे उसका साथ देने के लिए अल-ईस की ओर निकल पड़े। मक्का से करीब 70 मुसलमान बसीर के साथ जुड़ गए। इन्होंने कुरैशों को परेशान किया, जो पकड़ में आ जाता उसे मार डालते थे और इनके सामने से जो भी कारवां गुजरता उसे छिन्न-भिन्न कर देते। कुरैशों ने मुहम्मद को सगोत्र होने का वास्ता देते हुए खत लिखा और इन मुसलमानों को मक्का से वापस अपने पास बुलाने की गुजारिश की, क्योंकि ये मुसलमान उनके किसी काम के नहीं थे। रसूल ने उन मुसलमानों को अपने पास मदीना बुला लिया।'[84]

इस्लाम का इतिहास विश्वासघात और धोखेबाजी से भरा हुआ है। ये सब मुसलमान थे और इसलिए मुहम्मद की जिम्मेदारी थे, लेकिन मुहम्मद इन्हें लूटपाट के लिए दूसरे इलाके में भेजकर अपनी जिम्मेदारी से बच गया। उसने इनको माफ किया और इनकी लूटपाट को वैधता भी प्रदान की। इसके बावजूद आज भी मुसलमान यही कहते हैं कि मक्का वालों ने संधि तोड़ी थी। आगे एक और उदाहरण देखिए:

जब मक्कावासी और दूसरी अरब जनजातियां मुहम्मद के हमलों और हत्याओं से त्रस्त हो गईं तो वे उसे सजा देने के लिए एक साथ आ गए। हालांकि इन्होंने मुहम्मद की तरह नहीं किया, जो न तो अपने इरादे जाहिर होने देता था और बिना चेतावनी दिए शिकार पर घात लगाकर हमला भी बोल देता था। बल्कि इन गैर-मुस्लिमों ने मुहम्मद को जंग के लिए तैयार रहने के लिए कई बार सूचनाएं दीं। इससे मुहम्मद को मदीना के चारों ओर खाई खोदने का पर्याप्त समय मिल गया। गैर मुस्लिम अरब कबीलों की संयुक्त फौज मदीना के बाहर जम गई। यह संयुक्त फौज खाई को पार करने की तरकीब सोच रही थी।

गैर मुस्लिमों की संयुक्त फौज ने बनू कुरैजा कबीले से मदद मांगी। मुहम्मद को इस गठबंधन की जानकारी थी। इसलिए उसने बनू कुरैजा व संयुक्त फौज के अन्य कबीलों के बीच दरार व अविश्वास डालने की तरकीब निकाली। नुऐम नाम का एक व्यक्ति हाल ही मुसलमान बना था, हालांकि उसने अभी तक यह बात दुनिया से छिपाए रखी थी। मुहम्मद ने नुऐम को बुलाकर कहा, 'हमारे बीच तुम्हीं ऐसे व्यक्ति हो, जो उनके बीच जा सकता है। इसलिए जाओ

और कर सको तो संयुक्त सेना और बनू कुरैजा कबीले के बीच दरार पैदा करो। जंग में धोखा देना जायज है।' इब्ने-इसहाक ने इस घटना को यूं बताया है:

'नुऐम ने वैसा ही किया, जैसा मुहम्मद ने कहा था। बनू कुरैजा कबीले से उसका अच्छा संबंध था। वह कबीले के लोगों के पास गया और उन्हें अपने संबंधों की दुहाई देते हुए बोला कि उसके दिल में कबीले के लोगों के प्रति बड़ा स्नेह है। जब कबीले के लोगों ने मान लिया कि वे उसकी बात पर संदेह नहीं करते हैं तो वह कहने लगा, कुरैश और ग़तफ़ान तुम लोगों जैसे अच्छे नहीं हैं। यह धरती, यहां की संपत्ति, तुम्हारी औरतें और बच्चे तुम्हारे हैं। तुम ये सब यहीं छोड़कर कहीं और नहीं जा सकते। देखो, कुरैश और ग़तफ़ान लोग मुहम्मद और उनके साथियों से लड़ने आए हैं। तुम लोग उनकी मदद कर रहे हो। उनका यहां क्या है, न तो यहां उनकी जमीन-जायदाद है और न ही औरतें व बच्चे। संभावना दिखेगी तो सबसे अधिक लाभ वहीं लेंगे, पर यदि किस्मत खराब रही तो तुम्हें अकेला छोड़कर वापस चले जाएंगे। पर तुम्हें यहीं रहना है और उनकी मदद करके तुम जीवन भर के लिए अपनी ही भूमि पर इस व्यक्ति (मुहम्मद) की दुश्मनी मोल ले लोगे। यदि तुम्हें अकेले इस व्यक्ति से लड़ना पड़े तो तुम कुछ नहीं कर पाओगे। इसलिए मदद करने से पहले इन कबीलों के मुखियाओं को अपने पास रख लो। इनके मुखिया मुचलके के रूप में तुम्हारे पास रहेंगे तो वे आखिर तक तुम्हारे साथ मुहम्मद से लड़ेंगे।' इन यहूदियों ने कहा कि बहुत अच्छी सलाह है। इसके बाद नुऐम कुरैशों के पास गया और उनके मुखिया अबू सूफियान व उनके साथियों से बोला, 'मैं तुम लोगों का अपना हूं। मुहम्मद का साथ मैंने छोड़ दिया है। मुहम्मद के खेमे में मुझे कुछ ऐसी बात पता चली, जो तुम लोगों को बताना अपना दायित्व समझता हूं और सुनो जो मैं बताने जा रहा हूं, वह बहुत गोपनीय है।' कुरैशों ने कहा, बताओ-बताओ, हम किसी को नहीं बताएंगे तो नुऐम ने कहना शुरू किया। नुऐम ने कहा, 'मेरी बात ध्यान से सुनो। ये यहूदी (बनू कुरैजा) मुहम्मद से भिड़कर पछता रहे हैं। उन्होंने मुहम्मद के पास पैगाम भेजा था और कहा,' क्या हम कुरैश व ग़तफ़ान कबीले के मुखियाओं को पकड़कर तुम्हारे हवाले कर दें, तुम उनका सिर कलम कर देना? फिर हम तुम्हारे साथ मिलकर इन दोनों कबीलों के बाकी लोगों को निपटा देंगे। मुहम्मद ने इन यहूदियों के प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया है। इसलिए यदि यहूदी (बनू कुरैजा) तुमसे तुम्हारे मुखिया को मांगें तो उनके पास मत भेजना।'

फिर नुऐम ग़तफ़ान कबीले के लोगों के पास गया और बोला, 'तुम लोग मेरा परिवार हो, मेरे दिल के बहुत करीब हो। मुझे नहीं लगता कि तुम सब मुझ पर संदेह करोगे।' इन लोगों ने कहा कि नहीं, वे उस पर बिलकुल संदेह नहीं करते। इसके बाद उसने इस कबीले के लोगों के सामने भी वही कहानी दोहराई, जो उसने कुरैशों को कही थी।[84]

मुहम्मद की यह तरकीब काम कर गई। जब गठबंधन के कबीलों ने यहूदी बनू कुरैजा से हमले में शामिल होने को कहा तो उन्होंने कुछ बहाना बनाते हुए इन कबीलों के कुछ व्यक्तियों को अपने पास बंधक के रूप में रखने की शर्त रख दी। इससे गठबंधन सेना वाले कबीलों के मन में बैठ गया कि नुऐम ने जो कहा है, वह सही है। गठबंधन सेना का मनोबल टूट गया और वो बिना लड़े वापस चले गए।

इस धोखे ने मुसलमानों को सुनिश्चित हार से बचा लिया। यह घटना मुसलमानों को एक सबक दे गई और तबसे मुसलमान जहां भी जिहाद करते हैं, वहां छल-कपट और धोखेबाजी को एक रणनीति के रूप में अपनाते हैं। एक हदीस में लिखा है:

हज्जाज बिन अलात ने बताया: 'ऐ, अल्लाह के रसूल: मुझे गुस्ताखी के लिए माफ कीजिए, पर मक्का में मेरा काफी धन और रिश्तेदार हैं। यदि उन सबको वापस पाने के लिए उनके सामने मुझे (मक्का के उन गैरमुस्लिमों को

बेवकूफ बनाने के लिए) आपके लिए गलत शब्दों का इस्तेमाल करना पड़े तो क्या मुझे माफी मिलेगी?' रसूल ने उसे माफ करते हुए कहा: 'वहां तुम्हें जो भी कहना है, वो कह देना।'[86]

यही वजह है कि पक्के मुसलमान जब पश्चिमी देशों में जाते हैं तो बहुत उदारवादी बनने का नाटक करते हैं। ये मुसलमान वही बोलते हैं, जो वहां के लोग सुनना पसंद करते हैं, लेकिन भीतर ही भीतर ये इन देशों के मूल निवासियों को नष्ट करने की साजिश रचते रहते हैं। ये मुसलमान खुद को बहुत मित्रवत और मिलनसार दिखाने की कोशिश करते हैं और ऐसा दिखाते हैं, मानो बहुत बड़े देशभक्त हों। हालांकि उनका एकमात्र उद्देश्य उस क्षेत्र में इस्लाम का प्रभुत्व स्थापित करना होता है। वे बातों से आपका दिल जीतने की कोशिश करते हैं, पर मन से आपके साथ कभी नहीं होते।

इस्लाम को आगे बढ़ाने के लिए झूठ-कपट, छल-प्रपंच को एक रणनीति के रूप में अपनाना तक़िय्या अथवा 'पवित्र छल' कहा जाता है। तक़िय्या के तहत मुसलमानों को गैर-मुस्लिमों की आंखों में धूल झोंकने के लिए झूठ बोलने की इजाजत होती है।

तक़िय्या में उस्ताद मुसलमानों के लिए इसका प्रमुख उद्देश्य इस्लाम के खतरे पर यथासंभव पर्दा डालना होता है। तक़िय्या का लक्ष्य होता है कि संभावित शिकार के दिमाग में कामयाब तरीके से यह डाला जा सके कि जिहाद उनके साथ नहीं किया जायेगा कि उनके लिए जिहाद नहीं है।

असलान ने अपनी पुस्तक 'नो गॉड बट गॉड' में छल-कपट के इसी इस्लामिक कला का प्रदर्शन करते हुए यह साबित करने की कोशिश की है कि 'दुनिया में जो हिंसक संघर्ष हो रहा है, वह मुसलमानों के भीतर के आपसी टकराव का नतीजा है, न कि इस्लाम और पश्चिम के बीच का बाह्य संघर्ष।' असलान आगे लिखते हैं: 'पश्चिमी जगत तो केवल तमाशबीन है। यह संघर्ष तो इस्लामी दुनिया के भीतर के लोगों का है, जो इस बात के लिए लड़ रहे हैं कि इस्लामी इतिहास के नए अध्याय का नायक कौन बनेगा। हालांकि इस्लामी दुनिया इस आपसी संघर्ष से खुद बेखबर है, पर इनकी आपसी शत्रुता में अनैतिक हानि हो रही है।'[87]

पर असलान जो कह रहे हैं, वह सच नहीं है। असलान की मानें तो ऐसा लगता है कि हमने न्यूयार्क, पेंटागन, लंदन, मैड्रिड और बेसलान मुसलमानों की आपसी गोलीबारी के बीच ही खड़ा कर लिया है। दरअस्ल, असलान साहब भी इस्लामिक छल-कपट और धोखेबाजी के निर्लज्ज तरीके को अपनाकर दुनिया को गुमराह करने की कोशिश करते रहे हैं। विडम्बना देखिए, सीएनएन के एंडरसन कूपर ने पोप के तुर्की दौरे पर राय देने के लिए तक़िय्या करने वाले इसी शख्स असलान को बुलाया, मानो ये निष्पक्ष विचार वाला व्यक्ति है।

तक़िय्या का एक और हास्यास्प्रद रूप देखिए। मुसलमान पश्चिमी महिलाओं को जाल में फांसने के लिए अक्सर झूठ बोलते हैं: 'इस्लाम में महिलाओं को रानी की तरह रखा जाता है।' जबकि हकीकत यह है कि इस्लामी देशों में औरत को कम-अक्ल कहा जाता है, मारा-पीटा जाता है, पत्थर मार-मार कर हत्या कर दी जाती है और झूठे सम्मान के नाम पर कत्ल कर दिया जाता है। क्या महारानी के साथ ऐसा किया जाता है? मैं तो अभी भी उस देश को ढूंढ रहा हूं, जहां की रानी बुद्धि में कम बताई जाती हो, पत्थरों से मारी जाती हो, कत्ल की जाती हो, 'इज्जत' के नाम पर मार दी जाती हो। अभी तक एक भी इस्लामी देश नहीं मिला, जहां औरत को बराबरी और सम्मान का दर्जा दिया जाता हो।

इमाम गजाली (1058-1111) जो कि इस्लाम के बड़े विद्वान माने जाते हैं, हमेशा कहते रहे हैं:

उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए भाषा एक साधन है। यदि कोई अच्छा मकसद ऐसा है कि उसे झूठ बोलकर और सत्य बोलकर दोनों तरीके से प्राप्त किया जा सकता है तो यहां झूठ बोलना अनैतिक है। क्योंकि इसकी आवश्यकता

ही नहीं थी। लेकिन जब कोई मकसद ऐसा हो जो सत्य बोलने से नहीं, बल्कि केवल झूठ बोलने से हासिल किया जा सकता है तो झूठ बोलने की इजाजत है, बशर्ते कि जो लक्ष्य है वह हलाल हो।[88]

यह बताने की जरूरत है ही नहीं कि मुसलमान के लिए इस्लाम को बढ़ावा देने से बड़ा कोई लक्ष्य नहीं होता है। जब कोई मुसलमान आपसे मुस्कुराकर कहे कि वह आपके देश को बहुत प्यार करता है और आपको दोस्त समझता है तो आप निम्नलिखित हदीस को जरूर याद करिए:

'अस्ल में जब हम (मुसलमान) गैर मजहब वालों के लिए चेहरे पर मुस्कुराहट रखें तो उसी समय मन में उन्हें कोसें और बददुआएं दें, क्योंकि वे मुसलमान नहीं हैं।'[89]

---

6 Qur'an Sura 93: Verses 3-8 (Translations of the Qur'an in this book are either by Yusuf Ali or by Shakir.) My work is not about the sacred scriptures of Islam, but it is based directly on them. The passages I cite are taken from the Qur'an and the Hadith. The Qur'an purports to be not the work of any human, but the very words of Allâh himself, from beginning to end. The Ahadith (plural for Hadith) are short, collected anecdotes and sayings about Muhammad regarded by Muslims as essential to the understanding and practice of their religion. It is not necessary for me, in this book, to discuss the innumerable questions raised by the Qur'an and the Hadith, their translation into other languages, or the disputes over subtle nuances in those texts. For purposes of this book, the passages I cite will mostly speak for themselves.I have taken them from widely accepted sources.

7 Muhammad had four daughters and two sons. His male children, Qasim and Abd al Menaf (named after deity Menaf) died in infancy. His daughters reached adulthood and married, but they all died young. The youngest daughter, Fatima, was survived by two sons. She outlived Muhammad by only six months.

8 Studies have shown that the newborns of the mothers with prepartum and postpartum depressive symptoms had elevated cortisol and norepinephrine levels, lower dopamine levels, and greater relative right frontal EEG asymmetry. The infants in the prepartum group also showed greater relative right frontal EEG asymmetry and higher norepinephrine levels. These data suggest that effects on newborn physiology depend more on prepartum than postpartum maternal depression but may also depend on the duration of the depressive symptoms. ncbi.nlm.nih.gov

9 www.health.harvard.edu/newsweek/Depression_during_pregnancy_and_after_0405.htm

10 Sirat Ibn Ishaq, page 72: Ibn Ishaq (pronounced Is-haq, Arabic for Isaac) was a Muslim historian, born in Medina approximately 85 years after Hijra (704. died 768). (Hijra is Muhammad's immigration to Medina and the beginning of the Islamic calendar), He was the first biographer of Muhammad and his war expeditions. His collection of stories about Muhammad was called "Sirat al-Nabi" ("Life of the Prophet"). That book is lost. However, a systematic presentation of Ibn Ishaq's material with a commentary by Ibn Hisham (d. 834) in the form of a recension is available and translated into English. Ibn Hisham, admitted that he has deliberately omitted some of the stories that were embarrassing to Muslims. Part of those embarrassing stories were salvaged by Tabari, (838–923) one of the most prominent and famous Persian historians and a commentator of the Qur'an.

11 W. Montgomery Watt: Translation of Ibn Ishaq's biography of Muhammad (p. 36)

12 Tabaqat Ibn Sa'd p. 21 . Ibn Sa'd (784-845) was a historian, student of al Waqidi. He classified his story in eight categories, hence the name Tabaqat (categories). The first is on the life of Muhammad (Vol. 1), then his wars (Vol. 2), his companions of Mecca (Vol. 3), his companions of Medina (Vol. 4), his grand children, Hassan and Hussein and other prominent Muslims (Vol. 5), the followers and the companions of Muhammad (Vol. 6), his later important followers (Vol. 7) and some early Muslim women (Vol. 8). The quotes from Tabaqat used in this book are taken from the Persian translation by Dr. Mahmood Mahdavi Damghani. Publisher Entesharat-e Farhang va Andisheh. Tehran, 1382 solar hijra (2003 A.D.).

13 Tabaqat Volume 1, page 107

14 The Life of Muhammad by Sir. William Muir [Smith, Elder, & Co., London, 1861] Volume II Ch. 1. P. XXVIII

15 Katib al Waqidi, p. 22

16 Tabaqat Vol I. P 108,

17 The Life of Muhammad by Sir. William Muir Vol. II Ch. 1. P. XXXIII

18 Sirat, Ibn Ishaq page. 195

19 Life of Muhammad, Muir Vol 2 p.195
20 Bukhari Volume 5, Book 58, Number 224:
21 Abu Abdullah Muhammad Bukhari (c. 810-870) was a collector of hadith also known as the sunnah, (collection of sayings and deeds of Muhammad). His book of hadith is considered second to none. He spent sixteen years compiling it, and ended up with 2,602 hadith (9,082 with repetition). His criteria for acceptance into the collection were amongst the most stringent of all the scholars of ahadith and that is why his book is called Sahih (correct, authentic). There are other scholars, such as Abul Husain Muslim and Abu Dawood who worked as Bukhari did and collected other authentic reports. Sahih Bukhari, Sahih Muslim and Sunnan Abu Dawood are recognized by the majority of Muslims, particularly Sunnis, as complementing the Qur'an.
22 Bukhari: Volume 4, Book 56, Number 762:
23 Tabaqat Volume I, page 191
24 Qur'an, 53:19-22
25 Sahih Bukhari Volume 5, Book 58, Number 207
26 Al-Dalaa'il, 2/282
27 Sir William Muir: The Biography of Mahomet, and Rise 0f Islam. Chapter IV page 126
28 http://www.usc.edu/dept/MSA/quran/maududi/mau109.html
29 Qur'an, 4:97: “When angels take the souls of those who die in sin against their souls, they say: 'In what (plight) were ye?' They reply: 'Weak and oppressed were we in the earth.' They say: 'Was not the earth of Allâh spacious enough for you to move yourselves away?' Such men will find their abode in Hell, - What an evil refuge!”
30 Sir William Muir, Life of Muhammad, Vol. 2, chap. 5,. p. 162.
31 A collection of poems in many volumes compiled by Abu al-Faraj Ali of Esfahan. It contains poems from the oldest epoch of Arabic literature down to the 9th cent. It is an important source of information on medieval Islamic society.
32 Sirat Ibn Ishaq, P.197
33 Jalal al-Din al-Suyuti says: “A group of people from Mecca accepted Islam and professed their belief; as a result, the companions in Mecca wrote to them requesting that they emigrate too; for if they don't do so, they shall not be considered as those who are among the believers. In compliance, the group left, but were soon ambushed by the nonbelievers (Quraish) before reaching their destination; they were coerced into disbelief, and they professed it.” [Jalal al-Din al-Suyuti "al-Durr al-Manthoor Fi al- Tafsir al-Ma-athoor," vol.2, p178;]
Suyuti writes that in one hadith Allâh's Apostle said, "There is no Hijra (i.e. migration) (from Mecca to Medina) after the Conquest (of Mecca), but Jihad and good intention remain; and if you are called (by the Muslim ruler) for fighting, go forth immediately.”
This shows that prior to the conquest of Mecca, emigration from that town was one of the requisites for Muslims. This is additional evidence of the fact that Muslims were coerced by Muhammad to abandon their homes, while their families did everything they could to keep their loved ones from following this man.
Jalal al-Din al-Misri al-Suyuti al-Shafi`i al-Ash`ari, also known as Ibn al-Asyuti (849-911) was the mujtahid imam and renewer of the tenth Islamic century. He was a hadith master, jurist, Sufi, philologist, and historian. He authored works in virtually every Islamic science.
34 http://www.youtube.com/watch?v=BJLsdydjSPo
35 Daily Muslims, July 12, 2006
36 Qur'an, 8:69. See also Qur'an, 8:74: “Those who believe, and adopt exile, and fight for the Faith, in the cause of Allâh as well as those who give (them) asylum and aid, - these are (all) in very truth the Believers: for them is the forgiveness of sins and a provision most generous.” One who is not familiar with Muhammad's style of writing (actually, of reciting, as he was illiterate) may wonder how the order to loot people can be reconciled with the command to fear Allâh. However, those who read the Qur'an in Arabic notice that the verses rhyme, and Muhammad often added words or phrases that are out of place, such as 'fear Allâh,' 'Allâh is most merciful,' 'He is all knowing, all wise,' etc., just to make his verses rhyme. Otherwise, it is inconceivable to fear the wrath of God and at the same time pillage and murder innocent people. By doing so—by associating God with looting, genocide and rape—Muhammad lowered the moral standards of his followers and sanctified evil. Thus pillage became holy pillage, killing became holy killing, and iniquity was sanctioned and even glorified. He assured his men that those who fight for their Faith would be rewarded, not only with the spoils of war but with forgiveness for their sins.
37 Malfuzat-i Timuri, or Tuzak-i Timuri, by Amir Tîmûr-i-lang In the History of India as told by its own historians. The Posthumous Papers of the Late Sir H. M. Elliot. John Dowson, ed. 1st ed. 1867. 2nd ed., Calcutta: Susil Gupta, 1956, vol. 2, pp. 8-98.
38 Qur'an, Chapter 47, Verse 38: “Behold, ye are those invited to spend (of your substance) in the Way of Allâh: But among you are some that are niggardly. But any who are niggardly are so at the expense of their own souls. But Allâh is free of all wants, and it is ye that are needy. If ye turn back (from the Path), He will substitute in your stead another people; then they would not be like you!”
39 See also Chapter 63, Verse 10.
40 An affidavit made public in federal court in Virginia in August 19, 2003, contends that the Muslim charities gave $3.7 million to BMI Inc., a private Islamic investment company in New Jersey that may have passed the money to terrorist groups. The money was part of a $10 million endowment from unnamed donors in Jiddah, Saudi Arabia.

http://pewforum.org/news/display.php?NewsID=2563
Also on July 27, 2004, the U.S. Justice Department unsealed the indictment of the nation's largest Muslim charity and seven of its top officials on charges of funneling $12.4 million over six years to individuals and groups associated with the Islamic Resistance Movement, or Hamas, the Palestinian group that the U.S. government considers to be a terrorist organization. http://www.washingtonpost.com/wp-dyn/articles/A18257-2004Jul27.html

41 See also Qur'an, 8:72, “Those who believed and those who suffered exile and fought (and strove and struggled) in the path of Allâh, - they have the hope of the Mercy of Allâh: And Allâh is Oft-forgiving, Most Merciful.” and Qur'an Chapter 8, Verse 74: “Those who believe, and adopt exile, and fight for the Faith, in the cause of Allâh as well as those who give (them) asylum and aid, - these are (all) in very truth the Believers: for them is the forgiveness of sins and a provision most generous.”
42 http://metimes.com/articles/normal.php?StoryID=20060918-110403-1970r
43 Ibid.
44 http://www.faithfreedom.org/debates/Ghamidip18.htm
45 Tabaqat, Vol. 2, pp. 1-2.
46 Sahih Bukhari Volume 5, Book 59, Number 702:
47 William Muir, Life of Muhammad Volume II, Chapter 2, Page 6.
48 Sahih Bukhari, Vol. 3. Book 46, Number 717
49 Ibid.
50 Sahih Muslim Book 019, Number 4321, 4322 and 4323:
51 Sahih Muslim Book 019, Number 4292:
52 http://66.34.76.88/alsalafiyat/juwairiyah.htm
53 Aisha has narrated that Sauda gave up her (turn) day and night to her in order to seek the pleasure of Allâh's Apostle (by that action). [Bukhari Volume 3, Book 47, Number 766]
54 Muhammad ibn Jarir al-Tabari (838–923) was one of the earliest, most prominent and famous Persian historians and exegetes of the Qur'an, most famous for his Tarikh al-Tabari and Tafsir al-Tabari.
55 Persian Tabari, Vol. IV, page 1298.
56 Bukhari Volume 3, Book 34, Number 310:
57 Bukhari, Volume 5, Book59, Number 459. Many other canonical hadiths recount how Muhammad approved intercourse with slave women, but said coitus interruptus was unnecessary because if Allâh willed someone to be born, that soul would be born regardless of coitus interruptus. See the following: Bukhari 3.34.432: “Narrated Abu Saeed Al-Khudri: that while he was sitting with Allâh's Apostle he said, 'O Allâh's Apostle! We get female captives as our share of booty, and we are interested in their prices, what is your opinion about coitus interruptus?' The Prophet said, 'Do you really do that? It is better for you not to do it. No soul that which Allâh has destined to exist, but will surely come into existence.'” Sahih Muslim is another source considered factual and accurate by virtually all Muslims. Here is Sahih Muslim 8.3381: “Allâh's Messenger (may peace be upon him) was asked about 'azl, (coitus interruptus) whereupon he said: The child does not come from all the liquid (semen) and when Allâh intends to create anything nothing can prevent it (from coming into existence).” Muslims also consider Abu Dawood highly accurate and factual. Here is Abu Dawood, 29.29.32.100: “Yahya related to me from Malik from Humayd ibn Qays al-Makki that a man called Dhafif said that Ibn Abbas was asked about coitus interruptus. He called a slave-girl of his and said, 'Tell them.' She was embarrassed. He said, 'It is alright, and I do it myself.' Malik said, 'A man does not practise coitus interruptus with a free woman unless she gives her permission. There is no harm in practicing coitus interruptus with a slave-girl without her permission. Someone who has someone else's slave-girl as a wife does not practice coitus interruptus with her unless her people give him permission.'" See also Bukhari 3.46.718, 5.59.459, 7.62.135, 7.62.136, 7.62.137, 8.77.600, 9.93.506 Sahih Muslim 8.3383, 8.3388, 8.3376, 8.3377, and several more.
58 Qur'an, 4:24: “Also (prohibited are) women already married, except those whom your right hands possess: Thus hath Allâh ordained (Prohibitions) against you.” Qur'an, 33:50): “O Prophet! We have made lawful to thee thy wives to whom thou hast paid their dowers; and those whom thy right hand possesses out of the prisoners of war whom Allâh has assigned to thee.”
Qur'an, 4:3: “If ye fear that ye shall not be able to deal justly with the orphans, marry women of your choice, two or three or four; but if ye fear that ye shall not be able to deal justly (with them), then only one, or (a captive) that your right hands possess, that will be more suitable, to prevent you from doing injustice.”
59 Sirat Rasul Allâh, p. 515.
60 Sahih Bukhari, 1.8.367
In this hadith the commentator narrates how they [the Muslims] raided the city of Khaibar, during the dawn taking the population off guard. “Yakhrab Khaibar” (Khaibar is ruined) exclaimed Muhammad, as he passed from one stronghold triumphantly to another: "Great is Allâh! Truly when I light upon the coasts of any people, wretched for them is that day! After the conquest of the town, it came time to share the booty. Dihya, one of the warriors, received Safiya as his share. Safiya's father who was the chief of the Bani Nadir had been beheaded by the order of Muhammad three years earlier. After the conquest of Khaibar, her young husband Qinana was tortured and murdered by his order too. Someone informed Muhammad that the seventeen year old Safiya was very beautiful. So Muhammad offered Dihya two girls, the cousins of Safiya, in exchange and got Safiya for himself.

61 Bukhari Volume 4, Book 52, Number 261:
62 Bukhari, 5.59.369
63 The Kitab al Tabaqat al kabir, Vol. 2, p 31
64 From pp. 675-676 of The Life of Muhammad , which is A. Guilaume's translation of Sirat Rasul Allâh.
65 Ibid.
66 Ibn Sa'd narrates another version of this story: “Bint Marwan, of Banu Umayyah ibn Zayd, when five nights had remained from the month of Ramadan, in the beginning of the nineteenth month from the hijrah of the apostle of Allâh. `Asma' was the wife of Yazid ibn Zayd ibn Hisn al-Khatmi. She used to revile Islam, offend the prophet and instigate the (people) against him. She composed verses. Umayr Ibn Adi came to her in the night and entered her house. Her children were sleeping around her. There was one whom she was suckling. He searched her with his hand because he was blind, and separated the child from her. He thrust his sword in her chest till it pierced up to her back. Then he offered the morning prayers with the prophet at al-Medina. The apostle of Allâh said to him: 'Have you slain the daughter of Marwan?' He said: 'Yes. Is there something more for me to do?' He [Muhammad] said: 'No. Two goats will not butt together about her.' This was the word that was first heard from the apostle of Allâh. The apostle of Allâh called him `Umayr, 'basir' (the seeing).” -- Ibn Sa`d's in Kitab al-Tabaqat al-Kabir, translated by S. Moinul Haq, Vol. 2, p.24.
67 Qur'an 3:151 “Soon shall We cast terror into the hearts of the Unbelievers, for that they joined companions with Allâh, for which He had sent no authority: their abode will be the Fire: And evil is the home of the wrong-doers!
68 Bukhari, 4.52.220.
69 From the Journal of the Royal Asiatic Society of Great Britain and Ireland, (1976), pp. 100-107 By W. N. Arafat
70 Quran, 2:65, 5:60, 7:166
71 Ibn Ishaq Sirat, p. 363
72 Ibid.
73 AR-Raheeq Al-Makhtum by Saifur Rahman al-Mubarakpuri http://islamweb.islam.gov.qa/english/sira/raheek/PAGE-26.HTM
74 http://www.islamicity.com/mosque/quran/maududi/mau59.html
75 Ibn Ishaq irat, p. 438
76 AR-RaheeQ Al-Makhtum (THE SEALED NECTAR)- Memoirs of the Noble Prophet Saifur Rahman al-Mubarakpuri - Jamia Salafia – India http://www.al-sunnah.com/nektar/11.htm
77 Ibid. www.al-sunnah.com/nektar/12.htm
78 Ibid.
79 Ayatollah Khomeini: A speech delivered on the commemoration of the Birth of Muhammad, in 1981.
80 Bukhari, Volume 4, Book 52, Number 280:
81 Sunan Abu-Dawud Book 38, Number 4390. Sunan Abu-Dawud is another collection of hadith regarded to be sahih.
82 Bukhari Volume 4, Book 52, Number 288
83 Bukhari Volume 4, Book 52, Number 176
84 This story is reported by Tabari, Vol 3, Page 1126
85 Ibn Ishaq, Sirat, Battle of Trench
86 Sirah al-Halabiyyah, v3, p61,
87 www.nytimes.com/2005/05/04/books/04grim.html?_r=1&ex=1115784000&en=7961034fe8ef2 0c0&ei=5070&oref=slogin
88 [Ahmad Ibn Naqib al-Misri, The Reliance of the Traveller, translated by Nuh Ha Mim Keller, Amana publications, 1997, section r8.2, page 745].
89 Sahih al-Bukhari, v.7, p102

अध्याय
2

मुहम्मद का व्यक्तित्व वृत्त

मुहम्मद के बारे में हजारों की संख्या में छोटे-छोटे किस्से हैं। इनमें से अधिकांश किस्से मनगढ़ंत और झूठ पर आधारित हैं और बहुत सारे किस्से कमजोर व संदेहास्पद। हालांकि कुछ किस्से सही (प्रामाणिक) हदीस (मौखिक रिवायत) माने जाते हैं। सही हदीस पढ़ने पर मुहम्मद के बारे में ठोस तस्वीर सामने आती है, जिससे मुहम्मद के चरित्र और मनोवैज्ञानिक पहलू को समझा जा सकता है।

इससे मुहम्मद का चित्र एक नार्सिसिस्ट (आत्मकेंद्रित अहंकारी यानी स्वार्थी चरित्र) का उभरकर आता है। इस अध्याय में मैं नार्सिसिज्म पर प्रामाणिक स्रोतों के माध्यम से प्रकाश डालूंगा और फिर दिखाने का प्रयास करूंगा कि किस तरह मुहम्मद पर यह चरित्र सटीक बैठता है।

इस विषय पर विद्वानों और अनुसंधानकर्ताओं ने बहुत कम काम किया है। क्योंकि मुसलमान कुरान और मुहम्मद के जीवन के बारे में अनुसंधान करने की अनुमति न स्वयं को देते हैं और न दूसरों को। हालांकि उसके बारे में जो भी लिखा गया है, वो न केवल नार्सिसिज्म की परिभाषा से मिलता है, बल्कि आज मुसलमान दुनियाभर में जो विचित्र कार्य और आचरण कर रहे हैं, उसमें भी इसे देखा जा सकता है। इस तरह किसी व्यक्ति की व्यक्तित्व विकृति उसके अनुयायियों में विरासत के रूप में इस तरह समा गई है कि इस व्यक्ति का पागलपन करोड़ों अनुयायियों में न केवल फैल रहा है, बल्कि उसकी तरह इन्हें भी स्वकेंद्रित, विवेकहीन और खतरनाक बना रहा है।

मुहम्मद के मनोविज्ञान, उसके चरित्र के मूल तत्व क्रूरता और स्थितिजन्य नीति को समझकर जानने का प्रयास करते हैं कि मुसलमान इतने असहिष्णु, हिंसक और पागल क्यों हैं? वे हमलावर और अत्याचारी होते हुए भी वे खुद को पीड़ित के रूप में क्यों देखते हैं?

नार्सिसिज्म क्या है?

द डायग्नोस्टिक एंड स्टेटिस्टिकल मैनुअल आफ मेंटल डिस्ऑर्डर (डीएसएम) 'नार्सिसिज्म को ऐसी व्यक्तित्व विकृति के रूप में परिभाषित करता है, जो एक प्रकार के आडम्बर, प्रशंसा की भूख और अधिकार के भाव के आसपास घूमता है। इससे पीड़ित मनुष्य अक्सर स्वयं को आवश्यकता से अधिक महत्वपूर्ण समझता है और अपनी उपलब्धियों को बढ़ा-चढ़ाकर प्रस्तुत करता है, अक्सर कोई न कोई फरमाइश करता है, किसी लायक न होने पर भी अपनी प्रशंसा व सराहना चाहता है।'[90]

डायग्नोस्टिक एंड स्टेटिस्टिकल मैनुअल (डीएसएम) के तीसरे (1980) और चौथे संस्करण (1994) और यूरोपियन आईसीडी-1091 में इस समस्या को इसी तरह परिभाषित किया गया है:

आडम्बर (कल्पना या व्यवहार में) का व्याप्त प्रारूप, आत्मश्लाघा अथवा चापलूसी की आवश्यकता और समानुभूति का अभाव, सामान्यत: वयस्कता की अवस्था आने की शुरुआती समय में और विभिन्न परिस्थितियों में उपस्थित रहने में। निम्नलिखित में से पांच (या अधिक) कसौटी पर आवश्यक परखें:

महान महसूस करता है और स्वयं को महत्वपूर्ण समझता है (उदाहरण के लिए, अपनी उपलब्धियों को बढ़ा-चढ़ाकर पेश करता है, झूठ को भी सच की तरह पेश करने में माहिर है, आनुपातिक उपलब्धि के बिना भी स्वयं को उत्कृष्ट के रूप में मान्यता चाहता है)

असीमित सफलता, नाम, रौब या सबसे ताकतवर होने, अतुलनीय बुद्धिमत्ता (प्रमस्तिष्कीय नार्सिसिस्ट), शारीरिक सौष्ठव या काम क्षमता (दैहिक नार्सिसिस्ट), आदर्श, चिरस्थायी, सबका ह्रदय जीतने वाले प्यार या करुणा की कल्पना में खोया रहता है।

आश्वस्त रहता है कि वह विशिष्ट है और ऊंचे दर्जे के विशिष्ट व अद्वितीय लोग (संस्थाएं) ही उसकी विशिष्टता समझ सकते हैं, केवल ऐसे ही लोगों से उसका संबंध होना चाहिए, केवल ऐसे ही लोगों से उसे जुड़ना चाहिए।

आवश्यकता से अधिक सराहना, चाटुकारिता, प्रमुखता और रौब चाहता है। ये सब नहीं मिलने पर दूसरों में भय उत्पन्न करना और कुख्यात होना चाहता है। (नार्सिस्टिक सप्लाई)।

अधिकारसम्पन्न समझता है। अपने साथ विशेष, अनुकूल वरीयता का व्यवहार चाहता है। अपनी अपेक्षाओं को स्वत: एवं शतप्रतिशत पूरा करने की मांग करता है।

पारस्परिक संबंधों में शोषक होता है। इसका अर्थ है, अपने काम दूसरों से कराना चाहता है।

समानुभूति का अभाव। दूसरों की भावनाओं व जरूरतों को महसूस करने की क्षमता का अभाव होना।

दूसरों से द्वेष रखता है और समझता है कि दूसरे लोग उससे ईर्ष्या करते हैं।

घमंडी होता है, अहंकारपूर्ण व्यवहार करता है। हताशा-निराशा की स्थिति में, या दूसरों द्वारा उसकी बात काटने पर अथवा चुनौती मिलने पर गुस्से क्रोध में आ जाता है।[92]

मुहम्मद में ये सभी लक्षण थे। अपने विचारों के अतिरिक्त वह अल्लाह का चापलूस पैगम्बर था और पैगम्बरों का प्रतीक चिह्न (seal) था। (कुरान.33:40) जिसका मतलब हुआ कि मुहम्मद के बाद अल्लाह किसी और को पैगम्बर नहीं बनाएगा। मुहम्मद स्वयं को खैर-उल-खल्क (ब्रह्मांड में सर्वोत्तम), 'उत्कृष्ट मिसाल' मानता था। (कुरान.33:21)। वह स्पष्ट रूप से कहता है कि उसका दर्जा अन्य पैगम्बरों से ऊंचा है। (कुरान:2:253)। उसने स्वयं के 'वरीय' होने (कुरान:17:55) और 'दुनिया के लिए रहमत' (कुरान:21:107) के रूप में भेजे जाने का दावा किया। उसने दावा किया कि उसे 'प्रशस्त चौकी' पर जगह दी गई है और किसी अन्य को यह स्थान नहीं मिलेगा: अल्लाह के सिंहासन के बगल में दाहिनी ओर स्थित यह 'मध्यस्थ' की चौकी है। (कुरान.17:79)। अन्य शब्दों में वह ऐसा व्यक्ति होगा, जो अल्लाह को सलाह देगा कि किसे जन्नत और किसे जहन्नुम भेजना है। अपने इस ऊंचे स्थान को लेकर मुहम्मद के कुछ ऐसे अहंकारोन्मादी दावे हैं, जो कुरान में दिए गए हैं।

नीचे लिखी दो आयतें मुहम्मद द्वारा केवल खुद को महत्व देने और आडम्बर को बयान करती हैं:

इसमें भी शक नहीं कि अल्लाह और उसके फरिश्ते पैगम्बर (मुहम्मद) पर दुआएं व रहमत (हमेशा) भेजते हैं। ऐ ईमानवालो! तुम भी पैगम्बर के गुणगान करो और दुआएं दो। (कुरान. 33:56)

(मुसलमानो)! तुम लोग अल्लाह और उसके रसूल (मुहम्मद) पर ईमान लाओ और उसकी मदद करो और उसको बड़ा समझो और सुबह और शाम उसी की तस्बीह करो (कुरान. 48:9)।

मुहम्मद अपने आप पर इतना आत्ममुग्ध था कि उसने अपनी कठपुतली अल्लाह के मुंह से कहलवाया:

बेशक रसूल, तुम्हारे अख्लाक़ (चरित्र) बड़े आला दर्जे के हैं। (कुरान. 68:4)

तुम्हें (ईमान व हिदायत का) रौशन चिराग़ बनाकर भेजा है। (कुरान. 33:46)

इब्ने-साद मुहम्मद के हवाले से कहता है:

अल्लाह ने दुनियाभर में अरब को चुना। अरबियों में उसने किनाना को चुना। किनाना में से भी कुरैश कबीले (मुहम्मद की जनजाति) को चुना। कुरैशों में से बनी हाशिम कुनबे को चुना और इस कुनबे से मुझे चुना।[93]

नीचे हदीसों में मुहम्मद द्वारा अपने बारे में किए गए कुछ दावे दिए गए हैं:

– अल्लाह ने कायनात में जो चीज सबसे पहले रची, वह थी मेरी रूह।[94]

– अल्लाह की बनाई हुई सभी चीजों में पहली चीज थी मेरा दिमाग।[95]

– मैं अल्लाह से हूं और मुसलमान मुझसे हैं।[96]

– जिस तरह अल्लाह ने मुझे महान बनाया, उसी तरह उसने मुझे अख्लाक़ बख्शा।[97]

– ओ मुहम्मद, यदि यह दुनिया तुम्हारे लिए न होती तो मैं कायनात नहीं बनाता।[98]

जरा मुहम्मद के इन शब्दों को जीसस द्वारा कही गई बातों से तुलना कीजिए। किसी ने जीसस को 'श्रेष्ठ स्वामी' कहकर पुकारा तो वे बोले, 'तुमने मुझे श्रेष्ठ क्यों कहा? ईश्वर के अलावा कोई और श्रेष्ठ नहीं है।'[99] एक मनोविकृत नार्सिसिस्ट ही वास्तविकता से दूर होकर यह दावा कर सकता है कि ब्रह्मांड उसके कारण बनाया गया है।

नार्सिसिस्ट जब भी अपने बारे में डींगें हांकता है तो वह विशिष्ट रूप से विनम्र होने का ढोंग करता है। अबू सईद अल–खुद्री ने लिखा है कि रसूल बोले: 'मैं सम्पूर्ण मानव का नेता हूं और यह मैं बिना किसी गुरूर के कह रहा हूं।'

अल–तिरमिजी बताता है:

'रसूल ने कहा: 'मैंने तुम्हारी बातें सुनीं और तुमने जो भी कहा, वो सच है। मैं खुद अल्लाह का प्यारा (हबीबुल्लाह) हूं और इस बात को कहने में मुझे कोई गुरूर नहीं है। कयामत के दिन मैं यशपताका (लिवा उल–हम्द) लेकर आगे चलूंगा। मैं पहली इबादत करने वाला हूं और पहला ऐसा इंसान हूं, जिसकी इबादत अल्लाह ने कबूल की है। मैं ही वह पहला इंसान हूं, जो जन्नत के दरवाजे पर दस्तक देगा। अल्लाह मेरे लिए दरवाजा खोलेगा, फिर मैं अपनी कौम के लोगों के साथ जन्नत में प्रवेश करूंगा। मैं ही दुनिया का सबसे सम्मानित व्यक्ति हूं और मैं ही वह पहला और आखिरी व्यक्ति हूं, जो दुनिया में सबसे अधिक इज्जतदार है। ये सब मैं बिना किसी गुरूर के कह रहा हूं।''[100]

नार्सिसिस्ट आत्मविश्वास से भरा हुआ और निपुण दिखता है। जबकि सच्चाई यह है कि ऐसा व्यक्ति (मनोविकृत नार्सिसिस्ट अधिकांशत: पुरुष होते हैं) आत्मसम्मान की कमी की समस्या से जूझ रहा होता है, और उसे अपनी नार्सिस्टिक भूख शांत करने के लिए दूसरों से अपनी वाहवाही और चापलूसी कराने की आवश्यकता पड़ती है।

डॉ. सैम वैकनिन मैलिग्नेंट सैल्फ–लव[101] नामक पुस्तक के लेखक हैं। वो इस विषय के विशेषज्ञ माने जाते हैं। वो नार्सिसिस्ट के मस्तिष्क को समझते हैं और परिभाषित करते हैं। वैकनिन वर्णन करते हैं:

प्रत्येक व्यक्ति नार्सिसिस्ट होता है, कोई कम तो कोई अधिक। यह एक स्वस्थ परिघटना होती है। यह उत्तरजीविता में मददगार होती है। पर स्वस्थ नार्सिसिज्म और विकृत नार्सिसिज्म में फर्क होता है। विकृत नार्सिसिज्म की विशेषता यह होती है कि इससे पीड़ित इंसान में समानुभूति का पूर्णत: अभाव होता है। ऐसा नार्सिसिस्ट दूसरों को वस्तु समझकर उनका शोषण करने की मानसिकता रखता है। वह दूसरों को अपनी सनक पूरी करने का साधन (नार्सिस्टिक सप्लाई) बनाता है। वह स्वयं को विशिष्ट आदर व सम्मान प्राप्त करने का अधिकारी मानता है, क्योंकि ऐसा इंसान अपने भीतर कपोल–कल्पित आडम्बर पाले रहता है। विकृत नार्सिसिस्ट आत्म–भिज्ञ नहीं होता है। उसकी अनुभूति और भावनाएं विकृत होती हैं। ऐसा इंसान 'अस्पृश्यता', भावनात्मक प्रतिरोध और अपराजेयता का बोध रखते हुए स्वयं से भी और दूसरों से भी झूठ बोलता है। नार्सिसिस्ट के लिए हर चीज जीवन से बड़ी होती है। वह जितना विनम्र होता है, उतना ही आक्रामक भी। उसके वादे विचित्र, उसकी आलोचना हिंसक व अनिष्टसूचक,

और उसकी उदारता मूर्खतापूर्ण होती है। नार्सिसिस्ट छद्म रूप धारण करने में माहिर होता है। वह दिलकश, प्रतिभाशाली अभिनेता, जादूगर और अपने परिवेश को उंगलियों पर नचाने वाला होता है। पहली मुलाकात में ऐसे व्यक्ति को पहचान पाना बेहद मुश्किल होता है।[102]

नार्सिसिस्ट संप्रदाय

नार्सिसिस्ट को प्रशंसकों की आवश्यकता होती है। वह अपने आसपास काल्पनिक दायरा बनाता है, जहां वह केंद्र बिंदु होता है। वह अपने प्रशंसकों और अनुयायियों को उस दायरे में इकट्ठा करता है, उन्हें पुरस्कृत करता है और अपनी चापलूसी के लिए उनको प्रोत्साहित करता है। जो व्यक्ति उसके इस कृत्रिम दायरे से बाहर होते हैं, उन्हें वह अपना दुश्मन मानता है। वैकनिन लिखते हैं:

नार्सिसिस्ट संप्रदाय के केंद्र में गुरु होता है। अन्य गुरुओं की तरह वह अपने शिष्यों, अपनी पत्नी, बच्चों, परिवार के सदस्यों, दोस्तों व सहकर्मियों से अपनी आज्ञा का सम्पूर्ण अनुपालन चाहता है। वह अनुयायियों से विशिष्ट व्यवहार व सम्मान प्राप्त करना अपना अधिकार मानता है। समझता है कि उसके अनुयायी उसे विशिष्ट समझकर व्यवहार करें और यह सम्मान प्राप्त करना उसका अधिकार है। वह अवज्ञा करने वालों और उससे दूर भागने वालों को दंड देता है। वह अनुशासन, अपनी शिक्षाओं के प्रति निष्ठा और सब पर एक लक्ष्य थोपता है। वास्तव में वह जितना कम निपुण होगा, उतना ही कठोर नियंत्रण और व्यापक ब्रेनवाशिंग करेगा।

विकृत नार्सिसिस्ट का नियंत्रण दुविधा, अनिश्चितता, अस्पष्टता और अपने परिवेश के दुरुपयोग पर आधारित होता है।[103] उसकी हर समय बदलती सनक ही किसी बात को सही अथवा गलत, वांछनीय या अवांछनीय अथवा 'क्या करना या क्या नहीं करना' को निर्धारित करती है। वही अपने अनुयायियों के अधिकार और सीमाएं तय करता है और जब इच्छा होती है तो इन्हें बदल देता है।

विकृत नार्सिसिस्ट माइक्रो मैनेजर होता है। वह अपने अनुयायियों के छोटे से छोटे कार्य या व्यवहार पर नियंत्रण रखता है। उसकी इच्छाओं और लक्ष्य पर नहीं चलने वाले को वह सख्त सजा देता है और सूचनाओं का दमन करता है। ऐसा नार्सिसिस्ट समर्थकों अथवा अनुयायियों की इच्छाओं या अनिच्छाओं का ध्यान नहीं रखता और न ही उनकी निजता और मर्यादा का सम्मान करता है। वह अपने समर्थकों की इच्छाओं की उपेक्षा करता है और उन्हें अपनी संतुष्टि का साधन या वस्तु मानता है। वह व्यक्तियों और परिस्थितियों दोनों पर अनिवार्य रूप से नियंत्रण करना चाहता है।

वह दूसरों की स्वायतत्ता एवं स्वतंत्रता को अस्वीकार करता है। वह चाहता है कि दोस्त अथवा परिवार के किसी सदस्य से मिलने जैसी मामूली बातों के लिए भी उससे अनुमति ली जाए। धीरे-धीरे वह अनुयायियों को उनके करीबी और प्रिय लोगों से अलग-थलग कर देता है, ताकि ये लोग उसके ऊपर भावनात्मक, यौनिक, वित्तीय व सामाजिक रूप से निर्भर होने को मजबूर हो जाएं।

वह संरक्षक व कृपा बरसाने वाले के रूप में अभिनय करते हुए बर्ताव करता है और अक्सर नसीहत देता रहता है। वह कभी अपने संप्रदाय के सदस्यों की मामूली गलतियों पर बरस पड़ता है तो कभी उनकी प्रतिभा, गुण व कौशल की झूठी तारीफ करने लगता है। उसकी इच्छाएं अव्यवहारिक होती हैं और इसलिए वह बाद में अपने दुर्व्यवहार को वैध करार देने लगता है।[104]

मुहम्मद ने बड़ा झूठ गढ़ा कि उसके अनुयायी परम सत्य पर भरोसा करते हैं। खतरनाक बात यह है कि हिटलर के झूठ को सच मानने वालों की तरह ही इस्लाम के अनुयायी भी झूठ को सच मानने के लिए स्वेच्छा से तत्पर रहते हैं।

पिछले अध्याय में हमने मुहम्मद का परिचय जाना। हमने देखा कि किस तरह उसने अपने अनुयायियों को उनके परिवारों से अलग-थलग कर दिया और उनके निजी जीवन तक पर नियंत्रण कर लिया। दुख इस बात का है कि 1400 साल बीतने के बावजूद स्थिति बहुत नहीं बदली है। मुझे तमाम ऐसी हृदय विदारक घटनाएं सुनने को मिली हैं, जिसमें अभिभावकों ने बताया कि उनके पुत्र या पुत्री ने इस्लाम कबूल कर लिया है। मुसलमान इन बच्चों को घेरे रहते हैं और अभिभावकों से न मिलने की सलाह देते हैं।

विकृत नार्सिसिस्ट का हेतु

विकृत नार्सिसिस्ट जानता है कि अपना प्रत्यक्ष महिमा मंडन कराना उल्टा पड़ सकता है और उसकी स्वीकार्यता खतरे में पड़ सकती है। इसलिए वह इसके बजाय अपने को उदारवादी, त्यागी पुरुष, ईश्वर, राष्ट्र अथवा मानवता की सेवा में रत होने का ढोंग करते हुए पेश करता है। उसके इस मुखौटे के पीछे सोची-समझी चतुराई होती है। ऐसा इंसान अपने अनुयायियों के समक्ष ऐसे महान व प्रतापी उद्देश्य रखता है, जिससे लगे कि वे इसके बिना नहीं रह सकते। वह खुद को क्रांतिकारी, परिवर्तन लाने वाला और आशा की किरण देने वाला नेता मानता है। प्रचार और तिकड़म के जरिए वह उस उद्देश्य को इतना महत्वपूर्ण बना देता है कि जो उस पर भरोसा करते हैं, उन्हें उस उद्देश्य के आगे अपना जीवन गौण लगने लगता है। इसी ब्रेनवाश में अनुयायी मरने और मारने पर उतारू हो जाते हैं। ऐसा नार्सिसिस्ट त्याग और बलिदान जैसी भावनाओं को प्रोत्साहित करता है। फिर इसके बाद वह खुद को इन उद्देश्यों की धुरी के रूप में प्रस्तुत करता है। यह उद्देश्य इसके इर्दगिर्द घूमता है। वह ऐसी तस्वीर पेश करता है, जैसे कि केवल वही उस उद्देश्य को पूरा कर सकता है और अपने अनुयायियों का नेतृत्व कर सकता है। इसलिए ऐसा व्यक्ति अपने समर्थकों के लिए दुनिया की सबसे महत्वपूर्ण शख्सियत हो जाता है। एक ऐसी शख्सियत जिसके पास उनके मोक्ष व यश-पराक्रम की कुंजी है।

यह उद्देश्य अस्ल में ऐसे नार्सिसिस्ट के निजी अरमानों को पूरा करने का साधन होता है। उदाहरण के रूप में, जोन्स ने गुयाना में उन 900 लोगों का नेतृत्व किया, जिन्होंने सामूहिक आत्महत्या की। इस इंसान ने लोगों को सामूहिक आत्महत्या के लिए उकसाते हुए सामाजिक न्याय का हेतु बताया और समर्थक उसे मसीहा मानते थे।

हिटलर ने आर्यों की सर्वोत्कृष्टता का उद्देश्य दिया था। उसने हालांकि अपना प्रत्यक्ष महिमा मंडन नहीं किया, बल्कि जर्मनी की श्रेष्ठता हासिल करने की बात कही। वह निस्संदेह अपरिहार्य प्रेरणास्रोत था और अपने मकसद का फ्यूहरर था। इसी तरह स्टालिन ने साम्यवाद का उद्देश्य सामने रखा था और जो उसकी बातों से इत्तिफाक नहीं रखता था, उसे वह सर्वहारा के खिलाफ मानता था और कत्ल करवा देता था।

मुहम्मद ने अपने अनुयायियों से स्वयं की इबादत के लिए नहीं कहा। अस्ल में उसने दावा किया कि वह केवल अल्लाह का संदेशवाहक अर्थात पैगम्बर है। फिर उसने होशियारी दिखाते हुए अपने अनुयायियों को कहा कि वे अल्लाह व उसके पैगम्बर के हुक्म को मानें। कुरान की एक आयत में उसने अपने कथित अल्लाह के जरिए कहलवाया:

ऐ रसूल! तुमसे लोग पूछेंगे जंग से क्या आया और क्या गया? उनसे कहो कि जंग का अनफ़ाल यानी माले-गनीमत अल्लाह और रसूल के लिए है। अल्लाह के प्रति अपनी जिम्मेदारियों का अहसास करो। अपने बाहमी (आपसी) मामलात की इस्लाह (ठीक) करो और अगर तुम सच्चे (ईमानदार) हो तो अल्लाह का और उसके रसूल का हुक्म मानो। (कुरान. 8:1)

चूंकि अल्लाह के लिए अरब के लोगों से ठगे और चुराए गए माल का कोई उपयोग नहीं था, इसलिए ये सारे

माल उसके प्रतिनिधि (मुहम्मद) के हो गए। चूंकि कोई भी अल्लाह को न तो देख सकता है और न सुन सकता है, इसलिए सारी कर्तव्यपरायणता मुहम्मद के प्रति थी। मुहम्मद से ही लोगों को डरना चाहिए, क्योंकि वह दुनिया के सबसे भयानक ईश्वर का एकमात्र मध्यस्थ था। प्रभुत्व जमाने के लिए अल्लाह के नाम का बहाना मुहम्मद के लिए जरूरी था। क्या यह संभव था कि अल्लाह के भय के बिना मुहम्मद के अनुयायी अपनी जिंदगी कुर्बान कर देते, दूसरे लोगों और अपने परिजनों तक की हत्याएं कर देते, उनकी धन-संपत्ति लूट लेते और सबकुछ मुहम्मद को सौंप देते ? यह काल्पनिक अल्लाह और कुछ नहीं, बल्कि मुहम्मद की सनक और अपना प्रभुत्व स्थापित करने का औजार था। विडम्बना यह है कि मुहम्मद हमेशा और किसी को अल्लाह के बराबर नहीं मानने का उपदेश देता रहा और एक तरह से खुद ही अल्लाह का एक ऐसा जोड़ीदार बन बैठा कि उसे व्यवहारिक एवं तार्किक रूप से अल्लाह से अलग रखना असंभव हो गया।

ऐसे नार्सिसिस्टों को अपने अनुयायियों का इस्तेमाल करने के लिए किसी उद्देश्य की आवश्यकता होती है। जर्मनों ने युद्ध की शुरुआत हिटलर के लिए नहीं की थी। इन्होंने युद्ध उस हेतु के लिए शुरू किया था, जिसे हिटलर ने उनके दिमाग में भरा था।

डॉ. सैम वैकनिन लिखते हैं: नार्सिसिस्ट (आत्मपूजक) हर उस चीज का इस्तेमाल करते हैं जो उनकी मनोविकारी सनक पूरी करने में सहायक होता है। यदि ईश्वर, नस्ल, जाति, चर्च, विश्वास, संस्थागत धर्म आदि उनकी नार्सिस्टिक भूख को शांत करें तो वे धर्मपरायण बनने का ढोंग करते हैं और यदि इससे उसका मकसद हल न हो तो वे धर्म छोड़ देंगे।'[105]

इस्लाम प्रभुत्व जमाने का साधन था। मुहम्मद के बाद मुसलमानों के दूसरे नेताओं ने भी इस्लाम का उपयोग इसी तरह किया। मुसलमान इन नेताओं की स्वार्थ सिद्धि के साधन बन गए।

एक अमरीकी मुसलमान मिर्जा मलकम खान (1831-1908) ने अफगानी मुसलमान जमालुद्दीन अफगानी के साथ मिलकर इस्लामिक पुनर्जागरण (अन-नहज़ा) शुरू किया और उन्होंने एक कुटिल नारा दिया, जिसमें कहा: 'मुसलमानों को कुरान की बातें बताइए, वे आपके लिए जान दे देंगे।'[106]

विकृत नार्सिसिस्ट की वसीयत

मरते समय भी मुहम्मद ने मुसलमानों से आगे बढ़ने और उसके जिहाद को जारी रखने का आह्वान किया था। चंगेज खान ने भी मरते समय अपने बेटों को ऐसा ही आदेश दिया था। उसने अपने बेटों से कहा कि पूरी दुनिया को अपने कब्जे में लेने की उसकी इच्छा थी, लेकिन अब वह यह नहीं कर पाएगा, इसलिए वे उसके इस सपने को पूरा करें। मुसलमानों की तरह मंगोल भी आतंक फैलाने वाले थे। किसी विकृत नार्सिसिस्ट के लिए फतह ही सबकुछ होता है। ऐसे लोगों के पास दिल नहीं होता है और दूसरों की जिंदगी उनके लिए मायने नहीं रखती।

51 साल की उम्र में हिटलर को अपने बांये हाथ में कुछ अजीब हरकत महसूस हुई। सामान्यत: वह इसे छिपा लेता था, लेकिन रोग बढ़ गया तो वह दुनिया की नजरों से दूर हो गया। उसे अहसास हो गया कि उसकी मौत करीब है। अब वह अपने संकल्प में और दृढ़ हो गया तथा उसने नए सिरे से हमले और तेज कर दिए, जबकि वह जानता था कि उसकी सांसें बहुत कम बची हैं। विकृत नार्सिसिस्ट अर्थात आत्म-कामी अपने पीछे पूरा साम्राज्य छोड़कर जाना चाहते हैं।

यह सोचना भूल है कि इस्लाम केवल एक धर्म है। इस्लाम का एक गुप्त पहलू यह है कि इसे उन मुस्लिम विद्वानों व दार्शनिकों द्वारा बाद में रचा गया, जिन्होंने मुहम्मद की बेतुकी बातों की गूढ़ व्याख्या की। मुहम्मद के

अनुयायियों ने मजहब को अपनी रुचि के अनुसार ढाला और कालक्रम में इन व्याख्याओं पर प्राचीन होने की मुहर लग गई, जिससे इनकी विश्वसनीयता बन गई।

यदि इस्लाम एक धर्म है तो नाजीवाद, साम्यवाद, शैतानवाद, हैवन्स गेट, पीपुल्स टैम्पल, ब्रांच डेविडियन आदि भी धर्म की श्रेणी में आएंगे। किंतु यदि हम यह मानते हैं कि जीवन को शिक्षित बनाने, मानव के विकास की संभावनाएं बाहर लाने, आत्मोत्थान, आध्यात्मिकता का बीज बोने, सद्भावना बढ़ाने और मानवता को प्रकाशित करने को धर्म कहते हैं तो इस्लाम इस कसौटी पर पूरी तरह विफल होगा। इस पैमाने पर इस्लाम को न तो धर्म की श्रेणी में रखा जा सकता है और न ही इसे इस श्रेणी में रखा जाना चाहिए।

नार्सिसिस्ट ईश्वर बनना चाहते हैं

किसी नार्सिसिस्ट के लिए जो चीज सबसे महत्वपूर्ण होती है, वह है ताकत। वह नाम व सम्मान पाना चाहता है और उपेक्षा बिलकुल नहीं बर्दाश्त कर सकता है। ऐसे लोग मन ही मन अकेला और असुरक्षित भी महसूस करते हैं, इसीलिए वे खुद को क्रांतिकारी नेता, आशा जगाने वाली शख्सियत और महान उद्देश्यों के दूत के रूप में प्रस्तुत करते हैं। उनका उद्देश्य तो बस एक बहाना होता है। ऐसा करके वे समर्थकों को अपनी ओर आकर्षित करना चाहते हैं। ये लोग काल्पनिक ईश्वर और मिथ्या उद्देश्य गढ़ते हैं। जितना ही वे अपने फर्जी ईश्वर को महिमामंडित करते हैं, उतनी ही ताकत उनके पास आती जाती है। मुहम्मद के लिए अल्लाह एक सुविधाजनक औजार था। इस औजार के जरिए वह अपने अनुयायियों पर असीमित प्रभुत्व जमा सकता था और उनकी जिंदगी का मालिक बन सकता था।

केवल एक अल्लाह था, भयानक भी और उदार व रहम करने वाला भी। मुहम्मद उसका एकमात्र प्रतिनिधि था। इस हिकमत से मुहम्मद अल्लाह बन गया। हालांकि दावा किया गया कि अल्लाह का पैगाम मुहम्मद के माध्यम से दुनिया में आता है, पर सच्चाई यह थी कि कोई अल्लाह था ही नहीं, बल्कि यह मुहम्मद और उसकी सनक मात्र थी, जिसे संतुष्ट करना मुसलमानों से अपेक्षित था। वैकनिन इस पहलू को अपने लेख 'फॉर द लव ऑफ गॉड–नार्सिसिस्ट एंड रिलीजन' में बखूबी समझाते हैं:[107]

नार्सिसिस्ट सदा ईश्वर की तरह होना चाहता है, जो सर्वज्ञ, सर्वव्यापी, सर्वशक्तिमान, सदा आदरणीय, चर्चा में बना रहने वाला और प्रेरणास्रोत हो। ईश्वर नार्सिसिस्ट का उन्मादभरा सपना होता है, उसकी परम आडम्बरपूर्ण कल्पना होती है। लेकिन ईश्वर उसके लिए कई और मायनों में सुविधाजनक होता है।

ऐसा व्यक्ति कभी प्रभावशाली व्यक्तियों की तारीफों के पुल बांधेगा तो कभी उन्हें नीचा दिखाएगा। शुरुआत में वह प्रभावशाली व्यक्तियों का (अक्सर हास्यास्प्रद तरीके से) अनुकरण करेगा और उनकी हर बात की प्रशंसा करेगा, उनकी हर बात का बचाव करेगा। वह उनके बारे में कहेगा कि वे न तो गलत कर सकते हैं और न ही गलत हो सकते हैं। नार्सिसिस्ट उन शख्सियतों को जीवन से बड़ा, सम्पूर्ण, निर्विकार एवं बुद्धिमान मानेगा। पर ज्यों ही उसकी अव्यवहारिक व हवाहवाई आकांक्षाएं हिलोर मारेंगी तो वह कुंठित होगा।

इसके बाद वह उन व्यक्तियों की निंदा करना शुरू कर देगा, जिन्हें अब तक अपना आदर्श मानता रहा है। ऐसा व्यक्ति जिन्हें अब तक महान बताता था, उन्हें अब वह सामान्य मनुष्य कहने लगेगा। अब उसकी नजर में वो शख्सियतें बहुत छोटी, कमजोर, गलतियां करने वाली, कायर, मूर्ख और मामूली हो जाती हैं। इस विकार से पीड़ित व्यक्ति तत्वदर्शी ईश्वर से संबंधों को लेकर भी इसी चक्र को अपनाता है। पर अक्सर, मोहभंग या ईश्वर की छवि को लेकर निराशा का भाव पैदा होने के बाद भी वह उसे चाहने और उसके अनुसरण का बहाना करता रहता है। वह इस धोखे को बनाए रखता है क्योंकि ईश्वर से निकटता दिखाने के बहाने वह एक विशेष प्रकार का रौबदाब हासिल करता है।

पुजारी, जनसमूहों के नेता, उपदेशक, धर्मप्रचारक, पंथों के मुखिया, राजनीतिज्ञ और बुद्धिजीवी ईश्वर के साथ

अपनी कथित निकटता से विशेषाधिकार प्राप्त करते हैं। धार्मिक सत्ता का सहारा लेकर ऐसा व्यक्ति अपनी परपीड़क काम-वासना और स्त्री के प्रति द्वेषपूर्ण रवैये को खुलकर जायज ठहराने की हैसियत पा जाता है। जिस नार्सिसिस्ट के प्रभुत्व के पीछे धार्मिक सत्ता होती है, वह हमेशा आज्ञाकारी और सवाल न उठाने वाले गुलामों को अपने आसपास रखना चाहता है, ताकि वह उन पर अपनी सनकभरी और शैतानी इच्छाएं थोप सके।

नार्सिसिस्ट व्यक्ति निरापद व विशुद्ध धार्मिक भावनाओं को भी सांप्रदायिक कर्मकांड और विषैली महंतशाही में बदल डालता है। वह ऐसे लोगों को अपना शिकार बनाता है जो भोलेभाले हों। उसके अनुयायी बंधक जैसे हो जाते हैं।

धार्मिक सत्ता ऐसे व्यक्तियों की सनक पूरी करने की माध्यम बन जाती है। उसके सहधर्मी, उसके समूह के सदस्य, उसका गांव, उसका इलाका, उसके श्रोता, सबके सब उसकी पागलपंथी के रास्ते में सहायक बन जाते हैं। लोग उसकी आज्ञा का पालन करते हैं, उसकी नसीहत पर ध्यान देते हैं, उसके मत को स्वीकार करते हैं, उसके व्यक्तित्व की प्रशंसा करते हैं, उसकी विशिष्टताओं की सराहना करते हैं, उसकी आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं, उसका आदर करते हैं और उसे अपना आदर्श मानते हैं।

इसके अतिरिक्त किसी 'बड़ी चीज' का हिस्सा होना नार्सिस्टिक रूप से सुखद होता है। ईश्वर का अंश होने का अर्थ उसके वैभव में डूबने जैसा होता है, उसकी ताकत व आशीर्वाद का अहसास करने जैसा होता है, उसकी संगत में रहने जैसा होता है-ये सब नार्सिस्टिक भूख को शांत करने के अच्छे स्रोत होते हैं। ऐसा व्यक्ति उस ईश्वर की आज्ञा का पालन करते हुए, उसके निर्देशों का अनुसरण करते हुए, उसको प्यार करते हुए, उसके प्रति समर्पित होते हुए, उससे संवाद करते हुए और उसकी आज्ञा का उल्लंघन करते हुए भी, ईश्वर बन जाता है। (ऐसे व्यक्ति के दुश्मन जितने बड़े होते हैं, वह स्वयं को उतना ही महान समझने लगता है।)

नार्सिसिस्ट के जीवन में अन्य बातों की तरह, ईश्वर को भी विपरीत नार्सिसिस्ट में रूपांतरित कर देता है। ईश्वर उसकी अजीबोगरीब हरकतें और इच्छाएं पूरी करने का स्रोत हो जाता है। ऐसा व्यक्ति दूसरों पर नियंत्रण और वशीकरण के लिए उस सर्वशक्तिमान व सर्वव्यापक सत्ता से व्यक्तिगत संबंध बनाता है। इस छद्म संबंध के माध्यम से वह स्थानापन्न रूप से ईश्वर बन जाता है। वह पहले ईश्वर का महिमामंडन करता है और फिर अपने आगे उसका महत्व कम कर देता है, फिर उसे अपशब्द कहने लगता है। यह पारंपरिक नार्सिस्टिक विशेषता है और ईश्वर भी स्वयं को इससे नहीं बचा सकते।[108]

नार्सिसिस्ट स्वयं का प्रत्यक्ष प्रचार नहीं करते, बल्कि ये उदारता, दया और करुणा का मुखौटा लगाकर अपने काल्पनिक अल्लाह, विचार, धर्म अथवा उद्देश्य को आगे करते हैं, जबकि वास्तव में यह इन व्यक्तियों का छद्म वेश होता है। ऐसे लोग स्वयं को संदेश वाहक, साधारण व विनम्र और किसी ताकतवर अल्लाह अथवा किसी तथाकथित उद्देश्य के स्वघोषित अग्रदूत के रूप में प्रस्तुत करते हैं। पर इनकी ओर से यह स्पष्ट होता है कि मात्र ये ही उस उद्देश्य को जानते हैं और असंतोष या विरोध बिलकुल सहन नहीं करते।

नार्सिसिस्ट हृदयहीन होते हैं, पर मूर्ख नहीं। ये जानबूझ कर आहत करते हैं। ये उस शक्ति बोध का आनंद लेते हैं, जो दूसरों को हानि पहुंचाकर मिलती है। ये ईश्वर होने का आनंद उठाते हैं और यह निर्धारित करते हैं कि किसे पुरस्कार देना है और किसे दंड, किसे जीने का हक है और किसे नहीं।

नार्सिसिज्म उन सभी लक्षणों की व्याख्या करता है, जो मुहम्मद में थे, जैसे कि उसकी क्रूरता, आडम्बर और अतिशयोक्ति भरे झूठे दावे, समर्पण करने वालों को प्रभावित करने तथा अपनी श्रेष्ठता स्थापित करने के लिए उदारता का ढोंग, आत्म अवबोधन, पागलपन व करिश्माई व्यक्तित्व आदि।

कैसे पैदा होती है नार्सिस्टिक प्रवृत्ति

वास्तविक या आभासी सामाजिक तिरस्कार के चलते जो बच्चा हीनभावना से ग्रस्त हो जाता है, वह अवचेतन ग्रंथि मैकेनिज्म के जरिए इससे लड़ने की कोशिश करता है। अग्रणी मनोवैज्ञानिक अल्फ्रेड एडलर ने इसे श्रेष्ठता मनोग्रंथि (सुपीरियॉरिटी कॉम्प्लेक्स) की संज्ञा दी है। इस ग्रंथि के पनपने पर नार्सिसिस्ट अपनी उपलब्धियों को अतिरंजित तरीके से पेश करने लगता है और जिसे अपने लिए खतरा समझता है, उसे नीचा दिखाने लगता है।

नार्सिस्टिक व्यक्तित्व विकार का जिम्मेदार दोषपूर्ण पालन-पोषण होता है। उदाहरण के लिए, **जो अभिभावक बच्चे को अत्यधिक छूट दे देते हैं, उसकी हर मांग पूरी करने लगते हैं, बच्चे की झूठी प्रशंसा करने लगते हैं, उसमें पर्याप्त अनुशासन नहीं डाल पाते हैं, वे बच्चे के चरित्र निर्माण में उसी तरह बाधा पैदा कर रहे होते हैं, जैसे कि मारने-पीटने वाले, उपेक्षा करने वाले अथवा बच्चे के साथ अनाचार करने वाले अभिभावक। परिणाम यह होता है कि बच्चा वयस्कता की अवस्था के लिए खुद को तैयार नहीं कर पाता है। वह बच्चा जीवन के प्रति अव्यवहारिक दृष्टिकोण के साथ बड़ा होता है। दूसरे शब्दों में कहें तो जो बच्चा पर्याप्त सहारा और प्रोत्साहन नहीं पाता है, उसमें इस तरह के विकार उत्पन्न होने के खतरे होते हैं।**

पैदा होने के तुरंत बाद मुहम्मद को पालने के लिए दूसरे परिवार को दे दिया गया। क्या उसकी मां की रुचि उसमें कम थी? क्या वजह थी कि वह अपनी मां की कब्र पर प्रार्थना करने नहीं गया, वह भी जब वह 60 साल से ऊपर का हो गया था? क्या उसके मन में अपनी मां को लेकर अभी भी क्षोभ था?

हलीमा मुहम्मद को नहीं लेना चाहती थी, क्योंकि वह एक गरीब विधवा का अनाथ बच्चा था। क्या इसी वजह से हलीमा और उसके परिवार ने मुहम्मद के साथ ऐसा बर्ताव किया? ऐसे में बच्चे क्रूर हो सकते हैं। उन दिनों अनाथ होना कलंक माना जाता था और तमाम इस्लामिक देशों में आज भी ऐसी ही स्थिति है। मुहम्मद के बचपन का परिवेश आत्मसम्मान जगाने के अनुकूल नहीं था।

स्ट्रैस रेस्पांस सिंड्रोम्स नामक पुस्तक के लेखक जोन मर्डी होर्वित्ज बताते हैं: 'जब नार्सिस्टिक को संतुष्टि देने वाली सराहना, विशिष्ट व्यवहार, आत्मप्रशंसा आदि मिलने में खतरा महसूस होता है तो उसमें अवसाद, विषाद, चिंता, शर्म, आत्मघाती विचार अथवा उस व्यक्ति के प्रति क्रोध पनपने लगता है, जो इस स्थिति के लिए जिम्मेदार प्रतीत होता हो। ऐसे में बच्चा इस पीड़ादायी मन:स्थिति से बचने के लिए सूचना-संवेदी प्रक्रिया के नार्सिस्टिक तरीके को अपनाने लगता है।'[109]

मुहम्मद का बचपन दुश्वारियों से भरा था। कुरान के सूरा 93 की आयत 3-8 (पुस्तक के शुरू के अध्याय में उद्धृत) में वह अपने एकाकी अनाथ स्थिति को याद करता है और स्वयं को आश्वस्त करता है कि अल्लाह उसके प्रति दयालु होगा और उसे अकेला नहीं छोड़ेगा। यह बताता है कि बचपन की अकेलेपन की स्मृति मुहम्मद को कितनी पीड़ा देती थी। वास्तविकता से दूर भागने के लिए उसने काल्पनिक दुनिया बना ली और वह इस हद तक उस दुनिया में डूब गया कि उसकी देखभाल करने वाले अभिभावक डर गए। इस तथ्य से संकेत मिलता है कि उसका बचपन पीड़ादायी था। मुहम्मद को अपने जीवन के प्रारंभिक वर्षों की घटनाएं भले न स्मरण हों, पर स्पष्ट है कि उसके मन में जीवन भर घाव बना रहा। उसने जो काल्पनिक दुनिया बनाई थी, वह उसे वास्तविक लगती थी। उसके लिए यह काल्पनिक दुनिया वास्तविकता से पलायन करने और आश्रय लेने के लिए सुरक्षित थी। इस काल्पनिक संसार में वह प्यार, सम्मान, प्रशंसा, ताकत, महत्व और यहां तक कि औरों के मन में अपने लिए डर भी पा सकता था। यहां वह वो अपने मन का सब काम कर सकता था और बाहरी दुनिया से मिल रही उपेक्षा की प्रतिपूर्ति कर सकता था।

वैकनिन के मुताबिक, 'नार्सिसिज्म का वास्तविक कारण अभी पूरी तरह ज्ञात नहीं है, पर यह स्पष्ट है कि यह समस्या बचपन के शुरुआती सालों (पांच वर्ष की अवस्था से पूर्व) में प्रारंभ होती है। ऐसा माना जाता है कि बच्चे की प्राथमिक चीजों (माता-पिता अथवा अभिभावक) के स्तर पर गंभीर और लगातार होने वाली नाकामी से यह पनपता है। इस समस्या से ग्रस्त वयस्क अक्सर उन परिवारों से आते हैं, जहां माता-पिता या इनमें से कोई बच्चे की उपेक्षा करता है अथवा इनके साथ दुर्व्यवहार करता है।' सभी बच्चों (स्वस्थ हो या नहीं) में यह प्रवृत्ति होती कि जब उनके अभिभावक कुछ करने की अनुमति नहीं देते हैं तो कभी-कभी वे नार्सिस्टिक अवस्था में प्रवेश कर जाते हैं और ऐसा व्यवहार करने लगते हैं, जैसे कि वे बहुत ताकतवर हों। ऐसा होना स्वस्थ और स्वभाविक है, क्योंकि इससे बच्चों को अभिभावकों की अस्वीकृति से सकारात्मक रूप से निपटने का आत्मविश्वास पैदा होता है।[110]

उपेक्षित बच्चों के मन में एक रिक्तता पनप जाती है। उन्हें लगने लगता है कि वे लाड़-प्यार के योग्य ही नहीं हैं। प्रतिक्रिया स्वरूप वे अपने अहं को तुष्ट करने के लिए कल्पनाओं में जीने की कोशिश करने लगते हैं। जब वे अपनी कमजोरियों को देखते हैं तो सोचते हैं कि यदि दूसरे इन कमजोरियों को जान जाएंगे तो उन्हें प्यार, दुलार और सम्मान नहीं मिलेगा। इसलिए ऐसे बच्चे झूठ बोलने लगते हैं और कहानियां गढ़कर अहंकार भरी डींग मारने लगते हैं। उनकी काल्पनिक शक्ति का स्रोत बाह्य होता है। यह बाह्य स्रोत पिता या कोई नजदीकी दोस्त भी हो सकता है। बच्चों में इस तरह की नार्सिसिज्म सामान्य है, पर यदि बड़े होने के बाद भी उनकी हरकतें ऐसी ही रहें तो इसका अर्थ है कि उसमें नार्सिस्टिक पर्सनैलिटी डिस्ऑर्डर उत्पन्न हो गया है।

मुहम्मद कल्पनाओं में दोस्त बनाने का आदी था। बाद में उसने दोस्तों की जगह सभी ईश्वरों में सबसे ताकतवर अल्लाह नामक एक काल्पनिक पात्र को गढ़ा। अल्लाह से स्वयं को जोड़कर और उसका इकलौता मध्यस्थ बताकर उसने अल्लाह की ताकत स्वयं धारण कर ली। छह वर्ष की उम्र में जब उसकी मां की मौत हुई तो वह अपने वृद्ध दादा के संरक्षण में गया, जिसने उसे बिगाड़ दिया। जैसा कि कई हदीस बताती हैं, उसके दादा अब्दुल मुत्तलिब ने उसे आवश्यकता से अधिक आजादी दे दी। वह अपने अनाथ पोते को लेकर आवश्यकता से अधिक आसक्त हो गया। उसके बेटे दूर बैठते थे, लेकिन मुहम्मद को वह अपनी चटाई पर साथ बिठाता था। मुहम्मद का यह कहना कि उसके दादा अब्दुल मुत्तलिब ने पहले ही जान लिया था कि वह महान बनेगा, स्पष्ट रूप से काल्पनिक और मनगढ़ंत बात थी। एक जगह मुहम्मद बताता है कि जब उसके चाचा ने उसको दादा की चटाई पर से हटाना चाहा तो अब्दुल मुत्तलिब ने कहा, 'इसे यहीं रहने दो। ये किस्मत वाला है, एक दिन बड़े साम्राज्य का मालिक होगा।'[111]

एक जगह मुहम्मद ने शेखी बघारी है कि उसने उस बुजुर्ग (अब्दुल मुत्तलिब) को नौकरानी से कहते सुना, 'ध्यान रखना कि ये यहूदियों और ईसाइयों के हाथों में न पड़ जाए। क्योंकि वे इसे ढूंढ रहे हैं और पा जाएंगे तो इसे नुकसान पहुंचाएंगे।'[112] चूंकि नार्सिसिस्ट स्वयं को इतना महत्वपूर्ण समझता है कि उसे लगता है, बाकी लोग जलन के कारण उसके पीछे पड़े हैं, इसलिए ऐसे व्यक्ति का मन में इस तरह की कल्पनाएं पाल लेना सामान्य बात है। फिर भी, यह स्पष्ट है कि अब्दुल मुत्तलिब ने मुहम्मद को विशेष होने का अहसास कराया। उन्होंने अपने अनाथ पोते को खूब प्यार-दुलार दिया। अब्दुल मुत्तलिब ने मुहम्मद पर तरस खाकर ये सब किया और उसे बिगाड़ दिया। हालांकि मुहम्मद ने दादा के विशेष लाड़ की व्याख्या अपनी श्रेष्ठता की पुष्टि के रूप में की। बचपन से ही मुहम्मद ने अपने काल्पनिक संसार में स्वयं के बारे में जो छवि बना रखी थी, उसे उसके दादा के अति दुलार से बल मिल गया। वह स्वयं को और भी अद्वितीय, विशेष और असाधारण मानने लगा। अब्दुल मुत्तलिब की मौत के बाद, उसके दयालु चाचा अबू तालिब ने भी उसे अन्य बच्चों की अपेक्षा अधिक लाड़-प्यार दिया। चूंकि मुहम्मद अनाथ था और उसके कोई भाई या बहन नहीं थे, इसलिए लोगों को उस पर दया आती थी। इसी कारण उसके दादा और चाचा ने उसे

आवश्यकता से अधिक छूट दे दी और उसमें अनुशासन नहीं आ पाया। इन्हीं सब का परिणाम था कि उसका व्यक्तित्व आत्मकामी अर्थात नार्सिस्टिक हो गया।

शरीरक्रिया विज्ञानी जे.डी. लेविन और रोना एच. वाइस ने लिखा है:

एक शरीर क्रिया विज्ञानी की दृष्टि से सबको जानकारी होती है कि बच्चे के स्वस्थ शारीरिक विकास के लिए आहार की जरूरत होती है, उसे अत्यधिक गर्मी से बचाए जाने की जरूरत होती है, यह भी ध्यान रखना होता है कि जिस वातावरण में वह रह रहा है, उसमें सांस लेने के लिए पर्याप्त आक्सीजन हो। इसी तरह उसके मानसिक विकास के लिए संवेदी माहौल का होना जरूरी होता हो, खासकर ऐसा माहौल जो जीवंत हो: (ए). जो उसको उसके मां-बाप की सुखद उपस्थिति का अहसास करा सके, (बी). जहां परिवार के वयस्कों में घुलने-मिलने की सहज प्रक्रिया मिले और बच्चा खुद में दृढ़ता पैदा करना सीख सके।[113]

मुहम्मद अपने जीवन के प्रारंभिक वर्षों से ही उपेक्षित और परित्यक्त रहा और बाद में वह मनमौजी हो गया। उसकी परिस्थितियां ऐसी थीं कि र्नासिसिस्ट हो जाना स्वाभाविक था। उसने अपनी मां से कभी बात की थी या नहीं, इसके बारे कहीं उल्लेख नहीं मिलता है। जब उसने मक्का फतह किया तो अपनी मां के कब्र पर गया, लेकिन वहां दुआ करने से इंकार कर दिया। फिर उसके वहां जाने का उद्देश्य क्या था? संभवत: यह उसके मन में अपनी मां के प्रति कड़वाहट थी, और वह कहना चाहता था कि देखो, तुम्हारी मदद के बिना भी मैंने इतनी कामयाबी हासिल की है। वहीं दूसरी ओर उसने अपने दादा को याद किया, जिन्होंने उस पर लाड़-प्यार लुटाया था और उसकी नार्सिस्टिक भूख को शांत करने के लिए शौक से सबकुछ उपलब्ध कराया था।

मनोविज्ञानी बताते हैं कि किसी बच्चे की जिंदगी के पहले पांच साल या तो उसे बना सकते हैं या उसे बिगाड़ सकते हैं। जीवन के प्रारंभिक पांच सालों में मुहम्मद की भावनात्मक जरूरतें पूरी नहीं हुईं। उम्र के आखिरी समय तक उसके मन में परित्यक्त के रूप में बिताए एकाकी जीवन और उपेक्षा की टीस बनी रही। वह मन में असुरक्षा और स्वयं की उपयोगिता को लेकर अस्थिर भाव के साथ बड़ा हुआ था। अपनी इस कमजोरी को छिपाने के लिए वह जबरदस्त अहंकार पाल बैठा। इस अहंकार के कारण उसमें रौब, आडम्बर और श्रेष्ठ होने का भ्रम बढ़ने लगा। **मुहम्मद ने खुद को अल्लाह के एकमात्र जोड़ीदार के रूप में स्थापित कर लिया, ताकि उसकी इस हनक को कोई और न छीन सके। इसीलिए उसने स्वयं को अल्लाह का अंतिम पैगम्बर बताया। इस तरह उसकी ताकत निरंकुश और चिरस्थाई हो गई।**

मुहम्मद पर खदीजा का प्रभाव

इस्लाम में खदीजा की भूमिका की सराहना जितनी की जानी चाहिए थी, उतनी नहीं हुई। मुहम्मद पर खदीजा के प्रभाव को नकारा नहीं जा सकता है। इस्लाम को जन्म देने में खदीजा मुहम्मद की साझेदार थी। खदीजा के बिना इस्लाम का अस्तित्व ही नहीं हो सकता था। हम जानते हैं कि खदीजा अपने युवा शौहर को बहुत चाहती थी। इसका कहीं उल्लेख नहीं मिलता कि खदीजा से शादी के बाद मुहम्मद ने कभी कोई काम किया हो।

शादी के बाद खदीजा का व्यापार घटता गया। जब खदीजा की मृत्यु हुई तो परिवार निर्धनता में आ चुका था।

दुनिया से उदासीन मुहम्मद अधिकतर समय अपनी काल्पनिक दुनिया में खामखयाली के सपने देखते हुए बिताता था। वैकनिन के शब्दों में, 'नार्सिसिस्ट पर्सनालिटी विकृति के कुछ मरीज इस तरह की पीड़ा से बचने के लिए समाज से कट जाते हैं और अपने पाखंड पर मुखौटा लगाकर विनम्रता व उदारता का ढोंग करने लगते हैं।' संताप और अवसाद उत्पन्न करने वाली मानसिक विकृति से व्यक्ति में अलग-थलग महसूस करने और शर्म व

अपूर्ण होने का भाव पैदा हो जाना आम है।[114]

मुहम्मद अपने साथ कई दिनों का खाना लेकर जाता था और जब खाना खत्म हो जाता था, वह तभी घर लौटता था। खाना लेकर वह फिर से अपनी खोह में चला जाता था। खदीजा घर पर रहती थी। वह अपने 9 बच्चों की देखभाल करती थी। चूंकि मुहम्मद गैरजिम्मेदार बच्चे की तरह बर्ताव करता था, इसलिए खदीजा को उसकी देखभाल करनी पड़ती थी। वह इस त्याग से प्रसन्न थी। पर क्यों?

यह बड़ा महत्वपूर्ण प्रश्न है। यह दर्शाता है कि खदीजा के व्यक्तित्व में खामी रही होगी। जिस तरह का उसका व्यक्तित्व था, उसे आज हम परजीवी (दूसरों पर आश्रित रहने वाला) अथवा 'विपरीत' नार्सिसिस्ट कहते हैं। इस पहेली का मुख्य तत्व आपको यह समझने में मदद करेगा कि वह अपने शौहर के साथ क्यों खड़ी रहती थी, और जब उसके शौहर ने अपने विचित्र वहम के बारे में बताया तो उसने टोटकेबाज बताने के बजाय उसको पैगम्बरी का कैरियर स्थापित करने के लिए क्यों प्रोत्साहित किया।

राष्ट्रीय मानसिक स्वास्थ्य एसोसिएशन (एनएमएचए) ने परजीविता को 'जाना-पहचाना व्यवहार' और एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में स्थानांतरित होने वाले विकार के रूप में परिभाषित किया है। यह एक भावनात्मक और व्यवहारात्मक स्थिति होती है, जिसमें व्यक्ति की स्वस्थ व संतोषजनक पारस्परिक संबंध बनाने की क्षमता पर प्रभाव पड़ता है। इस समस्या को 'रिश्तों के नशे' के रूप में भी जाना जाता है, क्योंकि परजीवी व्यक्ति अक्सर ऐसे रिश्तों को निभाते हैं, जो एकतरफा, भावनात्मक रूप से विध्वंसात्मक अथवा अपमानजनक होते हैं। लगभग दस साल पहले मद्यपान के आदी परिवारों में आपसी रिश्तों पर अध्ययन के दौरान पहली बार इस मानसिक विकार की पहचान की गई थी। परिवार के अन्य सदस्यों द्वारा इस तरह का व्यवहार किए जाने पर, बाकी सदस्यों में भी यह व्यवहार पनपने लगता है।।[115]

खदीजा एक निपुण और शिष्ट महिला थी। वह अपने पिता खुवैलद की प्रिय पुत्री थी। खुवैलद उस पर अपने बेटों से भी अधिक भरोसा करते थे। मक्का के कई ताकतवर व कुलीन लोग उसका हाथ थामने को तैयार थे, लेकिन उसने सबको मना कर दिया।

लेकिन जब उसने वंचित व जरूरतमंद युवा मुहम्मद को देखा तो पहली नजर में उसके प्यार में पड़ गई। उसने एक नौकरानी को शादी का प्रस्ताव लेकर मुहम्मद के पास भेजा।

ऊपर से देखें तो लगता है कि मुहम्मद का व्यक्तित्व बड़ा सम्मोहक था और वह ताकतवर महिला उसके सम्मोहन के जादू में खो गई। किंतु ऐसा मानना, ऐसे जटिल व्यक्तित्व को समझने का सतही प्रयास होगा।

इतिहासकार तबरी लिखता है: 'खदीजा ने मुहम्मद को पैगाम भेजा कि वह उसका हाथ थाम ले। उसने अपने पिता को अपने घर बुलाया और तब तक शराब पिलाई, जब तक कि वे नशे में चूर नहीं हो गए। फिर उसने उनके ऊपर इत्र छिड़का, धारीदार चोगा पहनाया और गाय काटी। इसके बाद उसने मुहम्मद व उसके चाचा को बुलाने भेजा। जब ये दोनों अंदर आए तो उसके पिता ने खदीजा की शादी मुहम्मद से कर दी। जब उसके पिता का नशा उतरा तो उन्होंने पूछा, 'यह मांस, इत्र, कपड़े.. किसलिए? तो खदीजा ने जवाब दिया, 'तुमने मेरी शादी मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह से कर दी है।' उसके पिता ने कहा, 'मैंने तो नहीं की। मक्का के रईस लोगों ने तुम्हारा हाथ मांगा था, फिर भी मैंने मना कर दिया तो अब इस जाहिल से तुम्हारी शादी क्यों करूंगा?'[116]

मुहम्मद पक्ष की ओर से रोष में कहा गया कि उसकी बेटी ने यह रिश्ता बनाया है। इस पर बुजुर्ग खुवैलद ने गुस्से में तलवार निकाल ली और मुहम्मद के रिश्तेदारों की ओर लहराते हुए दौड़े। इससे पहले कि खूनखराबा होता, खदीजा बीच में आ गई। उसने मुहम्मद के प्रति अपने प्यार को जाहिर करते हुए बताया कि ये सब उस खुद का रचा

है। इसके बाद खुवैलद शांत हो गए और उसे किस्मत के भरोसे छोड़ दिया। इस तरह दोनों पक्षों में समझौता हो गया।

यह समझ पाना मुश्किल है कि एक बुद्धिमान और सफल महिला अचानक अपने से 15 साल छोटे बेवकूफ युवक से क्यों प्यार कर बैठेगी? खदीजा का जानबूझ कर गलती करने वाला यह व्यवहार बताता है कि उसके व्यक्तित्व में कुछ गड़बड़ी थी।

साक्ष्यों से पता चलता है कि खदीजा के पिता खुवैलद शराबी थे। खदीजा अपने पिता की इस कमजोरी को जानती थी, तभी उसने यह दुस्साहसी योजना बनाई। जो पियक्कड़ नहीं होते हैं, वे एक तो संयमित ढंग से पीते हैं और दूसरे अकेले कम ही पीते हैं। खुवैलद ने मेहमानों के आने से पहले ही जमकर शराब पी। वे कभी-कभार पीने वाले इंसान नहीं, बल्कि पक्के शराबी थे।

पर, इन सब बातों का खदीजा के परजीवी होने से क्या मतलब? मतलब इसलिए है, क्योंकि यह तथ्य खदीजा के परजीवी होने के समर्थन में संकेत करता है। शराबियों के बच्चे अक्सर परजीविता यानी 'बिना सहारे के नहीं जी पाने' की समस्या के शिकार हो जाते हैं।

खदीजा के पिता उसको लेकर बहुत स्नेहिल थे और उससे बड़ी उम्मीदें पाल रखी थीं। खदीजा उनकी आंखों का तारा थी, यह इससे पता चलता है कि अपनी 40 साल की बेटी का विवाह एक मामूली से आदमी से होने पर प्रतिक्रिया में उन्होंने कहा, 'मक्का के सबसे रईस लोगों ने तुमसे शादी का प्रस्ताव भेजा, लेकिन मैं तैयार नहीं हुआ।'

खुवैलद के कई बेटों सहित और बच्चे भी थे। लेकिन यह स्पष्ट है कि यह बेटी उनकी चहेती थी और उनकी दृष्टि में वही उनकी सबसे बुद्धिमान और निपुण संतान थी।

जब अभिभावक बच्चों को छुईमुई बनाकर रखते हैं तो वे उनकी छाया में जीने के आदी हो जाते हैं। ऐसे बच्चों के व्यक्तित्व में अक्सर परजीविता का विकार आ जाता है। ऐसे बच्चे माता या पिता को लेकर जुनूनी हो जाते हैं और उनके सारे काम ऐसे होते हैं, जिससे वे दूसरों की नजर में अपने माता-पिता को अच्छा साबित कर सकें। ऐसे बच्चों से अपेक्षा की जाती है कि वे विलक्षण प्रतिभा के हों, इसलिए ये बच्चे हमेशा माता-पिता की उम्मीदों पर खरा उतरने का प्रयास करते रहते हैं।

लगातार श्रेष्ठ प्रदर्शन की अपेक्षा के कारण ऐसा बच्चा स्वतंत्र व्यक्तित्व विकसित कर पाने में सक्षम नहीं हो पाता। वह अपने पूर्णतावादी और नार्सिस्टिक अभिभावक की आवश्यकताएं पूरी करने में ही प्रसन्नता ढूंढने लगता है। उसे लगता है कि वह जो है, लोग उससे प्यार नहीं करते, बल्कि वह कैसा प्रदर्शन करता है, इसके लिए प्यार करते हैं। शराबी अभिभावक अपने भावनात्मक बोझ को बच्चों पर लाद देते हैं, खासकर उस बच्चे पर जिसमें संभावना अधिक दिखती है। ऐसे अभिभावक उम्मीद रखते हैं कि बच्चा हर चीज में सर्वश्रेष्ठ होगा और जो उपलब्धि वो नहीं हासिल कर सके, उसे उनका बच्चा हासिल करेगा।

परजीवी लोग सामान्य व स्वस्थ भावनात्मक रिश्ते में संतोष और प्रसन्नता नहीं पाते हैं। स्वस्थ भावनात्मक रिश्ते बराबरी के लोगों में ही निभ सकते हैं। परजीवी इंसान देखभाल करने और संतुष्टि देने वाले की भूमिका में ही प्रसन्नता का अनुभव करता है। परजीवी इंसान का सही जोड़ा जरूरतमंद नार्सिसिस्ट के साथ बनता है।

खदीजा ने कामयाब और परिपक्व लोगों के विवाह प्रस्ताव नकार दिए, लेकिन एक ऐसे गरीब युवा की मुहब्बत में गिरफ्तार हो गई, जिसके पास भावनात्मक खालीपन भी था और आर्थिक विपन्नता भी। दरअसल, परजीवी प्यार और करुणा में भेद नहीं कर पाते। ऐसे लोगों की प्रवृत्ति ऐसे लोगों पर प्यार लुटाने की होती है, जो करुणा और उद्धार के पात्र हों।

वैकनिन परजीवी शब्द की जगह 'विपरीत' नार्सिसिज्म (इनवर्टेड नार्सिसिज्म) शब्द का इस्तेमाल करते हैं।

परजीवी–नार्सीसिस्ट के बीच संबंध के बारे में वो बताते हैं: 'विपरीत नार्सिसिस्ट' सही तरीके से किसी बात का अहसास तभी कर सकता है, जब वह किसी दूसरे नार्सिसिस्ट के साथ संबंध में हो। 'विपरीत नार्सिसिस्ट' शुरू से ही इस तरह जीने का आदी होता है कि वह किसी नार्सिसिस्ट के मुकम्मल साथी के रूप में उसके अहम को तुष्ट करने, खुशामद और मान–मनुहार करने, चापलूसी करने और एक तरह से उसका विस्तार बनने में प्रसन्नता का अनुभव करता है।[117] इससे साफ होता है कि खदीजा जैसी खूबसूरत औरत मुहम्मद जैसे दरिद्र व अति सामान्य व्यक्ति में क्यों रुचि लेने लगी। यद्यपि 'विपरीत नार्सिसिस्ट' अपने व्यापार में सफल रहता है, पर उसके रिश्ते अक्सर अस्वस्थ रहते हैं।'' वैकनिन आगे कहते हैं: 'विपरीत नार्सिसिस्ट' बुनियादी रिश्तों में अभिभावक–बच्चे का रिश्ता बनाना चाहता है। ऐसा व्यक्ति दूसरे व्यक्ति के आडम्बर को ओढ़ने की कोशिश करता है और ऐसा करके वह अपनी नार्सिस्टिक भूख को शांत करता है।' (द्वितीयक नार्सिस्टिक सप्लाई के लिए नार्सिसिस्ट का ''विपरीत नार्सिसिस्ट'' पर निर्भरता)।

''विपरीत नार्सिसिस्ट'' समग्र और सम्पूर्ण महसूस करने के लिए नार्सिसिस्ट के साथ इस तरह का संबंध बनाता है। विपरीत नार्सिसिस्ट इस हद तक जाता है कि वह अपने नार्सिसिस्ट की खुशी का ध्यान रखता है, उसकी देखभाल करता है, उसके सही–गलत कामों की प्रशंसा करता है, और उसे लगता है कि ये सब प्राप्त करना नार्सिसिस्ट का अधिकार है। 'विपरीत नार्सिसिस्ट' अपने नार्सिसिस्ट (मनोविकृत) साथी के पापों को भी महिमामंडित करता है, उसे चने के झाड़ पर चढ़ाता है, सम भाव से उसके नैतिक पतन को समर्थन देता है, और उसकी उपेक्षा को भी सिर–माथे लगाता है।[118]

मुहम्मद और खदीजा की जोड़ी ऊपर वाले ने बनाई थी (इसे दूसरे अर्थ में न लें)। मुहम्मद एक मनोविकृत इंसान (नार्सिसिस्ट) था, जो अपनी बड़ाई, महत्व और चापलूसी का भूखा था। वह भौतिक और भावनात्मक रूप से दरिद्र था। वह कहने को तो वयस्क था, लेकिन भीतर से ऐसे बच्चे की तरह था, जिसे लाड़–प्यार की जरूरत थी। उसे किसी ऐसे इंसान की जरूरत थी, जो उसकी देखभाल भी करे, उसकी जरूरतें भी पूरी करे और उसके धौंस व दुर्व्यवहार को भी बर्दाश्त करे। ठीक उसी तरह जैसे एक नवजात शिशु अपनी मां को परेशान करता है। एक मां और उसके नवजात शिशु के बीच नार्सिसिस्ट और परजीवी का संबंध होता है। मां अपने बच्चे के प्रति भावनात्मक रूप से जुड़ी होती है। इसलिए वह बच्चे की हर गुस्ताखी को खुशी–खुशी बर्दाश्त करती है। इसमें कुछ गलत भी नहीं है। पर यदि ऐसा ही दो वयस्क व्यक्तियों के बीच हो तो इसका मतलब कि कुछ गड़बड़ है। नार्सिसिस्ट की भावनात्मक परिपक्वता बचपन में ही अविकसित रह जाती है। ऐसा व्यक्ति बड़े होने पर भी अपनी आवश्यकताओं को पूरी कराने के लिए बच्चों जैसी जिद करता है। बच्चे स्वकेंद्रित होते हैं और ऐसा होना बच्चे की मानसिक व शारीरिक वृद्धि के लिए आवश्यक भी होता है।

पर, नार्सिसिस्ट बड़े होने के बाद भी अपने पति या पत्नी, अपने बच्चों सहित परिवार के सदस्यों से बच्चों की तरह हर उस मांग को पूरा करने का हठ करता है, जो बचपन में नहीं पूरी हुई थी। प्यार के लिए मुहम्मद की तड़प कई मौकों पर जाहिर हुई है। इब्ने–साद उसका उद्धरण देते हुए कहता है, कुरैशों के परिवारों का नाता मुझसे है और भले ही वे मुझे मेरे पैगाम के लिए प्यार न करें, पर उन्हें मेरा और उनका जो पारिवारिक संबंध है, उसकी खातिर तो प्यार करना चाहिए।[119] कुरान में मुहम्मद कहता है, '(ऐ रसूल) तुम कह दो कि मैं इस (धर्मप्रचार पैगाम) का अपने कौमवालों (अहले बैत) की मुहब्बत के सिवा तुमसे कोई सिला नहीं मांगता।[120]

दूसरी तरफ खदीजा 'विपरीत नार्सिसिस्ट' थी, जिसे अपनी कल्पनाओं को साकार करने में किसी नार्सिसिस्ट की जरूरत थी, ताकि सेवक के रूप में उसके साथ जी सके। मुहम्मद उसकी इस कमजोरी का गलत फायदा उठाता था, फिर भी वह बुरा मानने के बजाय इसमें आनंद पाती थी।

वैकनिन लिखते हैं: 'विपरीत नार्सिसिस्ट अपनी अजीबोगरीब तलब प्राथमिक नार्सिसिस्ट से पूरा करता है और यही उसकी नार्सिसिस्ट सप्लाई होती है। इस तरह ये दो प्रकार के नार्सिसिस्ट, अस्ल में, स्वावलंबी सहजीवन प्रणाली हो सकते हैं। यद्यपि इस व्यवस्था को सफल बनाए रखने के लिए नार्सिसिस्ट और 'विपरीत' नार्सिसिस्ट दोनों को रिश्तों की क्रियाविधि की बारीकी को समझने की जरूरत होती है।'[121]

मनोविज्ञानी डॉ. फ्लोरेंस डब्ल्यू. काशलो इस सहजीवन की व्याख्या करते हुए कहते हैं कि दोनों पक्षों में व्यक्तित्व संबंधी विकार (पर्सनैलिटी डिस्ऑर्डर-पीडी) होता है, पर उनमें एक परपीड़क होता है तो दूसरा पीड़ा सहने वाला। ऐसा लगता है कि दोनों में एक दूसरे के प्रति खतरनाक आकर्षण है, जिससे इनका व्यक्तित्व पूरक और पारस्परिक हो जाता है। इसीलिए यदि ऐसे जोड़े में तलाक भी हो जाए तो भी वे अपने पूर्व साथी के समान व्यक्तित्व पर बार-बार आकर्षित होते हैं।'[122]

मुहम्मद और खदीजा के बीच सहचर जीवन पूर्णता तक रहा। अब उसे काम या चिंता करने की आवश्यकता नहीं रह गई थी। वह खोहों में दिन बिताते हुए अपनी सनक भरी कल्पनाओं के साथ उस उपजाऊ जंगल में विचरण करता था, जहां उसे प्यार, प्रशंसा और आदर मिलता था। खदीजा उसमें बिलकुल डूब गई थी और उसकी आवश्यकताओं का ध्यान रखती थी। उसने अपने व्यापार की अनदेखी करनी शुरू कर दी और नतीजा यह हुआ कि उसका व्यापार बैठ गया, उसकी संपत्ति खत्म हो गई। वह लगभग पचास साल की रही होगी, जब उसकी सबसे छोटी संतान पैदा हुई। वह घर पर रहती थी, जबकि उसका पति अधिकांश समय अपने विचारों में खोया हुआ खोह में रहता था।

वैकनिन के अनुसार, 'विपरीत नार्सिसिस्ट दूसरों की सहायता किसी कीमत पर नहीं लेना चाहता है और अपने आपसी संबंधों में बुझा-बुझा, उदासीन, त्यागी और चाटुकार बना रहता है। वह दूसरों के साथ अंतर्संवाद तभी करता है, जब सामने वाला उसे दानी, मददगार और सहायता करने में आवश्यकता से अधिक प्रयासरत समझे।'[123]

वैकनिन परजीवियों की परिभाषा देते हुए कहते हैं कि ये ऐसे जीव होते हैं, जो अपनी भावनात्मक संतुष्टि और दैनंदिन कार्यों के लिए दूसरों पर निर्भर होते हैं। ऐसे लोग मोहताज, अतृप्त, दब्बू, भयभीत, कृतज्ञता के भाव से दबे होते हैं और सहचर के साथ संबंध निभाने के लिए अपरिपक्व व्यवहार करते हैं।[124]

को-डिपेंडेंट नो मोर पुस्तक के लेखक मेलॉडी बीटी व्याख्या करते हैं कि परजीवी जाने-अनजाने किसी ऐसे व्यक्ति को अपना साथी चुनते हैं, जो कष्ट में हो, ताकि उनके पास मकसद हो, उनकी पूछ हो और वो संतुष्ट महसूस कर सकें।

कोई भी समझदार इंसान मुहम्मद के विचित्र अनुभवों की व्याख्या मनोविक्षिप्तता या शैतान के साये के रूप में करेगा। जैसा कि उस समय इस तरह का व्यवहार करने वालों के बारे में कहा जाता था। मुहम्मद खुद सोचता था कि वह 'काहिन' हो गया है, यानी उस पर किसी ने जादू-टोना कर दिया है अथवा उस पर शैतान का साया आ गया है। मक्का के बुद्धिमान लोग सोचते थे कि मुहम्मद मजनूं (जिन्न के प्रकोप से पीड़ित/पागल) हो गया है। पर खदीजा के लिए अपने मन में इस तरह का भाव लाना भी कष्टदायी था। खदीजा अपने पति की आवश्यकताएं पूरी करने में ही प्रसन्नता और संतुष्टि पाती थी। इसलिए उसे किसी भी हाल में अपने नार्सिसिस्ट का साथ देना था। परजीवी के रूप में खदीजा ने महसूस किया कि उसे इसमें दखल देना चाहिए और अपनी नार्सिस्टिक भूख को शांत करने वाले स्रोत की मदद करनी चाहिए, परामर्श देना चाहिए तथा एवं इस पचड़े से उसे बाहर निकालना चाहिए।

खदीजा को स्थानापन्न परजीवी (वाइकैरियस कोडिपेंडेंट) के रूप में वर्गीकृत किया जा सकता है। वैकनिन कहते हैं, 'स्थानापन्न परजीवी दूसरों के माध्यम से जीते हैं। ये लोग अपने निर्धारित लक्ष्य को पूरा करने में आनंद

प्राप्ति के लिए खुद को कुर्बान कर देते हैं। ये लोग दूसरे को मिली वाहवाही, आदर और तुच्छ उपलब्धियों पर जीवित रहते हैं। इनके पास अपना कोई इतिहास नहीं होता, ये किसी और के लिए अपनी इच्छाएं, अपने सपने, अपनी पसंद सबकुछ मार देते हैं।'[125]

नार्सिसिस्ट अक्सर अपने आसपास के लोगों से बलिदान मांगते हैं और उम्मीद करते हैं कि ये लोग उस पर सहआश्रित हो जाएं। नार्सिसिस्ट अक्सर स्वयं को नैतिकता व मर्यादा से ऊपर मानते हैं। ये अपने को इतना महत्वपूर्ण मानते हैं कि इन्हें लगता है, नैतिकता या नियम-कायदे से बंधन उन पर लागू नहीं होता।

जॉन डी राइटर कनाडा के अल्बर्टा में स्वघोषित मसीहा है। उसके अनुयायी ईश्वर के रूप में उसकी पूजा करते हैं। डी राइटर से 18 साल से अलग रह रही पत्नी जोयस ने एक साक्षात्कार में कहा था, 'एक दिन हम रसोई के पास बैठकर सिगरेट पी रहे थे। वह मेरी मृत्यु के बारे में बात कर रहा था। उसने माना कि मैं लंबे समय से मृत्युतुल्य कष्ट झेल रही हूं। उसके हिसाब से यह अच्छा हो रहा था और मैं जीवन का 95 प्रतिशत भाग गुजार चुकी थी। लेकिन उसने कहा कि मैं अपना प्राण पूरी तरह मुक्त नहीं होने दे रही हूं। उसने कहा कि जब वह दो और पत्नियां लाएगा, तभी मैं इस संसार को छोड़ पाऊंगी।' जोयस ने कहा, मुझे लगा कि वह मजाक कर रहा है, पर ऐसा नहीं था। उसने दोबारा यही बात कही और जोयस से बोला, यदि इस घर में तीन पत्नियां रहें तो उसे कैसा लगेगा?'[126]

सौभाग्य से जोयस उतनी भी परजीवी नहीं थी कि इतना अपमान सह लेती, इसलिए उसने पतित हो चुके पति को छोड़ दिया।

वास्तविक परजीवी अपने नार्सिसिस्ट को संतुष्ट करने के लिए कुछ भी करने को तैयार रहता है। एक परजीवी और उसके नार्सिसिस्ट के बीच संबंध परपीड़क और परपीड़ा सहने वाले के बीच का संबंध (सैडोमसोचिज़्म) होता है।

मानवजाति के लिए दुर्भाग्यपूर्ण बात यह है कि खदीजा अस्ली परजीवी थी, जो अपने ईष्ट नार्सिसिस्ट के लिए सबकुछ कुर्बान कर देना चाहती थी। इसी ने मुहम्मद को अपने पैगम्बरी की महत्वाकांक्षाओं को प्रोत्साहन दिया और उस दिशा में बढ़ने को प्रेरित किया। जब मुहम्मद को दौरे आने या फरिश्ते दिखाई देने बंद हो गए तो खदीजा बहुत निराश हुई। इब्ने-इसहाक लिखता है: 'इसके बाद, जिब्राईल उनके पास कुछ समय तक नहीं आया तो खदीजा ने कहा, 'मुझे लगता है कि तुम्हारा अल्लाह अब तुमसे नफरत करने लगा है।''[127] इससे पता चलता है कि वह अपने नार्सिसिस्ट को पैगम्बर बनाने के लिए कितनी उतावली थी।

जब तक खदीजा जिंदा थी, मुहम्मद दूसरी बीबियां नहीं लाया। वह उसके पैसे पर और उसके घर में ऐश कर रहा था। ऊपर से मक्का के अधिकतर लोग उसका मजाक उड़ाया करते थे। उसे पागल कहा जाता था। यदि उसके पास अपना भी धन होता और खदीजा उसकी दूसरी शादी में आपत्ति न भी करती तो भी कोई उससे शादी नहीं करता। मक्का में उसके अनुयायियों की संख्या गिनी-चुनी थी और इनमें भी किशोर या गुलाम ही अधिक थे। एक-दो औरतें भी थीं, पर कोई ऐसी नहीं थी जिससे शादी की जा सके। यदि खदीजा मुहम्मद की हुकूमत स्थापित होने तक जिंदा रहती तो संभवत: अपने शौहर की सनक और अपने से अधिक सुंदर व जवान औरतों को अपने शौहर के साथ देखकर खुद को अपमानित महसूस करती।

खदीजा की मौत के बाद मुहम्मद को कोई ऐसा परजीवी नहीं मिला, जो उसकी भावनात्मक जरूरतों को उस तरह पूरा कर पाता, जैसा कि वह करती थी। पर अब वह कामुक भौंरा बनकर मजा लेने लगा। **खदीजा की मौत के एक माह बाद मुहम्मद ने अपने विश्वस्त अनुयायी अबू बक्र से कहा कि वह अपनी छह साल की बेटी**

आयशा की सगाई उसके साथ कर दे। अबू बक्र ने मुहम्मद को यह कहकर समझाने की कोशिश की कि, 'पर हम लोग भाई हैं।' मुहम्मद ने उससे कहा कि वे केवल मजहबी भाई हैं, और इस छोटी बच्ची के साथ शादी हराम नहीं है।[128]

उसने अबू बक्र से कहा कि आयशा दो बार उसे सपने में दिखी है। सपने में फरिश्ता सिल्क के कपड़ों में लिपटी आयशा को लिए हुए था।' उसने अबू बक्र से कहा, 'मैंने मन ही मन कहा, अगर ये अल्लाह की तरफ से है तो यह जरूर होना चाहिए।'[129] अब अबू बक्र के पास दो ही विकल्प थे: या तो वह उस मुहम्मद को छोड़कर चला जाए, जिसके लिए उसने इतनी कुर्बानियां दी थीं और अपने लोगों के बीच जाकर उन्हें मुहम्मद के झूठे, घटिया चरित्र के बारे में बताए, स्वीकार करे कि इतने दिन से मुहम्मद उसे मूर्ख बना रहा था अथवा मुहम्मद जो कह रहा था, उसे मान ले। संप्रदाय के नेता अक्सर अनुयायी की हालत ऐसी कर देते हैं कि वह कुछ तय नहीं कर पाता।

अबू बक्र ने अपने घर के पीछे मुसलमानों के नमाज पढ़ने के लिए मस्जिद भी बनवाई थी। वह अक्सर मस्जिद से मुहम्मद के कथित अल्लाह से आई आयतें जोर-जोर से चिल्लाकर पढ़ा करता था। यहां तक पहुंचकर मुहम्मद की निंदा करना उसके लिए आसान नहीं था। संप्रदाय के अनुयायी बुरी तरह फंस जाते हैं। संप्रदाय के लिए इतना कुछ त्याग करना पड़ता है कि वहां आत्मसमर्पण करने की अपेक्षा वापस लौटना अनुयायियों के लिए अधिक पीड़ादायी होता है।

वैकनिन अनुयायियों पर नार्सिसिस्टों की पकड़ की व्याख्या यूं करते हैं: 'मैं आपसे सफेद झूठ बोलता हूं, पर मुझसे सवाल करने की आपकी हैसियत नहीं है तो फिर मेरे झूठ झूठ नहीं रह जाते हैं, बल्कि वे सत्य हो जाते हैं, मेरे अपने सत्य। चूंकि वे झूठ जैसे दिखते नहीं, महसूस नहीं होते और आप मुझ पर विश्वास करते हैं, इसलिए आप उस सत्य में विश्वास करते हैं। आप उस झूठ पर विश्वास नहीं करोगे तो आप की अपनी समझ पर सवाल खड़ा हो जाएगा। हमारे रिश्ते की शुरुआत में ही जिस दिन आपने अपना विश्वास और उम्मीद मेरे पास गिरवी दिये थे, जिस दिन आप मुझसे और मेरे व अपने बीच के जुड़ाव से ऊर्जा, दिशा, स्थायित्व और आत्मविश्वास लेने लगे, उसी दिन से मेरी हर बात पर भरोसा करना आपकी फितरत हो गई। मैंने आपको सुरक्षित स्वर्ग दिया और बदले में उसकी कीमत मांग ली तो कौन सी आफत आ गई ? मैं निश्चित रूप से उस लायक हूं कि आपसे कीमत मांग सकूं।'[130]

बॉब लार्सन लिखते हैं: संप्रदाय के नेता जानते हैं कि जब समूह में शामिल नए व्यक्ति के मन-मस्तिष्क में विशेष चित्र गढ़ दिया जाता है और फिर जैसे ही वह व्यक्ति समूह से सार्थक जुड़ाव महसूस करने लगता है तो उसका दिमाग उस समूह के किसी भी उपदेश को ग्रहण करने को तैयार हो जाता है। यहां तक कि यह सदस्य इस धारणा पर विश्वास करने लगता है कि उसका नेता ईश्वर का प्रतिनिधित्व करता है।'[131]

अबू बक्र मुहम्मद के सामने गिड़गिड़ा रहा था कि उसकी छोटी सी बच्ची के साथ सुहागरात न मनाए और तीन साल तक उसे छोड़ दे। मुहम्मद यह बात मान गया और इसी बीच उसने अपने एक अनुयायी की विधवा सऊदा से शादी कर ली। इसके कुछ दिन बाद ही मुहम्मद ने हरम बनवाया, जिसमें बहुत सारी औरतें रखी गईं। उसने मां जैसा ध्यान रखने वाली अपनी बीबी की कमी अपने साथ ढेर सारी जवान औरतों को रखकर पूरी की। वह अपनी बीबियों और रखैलों की सूची लंबी करता जा रहा था। पर उसे इनमें से कोई भी ऐसी नहीं मिली जो खदीजा की तरह उसकी भावनात्मक आवश्यकताओं को पूरा कर सके। उसे एक मां की जरूरत थी, जो उसके भीतर के बच्चे की देखभाल कर सके, पर उसकी किशोरवय नवयौवना बीबियां ये सब किसी ऐसे शौहर के लिए कैसे कर पातीं, जो उनके बाबा की उम्र का हो।

मुहम्मद का अपने मकसद में विश्वास

थोड़ा बड़े होने के बाद से ही मुहम्मद सालाना मेला उकाज़ में जाया करता था, जहां सब जगह के लोग व्यापार और मनोरंजन के लिए इकट्ठा होते थे। वहां ईसाई धर्मोपदेशक सम्मोहित श्रोताओं के समक्ष बाइबिल के पैगम्बरों के किस्से सुनाते थे।

मुहम्मद ये किस्से सुनकर मुग्ध हो जाता था। इसके युवा मन में बस यही आता कि उसे भी लोग इतना चाहें और इतना आदर दें। उन किस्सों को सुनते हुए वह अवश्य सोचता रहा होगा कि 'पैगम्बर होना कितना अच्छा है, इसमें तो हर व्यक्ति से प्यार, सम्मान मिलेगा, हर व्यक्ति डरेगा।' अब उसकी बीबी ही उसे आश्वस्त कर रही थी कि वह पैगम्बर हो गया है तो उसका सपना साकार सा होने लगा। ऐसा लगा कि ईश्वर ने अंततः उस पर दयादृष्टि डाल दी और दुनिया के इतने सारे लोगों में से उसे चुना और इतना ऊंचा उठा दिया कि सारे लोग उसके आगे सजदा करें।

मुहम्मद के सपने बड़े थे। अस्ल में, यह उसकी बड़ी सोच और कामयाबी में अटल विश्वास ही था, जिसने उसके अनुयायियों को उठा खड़ा होने और उसके मकसद को आगे बढ़ाते हुए हत्याएं करने, लूटमार करने और यहां तक कि अपने बाप-दादाओं तक का कत्ल करने के लिए दुष्प्रेरित किया। इसी सोच के कारण वह हमेशा यह महसूस करता रहा कि उसे विशेषाधिकार प्राप्त है। मुहम्मद बातें बनाने में उस्ताद था और शोषण करने वाला भी। उसने अपना साम्राज्य खड़ा कर लिया पर एक भी जंग में खुद लड़ने नहीं गया। वह अपने अनुयायियों को इस लोक में माल और औरतों के साथ सैक्स और परलोक में असीमित अय्याशी का साधन मिलने का ख्वाब दिखाकर अपने लिए जंग लड़वाता था, अपने मकसद के लिए उनका धन खर्च करता था, उनकी जान की कुर्बानी लेता था, खुद को अमीर बनाने के लिए उनसे लूट करवाता था और ताकत हासिल करने के लिए उन्हें गुलेल की तरह इस्तेमाल करता था।

नार्सिसिस्ट झूठ बोलने में उस्ताद होते हैं। वे अपने छल के पहले शिकार स्वयं होते हैं। वे अपने चारों ओर अहंकार और पाखंड की आभा तैयार कर अनजाने में ही अपनी उस छवि को नकारते हैं, जो उन्हें पसंद नहीं होती है। वे स्वयं को नकार की दीवार से घिरे विशाल भव्यता वाले चमकदार व्यक्तित्व में बदल लेते हैं। स्वयं को धोखा देने का यह लक्ष्य बाह्य आलोचना एवं संदेह के समुंदर के प्रति स्वयं को अभेद्य बनाने के लिए होता है। नार्सिसिस्ट झूठ बोलने के मनोरोग से पीड़ित होते हैं। हालांकि वे अपने झूठ पर वास्तव में विश्वास करते हैं और झूठ का खंडन होने पर बिफर जाते हैं।

वैकनिन कहते हैं, 'नार्सिसिस्ट अपनी ऊब और उदासी दूर करने के इरादे से हर समय उत्तेजना और नाटक के पीछे भागते रहते हैं। यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि तलाश और इसका लक्ष्य दोनों उस आडम्बरपूर्ण भ्रम से मेल खाने चाहिए, जो नार्सिसिस्ट अपनी झूठी शख्सियत के बारे में पाले रहता है। ये चीजें उसके भीतर पनप रहे अद्वितीय होने के भाव और अधिकारसम्पन्नता की दृष्टि के अनुरूप होनी चाहिए।'[132]

यह मुहम्मद की लगातार जंगों की व्याख्या करता है। नाटक, लगातार तनाव और उत्तेजना उसकी नार्सिसिस्टिक सप्लाई थे। हालांकि नार्सिसिस्ट वह पहला व्यक्ति होता है, जो अपनी खुद की बकवास पर विश्वास करता है।

डॉ. वैकनिन कहते हैं: 'यह स्वीकृत तथ्य है कि वास्तविकता पर नार्सिसिस्ट की पकड़ बेहद कमजोर होती है (नार्सिसिस्ट कभी-कभी वास्तविकता के परीक्षण में फेल भी हो जाते हैं)। इसमें भी शक नहीं कि नार्सिसिस्ट अक्सर अपनी बातचीत पर भरोसा करते हुए पाए जाते हैं।

नार्सिसिस्ट लोग अपनी मनोरोगी प्रवृत्ति और आत्मभ्रम के मूल से अनजान रहते हैं और इस तरह तकनीकी रूप

से भ्रांतियों से जकड़े रहते हैं। (हालांकि ऐसा कम ही होता है कि ये विभ्रम, अव्यवस्थित बोलचाल अथवा अस्त-व्यस्तता या कैटोनिक व्यवहार की समस्या से ग्रस्त हों।) इसका विशुद्ध अर्थ लिया जाए तो कहा जाएगा कि नार्सिसिस्ट मनोविकृत जैसे प्रतीत होते हैं।'[133]

वैसे वैकनिन कहते हैं कि आत्म-प्रवंचना अथवा कपटपूर्ण कलात्मकता में उस्ताद ये नार्सिसिस्ट सामान्यतः सत्य और असत्य, वास्तविक या बनावटी, मनगढ़ंत या विद्यमान, सही या गलत में अंतर जानते हैं। नार्सिसिस्ट जान-समझ कर घटनाओं के किसी विशेष संस्करण, अतिरंजित कथाओं, अविश्वसनीय चीजों के अस्तित्व और दूसरे की हर बात काटने की आदत वाला जीवन पसंद करता है। वह अपने व्यक्तिगत रहस्यों में भावुक होकर खोया रहता है। नार्सिसिस्ट किसी चीज को तथ्य के बजाय कल्पना के आधार पर अधिक महसूस करता है। लेकिन वह इस तथ्य को कभी नहीं भूलता कि ये सब कोरी कल्पना है। नार्सिसिस्ट अपनी आंतरिक शक्तियों पर पूर्ण नियंत्रण रखता है, अपनी पसंद का पूरा ध्यान रखता है। उसका व्यवहार सुविचारित और लक्ष्य केंद्रित होता है। वह अपनी बात मनवा लेने वाला होता है और उसका विमोह लोगों का ठगने का उपाय तलाशता रहता है। इस तरह उसमें अपने लाभ के लिए गिरगिट की तरह रंग बदलने की कला अर्थात समय के हिसाब से अपना वेश, व्यवहार और धारणाएं बदलने की क्षमता होती है। नार्सिसिस्ट अपने निकटवर्ती और प्रिय लोगों पर अपने झूठे अहम थोपने के लिए उनको एक विशेष वातावरण में ढालने की कोशिश करता है।[134] मुहम्मद के मामले में यह भूमिका खदीजा द्वारा अदा की गई।

इसे समझना थोड़ा मुश्किल है। एक ओर वैकनिन कहते हैं कि नार्सिसिस्ट कभी इस तथ्य को नहीं भूलता है कि ये सब उसकी कल्पना है और दूसरी ओर वो कहते हैं कि नार्सिसिस्ट की वास्तविकता पर पकड़ बहुत कमजोर होती है और वह सामान्यतः अपनी बातचीत पर भरोसा करता है। यद्यपि कि एक सामान्य इंसान के लिए यह एक तार्किक दुविधा पैदा करता है, पर एक नार्सिसिस्ट को इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि वह झूठ बोलता है और फिर खुद को ऐसे विश्वस्त करता है, मानो वे झूठ नहीं, बल्कि पूर्ण सत्य हों। नार्सिसिस्ट इसमें भी कोई दुविधा नहीं पाता है कि जब उपयुक्त समय होगा तो वह अपनी ही कहानी को बदल देगा। हमारी धारणा यह होती है कि या तो कोई इंसान पागल होगा या फिर झूठा, पर दोनो नहीं होगा। हालांकि, यह सत्य नहीं है। अक्सर अपराधी सजा से बचने के लिए पागल होने का नाटक करते हैं। समाज और यहां तक कि मानसिक स्वास्थ्य के पेशेवर भी इनकी इस धोखाधड़ी पर चकमा खा जाते हैं। यह बेवकूफी अब बेतुके स्तर तक पहुंच गई है। 58 साल के एक आदमी जेम्स पैसेन्जा को ड्यूटी के दौरान वयस्क इंटरनेट चैटरूम में जाने के आरोप में बर्खास्त कर दिया गया था। इस व्यक्ति ने अपनी नियोजक कंपनी आईबीएम पर मुकदमा कर दिया। अदालत में इसकी दलील थी कि उसे ऑनलाइन चैट रूम का नशा था, आईबीएम को उससे सहानुभूति दिखाते हुए इलाज कराना चाहिए था, न कि बर्खास्त करना चाहिए था। अदालत ने इस व्यक्ति को आईबीएम कंपनी से 5 लाख डालर का मुआवजा दिलाया।[135]

सच यह है, नार्सिसिस्ट इस बात से पूरी तरह वाकिफ होता है कि वह क्या कर रहा है। न्यूयार्क के सीरियल किलर डेविड बर्कोवित्ज, जो स्वयं को सन ऑफ सैम कहता था, मौत की सजा से सिर्फ इसलिए बच गया, क्योंकि उसके अपराध इतने मूर्खतापूर्ण थे कि लोगों ने उसे पागल समझ लिया। सबको लगा कि पागलपन की अवस्था में उसने ये अपराध किए हैं, इसलिए वह अपने कृत्यों के लिए जिम्मेदार नहीं है। अस्ल में, वह जानता था कि जो वह कर रहा है, गलत है। एक नार्सिसिस्ट की तरह वह भी लोगों का ध्यान अपनी ओर खींचना चाहता था और इसलिए उसने जानबूझकर अपराध का सुराग छोड़ा। उसके लिए आपराधिक घटनाओं के जरिए नामचीन होने का आनंद अपनी स्वतंत्रता के आनंद से बढ़कर लगता था। वह बस ख्याति हासिल करने के लोभ का संवरण नहीं कर सका। बर्कोवित्ज ने जो किया, वह नार्सिस्टिक व्यक्तित्व विकार का संकेत था। जब वह पकड़ा गया और जेल में बंद हो

गया तो उसने फिर से पक्का ईसाई बनना तय किया। उसने ऐसा पहले क्यों नहीं किया? क्या जेल में उसकी मानसिक सर्जरी की गई? नहीं! उसने प्रसिद्धि पाने की भूख में लोगों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करने के उद्देश्य से फिर से एक नाटक किया था। लोगों का ध्यान खींचने के लिए उसके पास जेल में एक पवित्र व्यक्ति बनने का ढोंग करने का ही विकल्प था। नार्सिसिस्ट गिरगिट की तरह होता है। वह दूसरों पर बहुत बारीक नजर रखता है और फिर उसी के हिसाब से व्यवहार करता है। नार्सिसिस्ट अपनी गतिविधियों के बारे में पूर्णत: जागरूक होता है। इनको सही और गलत का भेद पता होता है। ये चर्चा का केंद्रबिंदु बने रहना चाहते हैं और इसके लिए कुछ भी करने को तैयार होते हैं। यदि इनका यह उद्देश्य सीरियल किलर बनने से पूरा होता है तो ये सीरियल किलर बनेंगे और यदि धार्मिक बनने से, तो धार्मिक बन जाएंगे।

हम सीरियल किलर की तुलना काफी हद तक धूम्रपान करने वाले व्यक्ति से कर करते हैं। दोनों यह जानते हैं कि जो वे कर रहे हैं, गलत है। फिर भी, चूंकि उनकी प्रेरणा उनकी इच्छाशक्ति से अधिक मजबूत होती है, इसलिए वे अपनी प्रेरणा के मुताबिक कार्य करने लगते हैं। धूम्रपान करने वाला व्यक्ति खुद को एक-एक सिगरेट से धीरे-धीरे मारता है, जबकि सीरियल किलर दूसरों की जान लेता है। जानता है कि निकोटिन जानलेवा होती है, फिर भी वह खुद को धीरे-धीरे मारता है। निकोटिन जानलेवा है, यह जानने के बावजूद धूम्रपान करने वाला व्यक्ति खुद को सिगरेट पीने से क्यों नहीं रोक पाता? क्योंकि वह धूमपान का आदी हो चुका होता है। इसी तरह नार्सिसिस्ट मनोविकृत व्यक्ति मदहोशी और ईश्वर बन जाने के अहंकार में डूबे रहने का आदी हो जाता है। इनमें लोगों का ध्यान अपनी ओर खींचने की प्रवृत्ति इतनी अधिक होती है कि ये जानते-समझते हुए भी अपनी स्वतंत्रता और जीवन को दांव पर लगा देते हैं।

नार्सिसिस्ट को अपने बुरे कार्यों का पूरा अहसास रहता है। वे यह भी जानते हैं कि जो कर रहे हैं वह गलत है, लेकिन उनके साथ कोई गलत करे, यह उन्हें सहन नहीं होता है। मुहम्मद ने गांवों पर हमले किए और निहत्थे नागरिकों का नरसंहार करने के बाद उनकी धन-संपत्ति लूट ली। पर जब किसी ने उसके एक चरवाहे की हत्या कर उसके चोरी के ऊंट को चुरा लिया तो उसने इस व्यक्ति को तड़पा-तड़पा कर मारा। वह हमलों के दौरान बंदी बनाई गई औरतों का बलात्कार करता था, भले ही वे शादीशुदा हों, पर उसे यह स्वीकार नहीं था कि कोई उसकी बीबियों को देख भी सके और इसलिए उसने अपनी बीबियों को पर्दे में रहने का आदेश दिया। उसने हत्या और चोरी को निषेध किया, लेकिन वह जब स्वयं हत्या और लूट को अंजाम देता था तो उसे उचित ठहराता था। नार्सिसिस्ट के रूप में वह अपने को विशेष अधिकार सम्पन्न मानता था और अपनी सनक के लिए कुछ भी करने को स्वयं को स्वतंत्र मानता था। मुहम्मद पागल भी था और झूठा भी। यह तभी संभव है जबकि आप मनोविकृत नार्सिसिस्ट हों।

क्या मुहम्मद को मक्कावासी ईमानदार मानते थे?

मुसलमान दावा करते हैं कि चूंकि मक्कावासी मुहम्मद को अमीन (न्यासी) बुलाते थे, इसलिए वह ईमानदार इंसान माना जाता था। यह बिल्कुल झूठ है। उस दौर के अरब में अमीन उनको कहा जाता था, जो दूसरों के लिए वस्तुओं का क्रय-विक्रय करते थे। यदि किसी को स्कूल अमीन या शहर अमीन कहा जाता था तो इसका संबंध ईमानदार होने से नहीं, बल्कि व्यक्ति के व्यवसाय से होता था। अमीन की पदवी हर तरह के व्यवसाय से जुड़ी थी। उदाहरण के लिए, अमीन अल-मकतब (पुस्तकालय का न्यासी), अमीन अल-शुरता (पुलिस न्यासी), मजलिस अल-ओमन्ना (न्यासियों की परिषद)।

मुहम्मद की बेटी जैनब का शौहर अबुल आस को अमीन उसके व्यवसाय के कारण कहा जाता था। अबुल ने आखिर तक इस्लाम स्वीकार नहीं किया। लेकिन मुहम्मद ने जैनब को आदेश दिया कि जब तक वो धर्म परिवर्तन न कर ले, वह उससे दूर हो जाए। बीबी के लिए अबुल को मजबूरन मजहब बदलना पड़ा।

मुहम्मद कभी खदीजा के व्यापार के लिए अमीन यानी न्यासी का काम करता था और खदीजा के सौदे को दमासकस (सारिया) ले जाता था और उसकी ओर से बेचता था। यह सोचने की बात है कि यदि मक्कावासी मुहम्मद को विश्वसनीय मानते तो तब उसकी निंदा कदाचित न करते, जब उसने उन लोगों से कहा कि उसे ईश्वर से पैगाम मिला है। कुरान में मुहम्मद ने खुद इसे स्वीकारा है कि जो लोग उसे पहचान गए थे, वे उसे झूठा और पागल कहते थे (कुरान.15:6)। इस आरोप को मुहम्मद ने कुरान में अल्लाह के हवाले इस तरह कह कर इंकार किया: '(ऐ रसूल) तुम हमेशा याद रखना, तुम अपने परवरदिगार की कृपा से न काहिन हो और न पागल (कुरान.52:29)।'

बांटो और राज करो नीति पर और प्रकाश

जैसा कि पिछले अध्याय में बताया गया है कि मुहम्मद ने अपने अनुयायियों को उनके परिवारों से अलग कर दिया, ताकि उन पर पूरा प्रभुत्व जमा सके। उसने अपने मक्का के उन अनुयायियों को, जो मदीना आए थे, अपने घर-परिवार से कोई संबंध न रखने का आदेश दिया। उसकी इस हिदायत के बावजूद कुछ ने यह आदेश नहीं माना और अपने घर गए, संभवत: इसलिए कि जिंदा रहने के लिए वहां से कुछ धन ला सकें। इसे रोकने के लिए मुहम्मद ने अपने अल्लाह से एक और आयत कहलवाई:[136]

ऐ ईमान वालो! अगर तुम मेरी राह में जिहाद करने और मेरी खुशी की तमन्ना में (घर से) निकलते हो तो मेरे और अपने दुश्मनों को दोस्त न बनाओ। तुममें से जो भी ऐसा करता है, वह यकीनन राह से भटक गया है (कुरान.60:1)।

जो दीन हक तुम्हारे पास आया है, उससे इंकार करने वालों के पास तुम दोस्ती का पैगाम भेजते हो। जबकि वह लोग रसूल को और तुमको इस बात पर घर से निकालते हैं कि तुम अपने परवरदिगार अल्लाह पर ईमान ले आए हो। (और) तुम हो कि उनके पास छुप-छुप के दोस्ती का पैग़ाम भेजते हो। हालांकि तुम जो कुछ भी छिपा कर या बिना ऐलान किए करते हो, वह सब मुझे पता होता है। तुममें से जो भी ऐसा करता है, यकीनन राह से भटक गया है (कुरान. 60:1)।[137]

हम देखेंगे कि कैसे बाद की एक आयत में भी वह उनके परिवारों से अलग करने की साजिश रचता है:

ओ ईमानवालो! अगर तुम्हारे मां-बाप और तुम्हारे बहन-भाई ईमान के मुक़ाबले कुफ्र को तरजीह देते हो तो तुम उनको अपना हमदर्द न समझो। यदि तुम उनसे रिश्ता रखते हो तो तुम पापी हो (कुरान. 9:23)।

मुहम्मद अपने अनुयायियों को अलग-थलग करने के लिए इतना उतावला क्यों था? वैकनिन व्याख्या करते हैं: 'कोई नार्सिसिस्ट अपने संप्रदाय के केंद्र में गुरु के रूप में होता है। दूसरे गुरुओं की तरह वह भी अपनी आज्ञा का पूरा अनुपालन चाहता है। वह चाहता है कि उसके समर्थक, अनुयायी, पति या पत्नी, बच्चे, परिवार के अन्य सदस्य, दोस्त व सहकर्मी आदि सभी लोग उसके आदेश का अक्षरश: पालन करें। उसे लगता है कि अपने अनुयायियों से प्रशंसा और विशेष सम्मान पाना उसका अधिकार है। वह नियम-कायदे, उपदेश और एक लक्ष्य सब पर थोपता है। वास्तव में उसमें योग्यता की जितनी कमी होगी, उतना ही वह कठोर स्वामी बनने की कोशिश करेगा और उतना ही ब्रेनवाश करने की कोशिश करेगा।''[138]

मुहम्मद जबकि उसके अनुयायी अभी भी मक्का में ही रह रहे थे, कुछ विशेष नहीं कर सका था। ऐसे में

परिस्थितियां बिगड़तीं तो उसके अनुयायी अपने परिवारों के पास वापस लौट सकते थे। इसलिए मुहम्मद ने अनुयायियों को उनके परिवारों से दूर करने के लिए एक चाल चली। किसी संप्रदाय का नेता अक्सर अनुयायियों को एक परिसर में रखना चाहता है, ताकि वह उनका ब्रेनवाश कर उन पर पूरा नियंत्रण कर सके। प्रारंभ में मुहम्मद ने मोमिनों को अबीसीनिया भेजा, लेकिन बाद में जब अरब के यसरब से उसका समझौता हो गया तो उसने यसरब शहर में अपना परिसर बनाया। उसने इस शहर का नाम भी बदल डाला और इसे मदीना पुकारने लगा (जो मदीनतुल नबी, रसूल का शहर) का संक्षिप्त रूप था।

वैकनिन कहते हैं: 'किसी नार्सिसिस्ट के लघु संप्रदाय के सदस्य अपनी बनाई हुई चारदीवारी के भीतर ढंके-छिपे रहना चाहते हैं। वैसे वे अक्सर ये सब अनिच्छा से करते हैं। नार्सिसिस्ट को जब भी लगता है कि उसकी अवज्ञा हो रही है तो वह अपने चेलों को अजीबोगरीब किस्से, मतिभ्रम उत्पन्न करने वाली कहानियां, शत्रु का भय, मिथकीय घटनाएं, संभावित विध्वंस के दृश्य आदि दिखाकर अपने प्रति भयमिश्रित आदर पैदा करना चाहता है।'[139]

ध्यान दीजिए, मुहम्मद और मुसलमानों के बारे में यह विवरण सटीक है। मुसलमान आज तक उत्पीड़न भ्रांति में रहते हैं और उन्हें हर जगह शत्रु नजर आते हैं। मुसलमान फरिश्तों, जिन्न, मेराज (मुहम्मद का सीधे आसमानों पर जन्नत जाना), कयामत आदि डरावनी व कपोलकल्पित बातों पर भरोसा करते हैं।

वैकनिन के मुताबिक, 'नार्सिसिस्ट (मनोरोगी) के मन में गहरे बैठी यह धारणा कि उस पर उससे छोटे लोग, आलोचक और ताकतवर शत्रु अत्याचार कर रहे है, दो मनोवैज्ञानिक उद्देश्यों को पूरा करती है। एक तो यह नार्सिसिस्ट के आडम्बर को बनाए रखता है और दूसरे लोगों के निकट जाने से बचाता है।'[140]

वैकनिन लिखते हैं: 'ऐसा मनोरोगी स्वयं को गलतियों से परे, श्रेष्ठ, प्रतिभासम्पन्न व कुशल होने के साथ ही सर्वशक्तिमान व सर्वज्ञ होने का दावा करता है। इन आधारहीन दावों को सही साबित करने के लिए वह अक्सर झूठ व फरेब का सहारा लेता है। वह अपनी बेतुकी कहानियां और दावों को लगातार सुनाकर अपेक्षा करता है कि अनुयायी उससे डरें, उसकी प्रशंसा करें, उसकी चाटुकारिता करें, और निरंतर आदर-सत्कार करें।' वह अपनी तृष्णा (भ्रम) के अनुकूल वास्तविकता की व्याख्या करता है। उसकी सोच हठधर्मी, रूखी और अव्यवहारिक होती है। वह स्वतंत्र विचार या अभिव्यक्ति और अनेकवाद पसंद नहीं करता है और न ही आलोचना और असहमति को थोड़ा भी महत्व देता है। वह चाहता है कि उसकी बातों पर लोग तनिक भी संदेह न करें। वह अपने आसपास के निर्णय लेने वाले एवं समर्थ लोगों को बाहर का रास्ता दिखा देता है। वह अपने संप्रदाय के सदस्यों को ऐसे आलोचकों, सत्ता प्रतिष्ठानों, संस्थाओं, उसके निजी दुश्मनों अथवा मीडिया के प्रति शत्रुता का भाव रखने को दुष्प्रेरित करता है, जो उसके कार्यों को बेपर्दा करते हैं अथवा उसके कुकृत्यों को उजागर करते हैं। वह बाहर से आने वाली सूचनाओं पर सूक्ष्म दृष्टि रखता है और इन सूचनाओं को अपने अनुयायियों तक जाने से रोकता है। उन्हें केवल वही सूचना अथवा जानकारी उपलब्ध कराता है, जो उसके स्वयं के लिए अनुकूल हों।'[141]

ऐसे नार्सिसिस्ट के चरित्र का मनोवैज्ञानिक विवरण देते हुए वैकनिन अनजाने में ही मुहम्मद के चरित्र और मुसलमानों की सोच का अद्भुत वर्णन कर जाते हैं। मुसलमान इस हद तक नार्सिसिस्ट होते हैं कि वे अंधों की तरह अपने रसूल का अनुकरण करते हैं।

इस्लाम और नार्सिसिस्ट संप्रदाय के बीच तुलना

नीचे एक मनारोगी (नार्सिसिस्ट) संप्रदाय का वर्णन दिया गया है। पहले हम देखें कि नार्सिसिस्ट संप्रदाय के बारे में वैकनिन क्या कहते हैं और फिर मैं मुहम्मद के जीवन के घटनाक्रम का उद्धरण दूंगा। तब पाठकों पर ही यह

तय करने की जिम्मेदारी होगी कि इस्लाम और मनोरोगी संप्रदाय में समानता है या नहीं:

'नार्सिसिस्ट संप्रदाय मिशनरी और साम्राज्यवादी होता है।' ऐसे संप्रदाय का नेता हमेशा नए सदस्यों की भर्ती पर बल देता है। वह हमेशा नए सदस्य के रूप में शिकार की तलाश में रहता है- अपनी पति या पत्नी के दोस्तों, अपनी बेटी की सहेलियों, पड़ोसियों, कार्यस्थल पर आए नए सहयोगियों आदि को अपने संप्रदाय में लाना चाहता है। वह इन सबको अपने अपने संप्रदाय में धर्मांतरित करने का प्रयास करता है, ताकि इन्हें यह भरोसा दिला सके कि वह कितना निराला और श्रेष्ठ है। या दूसरे शब्दों में कहें तो ऐसा व्यक्ति इनको अपनी नार्सिस्टिक सप्लाई (सनक पूरी करने) का स्रोत बनाने का प्रयास करता है।

विशेष बात यह है कि नार्सिसिस्ट संप्रदाय का नेता का व्यवहार नए लोगों को अपने में शामिल करने के प्रयास के दौरान उससे भिन्न होता है, जो वह अपने संप्रदाय के पुराने सदस्यों के साथ करता है। ऐसा व्यक्ति नए प्रशंसकों को अपने संप्रदाय के दायरे में लाने के प्रथम चरण में उनका विशेष ध्यान रखता है, दया व करुणा दिखाता है, बात-व्यवहार में लचीला होता है, संकोची स्वभाव का नाटक करता है और खुद को मददगार दिखाता है ताकि उनका धर्मांतरण किया जा सके। जबकि अपने पुराने अनुयायियों के बीच वह निर्दयी, स्वेच्छाचारी, आक्रामक और शोषण करने वाला होता है। चूंकि उस समूह का नेता होने के नाते वह ऐसा विशेषाधिकार और लाभ चाहता है, जो और किसी को हासिल न हो। वह चाहता है कि उसके समूह के सदस्य उसके लिए एक पैर पर खड़े रहें और वह उनकी धन-संपत्ति का बेरोकटोक इस्तेमाल कर सके। यदि उसे फायदा दिखता है तो वह अपने ही बनाए नियम-कायदों को तोड़ कर उनसे स्वयं को मुक्त कर लेता है। कई बार ऐसा व्यक्ति स्वयं को कानून से ऊपर मानता है। इस प्रकार की बनावटी व अहंकारी धारणा व्यक्ति को आपराधिक गतिविधियों, व्यभिचार, कईयों से यौन संबंध रखने, शासन-प्रशासन से टकराव की ओर ले जाता है। ऐसा मनोरोगी उन लोगों के प्रति हिंसक और भयानक प्रतिक्रिया देता है, जो उसके संप्रदाय को छोड़कर जाते हैं। बहुत सी ऐसी बातें हो रही होती हैं, जिसे ऐसा व्यक्ति छिपाकर रखना चाहता है। इसके अलावा वे अपने प्रति पनप रही असुरक्षा की भावना को अपने शिकार का शोषण करके दूर करने की कोशिश करता है। विशेष रूप से यदि उसे यह अहसास हो जाए कि लोग उसे छोड़ जाएंगे तो उसके व्यक्तित्व में असंतुलन पैदा होने लगता है। ऐसे व्यक्ति में साफ तौर पर पागलपन और उन्मादी प्रवृत्तियां, आत्मबोध व आत्मविश्लेषण की क्षमता का अभाव, अविकसित प्रत्युन्मति होती हैं और उसके भीतर संप्रदाय के सदस्यों के प्रति द्वेष भाव पनपने लगता है। ऐसे व्यक्ति को हर जगह शत्रु और षडयंत्र दिखता है। वह अक्सर अपने को ऐसे नायक के रूप में पेश करता है, जो काली व बुरी ताकतों से लड़ने वाला होता है। जब भी वह अपने सिद्धांतों से विचलित होता है तो ऐसा जताता है कि अशुभ और विनाशकारी ताकतों से निपटने के लिए ऐसा करना जरूरी था। कुल मिलाकर ऐसा व्यक्ति अपने भक्तों या अनुयायियों को हर तरह से पंगु बना देने पर उतारू होता है।[142]

आइए, अब देखते हैं कि नार्सिसिस्ट संप्रदाय के उपरोक्त वर्णन और मुहम्मद व उसके मजहब के बारे में जो सुना गया है, उसमें क्या समानता है। **इस्लाम मिशनरी भी है और साम्राज्यवादी भी। मुहम्मद का मुख्य उद्देश्य जीतना और प्रभुत्व स्थापित करना था। उसने हर व्यक्ति को अपने मजहब में धर्मांतरित होने के लिए बाध्य किया।**

उसने इसका प्रारंभ अपने परिवार और रिश्तेदारों से किया। उसने अपने चाचा व उसको पालने वाले अबू तालिब को, जब वह मृत्युशैया पर पड़े थे, इस्लाम स्वीकार करने को कहा। बुजुर्ग अबू तालिब ने अपने पुरखों का धर्म छोड़ना अस्वीकार कर दिया तो मुहम्मद ने उनके लिए दुआ मांगने से इंकार करते हुए कहा कि वह जहन्नुम में जाएगा। फिर जब मुहम्मद को ध्यान आया कि अबू तालिब ने उसके लिए कितना किया है, तो उसने कहा कि वो तालिब को दोजख की उस जगह रखवाएगा, जहां दोजख की आग उसे केवल घुटनों तक जलाएगी।

हालांकि, मुहम्मद तालिब की बीबी और बच्चों का धर्मांतरण कराने में कामयाब हो गया। जब मुहम्मद कमजोर था और उसके पास बहुत थोड़े अनुयायी थे तो वह बड़ा भद्र, शिष्ट, दयालु, लचीला, मददगार और विनम्र बनने का नाटक करता था। कुरान की जो आयतें इस अवधि में लिखी गईं, उनमें और उन आयतों से बहुत विरोधाभास है, जो मदीना में उस वक्त लिखी गईं जब मुहमद ताकतवर हो चुका था। तब उसे नए लोगों की भर्ती के लिए दयालुता का मुखौटा लगाने की जरूरत नहीं थी। मदीना में मुहम्मद रौब जमाने वाला, अत्याचारी, निरंकुश, आक्रामक और शोषण करने वाला बन गया था। वहां उसने गांवों और शहरों पर हमले किए और निहत्थे लोगों को लूटा और मारा। जो बच गए, उन्हें अपनी अधीनता स्वीकार करने पर विवश किया तथा ऐसे पीड़ितों को ज़िया कर देने अथवा मारने का आदेश सुना दिया।

मक्का में लिखी गई आयतों के कुछ उदाहरण निम्नलिखित हैं:

1. वे जो कुछ कहते हैं, उसे सब्र के साथ सुन लो। फिर कायदे से उनसे अलग हो जाओ।(73:10)
2. तुम अपने दीन पर रहो, हम अपने दीन पर रहें।(109:6)
3. वे जो कहते हैं, उस पर सब्र करो और अल्लाह की बंदगी में जुटे रहो।(20:103)
4. उनके लोगों से नर्मी से बात करो।(2:83)
5. (ऐ रसूल) ये लोग जो कुछ कहते हैं हम (उसे) खूब जानते हैं। तुम उन पर जोर जबरदस्ती मत करना।(50:45)
6. माफ करने की फितरत पर रहो। जो सही है उस पर कायम रहो और ईमान न लाने वाले अज्ञानी से दूर रहो।(7:119)
7. तुम (ऐ रसूल) उन काफिरों से अच्छे बर्ताव के साथ दर गुज़र करो।(15:85)
8. (ऐ रसूल) मोमिनों से कह दो कि जो लोग अल्लाह के दिनों (जो जज़ा के लिए मुक़र्रर हैं) की ओर नहीं देखते, उनके साथ दरगुजर करें।(45:14)
9. यहूदियों और ईसाईयों में से जो कोई अल्लाह और कयामत पर ईमान लाए और अच्छे काम करता रहे तो उनके लिए उनका सवाब उनके अल्लाह के पास है और कयामत में उन पर न किसी का ख़ौफ होगा, न वह दुखी होंगे।(2:62)
10. ऐ ईमानवालो! अहले-किताब से मुनाज़िरा न किया करो मगर उम्दा और सुंदर अल्फाज़ व उनवान से लेकिन उनमें से जिन लोगों ने तुम पर जुल्म किया (उनके साथ रियायत न करो) और साफ साफ कह दो कि जो किताब हम पर नाजिल हुई और जो किताब तुम पर नाजिल हुई है हम तो सब पर ईमान ला चुके और हमारा माबूद (अल्लाह) और तुम्हारा माबूद एक ही है और हम उसी के फरमाबरदार है।(29:46)

अब आइए, उपरोक्त आयतों की तुलना उन आयतों से करें तो, जो मुहम्मद ने उस वक्त दी थी, जब वो ताकतवर हो गया था।

1. ऐ मोमिनो! इस्लाम में भरोसा नहीं करने वाले काफिरों को मार डालो, और तुम उन्हें अपने भीतर की सख्ती का अहसास कराओ। (9:123)
2. ऐ मोमिनो! मैं (अल्लाह) गैरमोमिनों के दिल में भय पैदा कर दूंगा: उनके गले काट डालो और उनकी उंगलियों को छपक दो। (8:12)
3. जो इस्लाम के अलावा किसी और दीन में यकीन करते हों, उनका दीन हरगिज कबूल नहीं होगा। (3:85)

4. ऐ मोमिनो! जहां कहीं भी मूर्तिपूजक मिले, उसे काट डालो। (9.5)
5. काफिरों को जहां पाओ, वहीं मार डालो, और उन्हें अपने स्थानों से भगा दो और वह स्थान अपने कब्जे में ले लो। (2:191)
6. काफिरों से तब तक लड़ो, जब तक अल्लाह के दीन के प्रति एक भी असंतुष्ट व्यक्ति बचा हो और जब तक सब के सब अल्लाह के मजहब में न आ जाएं। (9:193)
7. काफिरों से जंग करो। अल्लाह उन्हें तुम्हारे हाथों सजा देगा। उन्हें सम्मान छिन्न-भिन्न करके शर्मिंदा बनाओ। (9.14)
8. मोमिनो! जो मुसलमान बनने के बाद काफिर बन बैठा हो तो उसे बख्शो मत। अब कोई बहाने मत बनाओ। तुम ईमान लाने के बाद काफिर बन बैठे हो। अगर कुछ को माफ भी कर दूं तो कुछ को तो सजा दूंगा ही, क्योंकि ये कुसूरवार हैं। (9.66)
9. ऐ ईमानवालो! मुश्रिक़ीन (गैर मुस्लिम) अशुद्ध हैं। उन्हें अब के बाद कभी भी मस्जिदुल हराम (काबा) के पास न आने देना। (9.28)
10. उनसे लड़ो जो अल्लाह और उसके कयामत के दिन में भरोसा नहीं करते और उन लोगों से भी जंग करो, जो इस्लाम को सत्य का धर्म नहीं मानते। ऐसे लोग निकृष्ट होते हैं। इसलिए इसका खामियाजा उन्हें भुगतना होगा।(9:29)

यह इस बात का ठोस सबूत है कि मुहम्मद के पास जैसे ही ताकत आई, वह बिल्कुल बदल गया। जब वह मक्का में कमजोर था तो उदार, शिष्ट, दयालु और संवेदनशील उपदेशक बनने का ढोंग कर रहा था, पर मदीना पहुंचकर वह जैसे ही मजबूत हुआ, वह रौब जमाने वाला, अत्याचारी, क्रूर, रूखा और आततायी बन गया।

बद्र की जंग के बाद मुहम्मद का क्रूर और प्रतिशोधात्मक चेहरा दिखने लगा। म्यूर लिखता है:

बंदी मुहम्मद के सामने लाए गए। उसने एक-एक कर उनको ऊपर से नीचे तक देखा। उसकी दृष्टि हारिस के बेटे नज़ीर (मुहम्मद का चचेरा भाई), जो कवि और उसका आलोचक था, पर पड़ी तो गुस्से से उसकी आंखें लाल हो गईं। डर के मारे कांपते हुए नज़ीर ने बगल में खड़े कैदी के कान में धीरे से कहा, 'उसकी आंखों में मौत नाच रही है।' उसने कहा, 'ऐसा कुछ नहीं है। यह बस उसका भ्रम है।'

उस अभागे कैदी नज़ीर को भरोसा नहीं हुआ तो इस्लाम कबूल चुके अपने एक दोस्त मुसअब से गिड़गिड़ाने लगा कि उसे बचा ले। मुसअब ने उसे याद दिलाया कि उसने इस्लाम से इंकार किया है और मुहम्मद का उपहास किया है। इस पर लंबी सांसें खींचते हुए नज़ीर ने कहा, 'अगर कुरैशों ने तुम्हें बंदी बनाया होता तो भी वे तुम्हें कभी नहीं मारते।' मुसअब ने झिड़कते हुए जवाब दिया, 'तो क्या, तुम ऐसा करते तो करते। मैं तुम लोगों की तरह नहीं हूं। इस्लाम में ऐसी भावनाओं की जगह नहीं।' इस पर जिस व्यक्ति मुसअद ने नज़ीर को पकड़ रखा था, उसे लगा कि यह बंदी उसके हाथ से फिसल जाएगा और इसके बदले मिलने वाली बड़ी फिरौती से वह वंचित हो जाएगा तो वह चिल्ला उठा! मुसअब... 'यह बंदी मेरा है।' तभी यह सब देख रहे मुहम्मद ने आदेश दिया कि इस बंदी का सिर धड़ से अलग कर दिया जाए।

और मुहम्मद बोला, 'ओ अल्लाह! इसका सवाब मुसअब को दो, जो शिकार उसने किया है, उससे बेहतर कुछ नहीं हो सकता था।' इसके बाद अली ने तलवार से नज़ीर का सिर कलम कर दिया। इसके दो दिन बाद, मदीना के आधे रास्ते में उक़बा नामक एक और बंदी का सिर कलम करने का हुक्म मिला। इस बंदी ने प्रतिरोध किया और पूछा कि दूसरे बंदियों की तुलना में उसके साथ इतना सख्त बर्ताव क्यों? मुहम्मद बोला, 'क्योंकि तुम्हारी दुश्मनी अल्लाह

और उसके रसूल से है।' उक़्बा ने रोते हुए पूछा, 'फिर मेरी छोटी सी बच्ची की देखभाल कौन करेगा?' उस हृदयहीन मुहम्मद ने कहा, 'दोजख की आग!' इतने में उक़्बा को मार दिया गया। मुहम्मद बोला, 'कितना नीच व जुल्मी था यह अभागा। अल्लाह में भरोसा नहीं करता था, उसके रसूल और उसकी किताब को नहीं मानता था। उस अल्लाह का शुक्र मनाओ, जिसने इसे कत्ल करवाया और उसके कत्ल का गवाह बनाकर मेरी आंखों को सुकून दिया।'[143]

कुरान में एक ऐसी दर्दनाक प्रेम कहानी दी गई है, जो मुहम्मद की क्रूरता और अनैतिकता को बयां करती है। बद्र की जंग में जो लोग जिंदा पकड़े गए, उनमें से बहुतों का यह आरोप लगाकर कत्ल कर दिया कि सालों पहले जब मुहम्मद मक्का में था तो इन्होंने अपमान किया था। नार्सिसिस्ट ऐसे अपराध को तनिक भी क्षमा नहीं करता है। उन बंदियों में से एक मुहम्मद की बेटी जैनब का पति अबुल आस भी था। बंदियों के परिवार वाले अपने परिजनों को मौत के मुंह से निकालने के लिए इस डकैत को वह सब देते थे, जो वह मांगता था। जैनब ने अपने पति को छुड़ाने के लिए मुहम्मद के पास वह सोने का हार भेजा, जिसे उसकी मां खदीजा ने उसे शादी के वक्त दिया था। मुहम्मद उस हार को देखते ही पहचान गया, क्योंकि उसे खदीजा पहनती थी। मुहम्मद भावुक हो गया और अबुल आस को बिना फिरौती लिए छोड़ने को तैयार हो गया। पर उसे मुक्त करने के लिए उसने शर्त रख दी कि जैनब अपने पति को छोड़कर मदीना चली आए। मुहम्मद ऐसा निर्दयी इंसान था, जो बदले में बिना कुछ लिए तनिक भी दरियादिली नहीं दिखाता था। यहां तक कि कैद से आजाद करने का नाटक भी वह ऐसे व्यक्ति को मुक्त करके करता था, जो अपने लोगों के पास पहुंचकर मुहम्मद की बड़ाई करे, ताकि वे भी इस्लाम व मुहम्मद की ओर आकर्षित हों। इधर, अबुल आस अपनी बीबी जैनब की जुदाई बर्दाश्त न कर सका। जैनब का साथ पाने के लिए उसने अनिच्छा के बावजूद इस्लाम स्वीकार कर लिया और उसके पास मदीना चला गया। हालांकि, मदीना जाने के कुछ समय बाद उसकी मौत हो गई।

मुसलमान इस्लाम को शांति और सहिष्णुता का मजहब बताते हैं और धर्मांतरण के लिए अपने शिकार को फुसलाने के लिए चेहरे पर सौम्यता व मुस्कुराहट ओढ़े रहते हैं। ऐसा दिखाते हैं, जैसे कि वे बड़े मदद करने वाले, विनम्र और दिलकश हैं। पर जब वे अपने लोगों के बीच होते हैं तो उनका व्यवहार बिलकुल अलग होता है। वे गैर-मुस्लिमों के प्रति द्वेषपूर्ण, निर्दयी व अत्याचारी रुख रखते हैं।

शिकार एक बार इस्लाम में धर्मांतरण हो जाए और उसके बाद हनीमून पीरियड खत्म होते ही मुसलमान मुखौटा उतारकर अपनी क्रूरता, आक्रामकता और नीचता का अस्ली रंग दिखाने लगते हैं। वे चाहते हैं कि धर्मांतरित व्यक्ति अब इस्लाम को लेकर कोई सवाल-जवाब न करे और इसके साथ ही वे शिकार के लिए इस्लाम छोड़कर जाने की संभावना खत्म कर देते हैं। यह मुहम्मद द्वारा खुद बनाए गए नियम-कायदों के मुताबिक है और इस्लामी कानून में ये नियम-कायदे मुहम्मद के आचरण से लिए गए हैं।

मुहम्मद को लगता है कि वह विशेष लाभ व सम्मान पाने का अधिकारी है और यह और किसी को नहीं, सिर्फ उसी को मिलना चाहिए। उसने न केवल ऐसे कार्य किए, जो सामाजिक रूप से घोर अनैतिक थे, बल्कि उन कानूनों को भी अपने भोग-विलास और सनक के लिए तोड़ा, जो उसने खुद ही बनाए थे। उसने वही किया, जिसमें उसको प्रसन्नता मिलती थी। जब उसके इन अनैतिक कार्यों से लोगों के दिल को धक्का लगता था तो वह इन्हें उचित ठहराने के लिए कथित अल्लाह के नाम से एक आयत कह देता था, जिससे अनुयायियों के सवालों पर विराम लग जाता था। मुहम्मद ने अपनी कठपुतली अल्लाह से कहलवाया कि रसूल के विरुद्ध एक शब्द भी बोलना अल्लाह को नकारने जैसा है और इस गलती की सजा मौत है। उसने जो कहा, उसे फस्लुल ख़िताब (चर्चा का अंत) कहा जाता है। इसके बहुत से उदाहरण हैं। नीचे कुछ दिए गए हैं:

कुरान मोमिनों को चार बीबी रखने की इजाजत देता है। लेकिन मुहम्मद को लगा कि उसे इस नियम से नहीं बंधना चाहिए। इसलिए उसने अपने काल्पनिक अल्लाह का नाम लेकर कुरान में सूरा 33: 49-50 आयतें लिखीं। इन आयतों में उसने कहा कि ''उसे छूट है और वह जितनी चाहे उतनी औरतें रख सकता, बीबी की तरह, रखैल की तरह या सैक्स गुलाम के रूप में। फिर उसने कहा, 'ऐ रसूल, ये हुक्म सिर्फ तुम्हारे लिए है। दूसरे मोमिनों के लिए नहीं। ताकि तुम्हें कोई समस्या न हो। अल्लाह तो सदा क्षमाशील और दयालु है।'

कैसी समस्या? वासना को नियंत्रित करने की समस्या, सभ्य मनुष्य बनने की समस्या या फिर एक औरत के प्रति निष्ठा रखने की समस्या! **क्या एक ऐसे आदमी को दुनिया का सर्वश्रेष्ठ इंसान मानना चाहिए, जिसे अपनी क्षुद्र पाशविक वृत्तियों को नियंत्रित रखने में समस्या होती थी? कहने की जरूरत ही नहीं, मुहम्मद के कर्म ही उसके घिनौने चरित्र को उजागर करते हैं। एक ओर तो वह नीच पशु की तरह रहता था, और दूसरी ओर काल्पनिक अल्लाह के मुख में अपनी बड़ी-बड़ी बातें ठूंसकर अपनी प्रशंसा करवाता था।** याद रखिए कि मक्का में वह अपनी बीबी खदीजा के धन पर मौज उड़ा रहा था, इसलिए वहां दूसरी औरत लाने की उसकी हिम्मत नहीं हुई। उसकी असीमित मौज तो तब शुरू हुई, जब वह ताकतवर हो गया।

क्या आप मानेंगे कि एक युवा मर्द होते हुए उसे स्वयं से काफी बड़ी उम्र की औरत के साथ सोते समय उसे कोई समस्या नहीं हुई, लेकिन जब वह अपनी जिंदगी के आखिरी दस साल में जी रहा था और तमाम बीमारियों से घिरा था तो उसे समस्या हुई? अथवा हम इसे इस रूप में देखें कि एक वृद्ध हो रहे आदमी को जैसे ही असीम अधिकार मिले, वह वहशी हो गया, उस बच्चे की तरह, जो खिलौने की दुकान में जाने पर सारे खिलौने एक साथ खरीद लेना चाहता हो? एक दिन मुहम्मद अपनी बीबी हफ्सा के पास गया। हफ्सा उमर की बेटी थी। वहां नौकरानी मारिया को देखकर उसकी नीयत खराब हो गई।

कॉप्टिक ईसाई मारिया बेहद खूबसूरत थी। मिस्र के मुखिया मक़ोकस ने उसे मुहम्मद के पास उपहार के रूप में भेजा था, जिसे हफ्सा ने घर के कामकाज के लिए रख लिया। मुहम्मद ने हफ्सा से झूठ बोला कि उसके पिता ने उसे बुलाया है और उसे घर से बाहर भेज दिया। जैसे ही वह निकली, मुहम्मद मारिया को लेकर हफ्सा के बिस्तर पर चला गया और उसके साथ काम क्रीड़ा करने लगा। उधर, हफ्सा जब अपने पिता के घर पहुंची तो पता चला कि उन्होंने तो उसे नहीं बुलाया था। हफ्सा का दिमाग घूमा और वह सोचने लगी कि मुहम्मद ने उसे घर से हटाया क्यों? वास्तविकता जानने के लिए वह तुरंत वहां से घर की ओर भागी और पहुंचकर देखा तो मुहम्मद मारिया के साथ मजे ले रहा था। यह देखकर वह उखड़ गई और हंगामा खड़ा कर दिया (एक औरत हमेशा औरत रहती है)। मुहम्मद ने किसी तरह उसको शांत किया और वादा किया कि अब वो मारिया के पास कभी नहीं जाएगा। पर उसके मन में इस युवा गुलाम मारिया को लेकर अभी भी काम की आग धधक रही थी। समस्या यह थी कि वह अपना वादा तोड़कर उसे पाए कैसे? पर जब अल्लाह नाम का जीव जेब में हो तो यह काम मुश्किल नहीं था। तो फिर उसने अपनी जेब में रखे अल्लाह से सूरा तहरीम नाजिल करवाते हुए कहलवाया कि उस गुलाम लड़की के साथ हमबिस्तर होने में कोई बुराई नहीं है, क्योंकि वह तुम्हारे कब्जे में गुलाम की तरह है, इसलिए वह अपना वादा तोड़ दे। दरअस्ल, अब सर्वशक्तिमान अल्लाह अपने रसूल के लिए दलाल का काम करने लगा। यहां तक कि अल्लाह ने नाराजगी जताते हुए रसूल को झिड़का कि वह अपनी बीबियों को खुश करने के लिए शिष्ट बनने का वादा करके स्वयं को दैहिक सुख लेने से रोक क्यों रहा है! (इस प्रकार इस सूरा का नाम इस घटना के कारण तहरीम (निषेध) दिया गया।)

ऐ रसूल! जो चीज अल्लाह ने तुम्हारे लिए हलाल की है, अपनी बीबियों की खुशी के लिए तुम उससे किनारा क्यों कर रहे। अल्लाह कारसाज है, रहमतवाला है। अल्लाह ने पहले ही तुम्हें कसम तोड़ने के लिए जायज ठहरा दिया

है। अल्लाह ही तुम्हारा परवरदिगार, स्वामी, संरक्षक है। वह सब जानता है, सब समझता है। (कुरान.66:1-5)

इब्ने-साद लिखता है: 'अबू बक्र ने बताया है कि अल्लाह के रसूल ने हफ्सा के घर में मारिया के साथ यौन संबंध बनाए थे। जब रसूल घर से बाहर निकले तो हफ्सा घर के बाहर बैठकर बंद दरवाजा खुलने का इंतजार कर रही थी। उसने रसूल से पूछा, 'ऐ रसूल, तुमने ये मेरे घर में कर डाला और वह भी तब जब मेरी बारी थी?' रसूल बोले, 'खुद को संभालो। मैंने उसे (मारिया को) हराम मान लिया है, इसलिए अब जाने दो।' हफ्सा ने कहा, 'मैं ऐसे नहीं विश्वास करूंगी। तुम कसम खाओ।' रसूल ने कहा, 'अल्लाह की कसम अब मैं उसे दोबारा स्पर्श नहीं करूंगा।'[155]

सामान्यत: मुसलमान मुहम्मद का वादा खिलाफी को उचित ठहराते हैं। मुहम्मद ने कुछ भी किया हो, वे उसे सही ही ठहराएंगे। मुसलमानों ने अपना बुद्धि-विवेक मुहम्मद के पास गिरवी रखकर तार्किक रूप से सोचना बंद कर दिया है। इब्ने-साद आगे कहता है, 'कासिम इब्ने-मुहम्मद ने कहा है कि मारिया को अपने लिए हराम बनाने वाला रसूल का वादा नाजायज था। रसूल द्वारा इस कसम को तोड़ना हराम की श्रेणी में नहीं आता है।'145

सवाल यह है कि यदि वह कसम नाजायज थी तो मुहम्मद ने खायी क्यों और यदि जायज थी तो तोड़ी क्यों? मुहम्मद की वादाखिलाफी के असंख्य उदाहरण हैं। यहां उसने अल्लाह की कसम खाई थी और फिर भी अपने लाभ के लिए उसने कसम को तोड़ने में पलभर नहीं सोचा। वास्तव में, अल्लाह उसकी कल्पना का मनगढ़ंत ईश्वर था। वह इतना मूर्ख नहीं था कि वह अपने मनगढ़ंत अल्लाह के लिए स्वयं को खूबसूरत मारिया से संभोग करने से रोक लेता। इस काल्पनिक अल्लाह को गढ़ने के पीछे उसका एक ही उद्देश्य था कि जो कुछ वह करना चाहता है, वो सबकुछ करने की बेरोकटोक आजादी मिले। यदि कोई अल्लाह उस पर बंदिशें लगाता तो इसका मतलब उसके पैगम्बर होने का पूरा उद्देश्य ही धूल में मिल जाता।

कुरान की जो प्रति मेरे पास है, उसमें सूरा तहरीम के आयतों के साथ ही इनकी व्याख्या भी दी गई है:

यह भी बताया गया है कि रसूल ने अपनी बीबियों के लिए दिन तय कर दिए थे। उस दिन हफ्सा की बारी थी। उसने बहाना बनाकर हफ्सा को अपने पिता उमर इब्ने-खत्ताब के पास भेज दिया। मुहम्मद का आदेश पाकर जब वह अपने पिता के घर निकल गई तो मुहम्मद ने उस गुलाम काप्टिक ईसाई लड़की मारिया को बुलाया, जो बाद में मुहम्मद के बेटे इब्राहीम की मां बनी और जिसे नजाशी की ओर से मुहम्मद को उपहार दिया गया था। मुहम्मद ने मारिया के साथ संभोग किया। जब हफ्सा लौटी तो उसने दरवाजा अंदर से बंद पाया। वह दरवाजे के बाहर बैठ गई। जब मुहम्मद मारिया से निपट के बाहर आया तो उसके चेहरे से पसीना टपक रहा था। हफ्सा ने मुहम्मद को इस स्थिति में देखकर लताड़ लगाई और बोली, तुम्हें मेरी इज्जत की कोई परवाह नहीं है। तुमने बहाना बनाकर मुझे घर से बाहर भेज दिया, ताकि उस लौंडी के साथ हमबिस्तर हो सको। जिस दिन मेरा दिन था, उस दिन किसी और के साथ संभोग किया। तब रसूल बोले, शांत रहो, वो मेरी गुलाम है और इसलिए वह मेरे लिए हलाल है। फिर भी तुम्हारे संतोष के लिए मैं अभी इसी वक्त उसे अपने लिए हराम एलान करता हूं। पर हफ्सा को चैन न मिला और जब रसूल घर से बाहर चला गया तो उसने आयशा के कमरे से लगी अपने कमरे की दीवार के पास जाकर आवाज लगाई। आयशा आई तो उसने उसे पूरी घटना बताई।[146]

मुसलमानों के लिए कसम का कोई मतलब नहीं होता है। वे कसम खाते हैं और जब उन्हें जरूरत होती है तो कसम तोड़ देते हैं। बुखारी में एक हदीस है जहां मुहम्मद कहता है: 'अल्लाह और अल्लाह की इच्छा से यदि मैं कोई शपथ लेता हूं और बाद में मुझे उससे बेहतर कुछ लगता है तो मैं वही करता हूं जो बेहतर होता है और मैं वचन तोड़ देता हूं।'[147] मुहम्मद ने अपने अनुयायियों को भी वही नसीहत दी: 'अगर तुम कभी कोई कसम खाओ और बाद

में तुम्हें लगे कि कुछ और बेहतर है तो अपनी कसम छोड़ कर वो करो।'[148]

मुसलमानों पर कभी भरोसा नहीं किया जा सकता है। उनके वादे का कोई मतलब नहीं होता है। वे अपने वादे पर टिके नहीं रह सकते। उनकी कसमों के कोई मायने नहीं होते। नार्सिसिस्ट अर्थात मनोरोगी को लगता है कि वे जो भी करना चाहता है, उसके पास वह सब करने का अधिकार है और वो कसमों-वादों से बंधा नहीं है। एक दिन मुहम्मद अपने दत्तक पुत्र जैद से मिलने गया और वहां उसकी बीबी जैनब (मुहम्मद की बेटी जैनब के नाम से भ्रम में न पड़ें) को घर के उत्तेजक वस्त्रों में देखा। उसकी सुंदरता देखकर मुहम्मद के मुंह से लार टपकने लगी और वह अपनी यह इच्छा दबा न सका तो धीरे से बोला: 'अल्लाह की प्रशंसा करो, वही रचयिता है। वही दिलों को मिलाता है।' उसने जैनब पर कामुक दृष्टि डालते हुए यह कहा और वहां से निकल गया। जब जैद को यह पता चला तो उसे लगा कि कृतज्ञता प्रकट करने का इससे अच्छा अवसर नहीं मिलेगा, इसए उसे जैनब को तलाक दे देना चाहिए, ताकि मुहम्मद उसको रख सके। मजे की बात यह है कि कुछ साल पहले मुहम्मद ने जब दावा किया था कि वो जन्नत की सैर करने गया था तो उसने कहा था कि वहां उसे एक औरत मिली थी। उस औरत के बारे पूछा तो जन्नत में बताया गया कि वह जैनब है, जैद की बीबी। बाद में उसने यह भ्रम पैदा करने वाली कहानी जैद को सुनाई तो उसे लगा कि उसकी जोड़ी ऊपर के जहान में बनाई गई है और इसलिए उसने जैनब से शादी कर ली।

हालांकि जब मुहम्मद ने जैनब को अर्द्धनग्न देखा तो उसकी नीयत खराब हो गई और वह अपने ही सुनाये जन्नती किस्से को भूल गया। जाहिर है कि मुहम्मद से बेहतर इस बात को कोई नहीं जान सकता कि मेराज यानी जन्नत की सैर का किस्सा उसका स्वयं का ही गढ़ा हुआ था। जब जैद ने मुहम्मद से कहा कि वह जैनब को तलाक दे देगा तो उसने कहा, 'अपनी बीबी अपने पास रखो और अल्लाह से डरो (कुरान. 33:37)।' जैसे ही जैद वहां से गया मुहम्मद जैनब के होठों, मुलायम जांघों और उन्नत उरोजों के खयाल में डूब गया और फिर अपनी जेब में रखे अल्लाह से एक आयत कहलवाया, जिसमें अल्लाह ने उसे झिड़की दी कि वह दैहिक सुख प्राप्त करने के बजाय लोगों की आलोचना को सोचकर इसे दबा क्यों रहा है।

ऐ रसूल वह वक़्त याद करो जब तुम उस शख़्स (जैद) से कह रहे थे जिस पर अल्लाह ने अहसान (अलग) किया था और तुमने उस पर अलग अहसान किया था कि अपनी बीबी (ज़ैनब) को अपनी जौजियत में रहने दे और अल्लाह से डरकर ख़ुद तुम इस बात को अपने दिल में छिपाते थे जिसको (आख़िरकार) अल्लाह जाहिर करने वाला था और तुम लोगों से डरते थे। हालांकि अल्लाह इसका अधिक हकदार है कि तुम उस से डरो। जब जैद ने हाजत पूरी कर दी, मतलब उसे तलाक दे दिया और मैंने उसे तुम्हें शादी के लिए दे दिया, ताकि भविष्य में मोमिनों को दत्तक पुत्र की बीबियों से शादी करने में दिक्कत न आए, जब दत्तक पुत्र बीबियों को रखने की इच्छा न हो तो उसे अपनी बीबी क्यों नहीं बनाते। यह अल्लाह का हुक्म है और इसे करो। (कुरान.33:37)

मुहम्मद द्वारा अपनी ही बहू से शादी करने से उसके अनुयायी भौंचक्के रह गए। पर सवाल यह था कि अल्लाह से सवाल-जवाब कौन करे? अपने अनुयायियों को चुप कराने के लिए मुहम्मद ने अपनी आस्तीन से अल्लाह को फिर निकाला और एक आयत में कहलवाया कि मुहम्मद किसी का पिता नहीं है, बल्कि वह पैगम्बर है और उस पर रसूल होने की मुहर है।(कुरान.33:40)

उसने दावा किया कि जैनब के साथ उसकी शादी अल्लाह ने करवाई है, ताकि वह यह बता सके कि गोद लेना बुरा है और इसे रद्द किया जाना चाहिए। जैसा कि आप देख सकते हैं, चूंकि मुहम्मद अपनी वासना पर नियंत्रण नहीं कर पा रहा था, अत: उसने फर्जी अल्लाह से कहलवाया कि बच्चा गोद लेना गलत है।

ऐसा करके मुहम्मद ने असंख्य अनाथों को दोबारा जीवन मिलने से वंचित कर दिया। क्या यह बात ही पर्याप्त

नहीं है कि मुहम्मद को अल्लाह के पैगम्बर के रूप में खारिज कर दिया जाए? कैसे सर्वशक्तिमान अल्लाह किसी बच्चे को गोद लेने से कुपित हो सकता है? इस विषय से जुड़ा एक रोचक किस्सा है: मुहम्मद द्वारा गोद लेने की प्रथा को रद्द किए जाने के बाद, अबू हुज़ैफा और उसकी बीबी सहला उसके पास आईं। इन दोनों के पास भी सलीम नाम का एक दत्तक पुत्र था। सलीम अबू हुज़ैफा का मुक्त किया हुआ गुलाम था, जिसे उसने दत्तक पुत्र बना लिया था। सहला ने मुहम्मद से सलाह मांगते हुए कहा, 'ऐ रसूल, सलीम हमारे साथ हमारे घर में रह रहा है। वह जवान मर्द हो गया है और यौन संबंधी समस्याओं को समझने लगा है।' मुहम्मद ने एक होशियारी भरा जवाब देते हुए कहा, 'उसे अपने स्तन से दूध पिलाओ।' इस जवाब से सहला हक्की-बक्की हो गई और पूछा, 'उसे कैसे दूध पिला सकती हूं, वह बड़ा हो गया है।' मुहम्मद मुस्कुराया और बोला: 'हां, मैं जानता हूं कि वह जवान मर्द है।' वास्तव, सलीम काफी बड़ा था और उसने बद्र की जंग में भाग लिया था। एक और हदीस कहती है कि मुहम्मद सहला की बात सुनकर जोर से हंसा।[149]

मैं सोचता हूं कि यदि कोई सयाना लड़का मुहम्मद से कहता कि अपनी बीबियों के स्तन से दूध पीने की अनुमति दो, ताकि उन्हें हमसे पर्दा करने की आवश्यकता न रह जाए तो उसने क्या कहा होता। मुहम्मद के अनुसार स्तनपान कराने से मातृवत् संबंध बन जाते हैं, भले ही दूध पिलाने वाली औरत संबंधित व्यक्ति की जैविक मां न हो।

इन रिवायतों से प्रेरित इस्लाम के प्रतिष्ठित संस्थान मिस्र के अल-अजहर विश्वविद्यालय के डॉ इज्जत अतीया ने कार्यस्थल पर सैक्स रोकने के लिए फतवा जारी किया था कि कामकाजी औरतें अपने पुरुष सहकर्मियों को कम से कम पांच बार सीधे अपने स्तन से दूध पिलाएं, ताकि उनमें परिवार का संबंध बन जाए। इसके बाद वे उन मर्दों के साथ अकेले काम कर सकती हैं। उन्होंने कहा कि 'किसी वयस्क को स्तनपान कराने से अकेले में मेल-मुलाकात से होने वाली समस्याएं खत्म हो जाती हैं और ऐसा करने वाली औरत को किसी और से शादी की मनाही भी नहीं है। उन्होंने फरमान जारी किया कि 'कार्यस्थल पर औरतें उन मर्दों के सामने अपने बाल खोलकर रख सकती हैं अथवा बिना बुर्का के रह सकती हैं, जिन्हें उन्होंने अपनी छाती से दूध पिलाया हो।''[150]

चूंकि यह फतवा एक प्रामाणिक हदीस पर आधारित था, इसलिए कुछ मुसलमानों को इस फतवे पर कोई आपत्ति नहीं थी, मिस्र और अरब जगत के लोगों में इस फतवे से रोष फैल गया और डॉ. आतिया को यह फतवा वापस लेने पर विवश होना पड़ा।

मुहम्मद का पवित्र मल-मूत्र

13 जून, 2007 को मिडिल ईस्ट मीडिया रिसर्च इंस्टीट्यूट (एमईएमआरआई) ने निम्न लेख प्रकाशित किया:[151]

मिस्र के मुफ्ती डॉ. अली जुमा ने अपनी पुस्तक धर्म और जीवन-आधुनिक दैनंदिन फतवा में लिखा कि पैगम्बर मुहम्मद के साथी उसका पेशाब पीने में खुद को धन्य समझते थे। एक हदीस के हवाले से पेशाब पीने की एक घटना का वर्णन किया गया। हदीस में कहा गया है: उम्मे-एमन ने रसूल का पेशाब पिया और रसूल ने इस औरत से कहा: 'अब दोजख की आग में तुम्हारी अंतड़ियां नहीं खिंचेंगी, क्योंकि इस पेशाब में अल्लाह, उसके रसूल का अंश है...।'[152]

अल जुमा ने फतवे में कहा, 'यह सबाब रसूल के लार, पसीने, बाल, पेशाब या खून से भी मिल सकता है। जो भी रसूल की मुहब्बत को जानता है, वह इन सबसे घृणा नहीं करेगा। वैसे ही जैसे एक मां अपने बच्चे के पाखाने से अशुद्ध नहीं होती। ऐसे ही उस रसूल, जिसे हम अपने पिता, बेटों और बीबियों से अधिक प्यार करते हैं, की इन चीजों से कोई गंदा नहीं होता। यदि किसी को रसूल की इन चीजों में बदबू आती है तो उसे अपने विश्वास को फिर

से जांचना चाहिए।'[153]

हालांकि जब हंगामा होने लगा तो जुमा अपने फतवा के बचाव में उतर आए और कहने लगे: 'रसूल का पूरा शरीर, खुला या ढंका, शुद्ध है और इसमें और उनके मल-मूत्र में ऐसा कुछ नहीं है कि जिससे किसी को परहेज हो, परेशानी हो। उनका पसीना इत्र से अधिक महकता है। उम्मे-हरम उनके पसीने को इकट्ठा करके अल-मदीना के लोगों में बांटती थी।'[154]

डॉ जुमा ने कहा: 'अलहुदैबिया में सुहैल बिन उमर की हदीस कहती है: ओ स्वामी, मैं फारस के सुल्तान किसरा और बाइजैन्टाइन के सुल्तान कैसर के साथ था। पर मैंने एक बार भी नहीं देखा कि उनका इस तरह महिमा मंडन हो रहा हो, जैसा कि वहां रसूल के साथी मुहम्मद के बारे में कर रहे थे। दूसरे मुहम्मद जब थूकते थे, तो सुल्तान उनके थूक को लेने के लिए लपक पड़ते थे और फिर उसे अपने चेहरे पर मलते थे।

इस तरह हजर अल-असकलानी, अल-बैहकी, अल-दार अल कुतनी और अल-हिशाम सहित अन्य आलिमों ने रसूल के पूरे शरीर को पवित्र बताया।'[155] मिस्र के धार्मिक मामलात के मंत्री डॉ. मुहम्मद हमदी जकजूक ने जुमा के इस बयान की कड़ी निंदा की। उन्होंने कहा: 'इस तरह के फतवे से इस्लाम को नुकसान पहुंचता है। इस्लाम के शत्रुओं को बुराई का स्रोत मिलता है और ये लोगों को जाहिलियत और पिछड़ेपन की ओर धकेलता है।'[156] सरकारी अखबार अल-अहरम में ज़कजूक ने लिखा: 'इस तरह का फतवा दुखद है। इससे इस्लाम व पैगम्बर का इतना नुकसान हुआ है, जितना कि डैनिश कार्टून से नहीं हुआ था। क्योंकि इस बार नुकसान इस्लाम के शत्रुओं ने नहीं किया है, बल्कि ऐसे मुस्लिम उलमा ने किया है, जो लोगों को इस्लाम के बारे में विचार देते हैं।'

उन्होंने कहा, 'हदीस की किताबों में सब दिया है। क्या हलाल है और क्या हराम, इन किताबों में बताया गया है। उन बातों में मिलावट करना या बार-बार दूषित करना, न तो इस्लाम और न ही मुसलमानों के लिए अच्छा है। मुसलमानों के दिमाग में इस तरह की दूषित बातें, अस्वस्थ विचार और सिद्ध न की जा सकने वाली आधारहीन धारणाएं डालने की कोशिश अब स्वीकार नहीं की जा सकती।'[157]

अल-अजहर के इस्लामिक रिसर्च अकादमी ने शेख डॉ. मुहम्मद सईद तंतावी की अध्यक्षता में जुमा के फतवा पर सख्त ऐतराज जताया गया। अकादमी ने कहा कि आज की परिस्थिति में यह फतवा बिलकुल उचित नहीं है।[158] जुमा के फतवे को लेकर और भी इस्लामिक विद्वानों और जनता ने विरोध प्रकट किया। अटार्नी नबी अल-वहश ने प्रासीक्यूटर जनरल के यहां जुमा के खिलाफ शिकायत दर्ज कराई। शिकायत में कहा गया कि जुमा के इस फतवे से सामाजिक स्थिरता को खतरा पैदा हो गया है और यह अपमानजनक है। इससे रसूल और उनके साथियों का भी अपमान हुआ है।[159]

अल-अहरम के संपादक ओसामा सराया ने तर्क दिया कि भले ही जुमा के फतवे का आधार मजहबी किताबें अथवा स्रोत हों, पर आज के मुसलमानों के लिए यह प्रासंगिक नहीं है। मजहबी कानून की किताबों में बहुत से सवाल और मुद्दे खड़े होते हैं। इन किताबों की कई ऐसी बातों को छोड़ दिया गया है, जिनका आज के मुसलमानों की जिंदगी की हकीकत से कोई लेना-देना नहीं है और जो केवल सैद्धांतिक या दार्शनिक अथवा विवादास्पद हैं।

अतीत में मजहबी उपदेशकों ने कहा है कि आवश्यक नहीं है कि जो कुछ पता हो, वह सब प्रकट ही कर दिया जाए। यह मान्य तथ्य है कि बहुत से ऐसे मसले हैं, जिन पर कभी मौलवी माथापच्ची करते थे, पर आज के समय में ये मसले अप्रासंगिक हो चुके हैं। क्योंकि ये विषय अब उस तरह से जनजीवन से जुड़े भी नहीं हैं और लोकव्यवस्था में गड़बड़ी भी कर सकते हैं। मजहबी कानूनों के विद्यार्थी इस बात से पूरी तरह वाकिफ हैं।''[160]

सरकारी अखबार अल-जम्हूरियाह के स्तंभकार याला जबल्लाह लिखते हैं: 'उम्मै-एमन का किस्सा सच हो या

झूठ, पर यदि कोई पूछे भी तो भी किसी मुफ्ती को इसे नहीं बताना चाहिए। इस कहानी को जानने का भला कोई फायदा है? गौरवशाली अतीत, प्रतिष्ठित खून और पवित्र मूत्र धारण करने वाले रसूल अब हमारे बीच नहीं हैं। इसलिए अब इन बेकार के विषयों पर चर्चा की गुंजाइश नहीं है। इन विषयों को दोबारा छेड़ने से जनता को नुकसान हो सकता है और इस्लाम को क्षति होगी।'[161]

अल-अखबार के स्तंभकार अहमद रागिब ने जुमा के फतवे पर तंज कसते हुए लिखा: 'मुफ्ती साहब, आपके फतवे के प्रति पूरा सम्मान... पर जरा यह समझाएं, पेशाब पीना कैसे मुमकिन है? क्योंकि मूत्र विसर्जन तो सार्वजनिक रूप से किया नहीं जाता है, इसके लिए तो कोने में कहीं एक निर्जन स्थान तय रहता है? क्या रसूल के साथी हाथ में बरतन लेकर उनके पेशाब करने का इंतजार किया करते थे। क्या कोई समझदार इंसान यह मानेगा कि रसूल उन्हें अपना पेशाब इकट्ठा करने देते थे।'[162]

इन बातों में आशा की किरण दिखती है कि एक दिन मुसलमानों को उनकी मूर्खता का अहसास कराया जा सकता है। ये घटनाएं बताती हैं कि मुसलमानों को एक सीमा तक ही बेवकूफ बनाया जा सकता है और इसके बाद मुसलमान स्वयं सवाल उठाने लगेंगे। मेरी धारणा है कि यदि मुसलमानों को इस्लाम के नंगा सच से अवगत कराया जाए और उनकी मूर्खतापूर्ण हरकतों को उजागर किया जाए तो बड़ी संख्या में मुसलमानों में अक्ल आएगी और वे इस्लाम को छोड़ देंगे।

मुहम्मद ने निर्जल उपवास की उसी परंपरा को फिर से जीवित किया, जो मूर्तिपूजकों में प्रचलित थी। हालांकि मुहम्मद को सुबह से रात तक अन्न व जल के बिना रहना मुश्किल लगने लगा, इसलिए रोजे के दौरान भी जब उसकी इच्छा होती, वह कुछ खा लेता।

इब्ने-साद लिखता है: 'अल्लाह के रसूल कहा करते थे, 'हम पैगम्बरों को सुबह का खाना दूसरे लोगों के बाद खाना चाहिए और शाम को जल्दी रोजा तोड़ना चाहिए।'[163]

ये कुछ उदाहरण हैं, जिनसे साबित होता है कि मुहम्मद अपनी खुशी के लिए ही कोई काम करता था और वह अपने काल्पनिक अल्लाह से अपने मनमानी कार्यों की अनुमति दिलवाता था।

युवा और संवेदनशील आयशा को मुहम्मद की मनमानी समझ में आ गई थी। इसलिए उसने या तो तंज कसते हुए अथवा अनजाने में उससे कहा, 'मुझे लगता है कि तुम्हारा अल्लाह तुम्हारी तमन्ना और अरमानों को पूरा करने की जल्दबाजी में रहता है।'[164] आयशा ने यह तब कहा, जब मुहम्मद ने अपने अल्लाह से अपनी बहू जैनब को बीबी बनाने की अनुमति दिलवाई। **किसी भी जंग में मुहम्मद ने अपनी जिंदगी दांव पर नहीं लगाई। वह अपनी फौज के पीछे खड़ा रहता था और उसके पास द्विस्तरीय श्रृंखलाबद्ध कवच होता था।[165] यह द्विस्तरीय कवच इतना भारी होता था कि उसे खड़े होने या चलने के लिए किसी के सहारे की जरूरत पड़ती थी। इस स्थिति में वह अपने आदमियों को जंग में जीतने पर जन्नत में 72 कुंवारी व खूबसूरत कन्याओं और दिव्य भोजन का लालच देते हुए अपने आगे खड़ी फौज को चिल्लाकर उत्साह दिलाता था और कहता था कि मौत से डरे बिना बहादुरी से लड़ो।** कभी-कभी वह मुट्ठी में रेत भर कर दुश्मन की ओर फेंकता था और उन्हें कोसता था।

अपनी फौज के खर्चे के लिए अल्लाह का यह रसूल अपने अनुयायियों पर धन देने का दबाव बनाता था। वह अनुयायियों से कहता कि वे उसकी सेवा करें और उसमें विश्वास बनाए रखें। वह अपनी चापलूसी को प्रोत्साहन देता था और किसी भी तरह के असंतोष पर उसकी त्यौरियां चढ़ जाती थीं। कुरैशों की ओर से वार्ताकार उरवा हुदैबियाह में मुहम्मद से मिलने गया तो उसने देखा कि मुहम्मद के चेले उस पानी को लेने के लिए दौड़ पड़ते थे, जो उसके नहाने के बाद बच जाता था। यही नहीं यदि मुहम्मद खंखारता या थूकता था तो वे उसे लेने के लिए दौड़ पड़ते और

यदि उसका कोई बाल गिर रहा होता था तो वे उस पर झपट पड़ते थे।'[166] इतिहासकार सर विलियम म्यूर का मानना है कि इन बातों को यह मानकर खारिज नहीं किया जा सकता कि बाद के वर्षों में इन चीजों को अतिरंजित रूप से प्रस्तुत किया गया। दूसरे संप्रदाय के नेताओं की तरह मुहम्मद ने भी अपने व्यक्तित्व को केंद्र में रखकर एक संप्रदाय गढ़ा। आज भी हम इस तरह की व्यक्ति पूजा वाले संप्रदायों को देख सकते हैं। वास्तव में एक नार्सिसिस्ट अर्थात मनोरोगी इसी तरह का व्यवहार पसंद करता है। मुहम्मद स्वयं को कानून से ऊपर मानता था। जब भी आवश्यकता पड़ी तो उसने नैतिक व सैद्धांतिक नीति-नियमों को तोड़ा और इसे सही ठहराने के लिए उसने अपने अल्लाह के माध्यम से एक आयत कही।

अरबी लोग रेगिस्तान के सीधे-साधे इंसान थे, पर वे अपने पराक्रम पर गर्व करते थे। वर्ष में कुछ मास ऐसे होते थे, जिनमें वे आपस में नहीं लड़ते थे। इन मास में लोग तीर्थयात्रा पर जाते थे, इसलिए ये पवित्र माने जाते थे। इन्हीं पवित्र महीनों में मुहम्मद ने हमलावरों का एक दस्ता खजूर के पेड़ों के लिए मशहूर नखला भेजा और किशमिश, मक्खन, शराब व अन्य पकवान लेकर तायफ़ से मक्का जा रहे तीर्थयात्रियों के कारवां को लूटने का आदेश दिया। वर्ष के इन मास में लड़ना या हत्या करना पाप माना जाता था।

उसने अपने गिरोह के 8 सदस्यों को नखला कूच करने को कहा और इन आदमियों को अपने मिशन के बारे में नहीं बताया। उसने इस दल के मुखिया को एक बंद चिट्ठी दी और यह निर्देश भी दिया कि गंतव्य पर पहुंचकर ही इसे खोलें। जब उन्होंने चिट्ठी खोली तो पता चला कि मुहम्मद ने इस पवित्र मास में कारवां पर हमला करने का आदेश दिया है। दल के दो सदस्यों का ऊंट रेगिस्तान में गुम हो गया तो वे उसे ढूंढने में लग गए। बाकी छह लोगों ने विचारोपरांत निर्णय किया कि भले ही यह कार्य अनुचित, अनैतिक और पाप है, लेकिन चूंकि मुहम्मद का हुक्म है, इसलिए इसे पूरा किया जाना चाहिए। कारवां पर घात लगाने से पहले इन लोगों ने अपने सिर मुंडवाए, ताकि कारवां के लोग उन्हें भी तीर्थयात्री समझें और अपनी सुरक्षा से बेपरवाह रहें। कारवां के बीच में तीर्थयात्री के वेश में घुसकर मुहम्मद के आदमियों ने एक व्यक्ति का कत्ल कर दिया और दो लोगों को बंधक बना लिया। कारवां का एक व्यक्ति किसी तरह जान बचाकर भागने में सफल रहा। यह पहला खून-खच्चर था, जिसके लिए इस्लाम जिम्मेदार था। इस्लाम ने सबसे पहले जिस इंसान का खून बहाया, वह मुसलमानों द्वारा बहाया गया गैर-मुस्लिम का खून था। मुसलमानों ने गैर-मुस्लिमों से दुश्मनी निकालनी शुरू कर दी। इन्होंने विरोधियों और आलोचकों का सिर कलम करना शुरू कर दिया। इन हत्याओं से कुरैश समुदाय सदमे में आ गया और उन्हें समझ में आ गया कि इनका विरोधी सत्ता हासिल करने के लिए किसी नियम-कायदे का पालन नहीं करेगा।

बहुत से ऐसे मामले हैं, जिनमें मुहम्मद ने नीति-सिद्धांत, शिष्टाचार व नैतिकता को ताक पर रखकर प्रचलित कानूनों को तोड़ा। किसी भी समाज में व्यापारियों के कारवां को लूटना, गांवों पर हमला करना और उनकी धन-संपदा को छीनना कानून के खिलाफ होता है। मुहम्मद ने निहत्थे समूहों पर घात लगाकर हमला किया, बहुतों को मार डाला, और उनकी औरतों व बच्चों को पकड़कर दास बना लिया। उसने ये सब अपने अल्लाह का आदेश बनाकर उचित भी ठहरा दिया। उसने हमलों में गुलाम बनाई गई औरतों का बलात्कार करना जायज करार दिया और यहां तक उन महिलाओं के बलात्कार को भी सही बता दिया, जो शादीशुदा थीं। (कुरान. 4:24)

अल्लाह के रसूल ने परिवार की औरतों-लड़कियों के साथ व्यभिचार से लेकर बहुविवाह, बलात्कार से लेकर बाल यौन शोषण, हत्या से लेकर नरसंहार तक सब किया और अपने अनुयायियों को भी ये सब करने को प्रेरित किया। इस्लाम शब्द का अर्थ है अधीनता। कुरान कहता है, 'किसी भी मोमिन मर्द या औरत को उस बात की अवज्ञा करने का हक नहीं है, जिसे अल्लाह के रसूल ने कहा है।' (कुरान.33:36) हालांकि सच्चाई यह है कि इस्लाम गैर

मुस्लिमों को भी अपने तरीके से जीने की आजादी नहीं देता है। दूसरे धर्म को मानने वाले लोग या तो इस्लाम की अधीनता स्वीकार कर लें अथवा मरने के लिए तैयार रहें। मुहम्मद ने असहमति को विश्वासघात कहा था।

नार्सिसिस्ट के लिए असहमति बर्दाश्त से बाहर होती है। मुसलमानों के इस असहिष्णु रवैये को देखकर गैर-मुसलमानों को भय और खतरा महसूस होता है। परित्यक्त बचपन की पीड़ादायी स्मृतियां जैसे-जैसे गहरी होती हैं, व्यक्तित्व में असंतुलन खतरनाक ढंग से बढ़ जाता है। फिर ऐसे व्यक्ति बहुत आहत महसूस करने लगते हैं और इनमें प्रतिशोध की भावना प्रबल हो उठती है। मुहम्मद उन्हें अपना शत्रु मानता था, जो उसका विरोध करते थे या उसको समर्थन नहीं देते थे। वह पागल था और हर जगह उसे साजिश दिखती थी।

वह स्वयं को शत्रुओं के दुर्भावनापूर्ण कृत्यों के पीड़ित नायक के रूप में प्रस्तुत करता था। जबकि उसके ये 'शत्रु' उसकी कल्पनाओं के सिवाय, कहीं और नहीं थे। मुहम्मद की सफलता का एक राज यह था कि वह उन लोगों की जासूसी करवाता था, जो उसकी आलोचना करते थे और उन पर हमला करने से पहले उनके बारे में पूरी जानकारी हासिल कर लेता था। मुहम्मद की सनक ऐसी थी कि वह अपने अनुयायियों को भी एक-दूसरे की जासूसी करने को कहता था। मुसलमान आज भी ऐसा ही करते हैं। रसूल की तरह वे भी खुद को पीड़ित दिखाते हैं और इस आधार पर अपने आतंकवादी कृत्यों को उचित ठहराते हैं। उन्हें लगता है कि दुनिया में बुरी ताकतें इस्लाम को नष्ट करने के लिए काम कर रही हैं और यहूदियों के नेतृत्व में पूरी दुनिया में इस्लाम के खिलाफ षडयंत्र चल रहा है। मुसलमानों के मन में यह बात बिठा दी गई है कि यहूदी दुनिया को नियंत्रित करते हैं और खासकर यह कि अमरीका पर यहूदियों का नियंत्रण है, जो इस रहस्यमयी और ताकतवर यहूदी साजिश के प्रभाव में मुसलमानों के खिलाफ प्रछन्न युद्ध छेड़े हुए हैं। मुसलमान अपने ही लोगों की बातों और कार्यों को लेकर चौकन्ना रहते हैं। मुसलमान इस्लामी कानूनों का पालन ठीक से हो रहा है या नहीं, यह जानने के लिए एक-दूसरे की जासूसी करते हैं। सभी इस्लामी देशों में आतंक का वातावरण निर्मित किया जाता है, ताकि कोई इस्लामी मत के खिलाफ मामूली सवाल करने का भी साहस न कर सके। इस्लामी देशों में आपका अपना बच्चा आपके खिलाफ ईशनिंदा की शिकायत दर्ज करा सकता है और यह शिकायत आपको मौत की सजा तक ले जा सकती है। मनोविकृत नार्सिसिस्टों को लगता है कि वे विशेष हैं और इसलिए वे विशिष्ट लाभ लेने के अधिकारी हैं। मुहम्मद ने कभी उन लोगों को धन्यवाद नहीं कहा, जिन्होंने उसके काम किए। इसके बजाय वह कहता था कि उन लोगों को कृतज्ञ होना चाहिए कि उन्हें अल्लाह की सेवा का अवसर मिला है।

'ऐ मोमिनो! खैरात देने के बाद तिरस्कार कर और मन को आहत कर अपनी खैरात को बेकार मत करो। ऐसा ही तो वो लोग करते हैं, जो अपना धन अपनी औकात दिखाने के लिए खर्च करते हैं और अल्लाह व कयामत के दिन में भरोसा नहीं करते हैं। (कुरान.2:263)

मुहम्मद औरत, शबाब और ताकत की भूख को पूरा करने के लिए लालायित रहता था। वह औरत के प्यार के लिए तड़पता था, क्योंकि बचपन में उसके अपनों ने उसे प्यार नहीं दिया था। मुहम्मद ने प्यार की अपनी भूख को ताकत हासिल कर शांत किया। रूखा बचपन नार्सिसिज्म, तानाशाही प्रवृत्ति और मनोविकृति का मुख्य कारण होता है। उसके दादा और चाचा के अतिशय लाड़-प्यार, अनुशासन डालने में उनकी असफलता ने उसके भीतर नार्सिस्टिक लक्षणों को और बढ़ाया। मुहम्मद जब अपनी मां की कब्र पर गया तो चिल्ला-चिल्लाकर रोया, लेकिन उसके ये आंसू उसकी मां के लिए नहीं थे, बल्कि वह स्वयं पर रो रहा था। नार्सिस्टिक के मन में दूसरों के प्रति भावनाएं नहीं होतीं। ऐसा इंसान केवल अपनी भावनाओं, अपनी पीड़ा और अपनी भावनात्मक आवश्यकताओं से ही वास्ता रखता है।

90 http://allpsych.com/disorders/personality/narcissism.html
91 International Statistical Classification of Diseases and Related Health Problems, 10th edition, World Health Organization (1992)
92 The language in the criteria above is based on or summarized from: American Psychiatric Association. (1994). Diagnostic and statistical manual of mental disorders, fourth edition (DSM IV). Washington, DC: American Psychiatric Association. Sam Vaknin. (1999). Malignant Self Love - Narcissism Revisited, first edition. Prague and Skopje: Narcissus Publication. ("Malignant Self Love - Narcissism Revisited" http://www.geocities.com/vaksam/faq1.html)
93 Tabaqat V. 1 p. 2
94 http://www.muhammadanreality.com/creationofmuhammadanreality.htm
95 Ibid.
96 Ibid.
97 Tabaqat V. 1, p. 364
98 Ibid.
99 Mark 10:18
100 http://www.muhammadanreality.com/about.htm
101 Sam Vaknin and Lidija Rangelovska, Malignant Self Love – Narcissism Revisited, Narcissus Publications, Czech Republic (January 4, 2007),
102 healthyplace.com/Communities/Personality_Disorders/Site/Transcripts/narcissism.htm
103 Ambient abuse is the stealth, subtle, underground currents of maltreatment that sometimes go unnoticed even by the victims themselves, until it is too late. Ambient abuse penetrates and permeates everything – but is difficult to pinpoint and identify. It is ambiguous, atmospheric, and diffuse. Hence it has insidious and pernicious effects. It is by far the most dangerous kind of abuse there is. It is the outcome of fear – fear of violence, fear of the unknown, fear of the unpredictable, the capricious, and the arbitrary. It is perpetrated by dropping subtle hints, by disorienting, by constant – and unnecessary – lying, by persistent doubting and demeaning, and by inspiring an air of unmitigated gloom and doom ("gaslighting"). This definition is given by Dr. Sam Vaknin in his article "Ambient Abuse, first published in "Verbal and Emotional Abuse on Suite 101," also published in Malignant Self Love – Narcissism Revisited, Ibid. and at http://samvak.tripod.com/abuse10.html (date not given), (accessed June 22, 2007).
104 "The Cult of the Narcissist" by Dr. Sam Vaknin, published in Malignant Self Love –Narcissism Revisited, and at http://samvak.tripod.com/journal79.html, c. Sam Vaknin, date not given (accessed June 22, 2007).
105 healthyplace.com/Communities/Personality_Disorders/Site/Transcripts/narcissism.htm
106 Amir Taheri Neo-Islam http://www.benadorassociates.com/article/19333
107 "For Love of God – Narcissists and Religion", by Dr. Sam Vaknin, at http://samvak.tripod.com/journal45.html (no date given) (accessed June 22, 2007), first published in "Narcissistic Personality Disorder" Topic Page on Suite 101, also appearing in Malignant Self Love – Narcissism Revisited, Ibid.
108 "For Love of God – Narcissists and Religion", by Dr. Sam Vaknin, Ibid.
109 Jon Mardi Horowitz – Stress Response Syndromes: PTSD, Grief, and Adjustment Disorder" New Jersey:Jason Aronson Inc., Third Edition, 1997, ISBN-10: 0765700255, ISBN-13: 978-0765700254.
110 www.faqfarm.com/Q/Can_you_be_responsible_for_your_spouse's_narcissism
111 Tabaqat Vol 1 p. 107
112 Ibid.
113 J. D. Levine and Rona H. Weiss. The Dynamics and Treatment of Alcoholism. Jason
Aronson, 1994
114 http://www.globalpolitician.com/25109-barack-obama-elections
115 http://www.nmha.org/infoctr/factsheets/43.cfm
116 Persian Tabari v. 3 p.832
117 http://samvak.tripod.com/faq66.html
118 http://www.toddlertime.com/sam/66.htm
119 "I do not ask of you any reward for it but love for my near relatives" Tabaqat vol.1 page.3
120 Qur'an Sura 42: verse 23
121 http://samvak.tripod.com/faq66.html
122 Quoted from "Mixing oil and water" by Bridget Murray, APA Online Monitor On Psychology, Vol. 35, No. 3, March 2004, (online version), Print version: page 52, online version found at http://www.apa.org/monitor/mar04/mixing.html (accessed June 22, 2007www.apa.org/monitor/mar04/mixing.html
123 www.toddlertime.com/sam/66.htm
124 "The Inverted Narcissist" Sam Vaknin, HealthyPlace.com Personality Disorders Community, at www.healthyplace.com/communities/Personality_Disorders/narcissism/faq66.html (date not given) (accessed June 22, 2007)
125 http://samvak.tripod.com/personalitydisorders22.html
126 "The Gospel According to John," by Brian Hutchison, Saturday Night Magazine, May 5, 2001, at http://www.rickross.com/reference/ruiter/ruiter3.html (accessed June 22, 2007

127 Sira Ibn Ishaq, p. 108
128 Sahih Bukhari 7.62.18 Narrated 'Ursa: The Prophet asked Abu Bakr for 'Aisha's hand in marriage. Abu Bakr said "But I am your brother." The Prophet said, "You are my brother in Allâh's religion and His Book, but she (Aisha) is lawful for me to marry."
129 Sahih Bukhari, Volume 9, Book 87, Number 140
130 http://samvak.tripod.com/kenintro.html
131 Larson's New Book of Cults 1989, pp. 14-15
132 Dr. Sam Vaknin Narcissism FAQ ŒÌ57
133 “Pathological Narcissism, Psychosis, and Delusions” by Sam Vaknin, at Sam Vaknin Sites, http://samvak.tripod.com/journal91.html (accessed June 22, 2007)
134 Ibid.
135 http://news.bbc.co.uk/2/hi/americas/6682827.stm
136 The Qur'an can be tedious, and that is mainly why few Muslims have read it. However, at the risk of boring my readers, in this chapter I will have to quote several Qur'anic verses as evidence to support my portrait of Muhammad.
137 Qur'an, sura 60, Verse 1
138 http://samvak.tripod.com/journal79.html
139 Ibid.
140 www.suite101.com/article.cfm/6514/95897
141 http://samvak.tripod.com/journal79.html
142 The Cult of Narcissist http://samvak.tripod.com/journal79.html
143 Oh you who believe! Murder those of the disbelievers and let them find harshness in you. (Q.9:123)
144 Ibn Sa'd, Tabaqat Vol 8: p 195
145 Ibid
146 Published by Entesharat-e Elmiyyeh Eslami Tehran 1377 lunar H. Tafseer and translation into Farsi by Mohammad Kazem Mo'refi
147 Sahih Bukhari Vol.7 Book 67, No.424
148 Sahih Bukhari Vol.9 Book 89, No.260
149 Sahih Muslim 8.3424, 3425, 3426, 3427, 3428
150 http://news.bbc.co.uk/2/hi/middle_east/6681511.stm
151 MEMRI nquiry and Analysis Series - No. 363 L. Azuri http://memri.org/bin/articles.cgi?Page=archives&Area=ia&ID=IA36307ŒÌ_edn1
152 Baraka Umm Ayman was a servant of the Prophet Muhammad as well as his nursemaid.
153 Al-Masri Al-Yawm (Egypt) May 20, 2007.
154 Umm Haram bint Milhan was a cousin of the prophet on his mother's side, and one of the first to embrace Islam and emigrate to Mecca.
155 Al-Masri Al-Yawm (Egypt) May 23, 2007. Dr. Gum'a made similar statements to the Egyptian weekly Al-Liwa Al-Islami, May 26, 2007.
156 Al-Masri Al-Yawm (Egypt) May 22, 2007.
157 Al-Ahram (Egypt) May 29, 2007.
158 Al-Ahram (Egypt), June 3, 2007.
159 Al-Masri Al-Yawm (Egypt) May 30, 2007.
160 Al-Ahram (Egypt) May 31, 2007.
161 Al-Gumhouriyya (Egypt) May 24, 2007.
162 Al-Akhbar (Egypt) May 21, 2007.
163 Tabaqat, Volume 1, page 369
164 Sahih al-Bukhari, Volume 6, Book 60, Number 311)
165 Flexible armor of interlinked rings.
166 Sirat Ibn Ishaq, p.823.

अध्याय
3

मुहम्मद के उन्मादी अनुभव

मानव के मन के बारे में हुए नए अनुसंधानों से मुहम्मद के रहस्यमयी अनुभवों पर प्रकाश डाला जा सकता है। मुहम्मद ने अपने इन अनुभवों का वर्णन गूढ़ भाषा में किया है। लोग उसे झूठा न कहें, इसलिए उसे जो कहना था, अल्लाह से कहलवाया।

'जो बड़ा जबरदस्त है और जब ये (आसमान के) ऊंचे (मुश्रको) किनारे पर था तो वह अपनी (अस्ली सूरत में) सीधा खड़ा हुआ (6)। फिर करीब हो (और आगे) बढ़ा (7)। (फिर जिब्राईल व मुहम्मद में) दो कमान की दूरी रह गई (8)। बल्कि इससे भी निकट था (9) अल्लाह ने अपने बन्दे की तरफ जो 'वही' भेजी सो भेजी (10)। तो जो कुछ उन्होंने देखा उनके दिल ने झूठ न जाना (11)। तो क्या वह (रसूल) जो कुछ देखता है तुम लोग उसमें झगड़ते हो (12)। और उन्होंने तो उस (जिब्राईल) को एक बार (शबे-मेराज) और देखा है (13)। सिदतुल-मुन्तहा के नज़दीक (14) उसी के पास तो रहने की बहिश्त है (15)। जब छा रहा था सिदरा पर जो छा रहा था (16)। (उस वक्त भी) उनकी आंख न तो और तरफ माएल हुई और न हद से आगे बढ़ी (17)। और उन्होंने निश्चित ही अपने परवरदिगार (की कुदरत) की बड़ी बड़ी निशानियां देखीं (18)।' (कुरान.53:6-18)

एक और जगह मुहम्मद ने अपने कठपुतली अल्लाह से अपने दृश्यीय अनुभव की पुष्टि कराई:

'और बेशक उन्होंने जिब्राईल को आसमान के खुले किनारे पर देखा है।' (कुरान.81-23)

एक हदीस में मुहम्मद के अनुभवों को इस तरह बताया गया है:

जब मैं टहल रहा था तो आसमां से एक आवाज सुनी। मैं ऊपर आकाश में टकटकी लगाकर देखने लगा। तब मुझे वही फरिश्ता दिखाई दिया जो हिरा की खोह में मेरे पास आया था। वह फरिश्ता जमीं और आसमां के बीच एक कुर्सी पर बैठा था। यह देखकर मैं डर से बेहोश होकर गिर गया। तब मैं अपनी बीबी के पास गया और बोला, 'मुझे कपड़े से ढंको! मुझे कपड़े से ढंको! उसने मेरे ऊपर कंबल डाला।'[167]

जब किसी ने पूछा, 'वह दैवीय प्रेरणा तुम्हें कैसे मिली?' मुहम्मद ने जवाब दिया:

'कभी-कभी लगता था कि जैसे कान में बड़े-बड़े घंटों की टंकार हो रही हो। मैं तो थोड़ी देर के लिए बिलकुल सुन्न जैसा हो जाता था। फिर जब इस स्थिति से उबरता था तो दैवीय प्रेरणा मुझे मिलती थी। कभी-कभी फरिश्ते इंसानों के वेश में मेरे पास आते थे और मुझसे बात करते थे और मैं उनके संदेश सुनता रहता था।' आयशा ने कहा: 'एक दिन जबरदस्त ठंड थी। मैंने देखा कि रसूल फरिश्तों से बात कर रहे हैं और जब वो सामान्य हालत में आए तो वो पसीने से तरबतर थे।''[168]

जैद इब्ने-साबित ने वर्णन किया है: 'रसूल जो वही अर्थात इल्हाम (रहस्योद्घाटन) करते थे, मैं उसको लिखता था। जब रसूल को अल्लाह का संदेश मिलता था तो वे ऐसा महसूस करते थे, जैसे सीने में आग लगी हो और उनके शरीर से मोती की तरह पसीने की बूंदें टपकने लगती थीं।'[169]

इब्ने-साद दावा करता है: 'जब रसूल को इल्हाम (अल्लाह का संदेश मिलना) होने वाला होता था तो उन्हें बेचैनी होने लगती थी और उनका चेहरा तन जाता था।'[170] उन्होंने फिर बताया, 'जब रसूल पर इल्हाम यानी दैवीय प्रेरणा मिलती थी तो कुछ घंटों के लिए वे ऐसे हो जाते थे, जैसे कि नींद में हों।'[171] बुखारी कहता है: 'अल्लाह के रसूल को दिव्य ज्ञान सपने में होता था और सपने में देखी गई बात सच होती थी।'[172]

मुस्लिम द्वारा लिखी एक हदीस में लिखा है: 'रसूल की बीबी आयशा कहती हैं: रसूल को अल्लाह का संदेश स्वप्न में मिलता था और उस समय उन्हें और कुछ नहीं, बल्कि जैसे भोर की किरण प्रकाश पुंज लाती है, वैसे ही ज्ञानपुंज दिखता था।'[173]

तबरी लिखता है: 'रसूल ने कहा, 'मैं खड़ा था, तभी अचानक घुटनों के बल गिर पड़ा और मेरा शरीर कांपने लगा।''[174]

बुखारी ने भी लंबी हदीस लिखी है और यह बताया है कि मुहम्मद को कैसे अल्लाह का संदेश मिलता था। आयशा ने लिखा है:

अल्लाह के रसूल को अल्लाह का संदेश ख्वाब में मिलता था और वे ख्वाब ऐसे होते थे, जो सच होते थे। दरअस्ल, रसूल सपना नहीं देखते थे, बल्कि वह होने वाला सच देखते थे। वह अक्सर हिरा की खोह में एकांत में चले जाते थे, जहां कई दिन और रात अल्लाह की इबादत करते रहते थे।

वह अपने साथ कई दिनों के खाने-पीने का सामान ले जाते थे। सामान खत्म होने पर वे फिर अपनी बीबी खदीजा के पास वापस आते थे और सामान लेकर चले जाते थे। हिरा की गुफा में लंबे इबादत के दौरान एक दिन वे सत्य से परिचित हुए। फरिश्ता आया और उनसे (अशिक्षित मुहम्मद) से पढ़ने को बोला। रसूल ने जवाब दिया, 'मुझे पढ़ना नहीं आता है।' फरिश्ते ने इतनी जोर से पकड़कर मुझे भींचा कि मैं चिल्ला पड़ा। तब उसने मुझे छोड़ दिया और फिर से मुझे पढ़ने को बोला। मैंने फिर कहा, 'मुझे पढ़ना नहीं आता (मैं क्या पढ़ूं?)।' उसने दूसरी बार जोर से पकड़कर दबाया और पढ़ने को बोला। उसने छोड़ा तो मैं फिर बोला, मुझे पढ़ना नहीं आता (मैं क्या पढ़ूं?)।' उसने तीसरी बार फिर पकड़कर दबाया और बोला, 'पढ़ो: अपने अल्लाह का नाम लेकर पढ़ो। जिस अल्लाह ने पूरी कायनात, हर चीज बनाई है। जिस अल्लाह ने खून के थक्के से इंसान बनाए। उस परवरदिगार का नाम लेकर पढ़ो। तुम्हारा अल्लाह कृपालु है, जिसने कलाम के जरिए तालीम दी। उसी ने इंसान को वह बातें बताईं, जिनको वह कुछ जानता ही न था।' (कुरान.96:1-5)

इसके बाद अल्लाह के रसूल दैवीय प्रेरणा लेकर लौटे। उनके गले की नसें डर के मारे तन गई थीं। उन्होंने घर में प्रवेश किया और खदीजा से बोले, 'मुझे ढंक दो! मुझे ढंक दो!' खदीजा ने उन्हें कंबल उढ़ाया और तब रसूल बोले: 'ऐ खदीजा, मुझे क्या हो गया?' इसके बाद रसूल ने खदीजा को अपने साथ हुई पूरी घटना बताई और बोले: 'डर लग रहा है कि मुझे कुछ हो जाएगा।' खदीजा ने कहा, 'कभी नहीं! तुम्हें कुछ नहीं होगा। अच्छा सोचो। अल्लाह तुमको कभी नीचा नहीं दिखाएगा। तुम तो अपने नाते-रिश्तेदारों, दोस्तों के साथ अच्छा व्यवहार रखते हो। सच बोलते हो। दीन-हीनों की मदद करते हो। मेहमानों की खातिर करते हो। किस्मत के मारों की सहायता करते हो।'

इसके बाद खदीजा उसे अपने चचेरे भाई वरका बिन नोफेल बिन असद बिन अब्दुल बिन उज्जा बिन कुसई के पास ले गई। वरका उसके पिता के भाई का बेटा था, जो इस्लाम के आने के पहले ईसाई हो गया था और इंजील को अरबी में लिखता था। वह कहता था कि उसे अल्लाह ने ऐसा करने के लिए कहा है। वह एक बुजुर्ग व्यक्ति था और अंधा था। खदीजा ने उससे कहा, 'ऐ भाई! अपने भतीजे की कहानी सुनो।' वरका ने पूछा, 'बोलो भतीजे तुमने क्या देखा?' रसूल ने जो देखा था, उसे बताया। वरका ने कहा, 'यह वही जिबराइल अर्थात फरिश्ता है, जो अल्लाह

के रहस्यों को जानता है और अल्लाह ने इसे ही मूसा के पास भेजा था।' काश! मेरी उम्र थोड़ी और लंबी होती और मैं उस समय होता, जब तुम्हारे अपने लोग तुम्हें इसके लिए भगाने की कोशिश करेंगे। रसूल ने कहा, 'क्या वे लोग मुझे देश निकाला देंगे?' वरका ने कहा, हां, जब भी कोई इंसान इस तरह की बात करता है तो लोग उसके शत्रु बन जाते हैं। उस नाजुक वक्त में यदि जिंदा रहा तो मैं मजबूती से तुम्हारा साथ दूंगा। लेकिन इसके कुछ ही दिन बाद वरका की मृत्यु हो गई और कुछ समय के लिए दिव्य संदेश का आना भी बंद हो गया। रसूल इससे बहुत दुखी हुए।

मैंने (खदीजा) से कई बार सुना है कि उनके (रसूल) मन में कई बार पहाड़ियों से नीचे कूदकर जान देने का विचार आया। लेकिन जब भी वह कूदने के लिए पहाड़ी की चोटी पर जाते तो जिब्राईल प्रकट होता और कहता, 'ऐ मुहम्मद! तुम वास्तव में अल्लाह के पैगम्बर हो। इसके बाद उनका मन शांत होता और वे पहाड़ी से नीचे आते, फिर घर पहुंचते। जब लंबे समय तक मुहम्मद को अल्लाह का संदेश नहीं मिलता तो वे ऐसा ही करते। पर जैसे ही पहाड़ी की चोटी पर पहुंचते जिब्राईल आकर फिर वही बात कहता। (इब्ने-अब्बास इसका अर्थ बताते हुए कहते हैं: अल्लाह अंधियारे को चीर कर उजियारा करता है। वह अल-असबह है, जिसका अर्थ है कि वही सूरज को रोशनी देता है और चंदा को चांदनी।)'[175]

मुहम्मद को रसूल मानने का वरका का दावा बकवास है। दावा यह भी किया जाता है कि वरका ने यह दावा इंजील के अध्ययन के आधार पर किया था। किसी भी धर्मग्रंथ में ऐसा कुछ नहीं है, जो मुहम्मद की ओर इशारा करता हो। वरका मर चुका था और मुहम्मद उसके नाम पर कोई भी झूठ बोल सकता था, ठीक उसी तरह जैसे कि वह अपने दादा के बारे में कहता था कि वे उसको बड़ा किस्मत वाला कहते थे। वरका के साथ बिल्कुल वैसा नहीं था, जैसा कि उसकी परजीवी खदीजा उसके झूठ को मंडित करती थी। उस समय पर भी मुहम्मद ऐसा ही झूठा दावा करता है, जब वह बुसरा में खदीजा की सेवा में गया था। उसने कहा था कि जैसे ही बुसरा के बाहरी इलाके में कारवां पहुंचा, वह एक पेड़ की छाया में बैठ गया और तभी एक फकीर ने उसे पहचान लिया। फकीर ने पूछा, 'पेड़ के नीचे वह कौन बैठा है?' कथित तौर पर उस फकीर ने खदीजा के एक युवा नौकर मईसरह से यह पूछा। मईसरह व्यापारिक यात्रा में मुहम्मद के साथ जाता था। मईसरह ने जवाब दिया, 'वह कुरैश कबीले का आदमी है।' तब फकीर ने कहा, 'अरे, पेड़ के नीचे बैठा इंसान कोई साधारण मनुष्य नहीं है, वह तो अल्लाह का पैगम्बर है।' यह संभवत मुहम्मद की मनगढ़ंत कहानी थी कि फकीर ने उसके चारों ओर एक ऐसा बादल देखकर कहा था, जो उसे चटखती धूप से बचा रहे थे। फकीर ने पूछा, 'क्या इस इंसान की आंखों में हल्की लाली और चमक रहती है।' मईसरह ने हां में जवाब दिया तो उसने कहा, 'वह निश्चित रूप से अल्लाह का अंतिम पैगम्बर है। जो भी उस पर भरोसा करता है, वह बधाई का पात्र है।'[176]

एक जगह उसने दावा किया कि उसके कंधों के बीच जो बड़ा तिल है, वह उसके पैगम्बर होने की निशानी है। मुझे तो अभी तक किसी धर्मग्रंथ में लिखा नहीं मिला कि कंधों के बीच तिल अथवा आंखों का लाल रहना पैगम्बरी के चिन्ह होते हैं। पलकों के आसपास जलन के कारण होने वाली ब्लैफ्रॉइटिस (blepharitis) नामक बीमारी से आंखें लाल रहती हैं।

एक प्रकार के ब्लैफ्रॉइटिस (blepharitis) की बीमारी में मेइबोमियन (meibomian) ग्रंथि ठीक से काम नहीं करती है, जिससे आंखों के आसपास रोसासिया (rosacea) और सेबोरिक डरमेटाइटिस की समस्या पैदा होती है। रोसासिया में चेहरा लाल हो जाता है। अबू तालिब के बेटे अली ने मुहम्मद के चेहरे को रैडिश-व्हाइट बताया है।[177]

मुहम्मद जानता था कि उसके अनुयायी भोले हैं, इसलिए वह उनको अपनी कपोल-कल्पित बातें सुनाता रहता था। यहां तक उसने अपनी बीमारी के लक्षणों को भी पैगम्बरी की पहचान बताया। अगर यह कहानी सच होती तो

मईसरह वह पहला व्यक्ति होता, जो मुहम्मद के संप्रदाय में शामिल होता। पर मईसरह का दोबारा कहीं उल्लेख तक नहीं हुआ है। ऊपर दी गई हदीस बताती है इस्लाम में खदीजा की भूमिका महत्वपूर्ण थी। जब मुहम्मद को वहम हुआ कि उसके ऊपर शैतानों का साया है तो वह खदीजा ही थी, जिसने उसे आश्वस्त किया कि अल्लाह ने उसे अपने रसूल के रूप में चुना है और उसके पागलपन को और हवा दी। मुहम्मद के कुछ मतिभ्रम तो खुली आंखों से देखकर होते थे, जबकि कुछ वह सपने में देखकर पालता था और कुछ सुनकर। इब्ने–इसहाक लिखता है:

जब अल्लाह ने मुहम्मद पर अपनी कृपा बरसाने की इच्छा की और उन्हें रसूल बनाया तो वह अपने काम के सिलसिले में यात्रा में रहते थे। पर जब मक्का की उन घाटियों में स्थित कंदराओं में पहुंचते थे, जहां न कोई मकान दिखता, न इंसान और न पेड़–पौधे तो वहां आवाज आती, 'हे अल्लाह के पैगम्बर, तुम पर अल्लाह की कृपा है!' रसूल जब अपने आगे–पीछे और ऊपर–नीचे नजर दौड़ाते तो उन्हें कोई नजर नहीं आता था, बस आसपास पत्थर और पेड़ दिखते थे।[178]

मुहम्मद और भी कई विचित्र ख्वाब देखा करता था। अबू हुरैरा ने बयान किया है: रसूल ने एक बार नमाज पढ़ी और बोले: 'शैतान आया और नमाज में खलल डालने की कोशिश की। पर अल्लाह मेरे साथ था और उसने मुझे ताकत दी। मैंने उसका गला मरोड़ दिया। बेशक मैंने सोचा कि उसे मस्जिद के खंभे से बांध दूं, ताकि तुम लोग सुबह उठो तो उसे देखो। तभी मुझे पैगम्बर सुलेमान की वह बात याद आई, जिसमें उन्होंने कहा था, 'मेरे प्रभु! मुझे ऐसा साम्राज्य प्रदान करो, जो मेरे बाद किसी और का न हो।' तब अल्लाह ने शैतान को वापस भेजा और वह शर्म से सिर वहां से झुकाए चला गया।'[179] मानसिक विकार का एक लक्षण यह भी होता है कि ऐसा व्यक्ति वास्तविकता और कल्पना में भेद नहीं कर पाता है।

आयशा बताती है:

'अल्लाह के रसूल पर ऐसा जादूटोना कर दिया गया था कि वो सोचते थे कि उन्होंने अपनी बीबियों के साथ संभोग किया है, हालांकि वास्तव में ऐसा कुछ नहीं होता था। (सूफियान ने कहा: इस इंद्रजाल का प्रभाव ऐसा था कि इसे समझना आसान न था।)'

तभी एक दिन रसूल ने कहा, 'ऐ आयशा, क्या तुम्हें मालूम है कि मैंने अल्लाह से कुछ पूछा था और उसने उस संबंध में कुछ निर्देश दिए हैं? दो आदमी मेरे पास आए और उनमें से एक सिरहाने बैठ गया और दूसरा पांव के पास। सिरहाने बैठे व्यक्ति ने दूसरे से पूछा, 'इस इंसान को क्या हुआ है? दूसरे ने जवाब दिया कि इस पर जादू का प्रभाव है। फिर पहले वाले ने पूछा, इस पर किसने जादू किया है? उत्तर मिला, 'कभी यहूदियों की चापलूसी करने वाले बनू ज़ुरैक़ कबीले के लबीद बिन आसम ने।' पहले वाले ने पूछा: किस चीज से जादू किया उसने? दूसरा बोला: कंघे में एक बाल फंसा था, वही लेकर उसने जादू कर दिया। पहले ने पूछा: वह कंघा कहां है? उत्तर मिला, जरवान के कुएं में एक पत्थर के नीचे खजूर के पेड़ की छाल में छिपाकर रखा गया है।' रसूल उस कुएं पर गए और उन चीजों को देखा और बोले: 'यह वही कुआं है, जो मुझे सपने में दिखा था। कुएं का पानी मेहंदी के अर्क सा दिखता था और इस पर जमा खजूर का पेड़ शैतान के सिर जैसा दिख रहा था।' रसूल ने कहा, 'फिर हमने वहां से वह बाल निकाल लिया।' मैंने (आयशा) रसूल से कहा, 'तुम नशरा (जादू निकलवाना) से अपना इलाज क्यों नहीं करते?' उन्होंने कहा, 'अल्लाह ने मुझे ठीक कर दिया है। मैं नहीं चाहता कि हमारे लोगों के बीच बुराई फैले।'[180]

एक अन्य हदीस में बताया गया है:

अल्लाह के रसूल को जब इल्हाम (अल्लाह का पैगाम मिलना) हुआ तो वे कपड़ों से पूरी तरह ढंके थे। याला

ने कहा, 'मैं देखना चाहता हूं कि रसूल का इल्हाम कैसे होता है। उसने (उमर) ने कहा: 'क्या तुम यह देखना चाहते हो ? उमर ने एक कोने से कपड़ा हटाया तो मैंने देखा कि रसूल की नाक से खर्राटा भरने की आवाजें आ रही हैं। फिर इस व्यक्ति ने कहा कि उसे लगा, यह ऊंट की आवाज थी।'[181]

एक और हदीस में लिखा हैः

जब जिब्राईल ने अल्लाह के रसूल को दिव्य संदेश सुनाया तो उसने (रसूल) अपनी जीभ और होठ हिलाये। ऐसा लग रहा था कि जैसे वे बहुत कष्ट में हों। स्थिति को देख पता चलता था कि रसूल अल्लाह के पैगाम को सुन रहे थे।[182]

यहां विभिन्न हदीसों में उल्लिखित इल्हाम के दौरान मुहम्मद पर पड़ने वाले शारीरिक व मनोवैज्ञानिक प्रभावों की सूची दी गई है।

1.किसी फरिश्ते, प्रकाश अथवा आवाजें सुनने की दृष्टि (मतिभ्रम)
2. शरीर में ऐंठन और पेड़ू में तेज दर्द और बेचैनी
3. अचानक चिंता या भय के आगोश में आ जाना
4. गले की मांसपेशियों में खिंचाव
5. होठों को चबाना अथवा अनियंत्रित रूप से होठ हिलना
6. जाड़े के दिनों में भी पसीना आना
7. चेहरा फक्क पड़ जाना
8. मुखमंडल बिगड़ जाना
9. हृदय की धड़कन तेज हो जाना
10. ऊंट की तरह खर्राटे भरना
11. ऊंघाई आना
12. आत्मघाती विचार आना

ये सारे टैम्पोरल लोब इपीलैप्सी (टीएलई) के लक्षण हैं। इस बीमारी का एक लक्षण यह भी है कि बिना पूर्वाभास के साथ यह सब के होने लगता है। मुहम्मद के इन रहस्यमयी अनुभवों में ये सारे लक्षण मिलते थे। मुहम्मद के रहस्यमयी अनुभव कुछ और नहीं, बल्कि इस बीमारी का प्रकोप था।

बुखारी में लिखा है:

अल्लाह के रसूल जब इल्हाम में विराम की अवधि के बारे में चर्चा कर रहे थे तो उन्हांने बताया, 'एक बार मैं टहल रहा था। अचानक आसमान में मैंने कुछ आवाज सुनी। मैंने ऊपर देखा तो हैरत में पड़ गया। वहां वही फरिश्ता दिखा, जो मेरे पास हिरा की खोह में आया था। वह आसमान और धरती के बीच एक आसन पर बैठा था। मैं उससे डर गया और घर आया। बीबी से बोला, छिपाओ मुझे, छिपाओ मुझे।'[183]

आत्महत्या के विचार

इतिहासकार बताते हैं कि मुहम्मद ने कई बार आत्महत्या का प्रयास किया था, पर हर बार जिब्राईल उसे बचा लेता। पहले तो उसने सोचा कि वह कवि या भविष्यवक्ता हो गया है: 'मैंने एक कवि या ज्योतिषी से अधिक किसी और से घृणा नहीं की। मैं इनमें से किसी की ओर देखना तक पसंद नहीं करता। मैं किसी कुरैश को अपने इल्हाम

के बारे में कभी नहीं बताऊंगा। मैं पहाड़ी पर जाकर कूद जाऊंगा और जान दे दूंगा। मैं इससे मुक्ति पा जाऊंगा। मैं ऐसा करने गया भी, पर पहाड़ी के आधे रास्ते पर पहुंचा था कि आकाश से एक आवाज आई, 'ऐ मुहम्मद! तुम अल्लाह के पैगम्बर हो और मैं जिब्राईल हूं।' मैंने ऊपर देखा तो इंसान के रूप में जिब्राईल दिखा। वह क्षितिज पर अपने पांव रखे था।' मैं रुका और उसकी ओर देखा। उसने मेरी ओर देखा तो मेरा ध्यान उस ओर से हट गया, जो मैं करने जा रहा था। मैं बिल्कुल किंकर्तव्यविमूढ़ स्थिति में खड़ा रहा और आसमान की ओर ताकता रहा। मैंने जिब्राईल को बिलकुल वैसा ही देखा, जैसा पहले देख चुका था।'[184]

इसको समझने के लिए यह जानना होगा कि मुहम्मद को वही दिखता था, जो उसके दिमाग में चलता रहता था। जिस दिशा में वह सोचता था, उसको उसी से जुड़ी भ्रामक तस्वीर दिखने लगती थी। कुरान के कवर पेज पर जिब्राईल को एकसाथ कई जगहों पर प्रकट होते दिखाया जाता है। पर यह वैसा नहीं है, जैसा मुहम्मद अपने अनुभवों में देखता था। मुहम्मद ने जो देखा और बताया, वह दृष्टिभ्रम के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। दृष्टि भ्रम मानसिक चोटों, संवेदी तंत्रिकाओं को हानि, साइकैडेलिक (psychedelic) ड्रग और माइग्रेन सहित अनेक अ-मनोचिकित्सीय स्थितियों में होता है। ऐसे बीमार को कुछ मतिभ्रम जरूर होते हैं (जैसे कि मरीज प्रकाश, रंग अथवा ज्यामितीय आकृतियों को देखता है)। इस प्रकार का मतिभ्रम खोपड़ी के पीछे के हिस्से में मिर्गी जैसा दौरा पड़ने से होता है। जटिल दृष्टि भ्रम व विभ्रम, जैसा कि मुहम्मद अनुभव करता था, कुछ समय के लिए मस्तिष्क की तंत्रिकाओं में रक्त प्रवाह बाधित होने और स्नायु संबंधी विकार जैसे पर्किंसन रोग व कूतफेल्ट-जैकब (Creutzfeldt–Jakob) रोग में होता है। इस प्रकार के मतिभ्रम की समस्या से पीड़ित व्यक्ति को जानवरों, इंसानों अथवा फरिश्ते या जिन्न जैसी रहस्यमयी ताकतें दिखती हैं।[185] इस प्रकार के मतिभ्रम में श्रवण संबंधी, स्वाद संबंधी, सूंघने संबंधी और दर्द या सुन्न होने जैसी समस्याएं होती हैं। दर्द या सुन्न होने अथवा श्रवण संबंधी मतिभ्रम मुख्यत: दिमाग के एक हिस्से में दौरा पड़ने के कारण होती हैं। मुहम्मद को हिरा की खोह में फरिश्ते जिब्राईल द्वारा पकड़ने और कसकर भींचने तथा इसके बाद पेडू में तेज दर्द का ऐसा अनुभव हुआ था कि उसे लगा वह मर जाएगा। यह बताता है कि मुहम्मद इस समस्या से पीड़ित था। जब तक आपको यह नहीं लगेगा कि वह प्रधान देवदूत अर्थात फरिश्ता जिब्राईल थोड़ा पागल था, आप यह नहीं समझ पाएंगे कि मुहम्मद को जो हिरा की खोह में अनुभव हुए थे, वे क्या थे।

अनुसंधान वैज्ञानिक स्काट एट्रन व्याख्या करते हैं: मन व मस्तिष्क में अचानक बदलाव से श्रवण संबंधी, स्वाद संबंधी, स्पर्श संबंधी व सूंघने संबंधी इंद्रियों पर नकारात्मक प्रभाव डालता है और इससे आवाज, संगीत, मनोदशा अथवा शारीरिक शिथिलता की समस्या पैदा हो सकती है। उदाहरण के लिए, मस्तिष्क के मध्य भाग से वह तंत्रिका जुड़ी होती है, जो किसी वस्तु की गंध को महसूस कर आपको सुगंध या दुर्गंध का अहसास कराती है। पर यदि इस भाग की इस तंत्रिका को सीधे उत्तेजित कर दिया जाए तो मस्तिष्क में तीव्र गंध का संदेश पहुंचने लगेगा और प्रभावित व्यक्ति परेशानी का अनुभव करेगा। धार्मिक अनुष्ठानों में अगरबत्ती व सुगंधित पदार्थ मस्तिष्क के इस भाग को उत्तेजित करते हैं। इससे आपके आसपास का माहौल व आपका ध्यान एक विशेष रंग में रंगा दिखने लगता है। टैम्पोरल लोब इपीलैप्सी (टीएलई) के प्रभाव के दौरान मस्तिष्क के निश्चित भाग में अचानक बिजली जैसा करंट लगता है और इससे कई तरह के दौरे एक साथ पड़ते हैं, जिससे एक खुशबूदार आभामंडल महसूस होने लगता है।[186] मुहम्मद बताता था कि जिबराइल के 600 पंख थे।[187] ऐसा वास्तव में होगा, यह विश्वास करना मुश्किल लगता है।

मुहम्मद जिस घोड़े बुराक पर बैठकर रातभर में जेरुसलम और जन्नत की सैर कर आने का दावा करता था, उसका सिर इंसान का और पंख बाज का बताता था। जब कोई बेतुकी चीजों में भरोसा नहीं करेगा, इस तरह के काल्पनिक दावों को स्वीकार नहीं करेगा और यह स्पष्ट है कि मुहम्मद मतिभ्रम की बीमारी से पीड़ित होने के कारण

इस तरह की चीजें देखता था।

मिस्र के मुस्लिम विद्वान व इतिहासकार हैकल जन्नत की सैर पर जाने के दौरान मुहम्मद द्वारा देखे गए फरिश्ते का वर्णन यूं करते हैं: 'पहला जन्नत बिलकुल शुद्ध चांदी सा चमकीला था और उसके मेहराबों से सोने की चेन से बंधे सितारे लटक रहे थे।' (यह बात सिद्ध करती है कि मुहम्मद को यह समझ ही नहीं थी कि सितारे क्या होते हैं। वह सितारों को आसमान में लटकी क्रिसमस की लाइटों जैसा होने की कल्पना कर रहा था।) यह प्टोलेमी के ब्रह्मांड विज्ञान में किए गए दावे जैसा है और मुहम्मद के समय में इस पर सामान्यतया विश्वास किया जाता था।) 'और वहां मौजूद प्रत्येक फरिश्ता बुरी आत्माओं को जन्नत के पवित्र निवास स्थानों तक पहुंचने और दैवीय रहस्यों को सुनने से रोकने को तत्पर था।' (ये तर्कहीन बात कुरान में भी लिखी गई है। कुरान में कहा गया है कि जन्नत में जिन्न एक दूसरे के कंधे पर चढ़कर दैवीय सभा की बातचीत सुनने की कोशिश करते थे। लेकिन फरिश्ते उन पर मिसाइल की तरह सितारों को छोड़ते थे, जिसकी मार से वे गिर जाते थे। प्राचीन काल में लोग मानते थे कि उल्का पिंड वे सितारे होते हैं, जिनका प्रयोग अल्लाह के शिकार को मारने में किया जाता है।[188])

हैकल आगे उल्लेख करते हैं: ''वहां (जन्नत में) मुहम्मद ने आदम को सलाम किया। वहां पर छह अन्य पैगम्बरों नूह, हारून, मूसा, दाऊद, सुलेमान, इद्रीस (इनोच), याहिया (जॉन द बापटिस्ट) और ईसा से भेंट हुई। इन्हें भी मुहम्मद ने सलाम किया। उन्होंने मौत के फरिश्ते इसराईल को देखा। इसराईल इतना विशालकाय था कि दोनों आंखों के बीच मीलों का फासला था। (मोटे तौर पर यह दूरी धरती और चांद के बीच की दूरी की दस गुनी थी।)। उसके पास एक लाख फौज की बटालियन थी और वह पैदा होने वाले और मरने वालों के नाम किताब में चढ़ाता रहता था। (क्यों न इसराइल को कोई कम्प्यूटर दान कर दें ताकि वह काम के बोझ से हल्का हो सके?)। उन्होंने आंसू के फरिश्ते को देखा, जो दुनिया में हो रहे पाप पर रो रहा था। प्रतिशोध के फरिश्ते को देखा, जिसका चेहरा सख्त था और चमड़ी मोटी थी। यह फरिश्ता आग के तत्वों को नियंत्रित करता था और ऐसे सिंहासन पर बैठा था, जिससे आग की लपटें निकल रही थीं। एक ऐसा विशालकाय फरिश्ता भी दिखा, जिसके शरीर का आधा हिस्सा आग और आधा हिस्सा बर्फ से बना हुआ था। आग और बर्फ से बने इस फरिश्ते को घेरकर कुछ लोग बैठे थे, जो एक साथ कह रहे थे, ऐ अल्लाह, तूने आग और बर्फ को एक साथ कर दिया। अपने सभी सेवकों को एकसाथ अपने नियमों का पालन करवाने वाला बनाया। जन्नत के सातवें दरवाजे के उस पार जहां न्याय की आत्मा एक फरिश्ते के रूप में निवास कर रही है और यह फरिश्ता आकार में पूरी कायनात से विशाल है, इसके 70 हजार सिर हैं, प्रत्येक सिर में 70 हजार मुख हैं, प्रत्येक मुख में 70 हजार जीभ हैं और प्रत्येक जीभ 70 हजार भाषाओं में परवरदिगार का गुणगान कर रही है।''[189]

मुहम्मद के पास असाधारण कल्पनाशील शक्ति थी। हालांकि उसकी सोच विकृत थी। हकीकत की दुनिया में ऐसे विकृत इंसान को जगह देना तो दूर, मन में भी नहीं लाना चाहिए।

– मुहम्मद ने ऐसा फरिश्ता देखा, जो ब्रह्माण्ड से भी बड़े आकार का था। यह बात अपने आप में विरोधाभासी है।

– इस फरिश्ते के 70 हजार सिर, प्रत्येक सिर पर 70 हजार चेहरे (4,900,000,000: अर्थात चार अरब 90 करोड़ चेहरे) थे।

– प्रत्येक चेहरे पर 70 हजार मुख (343,000,000,000,000: अर्थात 34 पदम, 30 खरब मुख)

– प्रत्येक मुख में 70 हजार जीभ (मतलब 24,010,000,000,000,000,000 जीभ)

– प्रत्येक जीभ 70 हजार भाषाएं बोलती है (मतलब 1,680,700,000,000,000,000,000, 000 भाषाएं)

अल्लाह को ऐसी कौन सी आवश्यकता पड़ती होगी कि वह इतना विशाल दैत्याकार फरिश्ता लाखों भाषाओं में अपने गुणगान के लिए बनाएगा? कोई भी इंसान ऐसी बातें करने वाले प्राणी को गंभीर मतिभ्रम से पीड़ित रोगी के रूप में देखेगा। कल्पना कीजिए, कोई व्यक्ति अपने घर में बड़ी संख्या में कम्प्यूटर और टेपरिकार्डर लगवा रहा हो और उसकी प्रोग्रामिंग ऐसी करवा रहा हो कि विश्व की सभी भाषाओं में उसका स्तुतिगान लगातार होता रहे। क्या ऐसी कल्पना करने वाला पागल नहीं कहा जाएगा? **अल्लाह और कुछ नहीं, बल्कि मुहम्मद द्वारा अपने अहंकार को तुष्ट करने और अपनी उन्मादी इच्छाओं को पूरा करने के लिए गढ़ी गई कल्पना है। अल्लाह के मनोविज्ञान में मुहम्मद का मनोविज्ञान छिपा है। एक मनोरोगी के रूप में जितना मुहम्मद अपनी तारीफ का भूखा रहता था और उतना ही उसका वह अल्लाह भी, जिसे उसने स्वयं ही रचा था।** एक प्रभावशाली औरत के साथ शादी के बावजूद अपनी ही नजर में उसकी कोई अहमियत नहीं थी और उसके अपने लोग भी उसकी आलोचना किया करते थे। उसकी बीबी खदीजा उसकी वहमी अनूभूति की व्याख्या पैगम्बर होने के लक्षण के रूप में करती थी और यह अनुभूति ही उसके उन्मादों को तुष्ट करने का माध्यम होता था। जब उसे इस तरह का वहम होना बंद हो जाता था तो वह निराश हो उठता था।

वैकनिन कहते हैं:

इस तरह के किसी मनोरोगी के भावनात्मक पक्ष में अवसाद बड़ा घटक होता है। हालांकि, अवसाद की स्थिति तब आती है, जब उसकी अजीबोगरीब इच्छाओं की पूर्ति नहीं होती है। यह समस्या अधिकांशत: वाहवाही, प्रशंसा और अहमियत से भरे दिनों को लेकर विषाद की स्थिति से पैदा होती है। अवसाद एक तरह से आक्रामकता का रूप है। जब अवसाद आक्रामकता का रूप लेता है तो यह उस व्यक्ति को न कि उसके आसपास की चीजों को प्रभावित करता है। दमित और हिंसक व्यवहार मनोरोग (नार्सिसिज्म) व अवसाद दोनों के लक्षण हैं। हालांकि केवल खुद से प्यार करने वाला अर्थात नार्सीसिस्ट अवसाद की अवस्था में भी अपनी आत्मपूजक प्रवृत्ति को नहीं भूलता है, जिसमें आडम्बर, अधिकार का भाव, घमंडीपन और करुणा की कमी जैसे लक्षण होते हैं।[190]

यह न केवल मुहम्मद के अवसाद के कारण और उसके मन में लगातार आने वाले आत्महत्या के विचार की व्याख्या करता है, बल्कि वह आत्महत्या करने के बिंदु तक क्यों नहीं पहुंचा यह भी बताता है। नार्सीसिस्ट शायद ही कभी खुदकुशी करता है। यह सुनना बड़ा अजीब लगता है कि मुहम्मद ने कई बार ख़ुदकुशी की कोशिश की होगी और हर बार जिब्राईल उसे बचाने आया होगा, फिर इसके बाद भी वह फिर से ख़ुदकुशी का प्रयास करता होगा। नार्सीसिस्ट खुदकुशी नहीं करता है, बल्कि लोगों की सहानुभूति हासिल करने के लिए बार-बार खुदकुशी-खुदकुशी रटता है।

'डैड मैन्स मिरर' में अगाथा क्रिस्टी सवाल उठाती हैं: 'एक ऐसा इंसान जो स्वयं को सर्वाधिक महत्वपूर्ण, सबसे बड़ा और ब्रह्मांड का केंद्र बिंदु मानता हो, खुदकुशी कैसे करेगा?' वह तो उन लोगों को चींटी की तरह मसल देने की इच्छा रखता था, जो उसकी अय्याशी अथवा मनमानेपन में खलल डालने का प्रयास करते थे। ऐसे इंसान ऐसा करना आवश्यक और उचित मानते हैं। ऐसा व्यक्ति आत्मघात करेगा? ऐसा तो संभव ही नहीं है।'[191]

नार्सीसिस्ट खुदकुशी क्यों नहीं कर सकता? इस प्रश्न के उत्तर में वैकनिन कहते हैं, क्योंकि ऐसे व्यक्ति बहुत पहले ही मर चुके होते हैं। नार्सीसिस्ट अस्ल में जिंदा लाश होते हैं। वह लिखते हैं, 'बहुत से विद्वानों और चिकित्सकों ने नार्सीसिस्ट के मन में खालीपन को ढूंढने की कोशिश की। यह बात निकल कर आई कि ऐसे व्यक्ति की मरी हुई आत्मा के अवशेष इतने सख्त, रूखे, खंडित, हीनभावना के शिकार और दमित हो चुके होते हैं कि वह व्यवहारिक दुनिया में किसी लायक नहीं रह जाता है।'[192]

वैकनिन कहते हैं, द्विध्रुवीय विकार के रोगियों को अवसाद से बाहर लाने के लिए दवा की जरूरत होती है, लेकिन नार्सीसिस्ट को इससे उबरने के लिए दवा के बजाय ऐसी नार्सिस्टिक खुराक की जरूरत होती है, जो उन्हें उन्मादी सुखबोध करा सके।[193]

टैम्पोरल लोब इपीलैप्सी

सबसे पहले हलीमा या उसके शौहर ने पहचाना कि मुहम्मद को मिर्गी के दौरे पड़ते थे। जब वह पांच साल का था, तभी उसमें दौरा पड़ने के लक्षण दिख गए थे। थियोफेंस,[194] (752-817) पहले इतिहासकार थे, जिन्होंने सबसे पहले दावा किया था कि मुहम्मद मिर्गी का मरीज था। आज इस दावे की पुष्टि की जा सकती है। इंटरनेशनल लीग अगेंस्ट इपीलैप्सी (आईएलएई) ने 1985 में टैम्पोरल लोब इपीलैप्सी (टीएलई) नामक बीमारी को परिभाषित किया। इसमें बताया गया कि मस्तिष्क के मध्यभाग या पीछे के भाग से अचानक और कुछ देर तक कई बार टीएलई का दौरा पड़ता है। यदि दौरा हल्का है तो व्यक्ति अचेत नहीं होता है, पर यदि गंभीर होता है तो मरीज की चेतना कमजोर पड़ जाती है।

दरअस्ल, तेज दौरे के समय मनुष्य की चेतना लुप्त होने लगती है, क्योंकि इसका प्रभाव मस्तिष्क के एक भाग से दूसरे भाग में पहुंच जाता है और स्मृति ह्वास की ओर ले जाती है।[195]

मुहम्मद को पड़ने वाला मिर्गी का दौरा दोनों तरह का था। कभी दौरा पड़ने पर वह बेहोश होकर गिर जाता था और कभी वह होश में रहता था। एक हदीस में लिखा है कि काबा के निर्माण के समय जब मुहम्मद को अल्लाह का संदेश मिलने वाला था तो वह बेहोश होकर जमीन पर गिर गया। उसकी आंखें खुली हुई थीं और वह आसमान में ताक रहा था। इस वक्त उसकी चेतना लुप्त हो गई थी।[196] यह मिर्गी का दौरा था।

ईमेडिसिन डॉट कॉम के मुताबिक, 'ईईजी पर टैम्पोरल इंटरेक्टिकल इपीलैप्टीफार्म एबनॉर्मेलिटीज के 90 प्रतिशत मरीजों का इतिहास दौरे पड़ने का होता है।' मुहम्मद को बचपन से ही दौरे पड़ते थे। उसने देखा कि सफेद वस्त्रों में आए दो व्यक्तियों ने उसका सीना चीरा और दिल को बर्फ से धोया। अमेरिकन न्यूरोसर्जन हार्वे कशिंग एक ऐसे बच्चे के बारे में बताते हैं, जिसके मस्तिष्क के दाहिने हिस्से में एक गांठ थी, जिसके चलते उसे सफेद वस्त्र पहने किसी व्यक्ति का त्रिआयामी चित्र दिखता था।[197]

आयरिश-अमेरिकन न्यूरोलॉजिस्ट राबर्ट फास्टर कैनेडी (1884-1952) वह पहले व्यक्ति थे, जिन्होंने श्रवण-दृश्यीय प्रकृति के विभ्रम की पहचान की, जिसका केंद्र मस्तिष्क में था।[198]

अपनी युवावस्था के बारे में बात करते हुए मुहम्मद ने कहा: कुरैश कबीले में बच्चों के साथ मैं भी था। हम सब बच्चों ने खेलने के लिए पत्थर लिया हुआ था। मैं भी सबकी तरह कभी आगे जाता तो कभी पीछे। हमने अपनी कमीज उतारकर गले में बांध ली थी। तभी एक अदृश्य आत्मा ने मुझे जोर से थप्पड़ मारा और बोला: अपनी कमीज पहनो। मैंने जल्दी से कमीज और कसकर बांध लिया। फिर इसके बाद पहन लिया और कंधे पर पत्थर रखकर अकेले चलने लगा।[199] **ऐसा प्रतीत होता है कि मुहम्मद के विचारों में जो लोग आते थे, वे भी उतने ही हिंसक और बदतमीज थे, जितना मुहम्मद था।**

टैम्पोरल लोब सीजर के लक्षण

दिमाग में दौरा पड़ने के पहले चेताने वाले लक्षण दिख सकते हैं, जैसे असामान्य उत्तेजना, पेट में गुदगुदी जैसा महसूस होना, विभ्रम या भ्रम (दृष्टि संबंधी, श्रवण संबंधी, घ्राण संबंधी, स्वाद संबंधी अथवा महसूस करने संबंधी),

ऐसा लगना जैसे वर्तमान में हो रही बातें या घटनाएं पहले भी हुई हैं, बीते दिनों की यादें अथवा भावनात्मक चोट की याद आना, इस समय हो रही किसी भी घटना के प्रति भावनात्मक आवेग उठना आदि। मुहम्मद को जब दौरा पड़ता था तो ये सब लक्षण दिखते थे।

मिर्गी का प्रभाव आंशिक होने पर चेतना बनी रहती है, लेकिन गंभीर प्रभाव होने पर दौरा पड़ने के समय चेतनाशून्यता की स्थिति आ जाती है। इसके दूसरे लक्षण सिर में असामान्य गतिविधि होना और आंखों का कुछ देर के लिए भेंगा होना भी है। जब काबा बन रहा था तो मुहम्मद को इस प्रकार के दौरे पड़ते थे। मांसपेशियों में लगातार खिंचाव के कारण शरीर के किसी भाग, किसी हाथ, किसी पैर, चेहरे के किसी हिस्से या शरीर के किसी और अंग पर प्रभाव पड़ना टीएलई बीमारी के लक्षण हैं। इस बीमारी के अन्य लक्षणों में पेट में दर्द होना या मरोड़ होना, उबकाई आना, पसीना होना, चेहरा फक्क पड़ना, हृदय की धड़कन तेज हो जाना, देखने, सुनने, बोलने, सोचने अथवा व्यक्तित्व में गड़बड़ी आना आदि है। निस्संदेह संवेदी विभ्रम (दृश्य, श्रवण, स्पर्श आदि) बड़े लक्षण हैं।[200]

अंतर्राष्ट्रीय ख्यातिलब्ध डेनिश इपीलैप्टाजिस्ट एवं इस विषय पर कई किताबों के लेखक डॉ. मोगेंस डैम आंशिक दौरे को इस तरह परिभाषित करते हैं: 'मानसिक लक्षणों के साथ सिम्पल पार्शियल सीजर (दौरा) के दौरान महसूस हुई बातें इसका प्रभाव समाप्त होने के बाद भी याद रह सकती हैं और प्राचीनकाल से ही इसे 'प्रभामंडल' के रूप में जाना जाता है। इस दौरान हुए अनुभव सपने देखने जैसा होता है। इस तरह का दौरा पड़ने के बाद शरीर में ऐंठन हो सकती है। दौरा पड़ने के समय रोगी सोचता है कि वह पागल हो जाएगा।'[201]

मुहम्मद भी सोचता था कि वह पागल हो रहा है। वह तो खदीजा थी, जो उसे दूसरी तरह समझाती थी और मुहम्मद के पागलपन को वह पैगम्बर होने का संकेत बताती थी। डॉ. डैम लिखते हैं: 'इस विषय पर काफी चर्चा हुई है कि क्या मिर्गी से पीड़ित मरीज के व्यक्तित्व में कुछ खास तरह की गतिविधि दिखती है, जो उसे दूसरों से अलग करती है। खासतौर पर यह पाया गया कि टैम्पोरल लोब इपीलैप्सी से पीड़ित लोग अन्य लोगों की तुलना में भावनात्मक रूप से अस्थिर होते हैं, उनका व्यवहार हिंसक होता है। कुछ मरीज आत्मकेंद्रित हो जाते हैं और अति संवेदनशील होकर पागलपन की हद तक पहुंच जाते हैं। हर बात को अपनी उपेक्षा, तिरस्कार या ताड़ना के रूप में लेने लगते हैं। हर बात पर उबलने लगते हैं। ऐसे लोग धार्मिक, रहस्यमय, दार्शनिक और नैतिक विषयों में अधिक रुचि रखते हैं।'[202] वह आगे वर्णन करते हैं कि इस बीमारी (टीएलई) से पीड़ित मनुष्यों के अक्सर अवसाद में जाने की आशंका होती है और विभ्रम व आत्मघाती विचार आते हैं। ऐसे व्यक्तियों को लगता है कि उन पर अत्याचार हो रहा है। हालांकि सीजोफ्रीनिया के मरीज जैसा ये अन्य लोगों से भावनात्मक रूप से कटते नहीं हैं, बल्कि दूसरों से उनके भावनात्मक संपर्क बने रहते हैं।

सीजोफ्रीनिया रोगी के विपरीत टीएलई से पीड़ित इंसान अपनी समस्या का समाधान स्वयं ही करता है। चूंकि बाद के वर्षों में मुहम्मद पर दौरा पड़ना बहुत कम हो गया था, इसलिए उसके साथ भी ऐसा ही हुआ होगा। हालांकि दौरे रुकने के बाद भी उसे जब भी आवश्यकता लगी तो कुरान की नई आयतें कहीं।

प्रारंभिक वर्षों में मुहम्मद द्वारा मक्का में लिखी गई आयतों और बाद के वर्षों में मदीना में लिखी गई आयतों के लहजे, भाषा और वाक्यविन्यास में बहुत अंतर है। मुहम्मद के पैगम्बरी जीवन के प्रारंभिक चरण में लिखे गए सूरा काव्यशैली में हैं। इन आयतों में लय है और वे छोटी, पर मर्मभेदी हैं। ये आयतें पवित्र व दानी होने, अनाथों को खाना खिलाने, गुलामों को मुक्त करने, धीरज व संयम बरतने, करुणा धारण करने आदि को प्रेरित करती हैं, हालांकि इनमें यह चेतावनी भी दी गई कि जो मुहम्मद की बातों पर यकीन नहीं करेंगे, वे दोजख में जाएंगे।

सूरा सूरज 91: उस वक्त का एक ठेठ सूरा है। इसमें अरब के लोगों में प्रचलित एक किवदंती के बारे में उल्लेख

है। इसमें कहा गया है कि अल्लाह ने समूद के लोगों को चेतावनी के लिए एक ऊंटनी को भेजा था। यह ऊंटनी पैगम्बर थी, जिसका समूद ने अपनी हठधर्मिता के चलते कत्ल कर दिया था।

सूरज की क़सम और उसकी रौशनी की (1)
और चांद की जब उसके पीछे निकले (2)
और दिन की जब उसे चमका दे (3)
और रात की जब उसे ढांक ले (4)
और आसमान की और जिसने उसे बनाया (5)
और ज़मीन की जिसने उसे बिछाया (6)
और जान की और जिसने उसे दुरुस्त किया (7)
फिर उसकी बदकारी और परहेजगारी को उसे समझा दिया (8)
(कसम है) जिसने उस (जान) को (गुनाह से) पाक रखा वह तो कामयाब हुआ (9)
और जिसने उसे (गुनाह करके) दबा दिया वह नामुराद रहा (10)
कौम मसूद ने अपनी सरकशी से (सालेह पैग़म्बर को) झुठलाया, (11)
जब उनमें का एक बड़ा बदबख़्त उठ खड़ा हुआ (12)
तो अल्लाहके रसूल (सालेह) ने उनसे कहा कि अल्लाह की ऊंटनी और उसके पानी पीने से तअर्रुज न करना
(13) मगर उन लोगों ने पैग़म्बर को झुठलाया और उसकी कूंचे काट डाली तो अल्लाह ने उनके गुनाहों के सबब उन पर अज़ाब नाज़िल किया फिर (हलाक करके) बराबर कर दिया
(14) और उसको उनके नतीजे का कोई ख़ौफ तो है नहीं (15)

सूरा 'सूर्योदय' 113 : इसी समय का एक और उदाहरण है

ख़ुदा के नाम से (शुरू करता हूं) जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है (ऐ रसूल) तुम कह दो कि मैं सुबह के मालिक (सूरज) की हर चीज़ की बुराई से (1)

जो उसने पैदा की पनाह मांगता हूं (2) और अंधेरी रात की बुराई से जब उसका अंधेरा छा जाए (3) और गन्डों पर फूंकने वालियों की बुराई से (4) (जब फूंके) और हसद करने वाले की बुराई से (5)

अस्ल में मुहम्मद जब मक्का में था तो उसकी महत्वाकांक्षाएं अपने शहर और आसपास के लोगों तक सीमित थीं। उसने क़ुरान में लिखा: और हमने तुम्हारे पास अरबी कुरान यूं भेजा ताकि तुम शहरों की मां मक्का में रहने वालों और इसके इर्द-गिर्द रहने वालों को डराओ और उनको कयामत के दिन से भी डराओ जिसके आने में कुछ भी शक नहीं। उस दिन एक फरीक (इस्लाम को मानने वाला) जन्नत में होगा और एक फरीक (सानी यानी इस्लाम को न मानने वाला) दोजख में होगा।[203]

शहरों की मां उम्मुल कुरा मक्का को कहा जाता है। एक दूसरी आयत[204] में उसने कहा कि वह दुनिया में उन लोगों के लिए आया है, जिन्हें अल्लाह की ओर से अब तक इल्म नहीं हुआ है। इन आयतों के मुताबिक, यहूदियों और ईसाइयों से उसका कोई वास्ता नहीं है और उनको समझाने वह नहीं आया है। हालांकि जैसे-जैसे वक्त बीता, उसकी महत्वाकांक्षाएं बढ़ने लगीं तो आखिरकार उसने फरमान जारी कर दिया कि सभी या तो उसके आगे घुटने टेक दें या मरने के लिए तैयार हो जाएं। बाद की आयतें कानूनी फरमान जैसे हैं। इन आयतों में जो भाषा इस्तेमाल की गई है, वह ऐसी है जैसे कि कोई तानाशाह अपनी प्रजा के लिए कानून और राजाज्ञा जारी करता है और प्रजा को अन्य स्थानों पर फतह हासिल करने को उकसाता हो। ए.ए. ट्रिटन कहते हैं, 'बाद की आयतों के वाक्य लंबे हैं और क्लिष्ट

हैं, ताकि लोग उन्हें ध्यान से सुनें, वर्ना उसके मर्म को नहीं समझ सकेंगे। इनकी भाषा चलते–चलते गद्य की हो जाती है, जो लयबद्ध शब्दों में पिरोए गए हैं। इन आयतों की विषयवस्तु कानून, लोक आयोजनों पर टिप्पणियां, नीति कथन, रसूल के साथ नजर न मिलाने वाले लोगों, खासकर यहूदियों के लिए झिड़की और मुहम्मद की घरेलू परेशानियों को लेकर है। इन आयतों में उसकी कल्पना बहुत कमजोर है और पुराने वाक्यों को इस्तेमाल किया गया है, ताकि विचारों के अभाव को छिपाया जा सके। हालांकि कई जगहों पर पहले जैसी आक्रामकता दिख जाती है।'[205]

यह बात भी महत्वपूर्ण है कि मुहम्मद के विभ्रम केवल फरिश्ते जिब्राईल को देखने के दावे तक सीमित नहीं थे। उसने जिन्न और शैतान को भी देखने का दावा किया है। एक बार, जब वह मस्जिद में नमाज पढ़ रहा था तो वह अपने हाथों को इस तरह हिलाने–मोड़ने लगा, जैसे किसी अदृश्य व्यक्ति के साथ हाथापाई कर रहा हो। बाद में उसने कहा, 'मेरे सामने शैतान आ खड़ा हुआ और इबादत में खलल डालने लगा, लेकिन अल्लाह ने मुझे ताकत दी और मैंने उसका गला मरोड़ दिया। बेशक मुझे लगा कि उसे मस्जिद के खंभों से बांध दूं, ताकि सुबह जब तुम लोग उठो तो उसे देख सको। पर तभी मुझे पैगम्बर सुलेमान का वह कथन याद आ गया, जिसमें उन्होंने कहा था, 'ऐ अल्लाह, मुझे एक ऐसा साम्राज्य प्रदान करो, जो मेरे बाद किसी और का न हो।'

तब अल्लाह ने शैतान को अपमानित करते हुए उसे वापस भेजा।'[206]

कई हदीसों में मुहम्मद ने जिन्न से अपने मुठभेड़ की बात बताई है। ऐसी ही एक कहानी में उसने दावा किया है कि उसने अपने शहर में पूरी रात जिन्नों को इस्लाम कबूल करवाने में बिताई थी। कुरआन में जिन्नों के बारे में कम से कम 30 बार उल्लेख हुआ है। **यह बात जानने लायक है कि मुहम्मद बाइबिल के बारे में नहीं जानता था। सुलेमान एक राजा था, न कि पैगम्बर और उसने कभी कोई ऐसी बात नहीं की थी, जिसका दावा मुहम्मद ने किया था। सुलेमान ने ईश्वर से धनसंपदा के बजाय ज्ञान और बुद्धि मांगी थी। मुहम्मद ने यहां सुलेमान का नाम लेकर सल्तनत और ताकत की अपनी भूख प्रकट की है।**

टीएलई के अन्य लक्षण

टीएलई की समस्या से पीड़ित लोगों में ये 5 इंटरिक्टल लक्षण नजर आते हैं (इंटरिक्टल अर्थात दौरा पड़ने और उससे पहले के बीच के वक्त में, न कि दौरा पड़ने के दौरान)

1. **हाइपरग्रैफिया:** हाइपरग्रैफिया में इंसान के दिमाग में ऐसी बातें घर कर जाती हैं कि वह अधिक समय डायरी या नोट लिखने में बिताने लगता है। भले ही ऐसा इंसान अनपढ़ हो, पर वो ऐसा करता है। मुहम्मद ने कुरान रचा और दूसरों से इसे लिखवाया।
2. **हाइपर रिलीजिआसिटी:** धार्मिक विश्वास गहरे ही नहीं होते हैं, बल्कि ब्रह्मांड अथवा वृहद अध्यात्मिक सिद्धांतों से जुड़े होते हैं। इसके मरीजों को ऐसा लगता है कि उनके पास विशेष दैवीय कृपा है। मुहम्मद निश्चित ही दर्शन और रहस्यवाद को लेकर असामान्य सोच वाला व्यक्ति था। इसी ने उसे नए मजहब के अविष्कार को प्रेरित किया।
3. **क्लिंगीनेस:** मुहम्मद जब बच्चा था तो अपने चाचा से लगाव को लेकर जो किस्से उसने सुनाए हैं, वे और अन्य किस्सों से यह तो पता चलता है कि वह भावनात्मक खालीपन को भरने के लिए सदा लालायित रहा, इसलिए जब भी उसकी उपेक्षा होती थी या उसकी बात नहीं मानी जाती थी तो वह स्वयं को अपमानित महसूस करता था।

4. **यौन संबंधों में विकृत रुचि:** औरतों के साथ यौन संबंध को लेकर मुहम्मद की सनक यह बताती है कि यौनक्रीड़ा में उसकी वासना लगातार बढ़ती गई, हालांकि साथ ही उसकी यौन दुर्बलता भी बढ़ गई और बाद के वर्षों में वह नपुंसक सा हो गया था। इसके बारे में हम बाद में चर्चा करेंगे।
5. **हिंसक व्यवहार अथवा आक्रामकता:** भावनाओं का आवेग अक्सर अस्थिर होता है। असंतुलित भावनात्मक विकास वाले इंसान कभी अति उत्साह से भर जाते हैं तो कभी गुस्से और चिड़चिड़ेपन में उनका व्यवहार हिंसक हो उठता है। मुहम्मद कभी बिलकुल दोस्ताना व्यवहार करता, विशेषकर अपने साथियों से और अगले ही पल वह उन पर आगबबूला हो जाता था, जो उसकी बातों से असहमति रखते थे।

बुखारी में कहा गया है: 'यदि रसूल को कुछ नापसंद होता था तो उनके चेहरे पर उसके भाव आ जाते थे।'[207]

रात में जन्नत का सफर

मुहम्मद के मेराज अर्थात रात में जन्नत के कथित सफर के बहुत से किस्से हैं। इब्ने-इसहाक ने मुहम्मद के साथियों, खासकर उसकी बीबी आयशा द्वारा बताई गई कहानियों के आधार पर इन रिवाजों के बारे में लिखा है। इब्ने-इसहाक के वर्णन के मुताबिक, मुहम्मद ने कहा: जब मैं हुजरे (कुठरिया) में सोया हुआ था, जिब्राईल आया और उसने अपने पैर से ठोकर मारकर मुझे हिलाया। मैं उठकर बैठा तो आसपास कोई नहीं दिखा। मैं फिर सो गया। वह फिर आया और पैरों से मुझे ठोकर मारकर जगाया। मैं फिर उठ बैठा, पर आसपास अब भी कोई नहीं दिखा। फिर तीसरी बार जिब्राईल आया और मेरी बांह पकड़कर उठाया। मैं उसके साथ खड़ा हो गया। वह मुझे मस्जिद के दरवाजे के बाहर ले आया। वहां एक अजीब तरह का सफेद रंग का जानवर खड़ा था। इस जानवर का आधा शरीर खच्चर और बाकी गधे का था। इसके दोनों ओर पंख थे, जिसकी सहायता से वह अपने पैरों को फैलाता था और जितनी दूर तक देख सकता था, उतनी दूर अगले पैरों को रखता था। उसने मुझे इस पर बिठाया। फिर वह (फरिश्ता) मुझे अपने करीब रखकर ले चला। जब मैं उस जानवर पर बैठने जा रहा था तो वह बिदकने लगा। इस पर जिब्राईल ने उसकी गरदन पर अपना हाथ फेरा और बोला: ओ बुराक, तुम रसूल के साथ ऐसा व्यवहार कर रहे हो, तुझे शर्म नहीं आती है? अल्लाह की नजर में मुहम्मद से बढ़कर सम्मानीय कोई नहीं है। क्या इससे पहले मुहम्मद कभी तुम पर सवार हुए, नहीं न? फिर इस तरह का अशोभनीय व्यवहार क्यों कर रहे? उस जानवर ने शर्म से सिर झुका लिया और उसका पूरा शरीर पसीने से तरबतर हो गया। वह खड़ा हो गया, ताकि मैं उसपे चढ़ सकूं।[208]

इब्ने-इसहाक आगे लिखता है: 'रसूल और जिब्राईल अपने रास्ते जा रहे थे। फिर वे जेरुसलम के मंदिर पहुंचे। वहां उन्हें पैगम्बरों की सोहबत में अब्राहम, मूसा और ईसा मसीह मिले। रसूल ने वहां इबादत में उन सब का इमाम बनकर प्रार्थना की। फिर उनके (मुहम्मद) के सामने दो कटोरे आए, जिसमें से एक में शराब और दूसरे में दूध भरा था। रसूल ने शराब का कटोरा छोड़कर दूध का कटोरा ले लिया और पिया। जिब्राईल ने कहा, 'मुहम्मद तुम दुनिया के सबसे सत्य व प्राचीन धर्म और प्रकृति के रास्ते पर चल रहे हो। तुम्हारे अनुयायी भी इसी मार्ग पर चलेंगे। तुम्हारे लिए शराब हराम है।' इसके बाद रसूल रात में ही मक्का लौट गए। वहां कुरैशों को रात की पूरी घटना बताई। अधिकांश लोगों ने मुहम्मद की कहानी को बकवास बताया और कहने लगे कि कारवां को मक्का से सीरिया जाने के लिए एक माह और लौटने में एक माह लगता है। मुहम्मा एक रात में यह यात्रा कैसे कर लेगा?' इब्ने-साद कहता है: 'यह कहानी सुनने के बाद जो लोग मुहम्मद के साथ आए थे और इस्लाम कबूल किया था, उनमें से बहुत से लोग मुरतद (धर्मद्रोही) हो गए और इस्लाम छोड़ दिया।'

कहा जाता है तब मुहम्मद ने इस्लाम छोड़ने वालों को जवाब देते हुए कुरान की यह आयत दी: 'हमने यह सच

सिर्फ तुम लोगों को बताया, ताकि तुम्हारे ईमान को परख सकें।'[209]

मुस्लिम इतिहासकारों ने अपने-अपने तरीके से इस किस्से में शब्दाडंबर का तड़का लगाकर इसे प्रमाणिक बताने की भरपूर कोशिश की है। इब्ने-इसहाक ने कहा है कि लोगों ने एक रात में ही जेरुसलम की यात्रा कर मक्का लौट आने के दावे का सबूत मांगा तो रसूल ने जवाब में कहा कि यात्रा के समय उन्होंने अमुक घाटी में फलाने कारवां को गुजरते देखा। जिस जानवर पर वह (रसूल) सवारी कर रहे थे, उसने कारवां को डरा दिया और डर के मारे एक ऊंट बिदक कर लगाम तोड़कर भागने लगा। फिर मुहम्मद इस तरह बयान करता है, 'मैंने उन लोगों (सबूत मांगने वालों) को दिखाया कि वह कारवां कहां था, क्योंकि मैं सीरिया के रास्ते पर जा चुका था। मैं मक्का से 25 मील की दूरी पर स्थित तिहामा के पास दजनान की पहाड़ियों में आगे बढ़ रहा था। मैंने बनू कबीले के एक कारवां को गुजरते देखा। मैंने देखा कि कारवां के लोग नींद में थे। उनके पास पानी का जार था, जो किसी चीज से ढंका था। मैंने ढक्कन खोलकर पानी पिया और फिर ढंक दिया। इसका सबूत यह है कि वह कारवां इस वक्त तनईम दर्रे के पास अल-बैदा से वापस आ रहा है। इस कारवां में दो ऊंट हैं, जिनमें से एक पर काले रंग का गट्ठर और दूसरे पर बहुरंगी गट्ठर लदा था।' बैदा मदीना की तरफ मक्का के पास पहाड़ी है। तनईम मक्का की ऊंचाई पर स्थित था। लोग मुहम्मद के दावे को जांचने के लिए उस दर्रे की ओर भागे और इन्हें जो पहला ऊंट दिखा, वो वैसा ही था, जैसा रसूल ने बताया था। इन लोगों ने कारवां के लोगों से उस जार के बारे में पूछा तो उन्होंने बताया कि उसमें पूरा पानी भरा था और ढंका था। पर जब सुबह वे जगे तो घड़ा ढंका तो था, पर खाली था। इन लोगों ने उनसे भी इस बारे में पूछा, जो मक्का में थे तो मक्का के उन लोगों ने कहा कि बात सही है, वे डर गए थे और उनका एक ऊंट लगाम तोड़कर भागने लगा था। तभी इन लोगों ने एक आदमी को ऊंट को आवाज लगाते सुना, जिसके बाद वे ऊंट को पकड़ सके।''

ये बातें मुहम्मद की मृत्यु के लगभग सौ साल बाद लिखी गईं। इतना समय बीत जाने के बाद इन बातों और दावों की सत्यता को सिद्ध करना संभव नहीं था। हालांकि जो तथ्य मुसलमान अब तक नहीं समझ पाएं हैं, वो यह है कि जेरुसलम के जिस मंदिर पर मुहम्मद ने जाने का दावा किया था, उस वक्त वहां कोई मंदिर था ही नहीं। मुहम्मद की अल-बुराक की यात्रा के 600 साल पहले ही रोमन ने इस मंदिर को नष्ट कर दिया था। सन् 70 तक वहां मंदिर का कोई पत्थर तक नहीं था। बाइबिल के मुताबिक सुलेमान का मंदिर ईसा पूर्व दसवीं शताब्दी के आसपास बनाया गया था। सन् 691 में ज्यूपिटर के रोमन मंदिर की आधारशिला एक पहाड़ी के शिखर पर रखी गई। सन् 710 में उमैयद ने मंदिर की पहाड़ी के दक्षिणी छोर पर रोमन बैसीलिका के ऊपर अल-अक़्सा मस्जिद का निर्माण किया गया। यह अजीब बात है कि मुहम्मद को इस सफर में यह तो दिखा कि अमुक जनजाति का कारवां गुजर रहा था, पर यह नहीं दिखा कि जिस मंदिर में इबादत करने का उसने दावा किया, उसका अस्तित्व ही नहीं था। एक और हदीस कहती है कि मुहम्मद के दावे को परखने के लिए अबू बक्र ने उससे जेरुसलम का वर्णन करने को कहा और जब उसने वर्णन किया तो अबू बक्र बोला, 'सत्य है। मैंने परख लिया है कि तुम अल्लाह के रसूल हो।' यह स्पष्ट नहीं है कि क्या अबू बक्र ने कभी जेरुसलम देखा था। अरबियों के लिए जेरुसलम कभी महत्वपूर्ण शहर नहीं रहा। हालांकि, यह भी आश्चर्यजनक है कि अबू बक्र ने जेरुसलम के उस मंदिर का कभी उल्लेख नहीं किया।

ये सब किस्से मनगढ़ंत व संदिग्ध हैं और मुसलमानों ने अपने रसूल द्वारा कही गई विचित्र और बेसिर-पैर की कहानियों को विश्वसनीय बनाने के लिए इन्हें गढ़ा है।

इस किस्से का एक और संस्करण है, जिसे संभवत: सबसे अधिक विश्वसनीय माना जाता है। क्योंकि कुरान में भी इसका उल्लेख है। इस संस्करण में मुहम्मद कहता है:

जेरुसलम में मैंने जैसे ही अपना काम पूरा किया, एक सीढ़ी मेरे पास लाई गई। ऐसी सुंदर सीढ़ी मैंने पहले नहीं

देखी थी। यह वह सीढ़ी थी, जो इंसान को तब दिखती है, जब मौत उसके पास आती है। मेरा साथी मुझे लेकर इस पर चढ़ा। हम इस पर ऊपर चढ़ते हुए जन्नत के प्रथम द्वार पर पहुंच गए। इस द्वार को प्रहरी द्वार कहा जाता है। फरिश्ते जिब्राईल ने इस द्वार के प्रभारी इस्माईल को पुकारा। इस्माइल के अधीन 12 हजार फरिश्ते थे और इन फरिश्तों में से प्रत्येक के पास 12 हजार फरिश्ते थे।

जब जिब्राईल ने मुझे दरवाजे के भीतर प्रवेश कराया, इस्माईल ने मेरे बारे में पूछा कि मैं कौन हूं। जब उसे बताया गया कि मैं मुहम्मद हूं तो उसने पूछा कि क्या मुझे कोई मिशन दिया गया है, या किसी विशेष उद्देश्य के लिए भेजा गया है। जब वह सुनिश्चित हो गया तो उसने मुझे सलाम किया।

जब मैं निचली जन्नत में प्रवेश कर रहा था तो वहां मौजूद फरिश्तों ने मुस्कुराते हुए मेरा स्वागत किया। पर एक फरिश्ता ऐसा भी था, जिसने न तो मुझसे कुछ कहा और न ही मुझे देखकर उसके चेहरे पर प्रसन्नता और मुस्कुराहट आई। मैंने जिब्राईल से इसका कारण पूछा तो उसने बताया कि वह आज तक किसी को देखकर नहीं मुस्कुराया है। यदि वह अब मुस्कुराया तो तुम पहले इंसान होगे, जिसके लिए वह मुस्कुराएगा। वह मुस्कुराता नहीं है, क्योंकि वह दोजख का मालिक है। मैंने जिब्राईल से कहा, वह अल्लाह के वास्ते इस मुकाम पर है। जिसके बारे में उसने तुम्हें बताया है, 'यह फरिश्ता सभी फरिश्तों का सरदार अमानतदार है और इसके हुक्म की तामील सभी करते हैं और सबको उस पर भरोसा है। (सूरा 81:21)। और मैंने जिब्राईल से कहा, 'क्या इस फरिश्ते को हुक्म देकर मुझे दोजख नहीं दिखाओगे?' जवाब मिला, 'जरूर! ऐ मालिक, मुहम्मद को दोजख दिखाओ।' इसके बाद इस फरिश्ते ने पर्दा हटा दिया। वहां हवा में आग की लपटें उठ रही थीं। मुझे लगा कि वो लपटें सब कुछ राख कर देंगी। मैंने जिब्राईल से कहा कि वह फरिश्ते को इन सब चीजों को अपने स्थान पर वापस भेजने को कहे, जो मालिक ने किया।

मैं उन लपटों को वापस लौटने की तुलना उस साये से कर सकता हूं, जो धीरे-धीरे लुप्त हो रहा हो। इसके बाद लपटें उसी ओर लौट गईं, जिधर से आईं थीं। मालिक ने फिर उस पर पर्दा डाल दिया।

जब मैं जन्नत के पहले दरवाजे के भीतर प्रवेश कर रहा था तो एक व्यक्ति को बैठे देखा, जिसके सामने से इंसानों की रूहें गुजर रही थीं। किसी से वह बहुत अच्छे से बात करता है और कहता, 'तुम अच्छे इंसान की अच्छी आत्मा हो।' जबकि दूसरे से गुस्से में कहता, 'तुम बुरे इंसान थे और तुम्हारी आत्मा भी बुरी है।'

मेरे सवाल के जवाब में जिब्राईल ने बताया कि वह व्यक्ति हम सब का पिता आदम था और वह अपने वंशजों की रूह को अच्छाई और बुराई के तराजू पर तौल रहा था। जब वह किसी मोमिन की रूह देखता तो खुश हो जाता था और जब किसी गैर-मुस्लिम को देखता था तो उसे घृणा होती थी।

तब वहां मुझे ऊंट के थोबड़े जैसे इंसान दिखे। उनके हाथों में आग की तरह जलते हुए पत्थर थे और वे इन पत्थरों को अपने मुंह में डाल रहे थे और ये पत्थर उनके पीछे से निकल रहे थे। मुझे बताया गया कि ये वो लोग हैं, जिन्होंने अनाथों का धन हड़पा था।[210] फिर मुझे फिरऔन (प्राचीन मिस्त्र के राजवंश) परिवार के लोगों के रास्ते पर आदमी दिखे। उन आदमियों की तोंदें इतनी भयानक थी कि ऐसे भारी तोंद वाले इंसान मैंने नहीं देखे थे। ये आदमी उनके ऊपर चढ़कर जा रहे थे। जब इस राजपरिवार के लोगों को दोजख में डाला गया तो वहां प्यास से पागल ऊंट राज परिवार के लोगों को रौंदते हुए भाग रहे थे। ये लोग वहां से हिल-डुल भी नहीं पा रहे थे। राजपरिवार के लोगों को दोजख में इसलिए डाला गया था, क्योंकि वे सूदखोर थे।[211]

तब मैंने औरतों को देखा, जिन्हें उनके स्तन से लटकाया गया था। ये वो औरतें थीं, जिन्होंने शौहर के होते हुए व्यभिचार किया और इस व्यभिचार से दोगले बच्चों को जन्म दिया।[212]

इसके बाद मुझे जन्नत के दूसरे दरवाजे पर ले जाया गया। वहां पर दो ममेरे भाई मरियम के बेटे ईसा और

जकरिया के बेटे याहिया मिले। जब मुझे जन्नत के तीसरे दरवाजे पर ले जाया गया तो वहां एक आदमी मिला, जिसका चेहरा पूर्णिमा के चांद की तरह था। यह मेरा भाई और याकूब का बेटा यूसुफ था। जन्नत के चौथे दरवाजे पर इद्रीस नाम का व्यक्ति मिला। सूरा 19:58 कहता है: और मैंने (अल्लाह ने) उन्हें (ईद्रास) ऊंची जगह बुलंद कर पहुंचा दिया है। जन्नत के पांचवें द्वार पर सफेद बाल व लंबी दाढ़ी वाला एक व्यक्ति मिला। मैंने अपनी जिंदगी में इससे खूबसूरत मर्द नहीं देखा था। इस व्यक्ति का अपने लोगों के बीच बहुत प्यार-सम्मान था। यह इमरान का बेटा हारून था। छठे जन्नती दरवाजे पर शनूआ (यमनी कबीले के लोग जो लंबे-चौड़े होते हैं) के जैसी टेढ़ी नाक वाला काला सा आदमी मिला। यह आदमी मेरा भाई और इमरान का बेटा मूसा था। फिर मैं जन्नत के सातवें दरवाजे पर पहुंचा तो देखता हूं कि अदन के बाग में स्थित दिव्य महल के गेट पर सिंहासन पर एक आदमी बैठा है। इस महल में प्रति दिन सात हजार फरिश्ते भीतर जाते थे और वे कयामत के दिन तक वहां से बाहर नहीं निकलेंगे। मैंने इससे पहले अपने जैसा कोई इंसान नहीं देखा था। ये मेरे पिता अब्राहम थे। वह मुझे महल के भीतर ले गए। महल के भीतर मैंने एक कुंवारी युवती को देखा, जिसके होंठ सुर्ख लाल थे। मैंने उससे पूछा कि वह कौन है? मैंने उसकी ओर देखा तो एक परम आनंद का अहसास हुआ। उसने बताया कि वह जैद बिन हारिस है। रसूल ने जैद को वह अच्छी खबर सुनाई।[213]

एक और रिवायत कहती है कि जब जिब्राईल मुहम्मद को जन्नत के दरवाजों तक ले गया और प्रवेश की इजाजत मांगी तो जिब्राईल को पहरेदारों को बताना पड़ा कि वह किसे लेकर आया है। जिब्राईल ने पहरेदारों को बताया कि वह अल्लाह के रसूल मुहम्मद को लेकर आया है, जिसे अल्लाह ने एक विशेष प्रयोजन के लिए धरती पर भेजा है। तब पहरेदार कहते हैं, 'अल्लाह उसकी (रसूल), उसके भाइयों और दोस्तों की जिंदगी महफूज रखें।' और पहरेदार मुहम्मद को जन्नत के सातवें दरवाजे तक रास्ता देते गए, जहां वह अल्लाह से मिला। यहीं पर मुहम्मद के अनुयायियों के लिए प्रतिदिन 50 बार नमाज पढ़ने का फर्ज लादा गया। वापसी में मुहम्मद मूसा से मिला। मुहम्मद ने यह वाकया इस तरह सुनाया है:

अल्लाह से मिलकर जन्नत से वापस आते समय मैं मूसा के पास से गुजरा। मुसलमानो! मूसा तो तुम्हारा बहुत अच्छा दोस्त निकला! मूसा ने मुझसे पूछा कि दिन में कितनी बार इबादत का हुक्म मिला है। मैंने बताया कि 50 तो उसने कहा, 'इबादत भारी काम है। तुम्हारे लोग कमजोर हैं, ऐसा नहीं कर पाएंगे। अल्लाह के पास फिर जाओ और उनसे निवेदन करो कि तुम्हारे समुदाय के लिए नमाज की संख्या कम कर दें।' मैंने ऐसा ही किया और अल्लाह ने दस कम कर दिए। मैं फिर मूसा के पास से गुजरा तो उसने वही सवाल किया। उसने फिर मुझे अल्लाह के पास इबादतों की संख्या कम करने की गुजारिश के लिए भेजा और ऐसा तब तक होता रहा, जब तक कि अल्लाह ने दिन में नमाज की संख्या पांच तक नहीं कर दी, साथ ही अल्लाह ने रात के वक्त नमाज न पढ़ने की छूट भी दे दी। हालांकि मूसा ने इसके बाद भी मुझे अल्लाह के पास जाने और नमाज की संख्या कम करने की दरख्वास्त लगाने की सलाह दी, लेकिन मैंने कहा कि इतनी बार जा चुका हूं कि खुद मुझे शर्मिंदगी महसूस हो रही है। अब अल्लाह के पास और कम कराने नहीं जाऊंगा। अल्लाह ने कहा है कि तुममें से जो दिन में पांच बार नमाज पढ़ेगा, वह पचास बार नमाज पढ़ने का फल पाएगा।[214]

कुछ मुसलमान कहते हैं कि यह घटना भौतिक जगत में नहीं हुई थी, बल्कि यह एक आध्यात्मिक अनुभव था। हालांकि मुसलमानों के इस दावे की धज्जियां तब उड़ जाती हैं, जब मुहम्मद दावा करता है कि उसने जन्नत की सैर पर जाते समय रास्ते में बनू के कारवां को देखा था, उनके घड़े में से पानी पिया था और कारवां का एक ऊंट बिदक कर भागने लगा था। मुहम्मद को यह अनुभव भौतिक संसार में हुआ था, इसका सबसे बड़ा सबूत कुरान में मिलता

है। कुरान कहता है कि मुहम्मद का जन्नत गमन इसलिए हुआ था कि मोमिनों के ईमान को परखा जा सके। जब तक किसी बेतुकी बात पर अध्यात्म का तमगा चिपका रहता है तो लोग उनमें भरोसा करते हैं, लेकिन जब यह अनुभव इसी संसार में होने का दावा किया जाए तो लोगों के मन में संशय होने लगता है।

मुहम्मद कभी-कभी सच उगल देता था

रूसी अस्तित्ववादी लेखक फ्योदोर दोस्तोयेवस्की का मानना था कि मुहम्मद सच बोल रहा था। उनका मानना है कि मुहम्मद के अनुभव, कम से कम उसके अपने लिए, वास्तविक थे। दोस्तोयेवस्की खुद भी टैम्पोरल लोब इपीलैप्सी की बीमारी से पीड़ित थे। उन्होंने अपने खुद के बारे में बताया है कि जब उन पर दौरा पड़ता था तो उनके लिए स्वर्ग का द्वारा खुल जाता था और सोने की तुरही बजाते हुए फरिश्तों की पंक्ति दिखती थी। फिर स्वर्ग के दो स्वर्णद्वार खुल जाते थे और उसके पीछे सोने की सीढ़ी दिखती थी, जो सीधे ईश्वर के सिंहासन तक जाती थी।[215]

7 मई, 2001 को न्यूजवीक में धर्म और मस्तिष्क शीर्षक के एक लेख में कनाडा के neuropsychology (स्नायु-मनोविज्ञान) अनुसंधानकर्ता ने बताया:

जब क्रॉस अथवा चांदी में मढ़ी तोरा की छवि मन में उभरती है तो श्रद्धायुक्त धार्मिक भय पैदा होता है। ऐसा मस्तिष्क के दृश्य-संबद्ध क्षेत्र की वजह से होता है। जब आंखें कुछ देखती हैं और उस छवि को भावनाओं व स्मृतियों से जोड़ती हैं तो मस्तिष्क का यही हिस्सा उन चित्रों में वह भावना भर देता है। धार्मिक कर्मकांडों अथवा प्रार्थना के समय जो तस्वीर उभरती है, वह भी मस्तिष्क के इसी हिस्से में पैदा होती है: मस्तिष्क के उस हिस्से में इलेक्ट्रिकल उत्तेजना दृष्टि उत्पन्न करती हैं, जो सिर के किनारों पर होता है और इसमें भाषा, संकल्पनात्मक चिंतन एवं विभिन्न चिंतनों के साथ संपर्क स्थापित करने के लिए जिम्मेदार स्नायुओं की सर्किट होती है।

टैम्पोरल लोब इपीलैप्सी नामक बीमारी में इंसान के दिमाग के इन हिस्सों में अचानक विद्युतीय गतिविधियों का असामान्य प्रस्फुटन होता है और यह अवस्था चरम पर पहुंच जाती है। यद्यपि कि कुछ अध्ययन टैम्पोरल लोब इपीलैप्सी और धार्मिकता के बीच संबंध होने के तर्क पर संदेह प्रकट करते हैं, लेकिन कई अध्ययनों में यह बात सामने आई है कि इस समस्या के दौरान पीड़ित के समक्ष जॉन ऑफ आर्क-टाइप स्पष्ट धार्मिक चित्र व आवाजें होने का अहसास होता है।

हालांकि, टैम्पोरल-लोब इपीलेप्सी दुर्लभ होती है, पर अनुसंधानकर्ताओं को लगता है कि टैम्पोरल-लोब ट्रांसिएंटस यानी दिमाग में अचानक विद्युतीय गतिविधियों का घनीभूत प्रभाव होने से रहस्यमयी अनुभव हो सकते हैं। इस विचार के परीक्षण के लिए कनाडा के लॉरेंटियन विश्वविद्यालय के माइकल पर्सिंगर ने एक व्यक्ति के सिर में विद्युत-चुम्बकीय तरंगें फेंकने वाला हेलमेट पहनाया। इस हेलमेट से हल्का चुम्बकीय क्षेत्र पैदा होता था, जो एक कम्प्यूटर मॉनिटर से निकलने वाले चुम्बकीय क्षेत्र जितना था। हेलमेट के इस चुम्बकीय प्रभाव क्षेत्र के कारण उस व्यक्ति के मस्तिष्क के खास हिस्से में अचानक विद्युतीय हलचल होने लगी। इस विद्युतीय हलचल के बाद उस व्यक्ति को जो अनुभव हुआ, उसने उसे पारलौकिक अथवा आध्यात्मिक अहसास बताया। पर्सिंगर ने पाया कि उस व्यक्ति को तन से परे एक दिव्य अहसास हुआ। उन्होंने अनुमान लगाया कि मस्तिष्क के खास हिस्सों में सूक्ष्म विद्युतीय हलचल के कारण मनुष्य को धार्मिक अहसास होता है और यह हलचल चिंता, निजी संकट, आक्सीजन की कमी, रक्त शर्करा का निम्न स्तर पर होना अथवा थकावट के कारण होती है। यही वजह है कि दुख या संकट की घड़ी में लोग ईश्वर या अल्लाह को याद करने लगते हैं।[216]

मुहम्मद के रहस्यमयी अनुभव का मूल

क्या यह संभव है कि दिमाग के एक हिस्से में गुदगुदी होने लगे और इससे रहस्यमयी अनुभव जैसे आसपास किसी के मौजूद होने, किसी अदृश्य ताकत की आवाज आने, प्रकाश देखने अथवा भूत देखने जैसा भ्रम होने लगे? कनाडा विश्वविद्यालय के स्नायुमनोविज्ञान के विशेषज्ञ माइकल पर्सिंगर ने ऊपर उदाहरण दिया है और इनका मानना है कि यह संभव है। इन्होंने यह प्रदर्शित किया है कि धार्मिक अनुभव होने के रूप में वर्णित उत्तेजना केवल हमारे द्विभागी मस्तिष्क की उत्तेजनापूर्ण गतिविधियों के कारण होती है। सरल शब्दों में कहें तो: जब प्रमस्तिष्कीय क्षेत्र में स्थित दाहिने भाग, जहां भावनाएं होती हैं, में उत्तेजना पैदा होती है और इसके बाद भाषा संवेदी बायां भाग काल्पनिक अस्तित्व पैदा करने के लिए सक्रिय होता है। दिमाग में काल्पनिक व्यक्ति, वस्तु या स्थान आदि इस तरह प्रकट होते हैं, मानो वे वास्तव में हों।[217]

द एक्जासिज्म नामक लो केन होलिंग्स ने पर्सिंगर के काम के बारे में लिखा है: पर्सिंगर का तर्क है कि धार्मिक अनुभव दिमाग के भीतर उत्पन्न होते हैं। ताजा अध्ययन बताते हैं कि हमारे मस्तिष्क के तर्क व विवेक संवेदी भाग में स्थित बायें मस्तिष्क के हिस्से में इस तरह के अनुभव उत्पन्न होते हैं। मस्तिष्क का तर्क व विवेक संवेदी हिस्सा व्यक्तिगत चेतना और बाह्य जगत के बीच एक सीमारेखा बनाने में सहायक होता है। इस हिस्से को यदि बंद कर दिया जाए तो आप खुद को ब्रह्मांड से जुड़ा महसूस करने लगेंगे और इसी को धार्मिक अनुभव का प्राथमिक रूप कहते हैं। दिमाग के दाहिने हिस्से को उत्तेजित कीजिए तो इसमें आत्म संवेदना का भाव जगने लगता है, जो खुद को अलग सत्ता के रूप में मानने को विवश करता है। दिमाग का दाहिना हिस्सा हमारे व्यक्तित्व के भावनात्मक पक्ष को नियंत्रित करता है।[218]

पर्सिंगर ने मोटरसाइकिल हेलमेट में विद्युत चुम्बकीय क्षेत्र पैदा करने वाली तारों की कुंडली लगाकर एक व्यक्ति के सिर पर पहनाया। इस व्यक्ति को आंखों पर पट्टी बांधकर एक खाली कक्ष में बिठा दिया। वह मजाक में इस कक्ष को जन्नत और दोजख का चैम्बर कहते थे। हेलमेट में जब एकांतर विद्युत प्रवाह दिया गया तो इस प्रयोग में भाग लेने वाले 80 प्रतिशत लोगों ने कक्ष में किसी आत्मा के होने का अहसास किया। कई बार तो इन लोगों ने उन आभासी आत्माओं को पकड़ने या छूने का प्रयास किया। कुछ ने तो बताया कि उन्हें स्वर्ग की सुगंध या नर्क की दुर्गंध सा अहसास हुआ। उन्होंने अजीब आवाजें सुनीं, अंधेरी सुरंग देखी, दैवीय सा प्रतीत हो रहा प्रकाश देखा और एक प्रकार का धार्मिक अनुभव किया। माइकल पर्सिंगर के प्रयोगों पर लिखते हुए एड कानरॉय ने लिखा है:

सामान्य मनुष्य बढ़ी हुई टैम्पोरल लोब एक्टिविटी जैसे रचनात्मकता, समझ, स्मरण क्षमता और सहज ज्ञान प्रक्रिया का प्रदर्शन करते हैं। इनमें से अधिकांश लोग कल्पनाशक्ति के धनी होते हैं अथवा वस्तुनिष्ठ दुनिया का अहसास करने में सक्षम होते हैं, जिससे समाज में उनकी स्वीकार्यता सुदृढ़ होती है। इनमें से कुछ शारीरिक या मानसिक गतिविधियों से जुड़ी समस्याओं का भी सामना करते हैं, जो उनमें हल्का अवसाद उत्पन्न करती हैं। ऐसे लोग अक्सर किसी अदृश्य सत्ता के होने का अहसास करते हैं और जब उन्हें यह अनुभव हो रहा होता है तो उन्हें लगता है कि उनके आसपास कोई है और कुछ अजीबोगरीब दृश्य सामने हैं। यह अहसास सामान्य धार्मिक विश्वासों से इतर अजीब होते हैं।[219]

पर्सिंगर ने पाया कि भूतों का अहसास उसी रूप में हुआ, जिनके नाम या शख्सियत को लोग पहले से जानते थे। धार्मिक व्यक्ति अपने विश्वास के मुताबिक पवित्र शख्सियतों जैसे– इलिजाह, जीसस, कुंवारी मैरी, द स्काई स्पिरिट, मुहम्मद आदि का अहसास करते हैं। कुछ लोग अपने वंश से जुड़े लोगों जैसे बाबा, दादा, परदादा आदि का अस्तित्व

महसूस करते हैं। मृत्यु के करीब पड़े हुए लोगों के अनुभव (नियर-डैथ एक्सपीरिएंसेज-एनडीई) जानने के लिए भी इसी पद्धति का उपयोग किया गया है।

होलिंग्स लिखते हैं, 'सन् 1933 में मॉन्ट्रियल न्यूरो सर्जन वाइल्डर पेनफील्ड ने पता किया कि जब उन्होंने मस्तिष्क के कुछ स्नायुओं में विद्युत प्रवाह किया तो मरीज अपने ठोस संवेदी अंश में जीवन के पुराने अनुभवों को फिर से महसूस करने लगा। 1976 में प्रकाशित विवादास्पद लेख *द ओरिजिन ऑफ कांशसनेस इन द ब्रेकडाउन ऑफ बाईकैमिरल माइंड,* प्रिंसटन के मनोवैज्ञानिक जूलियन जेन्स ने तर्क दिया कि धार्मिक अनुभव के रूप में सामान्यतः वर्णित उत्तेजना महज हमारे मस्तिष्क के दाएं और बाएं हिस्से के अस्वाभाविक अंतर्क्रियाशीलता का दुष्परिणाम होती है। उन्होंने कहा कि प्राचीन काल में हमारे पुरखों के पास इस तरह की चीजों की व्याख्या के लिए व्यक्तिगत पहचान की समझ का अभाव था। इसीलिए उन लोगों ने इन अनुभवों को ऊपर की सत्ता यानी ईश्वर की दृष्टि और स्वर से जोड़ दिया था।'[220]

जब अध्यात्मिक अहसास जोरों पर होता है तो उस वक्त अस्ल में होता क्या है? होलिंग्स कहते हैं, 'जब मस्तिष्क के उस भाग (Amygdala) में हलचल होती है, जो भय के भाव के प्रति संवेदी होती है तो यह भाग निष्क्रिय होने लगता है। इस दौरान किसी चीज को ग्रहण करने की क्षमता रखने वाले मस्तिष्क के पिछले भाग की तंत्रिकाएं मंद पड़ने लगती हैं, जबकि उस समय संवेदी एवं आत्मचेतना जगाने वाला मस्तिष्क का अग्र हिस्सा एवं कनपटी के भाग में स्थित तंत्रिकाएं मस्तिष्क के अन्य भागों से असंबद्ध हो जाती हैं। पेंसिलवैनिया विश्वविद्यालय के डॉ एंड्रू न्यूबर्ग ने कुछ तिब्बती लामाओं का ध्यान के दौरान और फ्रांसीसी ननों का प्रार्थना करते समय ब्रेन इमैजिंग कर डाटा एकत्र किया। उन्होंने देखा कि ध्यान के दौरान इन लोगों के मस्तिष्क के ऊपरी पिछले भाग में ऊपर से नीचे तक न्यूरान्स के एक बंडल ने काम करना बंद कर दिया था। मस्तिष्क में यह वही क्षेत्र है, जो सूचनाओं और समय के अहसास की प्रक्रिया को आगे बढ़ाता है।'[221]

पर्सिंगर ने दिखाया है कि आध्यात्मिक और पारलौकिक अनुभव मस्तिष्क के दोनों हिस्सों के बीच संचार व समन्वय की कमी के कारण होते हैं। कमरे में किसी अदृश्य शक्ति के होने अथवा अपना शरीर छोड़कर विचरण करने जैसा आभास, शरीर के अंगों में विचित्र तरह की ऐंठन और धार्मिक भावनाएं पैदा होना भी दिमाग के भीतर ही उपजता है। पर्सिंगर इस तरह के अनुभवों को टैम्पोरल लोब ट्रांसिएंट अथवा मस्तिष्क के भीतर न्यूरान के प्रवाह में अस्थिरता अथवा असामान्य तेजी के रूप में दिखाते हैं। सवाल यह है कि दिमाग की इन स्थितियों से धार्मिक अवस्था कैसे उत्पन्न होती है? पर्सिंगर कहते हैं, 'आत्म चेतना का भाव खोपड़ी के बाएं भाग में स्थित तंत्रिकाओं से पैदा होता है। मस्तिष्क की सामान्य कार्य प्रणाली में खोपड़ी के दायें भाग में स्थित तंत्र, बाएं हिस्से में स्थित तंत्रिका तंत्र से समन्वय स्थापित करता है। दौरा पड़ने के दौरान जब मस्तिष्क के दोनों भागों में समन्वय नहीं होता है तो बायां हिस्सा एक अलग आत्म चेतना अथवा व्यक्ति या वस्तु की आभासी उपस्थिति का भाव तैयार कर देता है। इसका परिणाम यह होता है कि मरीज को कमरे में किसी फरिश्ते, शैतान, भूत या दूसरे ग्रह के प्राणी या किसी रहस्यमयी साये के होने का आभास होता है अथवा ऐसा लगता है कि वह अपना शरीर छोड़ रहा है या फिर उसे अपने आसपास किसी ईश्वर के होने का आभास होता है। जब Amygdala (मस्तिष्क के भीतर स्थित वह क्षेत्र, जो भावनाओं के प्रति संवेदना जगाती हैं) में कुछ अल्पकालिक असामान्य घटनाएं होती हैं तो भावनात्मक कारक ऐसे अनुभव को बढ़ा देते हैं, जिन्हें यदि आध्यात्मिक थीम अथवा धार्मिक भावनाओं से जोड़कर देखा जाए तो वे किसी शक्तिशाली धार्मिक सत्ता का आभास कराने लगती हैं।'[222]

मस्तिष्क में हलचल से अदृश्य साये का आभास

स्विस वैज्ञानिकों ने पाया है कि मस्तिष्क में विद्युतीय हलचल होने से किसी ऐसी छाया के आसपास होने का भ्रम हो सकता है, जो व्यक्ति की शारीरिक गतिविधियों की नकल करते हुए जान पड़ती है। पत्रिका नेचर में छपी एक संक्षिप्त रिपोर्ट और ऑनलाइन विज्ञान पत्रिका पीएचवायओआरजी डॉट कॉम के ब्रेन स्टीमुलेशन क्रिएट्स शैडो पर्सन नामक संक्षिप्त लेख में कहा गया है: लुसाने के फैडरल पॉलीटेक्निक स्कूल के औलफ ब्लैंक व उनके सहयोगियों ने बताया कि सीजोफ्रीनिया के लक्षण प्रकट करने वाली मस्तिष्क की प्रक्रिया पर उनकी खोज प्रकाश डाल सकती है। सीजोफ्रीनिया नामक बीमारी में ऐसा भ्रम होता है कि व्यक्ति के कार्यों को किसी और द्वारा किया जा रहा है। डॉक्टर एक ऐसी महिला की जांच कर रहे थे, जिसे लगता था कि उसके पीछे कोई व्यक्ति खड़ा रहता है। इस महिला का मनोवैज्ञानिक समस्याओं का कोई इतिहास नहीं था। जांच में डाक्टरों ने पाया कि उसके मस्तिष्क के बांये भाग में संयोजन क्षेत्र में विशेष तरह की हलचल होने के कारण उसे यह भ्रम हो रहा था।

इस महिला रोगी ने डॉक्टरों को बताया कि वह अज्ञात व्यक्ति वैसे ही शारीरिक गतिविधियां करता है, जैसा कि वे स्वयं। अर्थात वह अज्ञात साया उस महिला की गतिविधियों की नकल करता है। हालांकि महिला यह नहीं समझ पाती थी कि यह उसका भ्रम है। जांच के दौरान महिला से कहा गया कि वो आगे झुके और अपने घुटनों को सटाए। महिला ने ऐसा किया तो उसे लगा कि वह साया उसे पकड़ रहा है और महिला इससे परेशानी का अनुभव कर रही थी। न्यूरोवैज्ञानिक कहते हैं कि यह निष्कर्ष उन्माद, अत्याचार और किसी बाह्य अदृश्य शक्ति द्वारा नियंत्रण करने का अहसास जैसा मनोवैज्ञानिक प्रभावों को समझने की दिशा में महत्वपूर्ण हो सकता है। यह खोज नेचर पत्रिका के इस सप्ताह के अंक के ब्रीफ कम्युनिकेशन में छपी है।[223]

इन निष्कर्षों से यह अनुमान लगाया जा सकता है कि मुहम्मद को कथित दैवीय अनुभव के समय क्या सुनाई या दिखाई देता था अथवा क्या महसूस होता था? मुहम्मद उस संस्कृति से आया था, जो जिन्न, फरिश्ते, भूतों और शैतानों में विश्वास रखती थी। मुहम्मद को जब विभ्रम होता था तो वह इन्हीं सब को देखता था। ईश्वर एक है या कई, यह उस दौर में चर्चा का विषय था। यहूदी, ईसाई और हनीफी[224] मानते थे कि ईश्वर एक है, जबकि मुहम्मद का अपना कुनबा मानता था कि ईश्वर के कई रूप हो सकते हैं। मुहम्मद अपने आसपास के लोगों के पारंपरिक धार्मिक विश्वास को मानने के बजाय विदेशज अद्वैतवाद के पक्ष में रहा। यह बात भी ध्यान रखने योग्य है कि खदीजा मुहम्मद के इंद्रजाल वाले अनुभवों की व्याख्या करती थी और मुहम्मद उससे बहुत प्रभावित रहता था। खदीजा अद्वैतवादी थी। मुहम्मद को अजीबोगरीब अनुभव होते थे, वह उसे वास्तविक मानता था, जबकि वास्तव में ये सब उसका दिमागी फितूर होता था। जब मुहम्मद खदीजा को अपनी कहानियां सुनाता था तो उसे लगता था कि उसके शौहर पर या तो शैतान का साया आ गया है, या फिर उसके पास फरिश्ते आते हैं। चूंकि वह यह स्वीकार नहीं कर पा रही थी कि मुहम्मद पागल हो गया है, इसलिए जब मुहम्मद ने उससे कहा कि उसे कुछ हो जाएगा तो उसने जवाब दिया, 'तुम्हें कभी कुछ नहीं होगा... अल्लाह तुम्हारा सिर कभी नहीं झुकने देगा।'[225]

वो मुहम्मद के मानसिक रूप से बीमार होने की बात पचा नहीं पा रही थी, इसलिए उसके पास सिर्फ एक विकल्प था कि वो मुहम्मद के पागलपन को दैवीय कृपा माने। इसलिए उसने निष्कर्ष निकाला कि मुहम्मद को पैगम्बर के रूप में चुना गया है। यदि खदीजा मुहम्मद के पागलपन को बिना शर्त और अंधी होकर समर्थन नहीं करती तो वह अवश्य समझ पाता कि वह पागल हो रहा है। ऐसा होता तो मुहम्मद अपनी उन्मादी हालत की हकीकत जान पाता, जैसा कि अधिकांश विक्षिप्त मरीज बाद में कर पाते हैं।

इल्हाम का बोझ न बर्दाश्त कर पाने के कारण ऊंट का घुटनों के बल बैठना

मुसलमान अक्सर मुहम्मद के झूठे चमत्कारों को अतिरंजित कर बताते हैं और उस पर भरोसा करते हैं। ऐसा करना किसी भी संप्रदाय के अनुयायी के लिए सामान्य सी बात है, क्योंकि ये अनुयायी सभी चमत्कारों को अपने गुरु से जोड़ते हैं। एक हदीस दावा करती है कि एक दिन जब मुहम्मद एक ऊंट पर बैठा तो उसी समय उसे अल्लाह का पैगाम मिलने लगा। यह इल्हाम इतना भारी था कि ऊंट उसके बोझ को बर्दाश्त न कर सका और जमीन पर घुटनों के बल बैठ गया।

जब कथित रूप से इल्हाम हो रहा था तो उस वक्त मुहम्मद जो अनुभव कर रहा था उस किस्से और जानवर के बैठ जाने की घटना के बीच कुछ तो संबंध है। यह संकेत करता है कि मुहम्मद मिर्गी की बीमारी से पीड़ित था। टैक्सास ए एंड एम विश्वविद्यालय के वैटनरी औषधि कॉलेज के पशु व्यवहार के विशेषज्ञ बोनी बीवर कहते हैं, 'कुत्ते और बिल्लियां ऐसे जानवर हैं, जो मनुष्य को दौरा पड़ने से पहले ही सूचना देने में सक्षम होते हैं। जानवरों द्वारा अपने मालिक पर पड़ने वाले दौरे को भांप लेना सामान्य बात है। कुत्तों को तो बाकायदा प्रशिक्षित किया जा सकता है कि वह अपने मालिक को दौरा पड़ने से पूर्व ही चेतावनी दे सके।'[226]

मनुष्यों पर पड़ने वाले दौरे का पूर्वानुमान लगाने की क्षमता केवल कुत्ते या बिल्लियों में ही नहीं होती है। सामान्यत: सभी जानवर ऐसी चीजों के पूर्वानुमान के प्रति अधिक संवेदनशील होते हैं, पर इन जानवरों के संकेत समझ पाने में मनुष्य अक्षम होते हैं। जानवर भूकंप आने के कई घंटे पहले ही इसका पूर्वानुमान लगा सकते हैं। बहुत से जानवर, खासकर घोड़े और पालतू जानवर तूफान आने के पहले ही इसे जान लेते हैं।

जनवरी, 2005 में मैयन मोट्ट (Mayann Mott)ने नेशनल जियोग्राफिक न्यूज में एक लेख लिखा था, जिसमें कहा था:

श्रीलंका और भारत के तटीय क्षेत्रों में सुनामी आने से दस दिन पहले आवारा और पालतू जानवरों को इस खतरे का अहसास हो गया था और वे सुरक्षित स्थानों की ओर भाग रहे थे। चश्मदीदों के मुताबिक हाथी चिंघाड़ रहे थे और किसी ऊंचाई वाले स्थान की ओर भाग रहे थे। कुत्ते घर से बाहर जाने में प्रतिरोध कर रहे थे। बतख अपने अंडे सेने के उन स्थानों को छोड़कर जा रहे थे, जो नीचे थे। चिड़ियाघरों के जानवर अपनी खोहों में चले गए थे और बाहर नहीं निकल रहे थे। सदियों से ऐसा माना जाता है कि जानवरों व पक्षियों के पास छठी इंद्रिय होती है, जो उन्हें पृथ्वी के भीतर हो रही किसी असामान्य गतिविधि या प्रकृति की गतिविधि की जानकारी पहले ही दे देती है।[227]

महत्वपूर्ण बात यह है कि जानवर दृश्य या अदृश्य चीजों का बोध कर लेते हैं। खासकर वे अपने मालिक पर पड़ने वाले दौरे को समय से पहले भांप लेते हैं, जबकि मानव के पास यह क्षमता नहीं होती है। यह कोई असामान्य बात नहीं है कि कोई जानवर जबकि उसके मालिक पर दौरा पड़ने वाला हो। बेचैनी का अहसास करे और बिदकने लगे।

हम जानते हैं कि जिस इल्हाम के खुद पर नाजिल होने का दावा मुहम्मद करता था, उसका अहसास न तो मुहम्मद की बीबियां कर पाती थीं और न ही उसके साथी। ऐसे ही एक बार जब मुहम्मद पर पागलपन का दौरा पड़ा तो उसने अपनी बीबी आयशा से कहा, 'ये जिब्राईल है। यह तुम्हें सलाम कर रहा है और दुआएं दे रहा है। आयशा बोली, 'मेरी ओर से भी उसे सलाम और शुभकामनाएं।' फिर रसूल की ओर मुखातिब होकर आयशा ने कहा, 'तुम जो देख रहे हो, मुझे तो वह नहीं दिख रहा।'[228] इसलिए यदि एक ऊंट यह महसूस कर सका कि मुहम्मद को क्या हो रहा है, तो यह भी एक सुराग है कि मुहम्मद को उस वक्त दौरा पड़ा था।

फिल के. डिक का केस

मिर्गी के कई रोगियों पर किया गया अध्ययन मुहम्मद की हालत को समझने में सहायक होगा। इन रोगियों और मुहम्मद के व्यवहार में कई समानताएं मिलती हैं। अमरीकी विज्ञान कथा लेखक फिलिप किंड्रेड डिक (1928–1982) ने चार्ल्स प्लैट के प्रति अपने अजीबोगरीब भ्रम के बारे में बताते हुए कहा है, 'मुझे महसूस होता था कि मेरे मन–मस्तिष्क पर अतार्किक बातें हावी हो जाती थीं। जीवन भर मुझे ऐसा लगता था जैसे कि मैं पागल हो गया हूं और अचानक कुछ देर बाद मैं खुद को दिमागी रूप से बिलकुल स्वस्थ पाता था।'[229]

डिक के कार्य इस बुनियादी धारणा से प्रारंभ होते हैं कि कोई अकेली वस्तुनिष्ठ वास्तविकता नहीं हो सकती। 'सब कुछ बोध आधारित होता है। चार्ल्स प्लैट डिक के उपन्यासों की व्याख्या करते हैं। नायक को ऐसा लगता है कि वह किसी और के सपने में जी रहा है अथवा वह नशे की दुनिया में जा सकता है, जहां उसे वास्तविक संसार से बेहतर महसूस होता है या फिर ऐसा व्यक्ति पूरी तरह किसी दूसरे लोक में पहुंच जाता है।'[230]

डिक भी मुहम्मद की तरह ही पागल, भावनात्मक रूप से बचकाना और नार्सीस्टिक था। उसके मन में भी आत्मघाती विचार आते थे और अपने अभिभावकों के प्रति रोष था। वह कल्पना करता था कि के.जी.बी. या एफ.बी.आई. उसके खिलाफ षडयंत्र रच रहे हैं और ये एजेंसियां उसके लिए जाल बिछा रही हैं। हम इसी तरह का पागलपन मुहम्मद की बातों में देख सकते हैं। मुहम्मद भी लगातार काफिरों के बारे में बात करता था और कहता था कि काफिर उसके खिलाफ षडयंत्र रच रहे हैं, उसके मजहब का विरोध कर रहे हैं और उसके अनुयायियों सहित उस पर अत्याचार कर रहे हैं। डिक का अंतिम आत्मकथात्मक उपन्यास वलीज[231] एक बेवकूफ द्वारा ईश्वर की खोज जैसा है। इस उपन्यास में उस ईश्वर की तलाश की जा रही है, जो अंतरिक्ष की कक्षा में से भेजा गया वायरस, मजाक और त्रिआयामी काल्पनिक चित्र है। इस उपन्यास की प्रस्तावना धर्मशास्त्र संबंधी कौतुहल है, जिसमें वह गुलाबी लेजर प्रकाश पुंज में एक संदेश प्राप्त करता है और स्वयं को ईश्वर से सीधा जुड़ा पाता है। इस उपन्यास में डिक दैवीय शक्ति के साथ अपनी स्वघोषित भेंट की छानबीन करता है। वलीज वास्ट एक्टिव लिविंग इंटेलीजेंस सिस्टम का संक्षिप्त शाब्दिक रूप है। वह एक सिद्धांत देता है कि वलीज वास्तविकता का जनक और अलौकिक संचार दोनों है।

डिवाइन इन्वेजन: एक लाइफ ऑफ फिलिप के. डिक लेख में लारेंस सूतिन (Lawrence Sutin)डिक के उन रहस्यमयी अनुभवों के बारे में बताते हैं, जो मुहम्मद के रहस्यमयी अनुभवों से काफी मेल खाते हैं।

सोमवार की रात उसने मुझे बुलाया और कहा कि पिछली रात वो मारिजुआना पी रहा था, जो एक मिलने वाला मेरे पास छोड़ गया था। जब वह मारिजुआना पी रहा था तो उसे महसूस हुआ कि वह किसी ऐसी अवस्था में जा रहा है, जो उसका जाना–पहचाना सा है और उसे ऐसी चीजें दिख रहीं हैं, जो सामान्यत: नशे की हालत में नहीं दिखती हैं। फिर उसने कहा, 'मैं ईश्वर को देखना चाहता हूं, मुझे अपना दर्शन कराओ।' तभी अचानक, उसने मुझे बताया कि वह भयानक रूप से डर गया। उसने ऑर्क ऑफ द कोवेनैंट को देखा और एक आवाज को कहते सुना, 'तुम मेरे पास तार्किक साक्ष्य या विश्वास के माध्यम से नहीं आ पाते, इसलिए तुम्हें इस तरीके से विश्वास दिला रहा हूं।' ऑर्क का पर्दा फिर से गिर गया और उसने प्रत्यक्ष रूप से शून्य में उभरती एक त्रिकोणीय आकृति देखी, जिसमें एक आंख थी। वह आंख उसे घूर रही थी। फिल ने कहा कि वह रविवार शाम के 9 बजे से लेकर सोमवार शाम पांच बजे तक ऐसी दिव्य चीजें देखते हुए मारे डर के जमीन पर कुहनियों और घुटनों के बल पड़ा हुआ था। उसने कहा कि उसे लगा वह मर जाएगा और यदि वह टेलीफोन तक पहुंचने की हालत में होता तो पैरामेडिकल को फोन जरूर

करता। अदृश्य आवाज ने उससे कहा, 'तुम अब तक हर अहसास को वहम मानकर झुठलाते रहे हो। मैं तुम्हें सच दिखलाता हूं, पर यह देखने के बाद तुम इसे कभी न तो भूल सकोगे और न ही इससे सामंजस्य बिठा पाओगे या गलत ढंग से पेश कर पाओगे।'[232]

डिक की असामयिक मौत 54 वर्ष की अवस्था में हुई। इस उम्र में ही उसने काफी कुछ लिखा। उसकी आत्मकथा लिखने वाले सूतिन उसके लेखन के एक हिस्से का उद्धरण देते हैं, जहां उसने अपने रहस्यमयी अनुभवों का वर्णन किया है:

अनंत शून्य के रूप में ईश्वर मेरे सामने प्रकट हुआ। यह शून्य कोई गहरी अंधेरी सुरंग नहीं था, बल्कि यह नीले आसमान और धवल बादलों से ढंके हुए स्वर्ग का मेहराब था। वह कोई विदेशी ईश्वर नहीं था, बल्कि वह तो मेरे पुरखों का ईश्वर था। वह प्रेम बरसाने वाला दयालु और मोहक व्यक्तित्व वाला ईश्वर था। उसने कहा, 'जीवन में जो कष्ट तुम भोग रहे हो, वह उस आनंद की तुलना में कुछ भी नहीं है। परमानंद तुम्हारी प्रतीक्षा में है। क्या तुम्हें लगता है कि मैं तुम्हें आनंद का पुरस्कार देने के बजाय दुख भोगने के लिए छोड़कर तुमसे प्रतिशोध लूंगा? उसने मुझे उस परमानंद का भान कराया, जो मुझे मिलने वाला था। यह परमानंद असीम और सुंदर था। उसने कहा, 'मैं अनंत हूं। मैं तुम्हें दिखाऊंगा कि मैं कहां रहता हूं। जहां अनंत सत्ता है, वहीं मेरा निवास है। जो मुझसे छूट जाता है, वह बीमार माना जाता है। जब मैं होता हूं तो उसकी उड़ान का पंख मैं होता हूं। मैं ही संदेह करने वाला और संदेह दोनों हूं।[233]

टीएलई के अन्य मामले

23 अक्टूबर, 2001 को पीबीएस टेलीविजन ने टीएलई पर एक वृत्तचित्र का प्रसारण किया। इसमें टैम्पोरल लोब इपीलैप्सी से ग्रस्त व्यक्ति जॉन शैरन का साक्षात्कार भी था। इस साक्षात्कार में जॉन के पिता और कैलीफोर्निया-सैन डियागो विश्वविद्यालय के न्यूरोलॉजिस्ट वीएस रामचंद्रन भी थे। जॉन शैरन के केस को पढ़कर इसकी तुलना मुहम्मद के बारे में उपलब्ध जानकारियों से करना रुचिकर होगा। इससे पैगम्बर मुहम्मद की मानसिक दशा और दिमागी अस्वस्थता पर प्रकाश डाला जा सकता है।

जॉन शैरन: जब दौरा पड़ता है तो मेरा शरीर, मेरी आत्मा और मेरी चेतना तीनों को प्रभावित करता है। जब मैं इस दौर से गुजरता हूं तो ऐसा लगता है कि मेरे पूरे शरीर में झुनझुनी हो रही है और मैं कह उठता हूं, ओह..., अब बस।

व्याख्याकार: जॉन पर दौरे पड़ने के दौरान निश्चित ही उसके मस्तिष्क के भीतर विद्युतीय प्रवाह तीव्र हो जाता है और इससे अचानक न्यूरॉन का समूह उस भाग में बढ़ने लगता है। इससे मस्तिष्क के अन्य भाग से उस भाग का संतुलन बिगड़ने लगता है। हाल ही जॉन पर भयावह दौरा पड़ा। वह अपनी महिला मित्र के साथ थार में गया था और दोनों ने खूब शराब पी। इसका नतीजा यह हुआ कि जॉन पर अचानक रह-रहकर तेज दौरा पड़ने लगा, जो कभी-कभी पांच-पांच मिनट तक रह जाता था। इससे उसका शरीर ऐंठने लगा और वह बेहोश हो गया। आखिर में किसी तरह जॉन अपने पिता को फोन कर सका और वो आकर उसे घर ले गए।

जॉन शैरान: घर लौटते समय मैं और मेरे पिता के बीच कुछ दार्शनिक चर्चा होने लगी। मैंने जब बोलना शुरू किया तो बोलता ही रहा। ऐसा लग रहा था कि जैसे मैं अति उत्तेजना में था।

जॉन शैरन सीनियर: यह अस्ल में ऐसा था, जैसे शरीर में भूकंप आ गया हो और जैसे भूकंप के बाद कई झटके आते हैं, वैसे ही रह-रहकर शरीर में झटके आ रहे थे। जिस प्रकार भूकंप आने के बाद सबकुछ अस्तव्यस्त हो जाता

है और पुननिर्माण की आवश्यकता पड़ती है, वैसे ही शरीर में झटके लगने के बाद शिथिलता आने लगती है। मुझे मुख्यत: तब जूझना पड़ता है जब झटके आने के बाद और खासकर आखिरी झटका आने के बाद उसकी (जॉन की) हालत बुरी हो जाती है। यह कुछ ऐसा ही होता है जैसे कि सल्वाडोर डाली की किसी पेंटिंग को देखते हुए उस चित्र में खोकर उनके पात्रों को जीने लगना। अचानक चित्र की चीजें, व्यक्ति या दृश्य यथार्थ लगने लगती हैं। झटका आने के बाद उसकी हालत पर दृष्टि पड़ती है तब पता चलता है कि वास्तव में उस पर दौरा पड़ने का क्या प्रभाव पड़ा। उसके बाद उसका मस्तिष्क, मन, याददाश्त, सोचने की क्षमता और बाकी सबकुछ प्रभावित होता है।

व्याख्याकार: जब जॉन पर से दौरे का प्रभाव उतरता तो वह बिलकुल निढाल हो जाता था, लेकिन फिर भी उसे लगता था कि वह सर्वशक्तिमान है।

जॉन शैरन: मैं सड़क पर चीखता हुआ दौड़ रहा था कि मैं ईश्वर हूं। तभी यह आदमी बाहर निकला और मैंने उसको व उसकी पत्नी को कमर से कामुक धक्का मारा। मेरे भीतर से आवाज आ रही थी, 'तुम कमबख्त इस बात की शर्त लगाना चाहते हो कि मैं ईश्वर नहीं हूं।'

जॉन शैरन सीनियर: और मैंने सीधा कहा, 'अरे ओ गधे, वापस आ! तू क्या कर रहा है? तू पड़ोसियों को परेशान कर रहा है। वो पुलिस बुला लेंगे। क्या है ये सब?'

जॉन शैरन: मैंने उसकी ओर शांत और संयमित भाव से देखा और माफी मांगी। कुछ इस तरह बोला, 'न, न, ईश्वर के लिए कोई पुलिस नहीं बुलाएगा। वैसे मैंने ये आखिरी वाक्य मुंह से निकाला नहीं था, बस मैं अपने आप से बात करते हुए मन ही मन कह रहा था कि 'ईश्वर के लिए कोई पुलिस बुलाने नहीं जा रहा।'

व्याख्याकार: जॉन कभी भी धार्मिक नहीं रहा। फिर जब उस पर दौरा पड़ता तो उसके भीतर जबरदस्त आध्यात्मिक भाव जाग जाता था।

कैलीफोर्निया के सैन डियागो विश्वविद्यालय में मनोविज्ञान विभाग के प्रोफेसर एवं मस्तिष्क व अनूभूति केंद्र के निदेशक विलयनूर एस. रामचंद्रन (Vilayanur S. Ramachandran) ने टैम्पोरल लोब इपीलैप्सीपर बहुत काम किया है।

वीएस रामचंद्रन: यह लंबे समय से ज्ञात है कि दिमाग में दौरा पड़ने पर कुछ मरीज गहन धार्मिक आभामंडल और ईश्वर के अपने पास आने की अनूभूति करते हैं। कभी-कभी यह मरीज का व्यक्तिगत ईश्वर होता है और कभी-कभी यह ब्रह्मांड के साथ एकाकार होने का बिखरा सा अहसास होता है। इस दौरान जो भी होता है, वह बड़ा सार्थक लगता है। मरीज कहता है, 'डाक्टर, आखिरकार मैं समझ पा रहा हूं कि यह सब क्या है। मैं वास्तव में ईश्वर को समझ पा रहा हूं। मुझे पता चल चुका है कि ब्रह्मांड में मेरा क्या स्थान है। टैम्पोरल लोब सीजर के दौरान मरीजों में यह क्यों होता है और अक्सर ही क्यों होता है?'

जॉन शैरन: हे भगवान! तुम्हें पता है? मेरा दिमाग बिलकुल ठीक है। मैं जानता हूं कि मैं बाहर जाकर अनुयायी बना सकता हूं। जो मेरा अनुसरण करने लगेंगे, वे लोग अक्ल के अंधे और बेवकूफ नहीं होंगे। वे जानते हैं कि मैं पैगम्बरों की नई पीढ़ी में से हूं और मैं उन पैगम्बरों में से हूं, जिनके चारों ओर लोग जमीन पर बैठकर संदेश सुनते थे। क्या यह वही संदेश, मानव के लिए ईश्वर की ओर भेजा गया कालजयी उपहार नहीं है?

वीएस रामचंद्रन: ऐसा मुमकिन है, है न? हां?

जॉन शैरन: मैं कभी भी धार्मिक नहीं रहा हूं। लोग कहते हैं, 'नहीं, तुम भविष्यदृष्टा नहीं हो सकते।' पर प्रभु ने तुम्हें वह उपहार अर्थात भविष्य दृष्टा होने का उपहार दिया है, लेकिन तुम्हें इसकी कीमत चुकानी होगी, चारों ओर से निंदा झेलकर।

वीएस रामचंद्रन: अब, दौरा पड़ने के दौरान इन मरीजों में इतना प्रबल धार्मिक अनुभव कहां से होता है ? और क्यों वे दौरा पड़ने के दौरान धर्मशास्त्र संबंधी और धार्मिक मामलों को लेकर इतने बेचैन हो जाते हैं ? एक संभावना यह है कि मस्तिष्क में दौरा पड़ने पर मनुष्य के मन-मस्तिष्क में विचित्र व असामान्य भावनाएं उत्पन्न होती हैं। इन विचित्र भावनाओं के वशीभूत मरीज को लगता है कि वह किसी दूसरे लोक से इस धरती पर आया है। अथवा उसे लगता है कि ईश्वर उसके पास आ रहा है। हो सकता है कि दिमाग में चल रही इस अजीबोगरीब हड़बड़ी को भांपने का मरीज के पास इसके अतिरिक्त और कोई रास्ता न हो। दूसरी संभावना यह है कि इसका संबंध मस्तिष्क के कार्य करने के उस तरीके से हो सकता है, जो दौरा पड़ने पर खुद को दुनिया से भावनात्मक रूप से जोड़े रखने में सहायक होता हो। जब हम आसपास घूमते हैं और दुनिया के साथ तालमेल बिठाते हैं तो हमें यह निश्चित करने की आवश्यकता होती है कि क्या महत्वपूर्ण है और क्या नहीं, भावनात्मक रूप से क्या विशेष और प्रासंगिक और क्या तुच्छ है।

ये सब घटित कैसे होता है ? हमें लगता है कि मस्तिष्क के दायें और बाएं भाग और ऊपरी मध्य भाग में स्थित संवेदी क्षेत्रों में संपर्क जटिल होता है। यह संपर्क जितना मजबूत होता है, भावनात्मक रूप से यह पहचानने में आसानी होती है कि कौन सी चीज कितनी महत्वपूर्ण है। इसलिए ऐसी हालत में आप को भावना प्रधान परिदृश्य दिखने लगते हैं, जिसमें पहाड़ियां होती हैं, घाटियां होती हैं, तद्नुसार आप निर्धारित करने लगते हैं कि क्या महत्वपूर्ण है और क्या महत्वपूर्ण नहीं है। हममें से प्रत्येक व्यक्ति थोड़ा अलग-अलग तरह के भावना प्रधान परिदृश्य की कल्पना करता है। अब जरा सोचिए, उस क्षण मस्तिष्क के भागों में क्या होता है, जब दौरा पड़ता है। होता यह होगा कि इस दौरान दिमाग का प्रत्येक भाग असामान्य तरीके से एक दूसरे से संपर्क करने लगता होगा। यह ठीक वैसा ही समझा जा सकता है, जैसे कि किसी छोटी नदी के जल का प्रवाह व स्तर अचानक इतना बढ़ जाए कि वह किनारे की चट्टानों के ऊपर से बहने लगे। जब लगातार बारिश होती है तो ताल-तलैया भर जाते हैं और फिर उसका पानी आसपास के मार्गों पर बहते हुए अपने लिए खड्डे बनाने लगता है। ये खड्डे जैसे-जैसे गहरे होते जाते हैं, कृत्रिम रूप से एक तरह का भावनात्मक प्रभाव पैदा करने लगते हैं, हालांकि ये कोई स्थाई नहीं होते। इसीलिए ऐसा अनुभव करने वाला शेर, चीता और अपनी जननी आदि को ही महत्वपूर्ण नहीं मानता, बल्कि वह सभी चीजों बड़ी गहराई से महत्वपूर्ण मानने लगता है। उदाहरण के लिए वह रेत के कण, छोटी-मोटी वस्तुओं, समुद्र के आसपास उगने वाली घास आदि को बहुत गंभीरता से लेने लगता है। इस तरह की प्रवृत्ति तीव्र होने पर मनुष्य अपने आसपास की सभी वस्तुओं को ब्रह्मांडीय महत्व से जोड़ने लगता है और यह एक तरह रहस्यमयी अथवा धार्मिक अनुभव का भ्रम पैदा करता है।

मस्तिष्क के भागों में ऐसा कोई विशिष्ट स्थान नहीं है, जो ईश्वर की संकल्पना से जुड़ा हो। पर यह हो सकता है कि मस्तिष्क के कुछ भाग में कुछ ऐसी गतिविधियां होती हों, जो धार्मिक विश्वास के प्रति अनुकूलता पैदा करती हों। हालांकि यह स्पष्ट नहीं है, पर ऐसा हो सकता है। सोचने की बात है कि धर्म में विश्वास के लिए मस्तिष्क में तंत्रिकाओं की मशीनरी क्यों होगी ? पर यह तो सच है कि धर्म में विश्वास बहुत व्यापक है। प्रत्येक कबीला, प्रत्येक समाज के पूजापाठ की कुछ निश्चित पद्धतियां हैं। हो सकता है कि इसके पीछे का कारण समाज को स्थिरता देना हो अथवा यह भी हो सकता है कि किसी पारलौकिक सत्ता में विश्वास करना चित्त को स्थिर बनाने का आसान तरीका हो।

और यह एक कारण हो सकता है कि मन में धार्मिक भावनाएं क्यों उमड़ती हैं।[234]

इतिहास करिश्माई धार्मिक शख्सियतों से भरा पड़ा है। मनौवैज्ञानिक विलियम जेम्स (1842-1910) का

मानना है कि पैगम्बर पॉल ने दमासकस जाते हुए रास्ते में जो देखा, वह एक प्रकार का दौरा पड़ना रहा होगा। जब उन्हें यह अनुभव हो रहा होगा तो उनके दिमाग की तंत्रिकाओं में उत्तेजना तेज हो गई होगी, जिससे एक प्रकार का मिर्गी का दौरा पड़ा होगा और इसके बाद तंत्रिकाएं शिथिल पड़ गई होंगी।

पॉल ने इस यात्रा के दौरान एक प्रकाश पुंज देखा और एक आवाज सुनी, जो उनसे कह रहा था, 'सॉल, सॉल, तुम मेरे पर जुल्म क्यों कर रहे हो?'[235] इसके बाद पॉल लगभग अंधे हो गए और परिणामस्वरूप वे धर्मांतरित भी हो गए। पॉल ने जो देखा, उसे निम्न शब्दों में बयान किया है:

चूंकि मुझे इल्हाम हुआ, और मैं इस पर दंभी न हो जाऊं, इसके लिए ईश्वर ने मेरी देह में शैतान का एक कांटा लगा दिया, ताकि वह मुझे सताता रहे। मैंने ईश्वर से तीन बार अनुनय-विनय किया कि इस कांटे को निकाल दे। लेकिन ईश्वर ने कहा, 'मेरी कृपा तुम्हारे लिए पर्याप्त है, क्योंकि मेरी शक्ति तुम्हें कमजोर स्थितियों में भी पूर्ण बनाती है।'[236]

ऐसा ही एक प्रसिद्ध मामला सोलहवीं सदी के एविला (Avila) की संत टेरेसा (1515-1582) का है। वे भी विचित्र अनुभव बताती थीं। वो बताती थीं कि उनके सिर में भयानक दर्द शुरू होता था और बेहोशी जैसी स्थिति आ जाती थी, पर इसके बाद बेहद शांति, स्थिरता और आत्म आनंद का अहसास करती थीं, जो उन्हें ईश्वर की महानता का बोध कराता था।[237] उनकी जीवनी लिखने वाले अनुमान लगाते हैं कि उन्हें इपीलेप्टिक दौरा पड़ता रहा होगा।[238]

लाप्लैंट कहते हैं कि विंसेंट वैन गॉफ़, गुस्ताव फ्लाबर्ट, लुईस कैरोल, मर्सेल प्राउस्ट, टैनीसन, फ्योडोर दोस्तोनेवेस्की आदि चित्रकार व लेखक भी टीएलई के शिकार थे। टीएलई के मरीज अक्सर व्यक्तित्व परिवर्तन की दशा से गुजरते हैं, जो उनमें पारंपरिक रूप से बाध्यकारी लेखन या चित्रकारी अथवा अतिधार्मिकता की ओर ले जाता है। लाप्लैंट के मुताबिक, मुहम्मद भी टीएलई के रोग से ग्रस्त था। मार्मनवाद के प्रणेता जोसफ स्मिथ और सेवेंथ डे एडवेंटिस्ट मूवमेंट की संस्थापक एलेन व्हाइट इसके हालिया उदाहरण हैं। एलेन व्हाइट जब 9 साल की थीं तो उन्हें सिर में गहरी चोट लगी थी और इसके बाद उनका व्यक्तित्व पूरी तरह बदल गया था। उन्हें प्रभावशाली धार्मिक अहसास होने लगा था। यहूदी समुदाय के नास्तिक मनोवैज्ञानिक हेलन सुकमैन जिसने दावा किया कि ए कोर्स इन मिरैकल्स नामक पाठ के रूप में दिव्य संदेश उसे स्वयं ईसामसीह ने दिया है, वह भी संभवत: टीएलई की समस्या से ग्रस्त था।

सुकमैन ने अपने जीवन के आखिरी दो साल भयानक पागलपन और अवसादग्रस्त अवस्था में बिताए थे। बाबी या ब्रहाई (Babi) धर्म के संस्थापक सैयद अली मुहम्मद को भी संभवत: दौरे पड़ते थे। बाबी या ब्रहाई की फारसी बयां नामक पुस्तक (यह अंग्रेजी में अनूदित है और ऑनलाइन उपलब्ध है) पागलपन से भरी एक उत्कृष्ट रचना है, जिसमें कथाशिल्प और लालित्य भी है, हालांकि सामग्री बहुत कम है।

इपीलैप्सी से पीड़ित अन्य प्रसिद्ध व्यक्ति

हाइडी हांसेन और लीफ बोर्क हंसेन ने सोरेन किर्केगार्ड के बारे में अपने जर्नल में लिखा है कि वो टीएलई नामक समस्या से पीड़ित था, पर यह बात उसने पूरे जीवन भर छिपा कर रखी। इन्होंने उसी का उद्धरण दिया: 'सभी दुखों में वह सर्वाधिक कष्टदायी होता है जो किसी को दया का पात्र बना दे और जब व्यक्ति इस स्थिति में आता है तो चूंकि लोग सामान्यत: ऐसे व्यक्ति को मूर्ख और तुच्छ मानने लगते हैं, इसलिए वह ईश्वर से बगावत का रास्ता अपनाने की ओर बढ़ने लगता है। यद्यपि ठीक से देखें तो पाएंगे कि संसार के अधिकांश महत्वपूर्ण व ऐतिहासिक व्यक्तियों में कुछ इस तरह का लक्षण ढंके-छिपे रूप में होता है।'[239]

ये दोनों डेनिश दार्शनिक बिलकुल ठीक कह रहे थे। टीएलई से पीड़ित व्यक्ति मूर्ख होने के बजाय विशिष्ट प्रतिभा के धनी होते हैं। टैम्पोरल लोब इपीलैप्सी को रचनात्मकता के रोग के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। इतिहास में प्रसिद्ध व प्रतिभाशाली व्यक्ति के रूप में पहचान रखने वालों में से अनेक टीएलई के रोग से पीड़ित थे और यह कहना अनुचित नहीं होगा कि इस रोग के कारण ही उनमें रचनात्मकता का गुण आया था। प्रति एक हजार मनुष्यों में से 5-10 लोग टीएलई से पीड़ित होते हैं, हालांकि आवश्यक नहीं कि टीएलई के ये सभी रोगी विख्यात ही हो जाएं। हार्वर्ड मेडिकल स्कूल में न्यूरोलॉजी के प्रोफेसर एवं इपीलैप्सी पर कई पुस्तकों के लेखक डॉक्टर ऑफ मेडिसिन स्टीवन सी. सैशर ने इतिहास में प्रसिद्ध महत्वपूर्ण ऐसे व्यक्तियों की सूची संकलित की है, जो संभवत: टीएलई से पीड़ित रहे हैं। इस सूची में दार्शनिक, लेखक, धार्मिक शख्सियत, चित्रकार, कवि, संगीतकार, अभिनेता व अन्य विख्यात लोग सम्मिलित हैं। सैशर लिखते हैं, 'प्राचीन काल में लोग समझते थे कि बुरी आत्माओं अथवा शैतान का साया पड़ने के कारण मिर्गी का दौरा पड़ता है। ओझा-सोखा मिर्गी को ठीक करने के लिए जादू-टोना करके बुरी आत्मा को उस व्यक्ति के शरीर से दूर भगाने का प्रयास करते थे। प्राचीन भारत के आयुर्वेदाचार्य ऐत्रेय और यूनान के हिपोक्रेट्स ने इस अंधविश्वास को चुनौती दी। इन दोनों ने दौरे का कारण किसी अलौकिक घटना को न मानते हुए कहा कि यह मस्तिष्क के सभी भागों के काम न करने के कारण होता है।' वह कहते हैं, 'इपीलैप्टिक दौरे में एक विशेष शक्ति और प्रतीकात्मकता होती है, जो ऐतिहासिक रूप से यह बताती है कि इसका संबंध रचनात्मकता अथवा असामान्य नेतृत्व क्षमता से होता है।

विद्वान उन प्रमाणों को लेकर सदा उत्सुक रहे हैं, जो यह बताते हैं कि महत्वपूर्ण पैगम्बर और उनके पवित्र आदमियों, राजनीतिक नेताओं और कला व विज्ञान में महानता प्राप्त करने वाले व्यक्ति इपीलैप्सी से पीड़ित रहे थे।'[240]

अरस्तू वह पहला विद्वान था, जिसने इपीलैप्सी को प्रतिभासम्पन्नता से जोड़ा। अरस्तू ने दावा किया कि सुकरात इपीलैप्सी से पीड़ित था। सैशर ने लिखा है कि कैलीफोर्निया विश्वविद्यालय के स्कूल ऑफ मेडिसिन के न्यूरोलॉजी विभाग के प्रोफेसर डॉ. जेरोम एंजेल मानते हैं कि इपीलैप्सी और प्रतिभाशीलता का संबंध एक संयोग होता है।[241]

हालांकि सैशर आगे कहते हैं, 'कई लोग इस बात से सहमत नहीं हैं, फिर भी उन्हें कुछ लोगों में इपीलैप्सी और प्रतिभाशीलता के बीच संबंध मिले हैं। ईव लाप्लैंट ने अपनी पुस्तक सीज्ड में लिखा है कि मस्तिष्क के जटिल भागों अर्थात टैम्पोरल लोब में दौरा पड़ना रचनात्मक चिंतन और कला प्रवणता उत्पन्न करता है। न्यूरोसाइकोलॉजिस्ट डॉ. पॉल स्पायर्स बताते हैं: 'कभी-कभी जो चीजें इपीलैप्सी का कारण होती हैं, वही व्यक्ति को विशेष प्रतिभाओं वाला भी बनाती हैं। यदि आप किसी व्यक्ति के जीवन के प्रारंभ के दिनों में उसके मस्तिष्क के किसी क्षेत्र को क्षतिग्रस्त कर दीजिए तो मस्तिष्क के दूसरा क्षेत्र के अति विकसित होने की संभावना बढ़ जाती है।''[242]

यह एक रोचक सिद्धांत है। यदि स्पायर्स की बात मानें तो टीएलई नामक बीमारी रचनात्मकता अथवा प्रतिभा नहीं उत्पन्न करती है, बल्कि इस बीमारी के कारण मस्तिष्क के भीतर जो क्षति पहुंचती है, उसकी प्रतिपूर्ति के लिए मस्तिष्क के भीतर होने वाली प्रतिक्रिया के कारण ऐसा होता है।

आगे उन प्रतिभासम्पन्न लोगों की छोटी सी सूची है, जिन्हें सैशर मानते हैं कि ये लोग इपीलैप्टिक दौरे से पीड़ित थे।

हैरिएट टबमैन: यह एक अश्वेत महिला थीं, जिन्होंने कनाडा में स्वतंत्रता के लिए अमरीका के दक्षिण के अपने गुलाम साथियों का नेतृत्व किया था। वो अपने लोगों के बीच पैगम्बर मूसा कही जाती थीं।

संत पॉल: ये वो व्यक्ति हैं, जो ईसाई धर्म प्रचारकों (मिशनरियों) के सबसे बड़े अगुवा कहे जाते हैं और कहा

जाता है कि इनके बिना ईसाइयत का यूरोप तक पहुंचकर विश्व का धर्म बनना संभव नहीं हो पाता।

जोन ऑफ ऑर्क: ये मध्यकालीन फ्रांस के एक दूरदराज के गांव के किसान की बेटी थीं। इन्होंने अपनी सैन्य विजयों के साथ इतिहास की धारा बदल दी। कहा जाता है कि 13 वर्ष की आयु में जॉन को रहस्यमयी प्रेरणा हुई और उन्होंने प्रकाश पुंज देखे, संतों की आकाशवाणी सुनी और फरिश्तों को देखा।

अल्फ्रेड नोबल: स्वीडन के रसायनशास्त्री और उद्योगपति ने डायनामाइट का अविष्कार किया था और नोबल पुरस्कार की स्थापना के लिए वित्तपोषण किया था।

दांते: ला डिविना कॉमेडिया के लेखक थे।

सर वाल्टर स्कॉट: ये 18वीं सदी के रूमानी काल के अग्रणी साहित्यिक शख्सियत थे।

जॉन स्विफ्ट: ये अंग्रेजी के प्रसिद्ध व्यंग्यकार थे और इन्होंने गुलीवर्स ट्रैवेल्स नामक प्रसिद्ध पुस्तक की रचना की है।

एडगर एलन पो: 19वीं सदी के अमरीकी लेखक।

लार्ड बायरन, पर्सी बाइशी शैली और अल्फ्रेड टैनीसन: तीनों अंग्रेजी के महान रूमानी कवि हैं।

चार्ल्स डिकेंस: ये विक्टोरिया कॉल के क्रिसमस कैरोल एंड ओलिवर ट्विस्ट जैसे शास्त्रीय पुस्तक के रचयिता हैं।

लेविस कैरोल: ये एलिस एडवेंचर इन वंडरलैंड नामक प्रसिद्ध पुस्तक के रचयिता हैं, जिन्होंने अपने टैम्पोरल लोब सीजर (दौरे) के कारण हुए अनुभव लिखे होंगे। एलिस एडवेंचर्स में कुंड में नीचे गिरने की व्याख्या से जो सनसनी महसूस होती है, वैसा अहसास दौरा पड़ने वाले अनेक लोगों में अक्सर पाया जाता है।

फ्योडोर दास्तोवस्की: ये महान रूसी उपन्यासकार हैं। इन्होंने क्राइम एंड पनिश्मेंट और ब्रदर्स कार्माजोव जैसी कालजयी पुस्तकें लिखी हैं। कहा जाता है कि यही वो लेखक थे, जिन्होंने पश्चिमी उपन्यास को परम ऊंचाई तक पहुंचाया।

मुहम्मद को पहली बार दौरा तब पड़ा था, जब वह पांच साल का था। दास्तोवस्की को पहली बार 9 साल की आयु में दौरा पड़ा था। बीच-बीच में कुछ समय को छोड़कर 25 साल की आयु तक वे दौरे की चपेट में आते रहे। अच्छे और बुरे दिनों के बीच ये दौरा कभी कुछ दिनों के अंतराल पर तो कभी महीनों के अंतराल पर आता। जब उन्हें भयानक दौरा पड़ता था तो उसके कुछ सेकंड पहले ऐसे रहस्यमयी अहसास होते थे, जैसे कि वे आनंद के सागर में गोता लगा रहे हों, लेकिन जैसे ही उन पर वह भयानक दौरा पड़ता था, सबकुछ बदल जाता था और वे खौफ के दर्दनाक अहसास में चले जाते थे। उनके अनुभव मुहम्मद के अनुभव जैसे होते थे, जैसे कि मुहम्मद देखता था कि भयानक दोजख है, जो दुख और यातना से भरा हुआ है और वहां लोगों को उनके कर्मों और कुकर्मों के आधार पर भयंकर सजाएं दी जा रही हैं। यहां उसके कुछ उदाहरण हैं, जो मुहम्मद ने देखा था:

जो ये दोनों (मोमिन व काफिर) दो भागीदार (फरीक) हैं। जो काफिर हैं, उन्हें कयामत के दिन आग का कपड़ा पहनाया जाएगा और उनकी मुंडियों पर खौलता हुआ पानी उड़ेला जाएगा। भयानक आग की गर्मी से उनके पेट में जो कुछ भी है (आंतें वगैरह) और खाल गल जाएगी। इसके अतिरिक्त उनको मारने के लिए लोहे के गुर्ज होंगे। जब सदमे के मारे दोज़ख़ से निकल भागना चाहेंगे तो उन्हें लोहे का गुर्ज मारकर अंदर धकेल दिया जाएगा और उनसे कहा जाएगा कि जलाने वाले अजाब के मजे चखो। (कुरान.22:19-22)

और जिन की नेकियों के पल्ले हल्के होंगे, वही लोग अपनी रूह को नष्ट कर चुके हैं और ये ही लोग जहन्नुम में हमेशा रहेंगे। (कुरान.23:103-104)

दोस्तोवस्की ने चुंधिया देने वाला प्रकाश देखा था। इसके बाद वह चिल्ला उठे थे और कुछ पल के लिए बेहोशी के आलम में आ जाते थे। कभी-कभी दौरे का प्रभाव पूरे मस्तिष्क में फैल जाता है तो यह उन्हें बड़ी भयानक मानसिक दर्द की स्थिति में पहुंचा देता है। ऐसा दौरा पड़ने के बाद वे घटनाओं को याद नहीं रख पाते थे और उन्हें यह भी स्मरण नहीं रहता था कि जब उन्हें दौरा पड़ा था तो उन्होंने क्या बातें की थीं। वो अक्सर कई दिनों तक अवसादपूर्ण स्थिति में चले जाते थे, चिड़चिड़े हो जाते थे, स्वयं को दोषी मानने लगते थे।

काउंट लियो टॉलस्टॉय: ये अन्ना कैरेनीना और वार एंड पीस नामक पुस्तक के रचयिता 19वीं शताब्दी के रूसी लेखक थे और ये भी इपीलैप्सी के शिकार थे।

गुस्ताव फ्लाबर्ट: ये साहित्य जगत का बड़ा नाम है। 19वीं शताब्दी के इस फ्रांसीसी साहित्यिक प्रतिभा ने मैडम बोवेरी और ए सेंटीमेंटल एजूकेशन नाम की अद्भुत चीजें लिखी हैं। सैशर के मुताबिक, 'फ्लाबर्ट को शुरू में लगता था कि जैसे उन पर दुर्दिन आने वाले हैं, जिसके बाद वे स्वयं को बहुत असुरक्षित महसूस करने लगते थे और उन्हें लगता था कि मानो वो किसी और दुनिया में चले गए हों। उन्होंने लिखा कि जब दौरे पड़ते थे तो उन्हें लगता था कि उनके मन में विचारों और कल्पनाओं का भंवर तैर रहा हो और उस दौरान ऐसा लगता था कि उनकी चेतना समुद्र में आए तूफान के समय डूब रही नौका की तरह लुप्त हो रही है।' वह विलाप करते थे, पुरानी यादों के भंवरजाल में उलझ जाते थे, भयानक सपने देखते थे, मुंह से झाग निकलता था और दाहिना हाथ अपने आप हिलने लगता था, करीब दस मिनट तक ऐसा लगता था कि जैसे समाधि की अवस्था में चले गए हों और फिर इसके बाद उल्टियां करते थे।''

डेम अगाथा क्रिस्टी: ये ब्रिटेन की अग्रणी जासूसी उपन्यासकार थीं। कहा जाता है कि इन्हें भी इपीलैप्सी की समस्या थी।

ट्रूमैन कैपोत: ये इन कोल्ड ब्लड और ब्रेकफास्ट एट टिफैनीज नामक पुस्तकों के लेखक हैं।

जार्ज फ्रेडरिक हैंडेल: ये महान वायलिन वादक थे और द मसीहा निकोल पैगिनी नामक अलबेले संगीत के रचयिता थे।

पीटर तैकोवस्की: ये स्लीपिंग ब्यूटी और द नटक्रैकर जैसे बैले को कंपोज करने वाले प्रख्यात रूसी संगीतकार थे।

लुडविंग वैन बीथोवेन: महान शास्त्रीय संगीतकारों में से एक थे।

सैशर कहते हैं, 'ये उन बहुत से प्रसिद्ध व्यक्तियों में से कुछ उदाहरण हैं, इतिहासकारों ने जिनके ऊपर दौरा पड़ने का साक्ष्य दर्ज किया है।' वास्तव में ऐसे प्रसिद्ध व्यक्तियों की सूची लंबी है, जिनमें इपीलैप्सी के लक्षण पाए गए अथवा जिनके इस बीमारी की चपेट में होने का संदेह था। मुहम्मद की संगत खराब नहीं थी। मुहम्मद की कल्पनाशीलता, उसके अवसाद, उसके आत्मघाती विचार, मजहब में उसकी रुचि, कयामत और मौत के बाद की दुनिया को लेकर उसकी दृष्टि, आकाशीय आवाज सुनायी देने का भ्रम होना और उसकी अनेक शारीरिक व मनोवैज्ञानिक विशेषताओं की व्याख्या टैम्पोरल लोब इपीलैप्सी (टीएलई) नामक बीमारी का विश्लेषण करते हुए की जा सकती हैं। **हालांकि इस बीमारी के विवरण से यह नहीं पता चलता है कि मुहम्मद इतना क्रूर, हैवान, दयाहीन, सामूहिक हत्यारा और अड़ियल स्वभाव वाला क्यों था? मुहम्मद में ये बुराइयां उसके मनोविकारी आत्म-मोह (नार्सिसिज्म) के कारण थीं। ये बुराइयां उसके व्यक्तित्व के विकार और मानसिक विकार के योग से आई थीं और इन्हीं बुराइयों ने उसे एक परिघटना बना दिया।** मुहम्मद अपने मन में आडम्बरपूर्ण भव्यता पाने और दुनिया में सबसे ताकतवर होने के विचार पाले रखता था। मुहम्मद की उन्मादी सोच उसके शेखचिल्लीपन

की पुष्टि करती है और इसी सोच के कारण वह मानने लगा कि वह अल्लाह के रसूल के रूप में चुना गया है। मानो यही काफी नहीं था, उसने तो शादी भी एक ऐसी 'परजीवी' औरत से की, जो शौहर की झूठी बड़ाई करने में अपनी महानता समझती थी। मुहम्मद अपने पैगम्बरी के मिशन को लेकर आश्वस्त था। यह उसका स्वयं में आत्मविश्वास मजबूत होना ही था कि वह अपने निकट के लोगों को प्रेरित कर सका और अपने ऊपर भरोसा करने के लिए तैयार कर सका। हालांकि इसका यह अर्थ नहीं है कि कुरान की सारी आयतें तभी कही गईं, जब उसे दौरा पड़ता था। बाद के वर्षों में संभवत: उसे दौरा पड़ना बंद हो गया था। फिर भी वह अपने मत को बिलकुल सही मानता था और इसीलिए जैसे-जैसे उसको आवश्यकता पड़ी, वह नई-नई आयतें गढ़ता गया।

एक नार्सिसिस्ट के रूप में मुहम्मद अपने अनुयायियों से अपनी बात मनवाता था। यह बता पाना कठिन है कि कौन किसे मूर्ख बना रहा था। मुहम्मद अपने दावों को लेकर निश्चिंत था- यहां तक कि जब भी आवश्यकता होती तो वह झूठ के मुलम्मे में एक आयत गढ़ देता था-और फिर जब लोग उसकी इन मनगढ़ंत व झूठी बातों पर भरोसा करने लगते तो वह आश्वस्त हो जाता था। परिणाम यह हुआ कि उसे लगने लगा कि उसके पास उन लोगों को जो उससे असहमति रखते हैं, सजा देने का दैवीय अधिकार है। वह अल्लाह की आवाज था और उसके विरोध का अर्थ अल्लाह का विरोध था। **वह झूठ बोलना अपना वैधानिक अधिकार मानता था। उसका मानना था कि वह झूठ महान उद्देश्यों के लिए बोल रहा है और इसलिए वह झूठ उचित है। जब उसने निरीह लोगों को लूटा, उनकी हत्याएं की तो उसके मन में कोई किंतु-परंतु नहीं था।** उसकी मारकाट इतनी सफल रही कि उसे लगा ये सब जिस तरह भी मिले, सब जायज है। वह अपने दिवास्वप्न में इतना डूबा था कि उसे अपने रास्ते में आने वाले किसी भी व्यक्ति की हत्या करना खराब नहीं लगता था। आगे दी गई कुरान की आयतें इसकी गवाही स्वयं दे रही हैं।

और जो कोई भी अल्लाह और उसके रसूल का हुक्म नहीं मानेगा और अपनी हद से बाहर जाएगा, उसे अल्लाह जहन्नुम की आग में झोंकेगा और वहां उसे जलालत भरी कठोर सजा मिलेगी। (कुरान. 4:14)

वे लोग जो इस्लाम व अल्लाह में विश्वास नहीं कर कुफ्र अख्तियार करते हैं और रसूल के हुक्म को नहीं मानते, उस दिन इच्छा करेंगे कि काश वह पेवंदे खाक हो जाते (दफन हो जाते) अर्थात उनके ऊपर की जमीन बराबर कर दी जाती। पर ये लोग अल्लाह से कोई बात उस दिन छुपा भी न सकेंगे। (कुरान. 4:42)

जो कोई भी अल्लाह और उसके रसूल का हुक्म नहीं मानता है, वह निश्चित ही जहन्नुम की आग में हमेशा जलता रहेगा। (कुरान. 72:23)

कामुकता, धार्मिक अनुभव और टैम्पोरल लोब हायपर एक्टिवेशन

हदीसों में मुहम्मद के यौन व्यवहारों का उल्लेख है। क्या TLE बीमारी यौन क्षमता पर भी प्रभाव डालती है? यदि ऐसा है और इसके प्रकाश में मुहम्मद की यौन आदतों के बारे में बताया जा सकता है तो हमारे पास इस बात का एक और साक्ष्य होगा कि वह TLE नामक बीमारी से पीड़ित था। स्नायुविज्ञान के विशेषज्ञ रॉन जोसफ का मानना है कि टीएलई का विश्लेषण करते हुए यौन व्यवहारों के बारे में जाना जा सकता है। वह लिखते हैं:

ऐसा नहीं है कि अंगतंत्र के उच्च स्तर और मस्तिष्क के निचले भाग में असामान्य उत्तेजक गतिविधि से लैंगिकता में परिवर्तन के साथ ही धार्मिक उन्माद गहरा होना दुर्लभ लक्षण हैं। यह ध्यान देने वाली बात है कि केवल आज के ही धर्म प्रचारक नहीं, बल्कि इब्राहीम, याकूब और मुहम्मद सहित पुराने समय के धार्मिक नेता अति कामुक हुए। इन सबने कई लोगों के साथ यौन संबंध बनाए, दूसरे की बीबियों के साथ यौन संबंध बनाए, **मुहम्मद और किंग दाऊद ने तो दूसरे की बीबियों को हासिल करने के लिए उनके पतियों की हत्याएं तक कीं।** कई नबियों

और मजहबी शख्सियतों में तो Kluver-Bucy सिंड्रोम के लक्षण साफ दिखे।

जैसे कि जानवरों का मैला[243] खाना, साथ ही मस्तिष्क के किसी भाग, विभ्रम उत्पन्न होने के साथ शरीर के अंगों में अति उत्तेजना होना व मिर्गी आना, पेशियों का तन जाना, पागलपन अथवा भाषागत विसंगति होना आदि जैसे लक्षण।

जहां मूसा को बोलने में समस्या होती थी, वहीं अल्लाह का रसूल मुहम्मद प्रत्यक्ष रूप से लिखना और पढ़ना नहीं सीख सका। (यह एक तरह की मानसिक विकृति है, जो पूरा या आंशिक रूप से लिखने में अक्षम बनाती है)। इसके अतिरिक्त अल्लाह के संदेश को प्राप्त करने के लिए मुहम्मद अचेतन हो जाता था और बेहोशी की अवस्था में पहुंच जाता था (आर्मस्ट्रांग 1994, लिंग्स 1983)। वास्तव में मुहम्मद ने पहली बार आध्यात्मिक-धार्मिक वार्तालाप तब किया जब सबसे बड़े फरिश्ते जिब्राईल ने उसे नींद से झकझोर कर उठाया और उसे इस तरह भींच लिया कि डर के मारे उसकी सांसें अटक गई थीं। बार-बार जोर से भींचने और मरोड़ने के बाद जिब्राईल ने मुहम्मद को आदेश दिया कि वह अल्लाह की वाणी कुरान बोले। यह मुहम्मद के साथ फरिश्ते जिब्राईल द्वारा की गई उन बहुत सारी घटनाओं में पहली थी। मुहम्मद के सामने जिब्राईल कभी-कभी प्रतिक्षण बदलने वाली दैत्याकार छवि लेकर प्रकट होता था।

अल्लाह या उसके फरिश्ते की आवाज के अनुसरण में मुहम्मद न केवल बोलने लगा, बल्कि वह करीब 23 सालों तक अल्लाह के विभिन्न प्रसंगों को यूं ही पढ़ना और जपना शुरू कर दिया। मुहम्मद के लिए यह अनुभव बेहद पीड़ादायी और विदारक था (आर्मस्ट्रांग 1994, लिंग्स 1983)। बताया जाता है कि मजहबी उन्माद के अतिरिक्त मुहम्मद के पास 40 आदमियों जितनी यौन ताकत थी और वह 9 बीबियों और जाने कितनी रखैलों के साथ सोता था, जिसमें एक युवा लड़की भी शामिल थी (लिंग्स 1983)। एक बार उसे जब झिड़का गया तो वह ध्यान में चला गया और फिर दावा करने लगा कि अल्लाह ने उससे कहा कि किसी और की बीबी उसकी बीबी बनेगी।

वह (मुहम्मद) इस बात के लिए भी कुख्यात था कि उसे अपार गुस्सा आता था और वह गैर-मुसलमानों, व्यापारियों और विरोध करने वालों को मार डालता था (या मार डालने का आदेश देता था)। जब अति कामुकता, अति मजहबी उन्माद, गुमसुम रहने, मिजाज में अचानक बदलाव और दैत्याकार फरिश्ते को देखने या सुनने का विभ्रम आदि के साथ इस तरह का व्यवहार हो तो यह स्पष्ट रूप से अंगतंत्र प्रणाली और मस्तिष्क के भीतरी भागों में स्नायुसंबंधी विकार की स्थिति की ओर संकेत करता है। यह विकार इन रहस्यमयी अनुभवों का मूल हो सकता है। वास्तव में मुहम्मद अवसाद की गंभीर बीमारी से भी पीड़ित था। एक बार तो उसने अवसाद की इसी अवस्था में चट्टान से कूदकर जान देने की कोशिश भी की थी यह प्रयास इसलिए, ताकि महादेवदूत जिब्राईल आकर उसे आत्महत्या करने से रोके।[244]

मुसलमानों में यह सामान्य धारणा है कि मुहम्मद के पास कई मर्दों की यौन क्षमता थी। यह धारणा कई हदीसों के आधार पर है। एक हदीस में मुहम्मद की नौकरानी सलमा के हवाले से कहा गया है: 'मुहम्मद की सभी 9 बीबियां उसके पास थीं। ये वो औरतें थीं, जो मुहम्मद के मरने तक उसकी बीबियां थीं। (मुहम्मद की कई ऐसी बीबियां भी थीं, जिन्हें उसने तलाक दे दिया था।) मुहम्मद रात में उन सबके साथ बारी-बारी से सोता था। जब एक बीबी के साथ निपटकर आता था तो अंगों को धोने के लिए मुझसे पानी मांगते थे। मैंने कहा, ओ अल्लाह के रसूल! क्या एक बार धो लेना काफी नहीं है। उन्होंने उत्तर दिया, बार-बार अंगों को धोना अच्छा और स्वच्छता के लिए है।'[245]

हालांकि अनुसंधान से यह निष्कर्ष निकलता है कि मुहम्मद की मर्दानगी का दावा बकवास है और सच

यह है कि अपने जीवन के आखिरी दो दशक में वह नपुंसक हो गया था। मुहम्मद के भीतर अतृप्त काम वासना थी और अपनी इस अतृप्त इच्छा को संतुष्ट करने के लिए वह बीबियों व रखैलों को सहलाकर और चूम-चाटकर ही काम चला लेता था, क्योंकि वह संभोग करने में समर्थ नहीं था।

नीदरलैंड के यूट्रेट विश्वविद्यालय में अनुसंधानों से पता चलता है कि दिमाग में उत्पन्न होने वाले तथाकथित सुखद-अहसास वाले रसायन एंडोजेनस ऑपिऑइड्स यौन भूख तो बढ़ाते हैं, लेकिन यौन क्षमता को घटा देते हैं।[246] एक और अध्ययन में अनुसंधानकर्ताओं ने पाया कि अतिवाद और अवसाद के मरीजों में उन्माद के दौरान ऑपिऑइड्स की सक्रियता काफी बढ़ी हुई होती है।[247] नार्सिसिस्ट के रूप में मुहम्मद का मिजाज अचानक बदल जाता था। कभी-कभी वह अति आनंदित और ऊर्जावान महसूस करता था तो कभी वह अवसाद की उस गहरी स्थिति में चला जाता था कि उसके मन में आत्महत्या के विचार आने लगते थे। ये निष्कर्ष बताते हैं कि मुहम्मद के पास अनेक युवा औरतें होने के बावजूद उसमें इतनी तीव्र यौनेच्छा क्यों रहती थी और उसकी अधिकतर बीबियों के बच्चे क्यों नहीं हुए। इससे साबित होता है कि मुहम्मद संभोग कर पाने में अक्षम था।

फिर भी मेरे इस सिद्धांत में एक भेद है, वह यह कि यदि मुहम्मद अपने बाद के जीवन में नपुंसक हो गया था तो जब वह 60 या इससे अधिक उम्र का था तो इब्राहीम नामक बच्चे का बाप कैसे बना? इब्राहीम मारिया नाम की घुंघराले बालों वाली सुंदर लौंडी (कोप्टिक यानी ईसाई गुलाम) से पैदा हुआ था। मुहम्मद की दूसरी बीबियां मारिया से जलती थीं और उसे पसंद नहीं करती थीं। मुझे संदेह था कि यह बच्चा इब्राहीम मुहम्मद का नहीं, बल्कि किसी और का था, पर इसका कोई साक्ष्य नहीं मिल रहा था। तभी मुझे इब्ने-साद द्वारा बताई गई एक घटना पढ़ने को मिली।

इब्ने-साद ने लिखा है कि मदीना में एक ईसाई (कोप्टिक) आदमी मारिया से मिलने जाया करता था। यह अफवाह फैल गई थी कि वह उसका प्रेमी था। चूंकि मुहम्मद की अन्य बीबियां मारिया से खार खाती थीं, इसलिए उसे मदीना के उत्तर में स्थित एक बाग में रखा गया। जब मारिया और उस ईसाई व्यक्ति के संबंधों की बात उड़ती-उड़ती मुहम्मद तक पहुंची तो उसने अली को उस ईसाई व्यक्ति की हत्या करने के लिए भेजा।

जब उस ईसाई व्यक्ति ने अली को अपनी ओर आते देखा तो उसने तुरंत अपने नीचे के कपड़े हटा दिए और अली ने देखा कि उसके पास यौनांग नहीं थे, फिर अली ने उसे छोड़ दिया।[248] दरअस्ल, लोगों की जुबान बंद करने के लिए ही यह सुविधाजनक बहाना बनाया गया, ताकि लोग मारिया के उस प्रेमी की बात करना बंद कर दें। मुहम्मद की सबसे छोटी बीबी आयशा की मदीना के सफवान नामक युवक से प्रेम संबंध होने की बातें भी हवाओं में तैर रही थीं। इस बात को लेकर हल्ला-गुल्ला भी हुआ। आयशा ने पहले तो इस आरोप को ही झूठा बताया, पर जब बात बढ़ने लगी तो उसने दावा किया कि सफवान हिजड़ा था।

तबरी ने उस ईसाई व्यक्ति का उल्लेख यूं किया है:

अल्लाह के रसूल के पास मअबूर नाम का एक हिजड़ा था, जो उन्हें मकोकस ने दो गुलाम लड़कियों के साथ भेंट किया था। इनमें से एक लड़की मारिया थी, जिसे मुहम्मद ने अपनी रखैल बना लिया था और दूसरी लड़की सीरीन थी। मुहम्मद ने सीरीन को तब हस्सान बिन साबित को दे दिया, जब सफवान बिन अल-मुअत्तल ने उनके विरुद्ध अपराध किया। मकोकस ने दोनों गुलाम लड़कियों को मदीना भेजते समय इस हिजड़े को उनकी पहरेदारी के लिए लगाया था। जब वे पहुंचे तो मुहम्मद को ये लड़कियां भेंट की। यह कहा जाता है कि यही हिजड़ा था, जिसके साथ मारिया के यौन संबंध होने के आरोप लगे थे और मुहम्मद ने अली को इसे ही मारने के लिए भेजा था। जब उसने अली को देखा तो उसके इरादों को समझ गया। फिर उसने खुद को नंगा कर लिया और तब यह बात साफ

हुई कि उसके आदमियों वाले यौनांग पूरी तरह काटकर हटा दिए गए थे। इसके बाद अली ने उसे छोड़ दिया।[249]

उस ईसाई व्यक्ति को निर्दोष सिद्ध करने के लिए उसके हिजड़ा निकलने की कहानी पूरी तरह गढ़ी गई है। सोचिए जरा, कि अल्लाह के रसूल ने उसे मारने के लिए अली को क्यों भेजा था? उस आदमी को यह कैसे पता चला कि अली उसे मारने ही आ रहा है? एक और जगह कहा गया है कि माबूर बहुत वृद्ध हो चुका था। यह भी पाठकों को उलझाने के लिए ही लिखा गया। मकोकस ने मअबूर को मुहम्मद को उपहार के रूप में दिया था। वह उस लंबी यात्रा के दौरान मारिया और उसकी बहन सीरीन की सुरक्षा के लिए लगाया गया था? यह बात पल्ले नहीं पड़ती है कि मकोकस ने इन लड़कियों की सुरक्षा के लिए एक वयोवृद्ध व्यक्ति को लगाया होगा। ऐसा करना एक उभर रहे तानाशाह का अपमान करना होता, खासकर तब जबकि मकोकस इस तानाशाह की ख़ुशामद करना चाहता था। दूसरे व्यक्ति के साथ मारिया के यौन संबंध को छिपाने और इससे हो रही बदनामी से बचने के लिए इस तरह की कहानियां गढ़ी गईं। खासकर ऐसे पितृसत्तात्मक समाज में जहां सम्मान के लिए हत्या करना आज भी चलन में है, इस तरह के किस्से गढ़ना सामान्य है। मुहम्मद ने लिखित रूप से यह दावा किया है कि जब मारिया की कोख से इब्राहीम पैदा हुआ तो फरिश्ते जिब्राईल ने 'अस्सलाम अलैकुम या अब्बा इब्राहीम' कहते हुए सलाम किया और उसे बताया कि वह उसका बाप है।

यह हदीस बाद के दिनों में जालसाजी के लिए लिखी गई होगी, ताकि मुहम्मद की बीबियों के दूसरे मर्दों के साथ संबंधों पर पर्दा डाला जा सके। प्रश्न यह उठता है, जिब्राईल को इसकी पुष्टि क्यों करनी पड़ी कि इब्राहीम का बाप मुहम्मद है? क्या मुहम्मद को इब्राहीम का बाप होने पर संदेह था और जिब्राईल द्वारा उसे 'अब्बा इब्राहीम' अर्थात इब्राहीम का बाप पुकारने की कहानी इन बातों पर विराम लगाने के लिए गढ़नी पड़ी? मुहम्मद के लिए यह झूठ बोलना सुविधाजनक था। उसने इब्राहीम को अपनी औलाद होने का दावा किया, ताकि उसकी मर्दानगी पर कोई सवाल न उठाए जाएं। खदीजा के अलावा मारिया ही वह औरत थी, जिससे मुहम्मद को एक बेटा हुआ, लेकिन इस तथ्य के बावजूद मुहम्मद ने कभी मारिया से शादी नहीं की। जबकि मारिया बेहद सुंदर थी।

इब्ने-साद बताता है कि जब इब्राहीम पैदा हुआ तो मुहम्मद उसे आयशा के पास ले गया और बोला, 'देखो, यह बिलकुल मेरी तरह दिखता है।' आयशा ने कहा, 'मुझे तो ऐसा कुछ नहीं लग रहा।' तब मुहम्मद ने कहा, 'क्यों, तुम्हें इसके गोरे और भरे हुए गाल नहीं दिख रहे?' इस पर आयशा ने जवाब दिया, 'सभी बच्चों के गाल फूले हुए होते हैं।'[250] निश्चित रूप से यह लड़की आयशा बहुत सयानी थी।

यह दावा कि मुहम्मद के पास 40 मर्दों के बराबर यौन ताकत थी, बिलकुल झूठ है। यह दावा इसलिए किया गया है ताकि इस तथ्य को छिपाया जा सके कि मुहम्मद नपुंसक था। मुहम्मद को खदीजा से सात बच्चे थे और खदीजा उस वक्त ही 40 साल की थी, जब उसने उससे शादी की थी। खदीजा से उसके बच्चे तब हुए थे, जब वह 25 से 35 साल की अवस्था में था। जीवन के शेष 10 सालों में मुहम्मद के पास करीब 20 युवा बीबियां और रखैलें थीं, पर इनमें से किसी से कोई बच्चा नहीं हुआ।

फ्रांसीसी स्नायुविज्ञान शास्त्री हेनरी जीन पास्कल गैसटाउट (1915-1995) कहते हैं, '1950 से ही अनुसंधानकर्ताओं ने यह पता लगा लिया है कि इपीलैप्सी से पीड़ित आदमी में यौनेच्छा तो तीव्र होती है, लेकिन उसका लिंग शिथिल होता है।'[251] और व्यक्ति में प्रिचर्ड प्रोलैक्टिन नामक हार्मोन के तत्व के स्तर को बढ़ा देता है, जिससे यौनेच्छा बढ़ जाती है, पर इपीलैप्सी का दौरा आने पर आदमियों में यौन अक्षमता व लिंग शिथिलता आ जाती है।[252]

हमने पहले ही पढ़ा है कि मुहम्मद कल्पना करता था कि वह संभोग कर रहा है, जबकि वास्तव में वह संभोग नहीं कर रहा होता था। **एक और हदीस यह बताती है कि मुहम्मद अपनी बीबियों के साथ संभोग नहीं करता**

था, बल्कि उन्हें केवल सहलाता और चूमता-चाटता था। इसमें लिखा है कि मुहम्मद हर रात अपनी सभी बीबियों के पास जाता था और उनसे संभोग नहीं करता था, बल्कि केवल चूमता-चाटता था। आयशा के हवाले से कहा गया है, 'तुममें से किसी के पास रसूल जैसा आत्मनियंत्रण नहीं है। देखो वह अपनी बीबियों को खूब चूमते-चाटते हैं, पर संभोग करने से खुद को रोक लेते हैं।'[253] आयशा एक छोटी बच्ची थी। वह संभवतः यह जान नहीं पाती थी कि मुहम्मद आत्मनियंत्रण नहीं कर रहा है, बल्कि वह संभोग करने में असमर्थ है, इसलिए बीबियों को केवल चूम-चाटकर रह जाता है। आयशा ने एक और जगह कहा है, 'मैंने रसूल के लिंग को कभी नहीं देखा।'[254]

मैं यह निर्णय पाठकों पर छोड़ता हूं कि आयशा ने ऐसा क्यों कहा होगा।

क्या इसका यह अर्थ नहीं निकलता है कि मुहम्मद में काम (सैक्स) को लेकर उतनी उत्कट इच्छा नहीं रहती थी? अन्यथा वह यौन संबंध बनाने के अवसरों को छोड़ता क्यों? काम के प्रति उसकी अतृप्त इच्छा ही यह बताती है कि उसके हरम में इतनी सारी औरतें होने के बावजूद उसकी यौन पिपासा शान्त नहीं हुई। एक हदीस में कहा गया है कि जब उसने बनू जौन कस्बे पर हमला किया तो उसके सामने जौनिय्या नाम की लड़की आया के साथ लाई गई। रसूल ने उससे कहा, 'तुम स्वयं को मुझे उपहार स्वरूप दे दो। (आज की भाषा में कहें तो इसका अर्थ हुआ कि मुझे अपने साथ हमबिस्तर होने दो।)' उस लड़की ने जवाब दिया, 'एक राजकुमारी किसी अदने से आदमी को खुद को कैसे सौंप सकती है?' तब गुस्से में मुहम्मद ने उसे मारने के लिए हाथ उठाया तो वह चीख पड़ी, 'मैं तुमसे कह रही हूं कि अल्लाह के वास्ते छोड़ दो।'[255] मुहम्मद इस पर रुक गया। क्षणभर के लिए उसमें ग्लानि की भावना आई और अपने एक अनुयायी को हुक्म दिया कि उस लड़की को सफेद लिनेन के दो कपड़े दे। यह स्पष्ट है कि मुहम्मद और उसका लुटेरा गिरोह उन कपड़ों को अपने साथ नहीं लाया था, न ही वे खरीदे गए थे, बल्कि उसी लड़की के घर से या उसके ही कबीले के लोगों से लूटे गए थे।

जौनिय्या अवश्य बच्ची रही होगी, तभी उसके साथ एक आया थी। उसने यह कहकर कि 'एक राजकुमारी खुद को किसी अदने से आदमी के हवाले क्यों करे', एक ऐसे इंसान को साहसी उत्तर दिया था, जो उसकी हत्या करने की ताकत रखता था। इससे भी पता चलता है कि वह एक छोटी बच्ची थी। मुहम्मद ने इस लड़की से कहा था कि वह खुद को उसको सौंप दे। पर अनुवादक ने चालाकी से इस वाक्य के साथ कोष्ठक में शादी शब्द जोड़ दिया। जबकि अरबी के मूल पांडुलिपि में यह शब्द हिबा है। हिबा का अर्थ उपहार होता है और यहां इसका अर्थ फ्री सैक्स से है। जब कोई औरत किसी आदमी के सामने खुद को हिबा के रूप में पेश करती है तो आज के अर्थों में कहा जा सकता कि वह एक रात के लिए उसके साथ हमबिस्तर होने जा रही है। हिबा शब्द शादी के लिए कभी इस्तेमाल नहीं हुआ। मुहम्मद ने अपने हाथ उठाए, ताकि उसकी पीठ पर हाथ फेरकर उसे शांत कर सके। उस लड़की को शांत करने की जरूरत क्या थी? जाहिर है, मुहम्मद ने उस लड़की से जो कहा था, वह अपमानजनक था और इसलिए वह गुस्से में आ गई थी। वह लड़की क्यों चीखी कि 'अल्लाह के वास्ते छोड़ दो?' यदि मुहम्मद उसे थपकी देकर केवल शांत कर रहा था तो उसे अल्लाह का वास्ता देकर छोड़ने की बात कहने की क्या आवश्यकता थी? जैसा कि अनुवादक चाहता है कि हम यही विश्वास करें कि मुहम्मद उस लड़की को प्यार से शांत करने की कोशिश कर रहा था, जबकि सच्चाई यह थी कि वह उसे जोर से पीट रहा था। वह लड़की डर के मारे क्यों चीखी थी? जब लड़की चीखी तो मुहम्मद ने अपने हाथ हवा में रोक दिए और उसे नहीं मारा। फिर इसके बाद उसे अपराध बोध हुआ और उसने उसी से लूटे हुए दो वस्त्र उसे वापस कर दिए। बात स्पष्ट है और कोई भी समझदार इंसान अनुमान लगा सकता है कि वास्तव में क्या हुआ होगा। **अनुयायियों द्वारा लिखे गए मुहम्मद के किस्सों को गहराई से पढ़िए तो सामने**

आ जाता है कि इन लोगों ने एक राक्षस को पवित्र इंसान साबित करने की पूरी कोशिश की है।

विशेषकर जब अरबी में लिखे गए उन किस्सों का अनुवाद किया गया तो मुहम्मद नामक राक्षस के कुकृत्यों को छिपाने की और अधिक कोशिश की गई। आपको मुहम्मद के नामर्द अर्थात नपुंसक होने पर संशय होता है या यह केवल अनुमान लगता है तो आपको यह हदीस पढ़नी चाहिए। आपका संदेह दूर हो जाएगा।

इब्ने-साद उद्धरण देता है, 'अल्लाह के रसूल कहा करते थे कि मैं उन लोगों में से था, जिनके पास संभोग करने की क्षमता न के बराबर होती है। तब अल्लाह ने मुझे पके हुए गोश्त का एक कटोरा भेजा। जबसे मैंने इसे खाया, मुझे वह ताकत मिल गई कि जो चाहूं, वो कर सकता हूं।'[256]

यह वास्तव में मुहम्मद द्वारा अपने मुख से अपनी कमजोरी स्वीकार किया जाना है। अब आप स्वयं निर्णय कीजिए कि क्या इस कपोल कल्पित किस्से पर विश्वास किया जा सकता है? क्या अल्लाह को अपने प्रिय रसूल के नामर्दी के रोग की इतनी चिंता थी कि उसने गोश्त का कटोरा भेजा, ताकि उसकी नपुंसकता दूर की जा सके? अथवा इसका एक अर्थ यह भी हो सकता है कि अहंकारोन्मादक पुरुष सत्तावादी रसूल केवल डींगे हांक रहा था और अपनी नपुंसकता छिपाने का प्रयास कर रहा था, जैसा कि अधिकांश अरबी पुरुष करते हैं। क्योंकि वे यौन क्षमता को मर्दानगी का प्रतीक मानते हैं और अपनी इस क्षमता को लगातार बढ़ा-चढ़ाकर पेश करते हैं।

यहां प्रश्न यह है कि अल्लाह ने मुहम्मद के सिर में होने वाली गंभीर पीड़ा (माइग्रेन) को दूर करने के लिए कोई चीज क्यों नहीं भेजी? कौन से जानवर का गोश्त ऐसा है, जिसमें यौनवर्द्धक यानी वियाग्रा का प्रभाव होता है? एक अन्य हदीस में मुहम्मद कहता है, 'जिब्राईल ने मुझे एक गोश्त का छोटा सा कटोरा लाकर दिया। मैंने उसे खाया और मुझमें एक साथ 40 मर्दों जितनी यौन ताकत आ गई।'[257]

हदीसों के अन्य किस्सों की तरह यह किस्सा भी गढ़ा गया, ताकि यह बात छिपाई जा सके कि मुहम्मद में यौन क्षमता कम थी। इतने अहंकारी नार्सिसिस्ट को नामर्द के रूप में संभवतः नहीं देखा जाएगा। मुहम्मद के जीवन के रहस्यों को जानना हो तो उसकी आत्मकथा की गहराई से पढ़नी चाहिए। बड़ी विचित्र बात है कि जिस दिन इब्राहीम की मौत हुई, मुहम्मद मस्जिद गया और वहां इबादत करने के बाद उसने जो उपदेश दिया, उसमें यह भी बताया कि व्यभिचार और व्यभिचारियों को जहन्नुम में क्या सजा मिलेगी। उसने मस्जिद के मंच से कहा:

ओ मुहम्मद के अनुयायियो! अल्लाह के वास्ते! कोई नहीं है, जिसमें उतनी गैरत (शर्मो-हया) हो, सिवाय अल्लाह (पढ़ें मुहम्मद) के। जैसा कि उसने अपने मर्द और औरत दोनों गुलामों को व्यभिचार (अवैध संबंध बनाने) से मना किया है। ओ, मुहम्मद के अनुयायियो! जब तुम्हें पता चलेगा कि मैं वह सब जानता हूं तो तुम सब हंसने के बजाय रोओगे।[258]

गैरत किसी व्यक्ति की लाज-शर्म और सम्मान को कहते हैं। व्यक्ति की गैरत तब आहत होती है जब उसकी किसी चीज या उसके किसी व्यक्ति पर हाथ डाला जाए। उदाहरण के लिए, यदि आप किसी मुसलमान की बीबी, बहन या बेटी को छूते हैं अथवा वे आपसे मुहब्बत का रिश्ता बना लें तो उसकी गैरत पर आंच आती है। परिणामतः वह व्यक्ति अपनी इज्जत को फिर से बनाने के लिए पलटवार करेगा। यदि उसे लगेगा कि उसकी इज्जत अधिक चली गई है तो वह या तो आपकी हत्या कर सकता है या आपसे प्यार करने वाली उस महिला या रिश्तेदार की हत्या कर सकता है।

तब कहीं जाकर उसका सम्मान लौटेगा और जो बदला नहीं लेते हैं, माना जाता है कि उनमें गैरत या लाज-शर्म नहीं बची है। ध्यान दीजिए, मुहम्मद अल्लाह की गैरत की बात कर रहा है। यदि अल्लाह की कोई महिला रिश्तेदार ही नहीं हैं तो उसकी गैरत पर आंच कैसे आ सकती है? यह पहचान पाना मुश्किल नहीं है कि मुहम्मद ने स्वयं को

ही अल्लाह के रूप में देखा था। वह अपनी स्वयं की गैरत की बात कर रहा था। वह मारिया के चरित्र पर संदेह करता था। अपने बच्चे को दफनाने के वक्त व्यभिचारियों की सजा के बारे में उग्र और बेतुका उपदेश वह और किसी को नहीं, बल्कि मारिया को दे रहा है। **अल्लाह और कोई नहीं, बल्कि मुहम्मद की सनक और अहंकार था।** तब इस पर और जोर देने के लिए मुहम्मद ने कहा, 'मुझे अभी जहन्नुम की आग दिखाई दी है और इससे पहले मैंने इतना भयानक और बुरा मंजर कभी नहीं देखा था।'[258]

167 Sahih al-Bukhari, Volume 6, Book 60, Number 448:
168 Sahih al-Bukhari Volume 1, Book 1, Number 2
169 Majma'uz Zawaa'id with reference to Tabraani
170 Tabaqat Volume 1 page 184 Persian translation
171 Ibid.
172 Bukhari Volume 1, Book 1, Number 3:
173 Sahih Muslim Book 001, Number 0301:
174 Tabari VI:67
175 Sahih Bukhari Volume 9, Book 87, Number 111
176 Tabaqat Vol. 1. p. 119
177 Tirmidhi Hadith, Number 1524
178 Sira Ibn Ishaq, p. 105
179 Sahih Bukhari Volume 2, Book 22, Number 301
180 Sahih Bukhari Volume 7, Book 71, Number 660:
181 Sahih Muslim Book 007, Number 2654:
182 Sahih Bukhari Volume 6, Book 60, Number 451:
183 Bukhari Volume 6, Book 60, Number 478
184 Sira Ibn Ishaq p. 106
185 Often mischievous form of spirits in Arab mythology, capable of appearing in human and animal forms.
186 Scott Atran, NeuroTheology: Brain, Science, Spirituality, Religious Experience by Chapter 10 http://jeannicod.ccsd.cnrs.fr/docs/00/05/32/82/RTF/ijn_00000110_00.rtf
187 Bukhari:Volumne 4, Book 54, Number 455
188 Qur'an, 72:8; 37:6-10; 63:5.

189 Muhammad Husayn Haykal (1888, 1956): The Life of Muhammad, translated by Isma'il Razi A. al-Faruqi. ISBN: 0892591374 Chapter 8: From the Violation of the Boycott to al Isra'.
190 /www.mental-health-matters.com/articles/article.php?artID=92
191 Dead Man's Mirror by Agatha Christie - in "Hercule Poirot The Complete Short Stories" - Great Britain, HarperCollins Publishers, 1999
192 http://samvak.tripod.com/faq48.html
193 http://samvak.tripod.com/journal71.html
194 Theophanes, 1007, Chronographia, vol. 1, p334
195 www.emedicine.com/NEURO/topic365.htm
196 Sahih Bukhari, Volume, Book 26, Number 652
197 Cushing: Brain 1921-1922 xliv p341
198 Kennedy: Arch Int Med 1911 viii p317.
199 Sirat Rasoul p. 77
200 www.nlm.nih.gov/medlineplus/ency/article/001399.htm
201 www.epilepsy.dk/Handbook/Mental-complications-uk.asp
202 Ibid.
203 Qur'an, 42:7. The same claim is made in Qur'an, 6:92
204 “Nay, it is the Truth from thy Lord, that thou mayest admonish a people to whom no warner has come before thee: in order that they may receive guidance.”(Qur'an 32:3) and In order that thou mayest admonish a people, whose fathers had received no admonition, and who therefore remain heedless (of the Signs of Allâh). (Qura'an, 36:6)
205 A.S. Tritton, Islam: Belief and Practice 1951, p. 16.
206 Sahih Bukhari Volume 2, Book 22, Number 301.
207 Bukhari, Volume 4, Book 56, Number 763.
208 Sira: Ishaq:182
209 Qur'an: Sura 13, Verse 62
210 Some years later, when Muhammad came to power, he reduced children to orphans by killing their fathers, enslaving their mothers and taking their belongings.
211 The allusion is to Surah 40:46, 'Cast the family of Pharaoh into the worst of all punishments
212 Sahih Bukhari Volume 1, Book 6, Number 301 reports Muhammad saying “I have seen that the majority of the dwellers of Hell-fire were you (women)." They asked, "Why is it so, O Allâh's Apostle ?" He replied, "You curse frequently and are ungrateful to your husbands. I have not seen anyone more deficient in intelligence and religion than you. A cautious sensible man could be led astray by some of you." The women asked, "O Allâh's Apostle! What is deficient in our intelligence and religion?" He said, "Is not the evidence of two women equal to the witness of one man?" They replied in the affirmative. He said, "This is the deficiency in her intelligence. Isn't it true that a woman can neither pray nor fast during her menses?" The women replied in the affirmative. He said, "This is the deficiency in her religion."
213 Some years later in Medina Muhammad fell in love with Zayd's wife and made his lust known. Zayd felt compelled to divorce his wife so Muhammad could marry her.
214 Bukhari Volume 9, Book 93, Number 608:
215 www.emedicine.com/neuro/topic658.htm
216 Newsweek May 7, 2001, U.S. Edition; Section: SCIENCE AND TECHNOLOGY; Religion
And The Brain By Sharon Begley With Anne Underwood
217 http://web.ionsys.com/~remedy/Persinger,%20Michael.htm
218 Ken Hollings http://www.channel4.com/science/microsites/S/science/body/exorcism.html
219 Michael Persinger in Report on Communion by Ed Conroy http://www.futurepundit.com/archives/000721.html
220 Ken Hollings http://www.channel4.com/science/microsites/S/science/body/exorcism.html
221 Ibid
222 How We Believe, 2000, Michael Shermer p.66
223 www.physorg.com/news77992285.html, published 17:31 EST, September 20, 2006, copyright 2006 by United Press International, accessed June 21, 2007
224 a pre-Islamic monotheistic sect propagated in Arabia to which Khadijah belonged
225 Bukhari Volume 1, Book 1, Number 3
226 http://www.tamu.edu/univrel/aggiedaily/news/stories/04/070104-3.html
227 National Geographic: “Did Animals Sense Tsunami Was Coming?” http://news.nationalgeographic.com/news/2005/01/0104_050104_tsunami_animals.html
228 Bukhari:Volume4, Book 54, Number 440
229 229 Platt, Charles. (1980). Dream Makers: The Uncommon People Who Write Science Fiction. Berkley Publishing. ISBN 0-425-04668-0
230 Ibid
231 The others are Divine Invasion and The Transmigration of Timothy Archer.
232 Divine Invasion , A Life of Philip K. Dick by Lawrence Sutin, p.264, published _____

233 Ibid. p.269
234 www.pbs.org/wgbh/nova/transcripts/2812mind.html
235 Acts 9:1-9.
236 2 Corinthians 12:7-9
237 Theresa, Saint of Avila (1930) Interior castle. London: Thomas Baker p. 171.
238 Sackville-West 1943, The Eagle and the Dove : a Study in Contrasts - St Teresa of Avila,, St Therese of Lisieux
239 www.utas.edu.au/docs/humsoc/kierkegaard/docs/Kierkepilepsy.pdf
240 Epilepsy.com, “Famous People with Epilepsy”, at www.epilepsy.com/epilepsy/famous.html, Topic Editor: Steven C. Schachter, M.D., Last Reviewed 12/15/06, accessed June 21, 2007
241 Dr. Jerome Engel, Seizures and Epilepsy:, F. A. Davis Co., Philadelphia, 1989.
242 www.epilepsy.com/epilepsy/famous.html
243 Muhammad prescribed camel urine for stomachache. He certainly must have drauk it himself. Camel urine is sold in Islamic countries as remedy, even today.
244 The Limbic System And The Soul From: Zygon, the Journal of Religon and Science (in press, March, 2001) by Rhawn Joseph, Ph.D. http://brainmind.com/BrainReligion.html
245 Tabaqat Volume 8, Page 201
246 W. R. Van Furth, I. G. Wolterink-Donselaar and J. M. van Ree. Department of Pharmacology, Rudolf Magnus Institute, University of Utrecht, The Netherlands http://ajpregu.physiology.org/cgi/content/abstract/266/2/R606
24 www.ncbi.nlm.nih.gov/entrez/query.fcgi?cmd=Retrieve&db=PubMed&list_uids=6271019&d opt=Abstract
248 Tabaqat,. Volume 8, Page 224
249 The History of Al-Tabari: The Last years of the Prophet, translated and annotated by Ismail K. Poonawala [State University of New York Press (SUNY), Albany 1990], Volume IX, p. 147
250 Tabaqat Volume I, page 125
251 Gastaut H: So-called psychomotor and temporal epilepsy: a critical study. Epilepsia 1953; 2: 59-76.
252 Pritchard P: Hyposexuality: a complication of complex partial epilepsy. Trans Am Neurol Assoc 1980; 105: 193-5.
253 Sahih Bukhari Volume 1, Book 6, Number 299.
254 Tabaqat Volume 1, page 368
255 Bukhari Volume 7, Book 63, Number 182:
256 Tabaqat Volume 8, Page 200
257 Ibid.
258 Bukhari, Volume 2, Book 18, Number 154:
259 Bukhari, Volume 1, Book 8, Number 423:

अध्याय
4

अन्य मानसिक विकार

नार्सीसिज्म के साथ अक्सर कई विकार पैदा होते हैं। इसी तरह चिकित्सीय भाषा में कहें तो टीएलई से पीड़ित मरीज में सामान्यत: अनेक मनोवैज्ञानिक रोग पाए जाते हैं। इस अध्याय में हम मुहम्मद के मनोविकारों को इस पहलू से जानने का प्रयास करेंगे। इस बात के तमाम संकेत हैं कि मुहम्मद ऑब्सेसिव–कम्पलसिव डिस्ऑर्डर से ग्रस्त था।

ऑब्सेसिव-कम्पलसिव डिस्ऑर्डर

कनाडा के मानसिक स्वास्थ्य एसोसिएशन के अनुसार, सनक और जिद भरे कई विकार (ऑब्सेसिव–कम्पलसिव डिस्ऑर्डर–ओसीडी) मनुष्यों में मानसिक परेशानी या चिंता पैदा करते हैं। यह चिकित्सीय विकारों का समूह होता है, जो इंसान के विचारों, व्यवहार, भावनाओं और संवेदना पर प्रभाव डालता है।

सामूहिक रूप से ये समस्याएं मानसिक स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं में सर्वाधिक पाई जाती हैं। ऐसा अनुमान है कि दस में हर एक व्यक्ति अपने जीवन में कभी न कभी इस तरह की समस्याओं की चपेट में आता ही है। इस समस्या से पीड़ित व्यक्ति के मन में ऊलजुलूल विचार आते हैं और वह उनमें उलझा रहता है। ये विचार उन व्यक्तियों को मजबूरी में उन ऊलजुलूल कार्यों को करने की ओर ले जाता है। कभी–कभी तो दिन में कई घंटों तक वह ऐसे सनक भरे कार्यों को करता रहता है। इस समस्या से पीड़ित व्यक्ति का गुमसुम रहना, दुखी रहना, हर बात में शक करना, अंधविश्वासी होना और रुढ़ियों को लेकर लकीर का फकीर होने की समस्या आम है। ये विकार तब होता है जब दुख या संताप लंबे समय तक बना रहे और व्यक्ति रुढ़ियों में इस कदर जकड़ा रहे कि वो उसके सामान्य जीवन पर असर डालने लगे।

ओसीडी तब होता है जब किसी के मन में दुख गहरे बैठ जाए और वह व्यक्ति कुछ खास हरकतों अथवा कर्मकांड के प्रति सनकी की तरह इतना आग्रही हो जाए कि इससे उसका जीवन प्रभावित होने लगे। यह कुछ ऐसा होता है, जैसे कि मान लीजिए मस्तिष्क विनाइल का बना हुआ रिकार्ड है तो जैसे यदि रिकार्ड पर खरोंच लग जाए तो रिकार्ड प्लेयर पर चलाने पर सूई एक जगह बार–बार अटक जाती है और गाने का कोई विशेष भाग बार–बार बजने लगता है।

किसी चीज के प्रति अनावश्यक रूप से आग्रही होने, तर्कहीन व निराधार भावों, विचारों, कल्पनाओं और संवेगों का लगातार बने रहना मनोविकार होता है। सामान्य ओसीडी आदतें अशुद्धता, संदेह और परेशान करने वाली यौनिक अथवा धार्मिक विचार के इर्दगिर्द घूमती हैं। अक्सर किसी व्यक्ति में भय, घृणा और संदेह अथवा कुछ खास

गतिविधियों को लेकर ऐसी धारणा पाल लेने के कारण ऐसी सनक चढ़ जाती है कि व्यक्ति इन हरकतों को बार–बार करता है। ओसीडी से ग्रस्त लोग अपनी सनकी गतिविधियों को बारंबार और निश्चित तरीके से करके खुद को हल्का करने की कोशिश करते हैं। ओसीडी से पीड़ित बच्चों को कई और मनोविकारों की चपेट में आने की आशंका होती है। इन बच्चों में बात–बात पर डरने, समाज से दूर भागने की प्रवृत्ति, अवसाद, सीखने में कठिनाई महसूस करना, पेशियों में खिंचाव महसूस करने की समस्या, विघटनकारी व्यवहार और स्वयं को कुरूप मानने (काल्पनिक कुरूपता) जैसी समस्याएं आ सकती हैं।[260]

उपरोक्त परिभाषाओं के आधार पर यह माना जा सकता है कि मुहम्मद उद्वेग संबंधी मनोविकार से भी पीड़ित था। वजू कैसे करना है, कितनी बार नमाज पढ़नी है और किस तरह पढ़नी है, इन बातों को लेकर वह लकीर का फकीर था। उसने इसी के चलते छोटी–छोटी बातों जैसे चेहरा कैसे धोएं, नाक कैसे धोएं, कान व हाथ कैसे धोएं और किस क्रम में ये काम करें आदि के बारे में भी विस्तार से बताया है। हालांकि ये सारी बातें निरर्थक हैं, लेकिन उसके लिए ये बहुत महत्वपूर्ण थीं। मुहम्मद की इन बातों को जानकर यह समझना कठिन नहीं है कि वह ओसीडी से पीड़ित था। ओसीडी से पीड़ित व्यक्ति प्रतिरूप और संख्याओं को लेकर आग्रही होता है। ऐसे लोग सम संख्या अथवा विषम संख्या, दोनों में से किसी एक को प्राथमिकता देते हैं। मुहम्मद संख्या 3 को लेकर बड़ा आग्रही था। बहुत से ऐसे कर्मकांड हैं, जो मुसलमानों को तीन बार करना आवश्यक होता है। इसके पीछे कोई तार्किक कारण नहीं है, सिवाय इसके कि यह मुहम्मद की सुन्नत पर आधारित है।

मुसलमानों को नमाज पढ़ने से पहले निम्नलिखित चीजें करनी अनिवार्य होती हैं

- इस इरादे का ऐलान करो कि यह कार्य इबादत के मकसद से है।
- पानी से तीन बार कुल्ला करो।
- नाक के दोनों छिद्रों में तीन बार पानी डालकर साफ करो।
- चेहरे को तीन बार धोओ।
- दाहिनी बांह को तीन बार कोहनी तक और फिर बाईं बांह को कोहनी तक तीन बार धोओ।
- भीगे हाथ से पूरे सिर अथवा इसके किसी भाग को एक बार साफ करो।
- तर्जनी उंगली से कान के भीतर के भाग को साफ करो और अंगूठे से बाहरी भाग को। यह भीगी उंगलियों से किया जाना चाहिए।
- भीगे हाथों से गले के चारों ओर साफ करो।
- दाहिने पांव से शुरू कर दोनों पांव को घुटनों तक तीन बार धोओ।

तीन बार धोने का क्या मतलब है? सिर, गले या पांव को भीगे हाथों से पोंछने का क्या तर्क है? पहले दाहिने हाथ को ही क्यों धोएं? ये सब बेसिरपैर के मजहबी कर्मकांड हैं, जिसका स्वच्छता या आध्यात्मिकता से कोई लेना–देना नहीं है।

कर्मकांड को लेकर मुहम्मद की सनक आगे और स्पष्ट होगी। इन कर्मकांडों को तयम्मुम कहा जाता है। जब पानी उपलब्ध न हो अथवा किसी कारण से पानी का उपयोग नहीं किया जा सकता हो तो ऐसी स्थिति में तयम्मुम की व्यवस्था की गई। यह निम्न तरीके से किया जाता है:

- दोनों हाथों को मिट्टी, बालू या पत्थर से हल्का सा रगड़ो।
- फिर दोनों हथेलियों को आपस में मिलाओ और फिर चेहरे को उसी तरीके से पोंछो जैसा कि वजू में किया जाता है।
- दोनों हथेलियों को फिर रगड़ो और बाएं हाथ से दाहिने हाथ को कुहनी तक और दाहिने हाथ से बाएं हाथ को कुहनी तक पोंछो।

ये नियम बेतुके हैं। इसी तरह से नमाज पढ़ते समय किए जाने वाला कियाम (खड़ा होना), सुजूद (सिर को जमीन से सटाना), रुकू (झुकना) और जलसा (बैठना) भी बेतुके नियम हैं। इस्लाम ऐसे नियमों से भरा पड़ा है जो प्रतिरूप और संख्या को लेकर मुहम्मद की सनकों को बयान करते हैं और इससे पता चलता है कि वह ओसीडी से ग्रस्त था।

नीचे वे कर्मकांड दिए गए हैं, जिन्हें मुहम्मद की सुन्नत माना जाता है और मुसलमानों को इसका पालन पूरी बारीकी से करना होता है। हालांकि इन सबका कोई मतलब नहीं है, लेकिन चूंकि यह मुहम्मद से जुड़ा है, इसलिए इनका पालन न करना मुहम्मद की तौहीन मानी जाती है और ऐसा करना सजा का हकदार बनाता है, जबकि इसका अक्षरश: पालन करने को सबाब मिलने वाला माना जाता है।

- फर्श पर बैठना और खाना फ़र्श पर बैठ कर खाना
- दाहिने हाथ से खाना खाना
- जो सामने है, उसे एक किनारे से खाना
- खाने से पहले जूते उतारना
- खाते समय दोनों घुटनों को जमीन पर रखना अथवा एक घुटना ऊपर अथवा दोनों घुटने ऊपर रखना
- खाते समय चुप नहीं रहना चाहिए।
- तीन उंगलियों से खाना
- बहुत गर्म खाना नहीं खाना।
- खाने पर झपट्टा नहीं मारना।
- खाने के बाद उंगलियां जरूर चाटना।
- मुसलमान को दायें हाथ से पीना चाहिए। बाएं हाथ से शैतान पीता है।
- बैठकर पीना
- प्रत्येक घूंट को तीन सांस में पीना और फिर गिलास को मुंह से हटाना।
- अपना बिस्तर खुद ठीक करना।
- बिस्तर पर सोने से पहले तीन बार झटक कर धूल झाड़ना।

- दाहिनी ओर सोना।
- दाहिनी हथेली दाहिने गाल के नीचे रखकर सोना।
- सोते समय घुटनों को हल्के से मोड़ना।
- काबा की तरफ सिर करके सोना।
- सोने से पहले सूरा इखलास, सूरा फलक और सूरा नास तीन बार पढ़ना तथा इसके बाद तीन बार शरीर को झटकना।
- जागने पर हथेलियों से चेहरे और आंखों को मलना।
- जब भी कोई कपड़ा पहनना होता था तो रसूल्लाह (अल्लाह के पैगम्बर) हमेशा पहले कपड़ा दाहिने अंग से डालते थे।
- जब कपड़ा उतारना होता था तो रसूल्लाह हमेशा पहले बाएं अंग से उतारना शुरू करते थे।
- पुरुषों को पाजामा टखने के ऊपर पहनना चाहिए। महिलाओं को ध्यान रखना चाहिए कि उनका नीचे का वस्त्र टखने को ढंके।
- मर्दों को पगड़ी पहननी चाहिए। औरतों को हमेशा सिर पर स्कार्फ डाले रहना चाहिए।
- जूता पहनते समय पहले दायें पैर का जूता पहनना चाहिए और फिर बाएं।
- पहले बाएं पैर का जूता उतारना चाहिए और फिर दाएं।
- शौचालय में जाते वक्त सिर ढंका होना चाहिए।
- शौचालय में घुसने से पहले दुआ पढ़नी चाहिए।
- शौचालय में पहले बायां पैर रखना चाहिए।
- पेशाब हमेशा बैठकर करना चाहिए। खड़े होकर पेशाब कभी नहीं करना चाहिए।
- शौचालय से बाहर आते समय पहले दाहिना पैर बाहर निकालना चाहिए।
- शौचालय में मुंह मक्का की तरफ नहीं होना चाहिए और न ही पीठ काबा की तरफ होना चाहिए।
- शौचालय में बात नहीं करें।
- पेशाब करते समय शरीर पर उसके छींटे नहीं पड़ने चाहिए। (इस ओर लापरवाह होने पर कब्र में सजा दी जाती है।)
- दातुन (दांत साफ करने के लिए लकड़ी का ब्रश) का प्रयोग रसूल्लाह की बड़ी सुन्नत है। वजू करते समय जो दातुन करेगा और इसके बाद नमाज़ पढ़ेगा, उसे 70 गुना अधिक सबाब मिलता है। जुमा के दिन गुस्ल (स्नान) करना चाहिए।
- दाढ़ी रखनी चाहिए, जिसकी लंबाई एक मुट्ठी हो।
- जूते बाएं हाथ में लेकर चलना चाहिए।
- मस्जिद में पहले दायां पांव रखना चाहिए।
- मस्जिद से निकलते समय पहले बायां पैर निकालना चाहिए।

आयशा ने एक जगह कहा है कि मुहम्मद मध्य रात्रि में उठ जाता था और कब्रिस्तान में इबादत करने चला जाता था:

जब उस दिन अल्लाह के रसूल के साथ रात में सोने की मेरी बारी थी तो उन्होंने करवट बदली और अपना लबादा पहना और जूते उतारकर अपने पैरों के पास रख लिये। इसके बाद अपने शॉल के कोने को अपने बिस्तर पर फैलाया और तब तक पड़े रहे, जब तक कि उन्हें नहीं लगा कि मैं सो गई हूं। फिर धीरे से उन्होंने अपना लबादा उठाया, जूते पहने और दरवाजा खोलकर बाहर निकलकर धीरे से बंद कर दिया। मैंने अपना सिर ढंककर नकाब पहना और नाड़े को कसा, फिर उनके पीछे-पीछे गई। वह बक़ी (कब्रिस्तान) पहुंचे और वहां ठहरे, फिर काफी देर तक वहां खड़े रहे। इसके बाद उन्होंने अपने हाथ तीन बार उठाए और वापस लौटने लगे तो आयशा भी लौटने लगी। उन्होंने वापसी में अपने कदम तेज कर दिए और आयशा ने भी। वह दौड़ने लगे और मैं भी। वह घर पहुंचे और मैं भी। हालांकि मैं उनसे पहले घर पहुंची और बिस्तर पर सो गई। वह (पाक रसूल) घर के अंदर पहुंचे और कहा, 'अरे आयशा, क्या हुआ, तुम हांफ क्यों रही हो?' मैंने कहा, 'कुछ तो नहीं।' वो बोले, 'तुम बताओ मुझे, नहीं तो मुझे अंतर्ज्ञान से पता चल ही जाएगा।' मैंने कहा, 'अल्लाह के रसूल, मेरे पिता और मां आपके पास फिरौती के रूप में हैं। फिर उनको पूरी बात बता दी।' उन्होंने कहा, 'क्या अंधेरे मुझे जो परछाई दिख रही थी, वह तुम्हारी थी?' मैंने कहा, 'हां।' उन्होंने मेरी की छाती पर जोर का वार किया, जिससे मैं दर्द से छटपटा गई। उन्होंने कहा, 'तुम्हें क्या लगता है कि अल्लाह और उसके रसूल तुम्हारे साथ जुल्म करेंगे?' मैंने कहा, 'अल्लाह से कुछ नहीं छिपा है, वह सब जानता है।' उन्होंने कहा, 'जब तुमने मुझे देखा तो मेरे पास जिब्राईल आया था। उसी ने मुझे बुलाया था और यह बात वह तुमको जाहिर नहीं होने देना चाहता था। उसने पुकारा था, इसलिए मैं गया था और यह बात मैंने भी तुमसे छिपाई (क्योंकि वह तुम्हारे सामने प्रकट नहीं हुआ), क्योंकि तुम ने ठीक से कपड़े नहीं पहन रखे थे। मुझे लगा कि तुम सो गई हो और यह सोचकर मैं तुम्हें जगाना नहीं चाहता था कि तुम डर जाओगी।' उसने (जिब्राईल ने) कहा, 'अल्लाह का हुक्म है कि कब्रिस्तान में जाओ और उन लोगों के गुनाहों के लिए माफी मांगो, जो वहां दफन हैं।' मैंने कहा, 'अल्लाह के रसूल, मैं उनके लिए दुआ कैसे मांगू (उनके लिए गुनाहों की माफी किस तरह से मांग सकती हूं) ? उन्होंने कहा, 'बोलो, इस कब्रिस्तान में दफन ईमान वाले मुसलमानों को अल्लाह शांति नसीब करे। और जो हमसे पहले चले गए और हमारे बाद जाएंगे, अल्लाह उन पर रहम करे और अल्लाह के फजल से हम सब उसमें शामिल हों।[262]

वह अल्लाह जरूर कोई पागल होगा जो अपने रसूल को आधी रात को कब्रिस्तान में जाकर मर चुके लोगों के लिए माफी मांगने का हुक्म देता है। क्या वह ऐसे विचित्र समय पर अपने रसूल को परेशान किए बिना उन्हें माफ नहीं कर सकता था? विडम्बना यह है कि मुहम्मद के साथियों ने उसके उन अजीबोगरीब व्यवहारों की गलत व्याख्या करते हुए इसे उसकी नेकनीयती का प्रमाण बताया, जबकि उसके ये व्यवहार साफ तौर पर उसके मनोविकृति (मनोरोग-पागलपन) को इंगित करते हैं।

एक हदीस में मुहम्मद अपने अनुयायियों को चेतावनी देते हुए कहता है कि भीगे हाथ से अपनी एड़ी पोंछकर 'दोजख की आग से खुद को बचाओ'।[263] ऐसा नहीं था कि मुहम्मद ऐसा कहकर लोगों को स्वच्छता का संदेश दे

रहा था, बल्कि यह उसकी रस्म निभाने (अतार्किक व बेसिरपैर के कर्मकांड) की सनक थी। उसने सोचा कि भीगे हाथ पैरों पर फिराने और यहां तक कि मोजे के ऊपर से फिराने भर से दोजख की आग से बचा जा सकता है। बुखारी में एक हदीस है, जिसमें कहा गया है कि मुहम्मद चमड़े के मोजे पहने होता था तो उसके ऊपर से ही भीगे हाथ से पोंछता था:

अल-मुगैरा बिन सुबा ने बताया: 'एक यात्रा के दौरान मैं अल्लाह के रसूल के साथ था तो वह शौच के लिए गए (और जब शौच कर लिया) तो मैंने पानी गिराया तो उन्होंने मज्जन किया अर्थात अपना चेहरा धोया, बाजू धोए और फिर भीगा हाथ अपने सिर पर फिराया, फिर इसके बाद उसी भीगे हाथ से पैर में पहने चमड़े के दोनों मोज़ों को पोंछा।'[264]

एक और हदीस में बुखारी हुमरान (उस्मान का गुलाम) का हवाला देते हुए कहता है:

मैंने देखा कि उस्मान बिन अफ्फान ने पानी का एक पीपा मांगा। जब पीपे उनके पास लाया गया तो उन्होंने अपने हाथों में पानी उड़ेला और तीन बार धोया। फिर दाहिना हाथ पीपा में डाला और मुंह में पानी लेकर कुल्ला किया, नाक के भीतर पानी डालकर साफ किया और फिर पानी उलीचकर मुंह धोया, तीन बार कुहनी तक बाहें धोयीं। इसके बाद उसने कहा, 'अल्लाह के रसूल ने कहा है कि यदि कोई मेरी तरह से वजू (मज्जन) करता है और दो वक्त की नमाज अदा करता है, तथा उस दौरान उस वक्त नमाज के अलावा और कुछ नहीं सोचता है तो उसके पुराने गुनाह माफ हो जाएंगे।' मैंने रसूल को कहते सुना था, 'यदि कोई मुकम्मल तरीके से वजू करता है और उसके बाद अनिवार्य सामूहिक रूप से नमाज अदा करता है तो अल्लाह उस नमाज और अगले नमाज के बीच किए गए गुनाहों का माफ कर देता है। और जब तक वह इस तरह नमाज अदा करता रहेगा, उसके गुनाह माफ होते रहेंगे।'[265]

यह कितना अतार्किक है। केवल ऑबसेस्सिव-कम्पलसिव डिस्ऑर्डर से ग्रस्त इंसान ही ऐसा सोच सकता है कि किसी के गुनाह महज कुछ निश्चित रस्म (रिचुअल्स) निभाने से माफ हो जाएंगे। मनोविकार व्यक्ति द्वारा बार-बार दोहराए जाने वाले उन व्यवहारों अथवा मानसिक गतिविधियों से पहचाना जाता है, जो मनुष्य ऐसे नियमों के अनुसार करने को प्रेरित होता है, जिसका पालन कठोरता से किए जाने की बाध्यता हो। मनोविकार की पहचान उन व्यवहारों व मानसिक गतिविधियों द्वारा भी होती है, जिनका उद्देश्य जहन्नुम या इस प्रकार की काल्पनिक विपदा को टालने या कम करने अथवा किसी अनहोनी को रोकना होता है। इस्लाम निरर्थक नियम-कायदे और धार्मिक कर्मकांड से भरा हुआ है। वजू, गुस्ल (नहाना), अनिवार्य नमाज के नियम और हज व रोजा आदि अनिवार्य होना आदि इंगित करता है कि मुहम्मद के ऊपर धार्मिक रस्मों (कर्मकांडों) को लेकर जुनून सवार था। उसने यहां तक कहा कि शौच के बाद खुद को स्वच्छ करने के लिए कितने कंकड़ का प्रयोग किया जाना चाहिए। (उसके मुताबिक शौच के बाद स्वच्छ करने के लिए कंकड़ों की संख्या विषम होनी चाहिए। चार कंकड़ प्रयोग करने के बजाय तीन कंकड़ अधिक स्वच्छ करते हैं।)

एक हदीस में मुहम्मद कहता है, 'जब तुममें से कोई पेशाब करे तो उसे तीन बार अपने उस अंग से पेशाब निकालकर खाली करना चाहिए।' ईरान के अयातुल्ला ने फरमान दिया है कि लिंग को तीन बार झटक देने के बाद

यह साफ हो जाता है और इसके बाद यदि पेशाब की बूंदें कपड़े पर गिर भी जाएं तो उस व्यक्ति की नमाज खारिज नहीं होती है।

सिजाइड और सीजोटाइपल विकृति

मुहम्मद संभवत: एक तरह के पागलपन (सिजाइड पर्सनैलिटी डिस्ऑर्डर) की बीमारी से ग्रस्त था। इस बीमारी में इंसान सामाजिक गतिविधियों से दूर भागता है और दूसरों के साथ बात-व्यवहार बनाने में हमेशा झेंपता है। इस विकार से पीड़ित मनुष्य सामान्यत: दूसरों के साथ खुद को जोड़ पाने और व्यक्तिगत संबंध बनाने में असमर्थ पाता है। यह स्थिति मुहम्मद के बचपन और युवावस्था के समय के चरित्र साथ सटीक बैठती है। जब उसने अपनी पैगम्बरी का कैरियर शुरू किया तो भी उसने दोस्त या बराबरी के लोगों को अपने इर्दगिर्द नहीं रखा, बल्कि चेलों और चापलूसों को रखा। मुहम्मद इसी स्थिति में खुद को सहज पाता था। जब तक उसने पैगम्बरी का चोला नहीं ओढ़ा था, वह उदासीन, सुस्त और नीरस था। अपने आसपास की सामाजिक व्यवस्था में अलग-थलग रहता था। जिस उम्र में इंसान के व्यक्तित्व का निर्माण होता है, उस समय मुहम्मद में संवेदनहीनता और भावहीनता जैसे लक्षण दिखते थे और वह अपने आसपास चल रही घटनाओं के प्रति उदासीन सा रहता था। इस उम्र में उसके भीतर अपने आसपास की दुनिया को लेकर भावनात्मक खालीपन, भावुकता और विभ्रम बहुत अधिक था। सिजाइड पर्सनैलिटी डिस्ऑर्डर से ग्रस्त मनुष्य या तो दूसरे लोगों से व्यक्तिगत संबंध बनाने और निभा पाने में असमर्थ होता है, अथवा दूसरों की संगति में वह घुटन या बेचैनी महसूस करता है। इसलिए ऐसे लोग अपने में सिमट जाते हैं और सुरक्षा के लिए रिश्ते तलाशने लगते हैं।[266] पैगम्बरी शुरू करने से पहले मुहम्मद नितांत अकेला रहता था। खदीजा से विवाह से पूर्व उसके पास बस एक काम था और वह था लड़कियों वाला काम अर्थात बकरियां चराना, जिसमें दूसरे लोगों के साथ मेलजोल न के बराबर होता था। एक बार जब वह सामान्य युवा की तरह व्यवहार करते हुए शादी के एक कार्यक्रम में घुसने का प्रयास किया तो उसे बेचैनी होने लगी, उबकाई आने लगी और उसकी आंतों में इतनी भयानक ऐंठन हुई कि दर्द से बिलबिलाने लगा। वृद्धावस्था में यौन पिपासु होने वाला यह वही मुहम्मद था जो युवावस्था में किसी लड़की या औरत से सामान्य रिश्ता तक नहीं बना पाता था और खदीजा द्वारा शादी का प्रस्ताव दिए जाने तक उसे पता नहीं था कि यौन सुख क्या होता है। ये सब लक्षण सिजाइड पर्सनैलिटी डिस्ऑर्डर नामक बीमारी के तहत परिभाषित किए जा सकते हैं।

वैकनिन व्याख्या करते हैं, 'नाटकीय व्यवहार करने वाले लोग नार्सिसिस्टों से मिलते-जुलते लोग होते हैं-इन दोनों में अपनी ओर ध्यान आकर्षण की उत्कट इच्छा होती है और जब उन्हें लोगों की ओर से महत्व नहीं मिलता है तो वे दुखी और असहज महसूस करने लगते हैं।'

ये दोनों चाहते हैं कि जिस समारोह में हों, वहां सबके केंद्र बिंदु हों। जब वे ध्यानाकर्षण प्राप्त करने में असफल होते हैं तो वे उन्मादी दृश्य पैदा करने की कोशिश करने लगते हैं अथवा कुछ ऐसी बात या काम करने लगते हैं, जिससे लोगों का ध्यान उन पर जाए।'[267]

सीजोजाइड पर्सनैलिटी डिस्ऑर्डर मानसिक विकृतियों के सीजोफ्रेनिक क्षेत्र का एक भाग माना जाता है। इसमें

सीजोटाइपल पर्सनैलिटी डिस्ऑर्डर और सीजोफ्रीनिया सम्मिलित होते हैं। इन दोनों स्थितियों में लक्षण समान होते हैं, जैसे कि सामाजिक संबंध बना पाने में अक्षमता और भावनाओं की अभिव्यक्ति न कर पाना। मुख्य अंतर यह है कि सीजाइड पर्सनैलिटी डिस्ऑर्डर से ग्रस्त लोग सामान्यतः सीजोटाइपल पर्सनैलिटी अथवा सीजोफ्रीनिया के मानसिक लक्षणों जैसे कि 24 घंटे विकार उत्पन्न होना, व्यामोह अथवा विभ्रम का अनुभव नहीं करते हैं।[268]

मुहम्मद अजीबोगरीब पारलौकिक वहम पाले रखता था। वह भूत, फरिश्ते, शैतान और जिन्नों को देखने के भ्रम में रहता था। वह जिन्नातों के शहर में जाकर उनके बीच रात बिताने का दावा करता था। वह पागलों जैसी हरकत करता था और कुरान के माध्यम से उसकी सनकभरी हरकतों का अंदाजा लगाया जा सकता है। किशोरावस्था में सीजोटाइपल पर्सनैलिटी डिस्ऑर्डर के लक्षण अकेले रहने की गतिविधि अथवा उच्च स्तर की सामाजिक चिंताओं के जाल में फंसा सकता है। ऐसा बच्चा नाकारा अथवा अपने हमउम्र बच्चों से सामाजिक रूप से पिछड़ सकता है। मुहम्मद के बारे में यह बिलकुल सच है कि वह कुलीन परिवार से होने के बावजूद निरक्षर रहा, जबकि उसके समाज में हर व्यक्ति लिखना व पढ़ना सीखता था। इस तथ्य के बावजूद कि मुहम्मद में सीजाइड के लक्षण और सीजोटाइपल पर्सनैलिटी डिस्आर्डर के संभावित लक्षण देखे जा सकते थे, उसमें सीजोफ्रेनिया अथवा मानसिक रोग के लक्षण ढूंढना भी मुश्किल नहीं है।

सीजोफ्रीनिया की बीमारी कई प्रकार की होती है। मुहम्मद के चरित्र पर सीजोफ्रेनिया का जो प्रकार सटीक बैठता है, वह है व्यामोह पैदा करने वाली सीजोफ्रेनिया (पैरानाइड सीजोफ्रेनिया)। पैरानाइड सीजोफ्रेनिया में रोजाना की जिंदगी में सोचने और कार्य करने की क्षमता दूसरी तरह की सीजोफ्रेनिया से बेहतर होती है। पैरानाइड सीजोफ्रेनिया में मरीज स्मृति, एकाग्रता अथवा उदास भावनाओं जैसी उतनी समस्याएं नहीं होती हैं। फिर भी पैरानाइड सीजोफ्रेनिया जीवनभर चलने वाली गंभीर स्थिति है, जो आत्मघाती व्यवहार के साथ ही तमाम तरह की जटिलताएं पैदा करती है।

पैरानाइड सीजोफ्रेनिया के लक्षण निम्न हैंः

- श्रवण संबंधी दुःस्वप्न जैसे कि अज्ञात आवाज सुनने का भ्रम होना
- गलतफहमी होना, जैसे यह लगना कि साथ काम करने वाला मुझे जहर देना चाहता है
- घबराहट
- क्रोध
- दुराव होना अथवा अलग-थलग होना
- हिंसक व्यवहार
- जुबानी तू-तू मैं-मैं करना
- सबको अपने अधीन या संरक्षण में होने का भ्रम पाल लेना
- मन में आत्मघाती विचार आना या आत्मघाती कदम उठाना

पैरानाइड सीजोफ्रेनिया की समस्या के साथ मिजाज खराब होने अथवा सोचने, एकाग्रता व ध्यान में दिक्कत

महसूस होने जैसी समस्या होने की आशंका कम होती है। इसके बजाय इस बीमारी में आप उससे अधिक प्रभावित होते हैं, जो सकारात्मक लक्षण के रूप में जाने जाते हैं।

सकारात्मक लक्षण

सकारात्मक लक्षण वो होते हैं, जो उन असामान्य विचारों का बोध पहले ही कराने लगते हैं और जिससे अक्सर वास्तविकता से संपर्क समाप्त होने लगता है। भ्रम और विभ्रम पैरानाइड सीजोफ्रेनिया के सकारात्मक लक्षण माने जाते हैं।

- **भ्रम:** पैरानाइड सीजोफ्रेनिया में ऐसा भ्रम होने लगता है कि आपको नुकसान पहुंचाने के लिए अलग-थलग किया जा रहा है और आपका ध्यान इसी पर बना रहता है। आपका मस्तिष्क घटनाओं की गलत ढंग से व्याख्या करने लगता है और आप इन धारणाओं के झूठे होने के साक्ष्य होने के बावजूद इन पर विश्वास करने लगते हैं। उदाहरण के लिए, आपको लग सकता है कि सरकार आपकी हर गतिविधि पर नजर रख रही है अथवा आपका सहकर्मी आपको खाने में जहर दे रहा है। आपको अपने रौब अथवा क्षमताओं को लेकर भ्रम हो सकता है- उदाहरण के लिए जैसे कि आप उड़ सकते हैं, आप बहुत प्रसिद्ध हैं, या आपका संबंध किसी प्रख्यात व्यक्ति के साथ है। यदि आपको भ्रम हो जाता है कि लोग आपको नुकसान पहुंचाना चाहते हैं तो यह आपके मन में आत्मरक्षार्थ कदम उठाने का विचार पैदा करते हुए आपको हिंसक या आक्रामक बना सकता है।
- **श्रवण संबंधी विभ्रम:** श्रवण संबंधी विभ्रम किसी ध्वनि का बोध होना है, जो कि सामान्यत: आवाज होती है और आपको ऐसी आवाज होने का भ्रम होता है, जिसे कोई और नहीं सुन सकता है। यह ध्वनि कोई एक हो सकती है अथवा कई आवाजें हो सकती हैं। ये आवाजें या तो आपसे बात करती हैं या आपस में बात करती हैं। ये आवाजें सामान्यत: अच्छी नहीं होती हैं। इस विभ्रम के वशीभूत होने पर हो सकता है कि आप जो कर रहे हैं या सोच रहे हैं, इन आवाजों में उसकी निंदा की जा रही है। अथवा ये आवाजें आपको किसी सच्ची या किसी काल्पनिक गलती के लिए परेशान कर रही हों। आपको यह भी विभ्रम हो सकता है कि ये आवाजें आपको कुछ ऐसा करने का आदेश दे रही हैं, जो आपके लिए या दूसरों के लिए हानिकारक है। जब आप पैरानाइड सीजोफ्रेनिया से पीड़ित होते हैं तो ये काल्पनिक आवाजें आपको वास्तविक प्रतीत होती हैं। इस बीमारी के प्रभाव के कारण आप इन आवाजों से बात कर सकते हैं अथवा इन पर चिल्लाने लगते हैं।[269]

अपने आपको लेकर काल्पनिक बातों को झूठा ठहराने वाले साक्ष्यों या तर्कों को स्वीकार करने के बजाय उन्हें सच मानने लगना, विभ्रम, ऊलजुलूल विचार आना, बेचैनी होना, आक्रामक या हिंसक व्यवहार होने के अलावा एक और विशेष प्रकार का सिंड्रोम होता है, जो सीजोफ्रेनिया का लक्षण होता है और वह है कैटेटोनिक व्यवहार।

इसमें इस समस्या से ग्रस्त व्यक्ति का शरीर अकड़ सकता है और व्यक्ति निष्क्रिय सा हो सकता है।[270]

कुरान के माध्यम से मुहम्मद के ऊलजुलूल विचारों का परीक्षण किया जा सकता है। हालांकि कुरान किसी संपादक के लिए भयावह सपने से कम नहीं होगा। वह खुद भी हिंसक और बेचैन इंसान था। महज दस सालों में उसने सत्तर से अधिक जंग छेड़ी और इन सब जंगों में वह हमलावर रहा। मांसपेशियों की कठोरता

और मानसिक जड़ता दर्शाने वाले कई लक्षणों के आधार पर उसके कैटाटोनिक व्यवहार को समझने के लिए अली का यह कथन पर्याप्त है। अली कहता है, 'जब वह (मुहम्मद) चलते थे तो अपने पैर ताकत लगाकर उठाते थे, मानो वे किसी ढलान पर चढ़ रहे हों। जब उन्हें किसी व्यक्ति की ओर मुखातिब होना होता था तो अपने पूरे शरीर को घुमाते थे।'[271] मुहम्मद के बचपन की कई कहानियों, खासकर उसके अजीबोगरीब वहम, आवाजें सुनने और अपने ऊपर विचित्र कार्य करते हुए व्यक्तियों को देखना आदि संकेत करते हैं कि उसे बचपन से बाल सीजोफ्रेनिया नामक बीमारी थी। यह ऐसी पुरानी मानसिक बीमारी होती है, जिसमें बच्चा वास्तविकता को असामान्य तरीके से (पागलपन) देखता है और इससे बच्चे के सामान्य रूप से कामकाज करने की क्षमता पर बुरा असर पड़ता है। बाल सीजोफ्रेनिया में मतिभ्रम, भ्रम, अतार्किक व्यवहार और सोच शामिल होती है।

द्विध्रुवी विकारः

मुहम्मद उन्मत्त अवसादग्रस्तता की समस्या से भी पीड़ित रहा होगा। इस समस्या को सामान्यत: द्विध्रुवी विकार (बाईपोलर डिस्ऑर्डर-बीडी) के रूप में जाना जाता है। इस विकार से पीड़ित इंसान का मिजाज नाटकीय रूप से अचानक बदलता है और वह कभी अचानक अत्यंत खुशी महसूस करने लगता है तो कुछ ही देर में अचानक नितांत दुख, निराशा के भंवर में डूब जाता है। मन की इस उच्च व निम्न अवस्था को क्रमश: उन्माद और अवसाद कहते हैं। मन के भीतर उथल-पुथल मचाने वाले मिजाज में अचानक उतार-चढ़ाव इस बीमारी की विशेषता है। इस मानसिक बीमारी अर्थात बीडी के लक्षण हैं: उन्मादी अवस्था के दौरान चिड़चिड़ापन, अतिरंजित आत्मसम्मान का भाव, नींद उचटना, असामान्य रूप से ऊर्जावान महसूस करना, मन में तेजी से अजीबोगरीब विचार आना, बहुत ताकतवर होने का भ्रम पैदा होना, ठीक से निर्णय न ले पाना, कामेच्छा बढ़ जाना और दूसरों की हर बात को काटते हुए गलत साबित करने की कोशिश करना आदि। अवसाद की अवस्था में निराशा में डूबना अथवा स्वयं को किसी लायक न महसूस करना, खिन्नता व ग्लानि महसूस करना, थकावट महसूस करना, मौत या आत्महत्या का विचार या आत्महत्या का प्रयास करना आदि इस बीमारी के लक्षण हैं। इब्ने-साद एक ऐसी हदीस बताता है, जिसे पढ़कर मुहम्मद में द्विध्रुवीय विकार के लक्षण देखे जा सकते हैं। इब्ने-साद इस हदीस में लिखता है: 'कभी-कभी रसूल इतना लंबा रोजा रखते थे, मानो वे कभी रोजा खोलना ही न चाहते हों और कभी-कभी वह लंबे समय तक रोजा नहीं रखते हैं, तब ऐसा लगता था कि मानो वे अब रोजा कभी नहीं रखना चाहते हैं।'[272]

इन निष्कर्षों के आधार पर यह स्पष्ट है कि मुहम्मद कई प्रकार की मानसिक व व्यक्तित्व संबंधी बीमारियों से ग्रस्त रहा होगा। ऑकैम रेजर के अनुसार, किसी भी चीज की व्याख्या के लिए उससे अधिक धारणा नहीं बनानी चाहिए, जितनी की आवश्यकता है। यदि टीएलई और एनपीडी नामक बीमारी मुहम्मद के रहस्यों (इपीफैनी) और व्यवहार की व्याख्या कर सकते हैं तो गूढ़, धोखा देने वाले और निराधार रहस्यमयी स्पष्टीकरण के पीछे क्यों भागना? अब हमारे पर वैज्ञानिक साक्ष्य है कि मुहम्मद मानसिक रूप से बीमार था और उसके साथियों को इस बात का भान पहले से ही था। काश! ये लोग मुहम्मद की क्रूर फौज द्वारा कुचल दिए गए होते और इन्हें चुप करा दिया गया होता।

कैसी विडम्बना है कि एक अरब से अधिक लोग एक पागल व्यक्ति को अपना पैगम्बर मानते हुए उसके

पीछे खड़े हैं और अपने जीवन में हर तरह से उसे उतारना चाहते हैं। इसमें कोई आश्चर्य नहीं है कि मुस्लिम दुनिया मुरझा रही है। मुस्लिमों की कारस्तानी केवल पागलपन के रूप में ही परिभाषित की जा सकती है। ऐसा इसलिए है क्योंकि वे एक मानसिक रूप से विक्षिप्त को अपना आदर्श और मार्गदर्शक मानते हैं। जब समझदार लोग पागल इंसान का अनुसरण करते हैं तो वे भी पागलों की तरह व्यवहार करने लगते हैं। यह शायद दुनिया की सबसे बड़ी दुखद घटना है। इतने क्रूर परिमाण में स्वयं पर थोपा गया पागलपन वास्तविक घृणा व द्वेष पैदा करने वाला होता है।

हिरा की खोह का रहस्य

इस पुस्तक की प्रूफ रीडिंग करते समय एक दोस्त ने ओरेकल ऑफ डेल्फी के बारे में मजेदार बात गौर की। यह बात इस ओर प्रकाश डाल सकती है कि मुहम्मद ने अपने पैगम्बरी संदेश को खोह में क्यों हासिल किया।

ओरेकल आफ डेल्फी ग्रीक के एक प्राचीन मंदिर का स्थान था। पूरे यूरोप से लोग वहां पीथिया एट माउंट पैरनैसस से मिलने आते थे और अपने भविष्य के बारे में प्रश्न पूछकर उत्तर प्राप्त करते थे। पीथिया वह आत्मा थी, जो महिलाओं के ऊपर आती थी और ईश्वर अपोलो इसी के माध्यम से बात करते थे।

अपोलो के मंदिर में एक पुजारी प्लूटार्क कहते थे कि प्रीथिया के पास जमीन के भीतर स्थित एक कुंड से भाप के रूप में पैगम्बरी की ताकत आती थी। मंदिर के निकट स्थित भूभाग के बारे में अभी हाल में हुए अध्ययन हुआ है। यह अध्ययन पुरातत्वविदों को इस धारणा को मानने प्रेरित करता है कि प्रीथिया के होठ मादक धुएं के कारण खुल जाते थे।[273]

नेशनल जियोग्राफी के अगस्त 2001 के अंक में इस अध्ययन के बारे में बताया गया। इस अध्ययन के मुताबिक डेल्फिक मंदिर के ठीक नीचे भूमि के भीतर दो भाग अलग-अलग बंटे हुए थे, जिससे वहां दरार आ गई थी। अध्ययन में इसके भी साक्ष्य मिले कि पास स्थित एक झरने से मदहोश करने वाली गैसें निकलती थीं और मंदिर की चट्टान पर जमा होती थीं। इस अध्ययन के सह लेखक और कनेक्टिकट, मिडिल टाउन स्थित वेसलेयन विश्वविद्यालय के भूगर्भशास्त्री जेल डी. बूअर कहते हैं, 'प्लूटार्क की धारणा ठीक थी। वास्तव में वहां गैसें थीं, जो उस दरार से निकलती थीं।'

इनमें से एक गैस एथिलीन थी, जो डेल्फी मंदिर के स्थान के निकट झरने के पानी में पाई गई थी। एथिलीन एक मीठी-मीठी सुगंध वाली गैस होती है जो ऐसा मादक प्रभाव उत्पन्न करती है, जिससे मनुष्य में मदहोशी भरी सुस्ती पैदा होती है। वाशिंगटन डीसी के जार्ज वाशिंगटन विश्वविद्यालय के शास्त्रीय प्रोफेसर डाएन हैरिस-क्लाइन मानती हैं कि प्रीथिया के ध्यानमग्न होने और रहस्यमयी व्यवहार की पड़ताल के लिए एथिलीन महत्वपूर्ण घटक है। उन्होंने कहा, 'सामाजिक अपेक्षाओं के साथ किसी बंद स्थान पर किसी महिला को ऐसा प्रेरित किया जा सकता है कि वह देववाणी जैसा कुछ बोलने लगे।'[274]

पारंपरिक रूप से से यह बताया जाता है कि पीथिया जब मंदिर के तलघर में स्थित चारों ओर से बंद छोटे से कक्ष में दिव्य संदेश प्राप्त करती थी। डी बुअर कहते हैं कि जैसा कि किवदंतियों में बताया गया है कि पीथिया महीने में

एक बार उस कक्ष में जाती थी। ऐसे में उसे पता चल गया होगा कि उस पर मादक गैस की सांद्रता का प्रभाव है, जो उसे मादक नशे की हालत में पहुंचा देता था और लगता था कि जैसे ध्यान की अवस्था में हो। मानसिक रूप से बीमार लोग खुद को मस्त रखने (एक तरह से अपने में खोए रहने) के लिए बारंबार शराब और मादक पदार्थों का प्रयोग करते हैं।

यद्यपि कि मुहम्मद में बचपन से ही मिर्गी संबंधी अर्द्धचेतन अवस्था में चले जाने की समस्या थी। फिर भी हमें इस तथ्य की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए कि हिरा की खोह में मदहोश करने वाला मादक धुंध का प्रभाव था, जिससे उसके दिमाग में अजीब-अजीब कल्पनाएं पैदा होती थीं। मेरी दोस्त ने टिप्पणी की, 'यदि एथिलीन की हल्की खुराक उल्लासोन्माद अर्थात मदहोशी पैदा कर सकती है तो यह समझ पाना कठिन नहीं है कि क्यों मुहम्मद उस खोह में दिन बिता देना चाहता था।' मेरी दोस्त ने कहा, 'केवल इसलिए कई दिनों का खाना साथ लेकर जाना कि खोह में पड़े रहना था, निश्चित रूप से अजीबोगरीब व्यवहार था और खासकर उस व्यक्ति के लिए तो यह और भी अजीब मालूम होता है जो शादीशुदा था, जिसके छोटे-छोटे बच्चे थे! पर यह रहस्य कोई गूढ़ नहीं है कि खोह में कुछ ऐसा था जो उसे एक तरह के नशे अथवा मदहोशी की हालत में ले जाता था।' हिरा की खोह बमुश्किल साढ़े तीन मीटर लंबी और डेढ़ मीटर चौड़ी थी, यानी एक स्नानगृह के बराबर इसका आकार था। यदि अल्लाह सर्वव्यापी है तो मुहम्मद को इस विशेष खोह में इतनी रुचि क्यों थी? खोहों अथवा बंद निर्जन स्थानों पर मादक गैसों के अलावा फंफूद एवं सूक्ष्मजीवी वाहक भी होते हैं, जो दिमाग को प्रभावित करते हैं। पिरामिडों में उगने वाले एक घातक फंफूद के कारण वह फिरऔन के अभिशाप के रूप में बदल गया था। खोहों में भाप की सांद्रता घटती-बढ़ती रहती है। यह भूकंप पर निर्भर करता है जो भूमि के भीतर स्थित मादक तरल पदार्थों को प्रवाहित करता रहता है। इस संभावना से इंकार नहीं किया जा सकता है कि जब मुहम्मद हिरा की उस खोह में अकेले समय व्यतीत करता था तो वह प्रदूषित थी।

---

260 http://www.cmha.ca/bins/content_page.asp?cid=3-94-95
261 http://www.scribd.com/doc/2252573/sunnahs-of-ap-s-a-w Available all over the Internet.
262 Sahih Muslim Book 4, Number 2127
263 Bukhari Volume 1, Book 3, Number 57
264 Bukhari Volume 1, Book 4, Number 182
265 Bukhari Volume 1, Book 4, Number 161:
266 http://www.mayoclinic.com/health/schizoid-personality-DS00865/DSECTION=symptomsdisorder/
267 http://samvak.tripod.com/personalitydisorders17.html
268 Ibid.
269 http://www.mayoclinic.com/health/schizoid-personality-DS00865/DSECTION=symptomsdisorder/
270 www.emedicinehealth.com/schizophrenia/article_em.htm
271 The Book of Merits (manaqib) in Sunan Imam at-Tirmidhi. www.naqshbandi.asn.au/description.htm
272 Tabaqat, Volume 1, Page 371
273 John Roach for National Geographic News August 14, 2001
http://news.nationalgeographic.com/news/2001/08/0814_delphioracle.html
274 Ibid.

अध्याय
5

मुहम्मद की शारीरिक बीमारी

मुहम्मद शारीरिक रूप से बीमार इंसान था। युवावस्था में वह अपनी होने वाली बीबी खदीजा को भले ही अच्छा लगता होगा, लेकिन जीवन के बाद के सालों में उसकी शक्ल-सूरत और डील-डौल अजीब हो गया था और उसके साथी उसकी काया को अजीब पाते थे। अनस ने बताया है: 'रसूल के हाथ और पैर बहुत बड़े थे और मैंने अपने जीवन में कभी वैसी काया वाला इंसान नहीं देखा, उनकी हथेलियां मुलायम थीं।'[275]

मुहम्मद के हाथों और पैरों के अलावा चेहरे की आकृति बेडौल थी। मनाकिब (बुक आफ मेरिट्स) में इमाम अत-तिरमिज़ी[276] ने कई हदीसों का संकलन किया है, जिसमें मुहम्मद की शारीरिक विशेषताओं के बारे में बताया गया है। इन हदीसों की समीक्षा से मुहम्मद के स्वास्थ्य व बीमारियों का सुराग मिल सकता है। मुहम्मद के अनुयायी उसे श्रेष्ठ बताने के लिए अतार्किक और अतिरंजित बातों का भी सहारा लेते हैं। जैसा कि वे उसके चेहरे की आभा की प्रशंसा करते हैं, वे बताते हैं कि कैसे उसकी सुंदरता चांद को शर्माने पर मजबूर करती थी, या फिर कैसे उसके सामने खड़े लोग उसकी चांद जैसी खूबसूरती और प्रेरणादायी उपस्थिति देखकर मुग्ध हो जाते थे। ये सब विषयनिष्ठ वर्णन है और इनका कोई वैज्ञानिक अथवा तथ्यात्मक मूल्य न के बराबर है, इसलिए मैं इनके बारे में बात नहीं करूंगा। नीचे उसके कुछ प्रमुख अनुयायियों द्वारा उसके बारे में किए गए वस्तुनिष्ठ वर्णन हैं:

अली बताता है: रसूल न तो लंबे थे और न नाटे। उनकी उंगलियां और अंगूठे मोटे थे। उनका सिर बड़ा था और जोड़ भी बड़े थे। उनके शरीर पर सीने से लेकर नाभि के नीचे तक रोएं की लंबी और पतली धारी थी। जब वह चलते थे तो बिलकुल आगे झुकते थे, मानो कि किसी ऊंचे स्थान से नीचे की ओर उतर रहे हों। मैंने उनके पहले और उनके बाद किसी और को ऐसा नहीं देखा। वे बड़ा सिर और बड़ी दाढ़ी वाले थे।'

एक और हदीस में अली कहता है: 'वह मध्यम कद-काठी के थे। उनके बाल हल्के घुमावदार थे। उनका चेहरा गोलाकार था। वह गोरे थे और उनके चेहरे पर लालिमा रहती थी। उनकी आंखें बिलकुल काली थीं और पलके बहुत लंबी थीं। उनके कंधे और गरदन के दोनों तरफ की हंसुली बड़ी थी।'

उनकी अंगुलियां और अंगूठे मोटे थे। जब वह चलते थे तो वह अपना पैर बहुत ताकत से उठाते थे, मानो कि किसी ढलान वाले स्थान पर चढ़ रहे हों। जब वह किसी की ओर मुखाबित होते थे तो पूरा शरीर घुमाते थे। उनकी गरदन ऐसी (चिकनी और चमकदार) दिखती थी, जैसे कि किसी मूर्ति को चांदी में ढाला गया हो। उनका शरीर मजबूत और ऐसा मांसल था, सीना और पेट का हिस्सा बराबर था और ऐसा दिखता था जैसे कि कोई लौह दंड हो। उनके कंधे चौड़े थे और बड़ी हंसुली वाले थे। जब वह कपड़े हटाते थे तो उनके अंगों से रौशनी (तैलीय त्वचा) निकलती थी। उनकी भुजाएं चौड़ी थीं, उनकी हथेली चौड़ी थी, उनकी उंगलियां और अंगूठे भरे हुए और लंबे थे। उनके पैर इतने चिकने थे कि पानी भी फिसल जाता था।''

हिंदा बिन अबी हाला ने भी कहा है: 'रसूल का सिर बड़ा था। उनके बाल घुमावदार थे। उनके चेहरे का रंग

गुलाबी था, चौड़ा माथा, घनी और तनी हुई भौहें थीं, जो बीच में जुड़ती नहीं थीं। इनके बीच में एक नस उभरी थी, जो जब वे गुस्से में होते थे तो तन जाती थी। उनकी नाक बाज की नाक की तरह मुड़ी हुई थी और जब इस पर रौशनी पड़ती थी तो पहली नजर में और लंबी दिखती थी। उनकी दाढ़ी घनी और लंबी थी। सपाट गाल थे और मजबूत मुख था, जिस पर सामने के दाँतों के बीच जगह खाली थी। उनकी गरदन इतनी सुडौल और चमकदार दिखती थी, मानो कि चांदी में ढाली गई बुत हो। उनके शरीर का आकार बेहद संतुलित, मजबूत, तगड़ा और मांसल था, जिसमें पेट और छाती बराबर थी। उनके कंधे और हंसुलियां चौड़ी थीं। उनके बाजू लंबे थे, हथेलियां चौड़ी थीं, उंगलियां और अंगूठे लंबे और मोटे थे। उनके पैर के तलवे बीच से जमीन से बड़े करीने से उठे हुए होते थे।

जब वह चलते थे तो अपने पैर ताकत से उठाते थे, हल्के से आगे की ओर झुकते थे, और फिर जमीन पर नजाकत से कदम उठाते थे। जब वह किसी को देखने के लिए मुड़ते थे तो पूरे शरीर को घुमाते थे। उनकी नजरें झुकी हुई रहती थीं और वे अक्सर जमीन पर देखा करते थे, या फिर आसमान की ओर देखते रहते थे। वह किसी चीज को घूरने के बजाय उस पर बस एक नजर मारते थे।'

मुहम्मद का एक और साथी जबीर अल सुमुरा एक हदीस में कहता है: 'रसूल का मुख और आंखें बड़ी थीं।'

मुहम्मद का चचेरा भाई इब्ने-अब्बास दावा करता है: 'रसूल के सामने के दो दांतों के बीच में जगह थी।'

अली ने फिर कहा: 'उनके हाथ और पांव भारी और मोटे थे, (लेकिन सख्त नहीं)। उनका सिर बड़ा था, हड्डियां चौड़ी थीं। जब वह चलते थे तो आगे झुकते थे, मानो कि किसी ढलान पर ऊपर चढ़ रहे हों। वह गोरे थे और गुलाबी आभायुक्त थे। उनकी अंगों के जोड़ों पर आकार बड़े थे और ऐसे ही उनकी शरीर के पिछले भाग का ऊपरी हिस्सा चौड़ा था (तबाकत से लिया गया, livingislam.org में भी प्रकाशित) गांठें बड़ी थीं।'

बुखारी ने भी लिखा है कि मुहम्मद के पैर के पंजे और पांव आंटे की लोई की तरह नरम और फूले गूदेदार थे।[277]

हदीसों से मुहम्मद की शारीरिक निम्नलिखित विशेषताओं के बारे में जाना जा सकता है:

- भारी और मांसल हाथ और पैर
- चौड़ी और गद्दीदार हथेलियां
- बड़ा सिर
- बड़ी हड्डियां और जोड़
- चौड़ी छाती, बड़े कंधे के जोड़ और ऊपरी हिस्सा
- लंबे बाजू
- लंबी मोटी उंगलियां और अगूंठे
- लंबी मुड़ी हुई और ऊपर की ओर उठी हुई गुदगुदी नाक
- चौड़ा मुख और मोटे ओठ
- बड़ी आंखें
- बीड़र (बीच में खाली स्थान) दांत
- लंबी सफेद गरदन
- चमकदार त्वचा (तैलीय दिखने वाली)
- घने बाल व दाढ़ी, घनी व बड़ी भौहें
- चलते समय आगे झुकना, मानो किसी ढलान पर उल्टे चढ़ना हो (अंगों का कड़ा होना)
- तेज कदमों से चलना (बेचैनी)

- गरदन हिलाने में दिक्कत और पूरे शरीर को मोड़ना (कैटाटोनिक व्यवहार)
- हल्की लाल रंगत वाली सफेद त्वचा
- पसीना आना
- शरीर से अजीब तरह की दुर्गंध आना, जिसे अधिक मात्रा में इत्र डालकर छिपाने का प्रयास करना
- ऊंट की तरह खर्राटे भरना
- बाद के सालों में नपुंसक हो जाना
- अपने आप होठों में हरकत होना
- शर्मीला और नखरेबाज होना

ये सब अतिकायता (ऐक्रोमेगली) नामक शारीरिक विकृति के लक्षण हैं। यह विकृति एक दुर्लभ अंत:स्रावी सिंड्रोम है। यह समस्या पीयूषिका ग्रंथि से अधिक स्राव के कारण संयोजी ऊतकों के विकास की कारक कोशिकाओं के असामान्य गुणांक में बढ़ने (मेसेनकाइम्ल हाइपरप्लासिया) से पैदा होती है। ये लक्षण प्रकट होना सामान्यत: घातक होता है, क्योंकि ये विकृतियां समय से पूर्व ही एकरूप परिवर्तन के साथ बढ़ते हुए त्वचा को चमकदार और ऐसा मुलायम बना देती हैं, जैसे की आंटे की लोई। बच्चों में पीयूषिक ग्रंथि का अति सक्रिय होना कभी-कभी विशालकायता की समस्या को उत्पन्न कर देती है। सामान्यत: लोग 40-50 साल की उम्र में अतिकायता की विकृति को पहचान पाते हैं।

यदि इस विकृति का इलाज न किया जाए तो कई गंभीर बीमारियां पैदा हो जाती हैं और ऐसे व्यक्ति की सामान्यत: 60 साल की उम्र आते-आते मौत हो जाती है। इस समस्या का मुख्य चिकित्सीय पहलू यह है कि इसमें उपास्थि ऊतक और कान-नाक, उंगलियों आदि परिसरीव अंगों की हड्डियां असामान्य रूप से बढ़ने और फूलने लगती हैं। (एक्रो मतलब अति, जबकि मेगली का मतलब विशाल या दैत्याकार)। मुलायम ऊतकों के फूलते जाने के कारण अंगुलियां, हाथ और पांव के आकार में असामान्य वृद्धि दिखती है। इस विकृति से पीड़ित मनुष्य में विशेष लक्षण उसके चेहरे का अतिकाय (ऐक्रोमेगलाइड) दिखना होता है। जैसे कि उसका माथा अति चौड़ा, चेहरे का भद्दे ढंग से फैला होना, बड़ी नाक, बड़े कान, लंबी जीभ और असामान्य रूप से लटके बड़े ओठ। अस्थियों और उपास्थियों में असामान्य वृद्धि अक्सर गठिया रोग का कारण बनती है। जब ऊतक मोटे हो जाते हैं तो ये स्नायुओं पर लिपटने लगते हैं, जिससे कलाइयों में स्थित नली (कार्पल टनल) में समस्या पैदा होने लगती है और हाथों में कमजोरी होना या हाथों के सुन्न होने जैसी समस्या उत्पन्न होती है। जबड़ों का असामान्य रूप से बढ़ना दांतों के बीच खाली स्थान बढ़ाता है।[278]

अन्य लक्षणों में स्वर रज्जु (वोकल कार्ड) और नाड़ी (साइनस) के बढ़ने से आवाज में भारीपन आना, श्वांस नलिका में ऊपर की ओर आक्सीजन प्रवाह में बाधा पैदा होने से खर्राटा भरना, अधिक पसीना आना, शरीर से दुर्गंध आना, थकावट व कमजोरी महसूस करना, सिर में दर्द रहना, आंख कमजोर होना और नामर्दी आना आदि शामिल हैं। इस विकृति के कारण यकृत (लीवर), तिल्ली (स्प्लीन), गुर्दा (किडनी) व हृदय सहित शरीर के अन्य अंगों में असामान्य वृद्धि होने की आशंका होती है।[279]

मुहम्मद के बारे में जो लिखा गया है, उसमें कहा जाता है कि उसका रंग गुलाबी आभा वाला था। लेकिन कई दूसरी हदीस बताते हैं कि जब वह अपनी कांख दिखाने के लिए बाजू उठाता था अथवा घोड़े पर चढ़ते समय उसकी जांघ दिखती थी तो उसके साथियों को उसकी चमड़ी में कुछ सफेद-सफेद कुछ दिखता था। अतिकायता की विकृति से ग्रस्त करीब 40 प्रतिशत मामलों में त्वचा में अतिरंजकता होती है और यह शरीर के लगभग उन स्थानों पर होती

है, जो प्रकाश के सीधे संपर्क में आते हैं। ऐसा संभवत: मेलानिन उत्पन्न करने वाले ग्रंथिरस (हार्मोन) की अधिकता से होता है। इसलिए उसका चेहरा लाल था, लेकिन शरीर के वो भाग जो प्रकाश के सीधे संपर्क में नहीं आते थे, सफेद थे। इस विकृति का एक और लक्षण पांव के ऊपर के भाग और नीचे तालू के भाग का एकसाथ उभरा होना होता है।[280]

यह भी एक हदीस में मौजूद है, जैसा कि ऊपर उद्धरण दिया गया है। यह हदीस कहती है कि मुहम्मद को पसीना अधिक आता था और शरीर से दुर्गंध आती थी, जिसे वह ढेर सारा इत्र छिड़कर छिपाने की कोशिश करता था। हैकल सही मुस्लिम से एक हदीस का हवाला देते हुए कहता है कि मुहम्मद जिस इत्र का इस्तेमाल करता था, वह इतना तेज था कि उसकी खुशबू से गलियों में लोग जान जाते थे कि वह कहीं आसपास है। जबीर ने कहा: 'जिस रास्ते से रसूल गुजरते थे, वहां से गुजरने वाले लोग खुशबू को महसूस करते थे और समझ जाते थे कि अल्लाह के रसूल इधर से होकर गए हैं।'[281]

मुहम्मद अपनी बीबियों के पास जाने से पहले सतर्क रहता था। आयशा कई हदीसों में कहती है: 'मैंने ने अल्लाह के रसूल पर इत्र छिड़का और फिर वे अपनी बीबियों के पास गए।'[282] वह इत्र के इस्तेमाल को लेकर इतना लालायित रहता था कि आयशा ने टिप्पणी की, 'मैं सबसे बेहतरीन इत्र से अल्लाह के रसूल पर तब तक खुशबू बिखेरती थी, जब तक कि उनके माथे और दाढ़ी में से उसकी खुशबू नहीं आने लगती थी।'283 यह लिखित है कि मुहम्मद ने यह स्वीकार करते हुए कहा था, 'ऐ अल्लाह तुमने इस कायनात में मेरे लिए औरतों और इत्र को माशूक बनाया।'[284] मुहम्मद के एक साथी अल-हसन अल-बसरी ने लिखा है: 'अल्लाह के रसूल ने कहा, 'इस दुनिया की जिंदगी के बारे में मैं केवल दो चीजों औरत और इत्र को संजोता हूं।''[285] (कितना भोला इंसान!)

आयशा द्वारा इस रिवायत के एक और संस्करण में बताया गया, 'अल्लाह के रसूल को दुनिया में तीन चीजें पसंद थीं: वे थीं इत्र, औरतें और पकवान। उनके पास पहली दो चीजें इत्र और औरतें थीं, बस पकवान उनके नसीब में नहीं रहे।'[286] ऐसा नहीं है कि मुहम्मद की हैसियत पकवान बनवाने की नहीं थी। उसके पास उन हजारों लोगों का धन था, जिन्हें उसने खत्म कर दिया था। पर बात यह है कि असामान्य तरीके से अत्यधिक भूख लगना भी अतिकाया विकार (एक्रीमेगली) का एक लक्षण है।[287] आवश्यकता से अधिक इत्र का प्रयोग करना बताता है कि मुहम्मद अपने शरीर से आने वाली बदबू से हीन भावना महसूस करता था और बदबू को छिपाने की भरपूर कोशिश करता था। अतिकाया विकार (एक्रीमेगली) का एक और लक्षण सिर में दर्द रहना है, जिसे कम करने के लिए मुहम्मद सिर को दोनों हाथों से पकड़कर रखता था।[288]

रसूल का सिर कसकर बंधा हुआ था क्योंकि जब वह लहल जमाल नामक स्थान पर एहराम की अवस्था में था तो वह बीमारी से पीड़ित था। इब्ने-अब्बास आगे कहता है: 'अल्लाह के रसूल जब एहराम की अवस्था में थे तो उनके सिर के एक भाग में दर्द था, इसलिए उन्होंने सिर को कसकर पकड़ रखा था।'[289]

अतिकाया विकार (एक्रीमेगली) के कारण कभी उच्च रक्तचाप हो जाता है तो कभी रक्त प्रवाह बेहद धीमा हो जाता है। इससे हाथ और पैर ठंडे होने लगते हैं।

अबू जुहैफा ने कहा, ' मैंने उनका हाथ अपने हाथों में लेकर अपने माथे से लगाया तो पता चला कि वे बर्फ से भी अधिक ठंडे थे और कस्तूरी की महक से भी अधिक खुशबू दे रहे थे।'[290]

हैकल ने एक हदीस का हवाला देते हुए लिखा है:

'जाबिर बिन सामूराह, जो कि तब बच्चा था, ने कहा: 'जब उन्होंने मेरे गाल पोंछे तो मुझे महसूस हुआ कि उनके हाथ ठंडे थे और ऐसे महक रहे थे, मानो किसी इत्र बनाने के कारखाने की दुकान से बाहर निकाले गए हों।'' (सही

मुस्लिम 2/256)

अतिकाया विकार (एक्रोमेगली) से पीड़ित कुछ लोगों की रीढ़ की हड्डी में अगल-बगल और सामने से पीछे की ओर असामान्य वक्रता हो जाती है। यही वह वजह हो सकती है कि मुहम्मद चलते समय आगे की ओर झुक जाता था। इसके अलावा दिमाग में स्थित पीयूषिका ग्रंथि के असामान्य रूप से बढ़ने के कारण सिरदर्द, थकावट, आंखों की रोशनी में खराबी और ग्रंथि रस (हार्मोन) संबंधी असंतुलन पैदा हो जाता है। मुहम्मद के वक्ष और पेट बराबर थे और शरीर तगड़ा और मजबूत था। अतिकाया विकार (ऐक्रोमेगली) के मरीजों में पसलियों और कशेरुकी (वर्टेब्रल) में बदलाव के कारण वक्ष असामान्य रूप से बड़ा हो जाता है। इनकी कशेरुका (वर्टेब्रल) अर्थात हड्डियां बड़ी और लंबी हो जाती है, जबकि दो हड्डियों के जोड़ पर स्थित चक्र (डिस्क) गरदन और कमर के पास मोटी हो जाती है, जबकि वक्ष के हिस्से में पतली हो जाती हैं। इससे पीठ पर रीढ़ की हड्डी में असामान्य वक्री उभार होता है, जिससे पीठ पर कूबड़ निकल आता है। इसीलिए उसकी पीठ और कंधों के जोड़ बड़े थे। दोनों पसलियों को जोड़ने वाली उपास्थि (लचीली हड्डी) बाहर की ओर निकली हुई और बड़ी भी हो सकती है, जिससे ऐसा लगता होगा कि माला पहनी हुई है। शरीर में होने वाले इस बदलाव से छाती की लचीली क्रिया विधि परिवर्तित हो जाती है और श्वसन मांसपेशियों की सक्रियता को बड़ा नुकसान पहुंचाती है, जो आगे चलकर मांसपेशियों की कमजोरी अथवा मांसपेशियों के नष्ट होने के रूप में सामने आता है। सांस लेने में दिक्कत के कारण रक्त में आक्सीजन की पर्याप्त मात्रा नहीं पहुंच पाती है और हाइपोएग्जेमिया की समस्या पैदा होने लगती है। ऐसे मरीजों को लंबी-लंबी सांस लेने की जरूरत पड़ती है।

इब्ने-साद अनस के एक हदीस का हवाला देते हुए कहते हैं: 'अल्लाह के रसूल को जब कुछ पीना होता था तो वे तीन बार सांस खींचते थे और कहते थे कि वह बहुत अच्छा, आरामदेह और स्वादिष्ट है।' अनस ने तब कहा कि जबसे मुझे यह पता चला, मैं भी पीने से पहले तीन बार सांस खींचता था।'' अनस ने सोचा कि पीने से पहले गहरी सांस लेना सुन्नत है और इसमें भी रसूल का अनुकरण करने की कोशिश की। जबकि वास्तविकता यह थी कि इससे मुहम्मद को सांस लेने में दिक्कत होने और उसकी बीमारी के लक्षण का संकेत मिलता है। यह बताता है कि मुसलमान किस तरह अंधा बनकर अपने रसूल का अनुकरण करता है।

और भी हदीसें हैं जो मुहम्मद के सांस लेने में दिक्कत के बारे में बताती हैं। यह बीमारी ही वह वजह थी कि मुहम्मद धीमा बोलता था, ताकि बोलते समय बीच में सांस ले सके। इब्ने-साद आयशा का हवाला देते हुए लिखता है:

अल्लाह के रसूल लगातार उतनी रफ्तार से नहीं बोलते थे, जितनी तेजी से तुम बोलते हो। वह रुक-रुक कर धीमा बोलते थे, ताकि जो उन्हें सुन रहा है, वो उनकी बात को ठीक से समझ सके।[291] रसूल की बोली गाने की तरह नहीं होती थी, बल्कि वह बोलते समय शब्दों को लंबा खींचते थे और जोर लगाकर उच्चारण करते थे।[292]

अतिकाया विकार (एक्रोमेगली) उपापचय (मेटाबोलिक) दर बढ़ा देता है, जिससे बहुत पसीना आना (हाइपरहाइड्रोसिस), गर्मी के प्रति असामान्य असहनशीलता, अथवा त्वचा की वसामय ग्रंथियों (सीबैसियस ग्लैंड्स) में से तेल (वसा) बनने में वृद्धि से त्वचा का असामान्य रूप से तैलीय होना आदि समस्याएं आती हैं। हदीस के मुताबिक मुहम्मद तैलीय चिपचिपापन और उसकी बदबू से बचने के लिए बार-बार हाथ-पांव धोता था और वह अपनी बीमारी (ओसीडी) के कारण भी ऐसा करता था। अपनी मौत से पांच दिन पहले उसके शरीर का तापमान इतना बढ़ गया कि वह बेहोश हो गया और दर्द से तड़पने लगा था। उसने अपनी एक बीबी को हुक्म दिया, 'मेरे ऊपर अलग-अलग कुओं के सात किराब (चमड़े का बना हुआ जल पात्र) पानी डालो, ताकि मैं बाहर जा सकूं

और लोगों से मिल सकूं, बात कर सकूं।'

यह यूं ही नहीं था कि मुहम्मद ने अपना चित्र बनाने को निषेध किया, बल्कि उसने ऐसा इसलिए किया क्योंकि वह अपनी बदसूरत शक्ल और विकृत शरीर को लेकर बहुत सचेत था। इसीलिए उसने इस बात को प्राथमिकता दी कि लोग उसके रूप के बजाय उसके पैगामों पर अधि तवज्जो दें। हालांकि जब परखा जाता है तो उसके पैगाम उसके रूप से भी अधिक बदसूरत प्रतीत होते हैं।

एक चित्र हजार शब्दों से अधिक प्रभावशाली होता है। बायीं तरफ एक सामान्य पैर की छाप है। दाहिने ओर मुहम्मद के भारी और मोटे पैरों की छाप है। केवल हदीस ही नहीं दर्शाते हैं कि वह अतिकाया विकार (ऐक्रोमेगली) से पीड़ित था, बल्कि हमारे पास इसके ठोस सबूत हैं।

पेशेवर पहलवान माउरिस टिलेट (1903–1955) अतिकाया विकार (ऐक्रोमेगली) से पीड़ित था। उसका जन्म फ्रांस में हुआ था और वह बहुत प्रतिभाशाली था, 14 भाषाएं बोल सकता था। उसकी शारीरिक विशेषताओं को मुहम्मद के बारे में चित्रण से मिलाएं। ऐक्रोमेगली से पीड़ित इंसान जिसमें जबड़े, नाक और माथे की हड्डी बढ़ी हुई है और चेहरा भद्दा दिख रहा है।

---

275 Bukhari Volume 7, Book 72, Number 793

276 Abu ?Isa Muhammad ibn ?Isa ibn Musa ibn ad-Dahhak as-Sulami at-Tirmidhi (824-892) was a collector of hadith. His collection, Sunan al-Tirmidhi, is one of the six canonical hadith compilations used in Sunni Islam. The following hadiths are from his collections.

277 Bukhari Volume 2, Book 21, Number 230

278 www.scielo.br/scielo.php?pid=S0365-05962004000400010&script=sci_arttext&tlng=en

279 http://endocrine.niddk.nih.gov/pubs/acro/acro.htm

280 www.scielo.br/scielo.php?pid=S0365-05962004000400010&script=sci_arttext&tlng=en

281 Muhammad Husayn Haykal (1888, 1956): The Life of Muhammad, http://www.witnesspioneer.org/vil/Books/SM_tsn/ch7s12.html

282 Sahih Muslim Book 007, Number 2700

283 Volume 7, Book 72, Number 806

284 Ahmad and Nasaa`i

285 Tabaqat, Volume 1, Page 380

286 Ibid.

287 Several ahadith say that Muhammad often slept hungry. These are exaggerations to portray Muhammad as a long-suffering prophet. How could he go hungry when he had confiscated the wealth thousands of Jews of Arabia and had hundreds of slaves, is a question that only Muslim forgerers of hadith could answer. When Muhammad migrated to Medina, he was poor. However, he soon accumulated a lot of wealth through pillaging.

288 The ancient process of drawing blood from the body by scarification and the application of a cupping glass, or by the application of a cupping glass without scarification, as for relieving internal congestion. (Random House Unabridged Dictionary, © Random House, Inc. 2006.)

289 Bukhari Volume 7, Book 71, Number 602

290 Bukhari Volume 4, Book 56, Number 753

291 Tabaqat Volume 1 page 361

292 Ibid. page 362

अध्याय
6

मुहम्मद का संप्रदाय

हम मुसलमानों के उन्माद के स्तर को देखकर अक्सर हैरत में पड़ जाते हैं। लाखों की संख्या में मुसलमान दंगे करते हैं, गिरजाघर जलाते हैं और निर्दोष लोगों को मारते हैं, क्योंकि किसी समाचारपत्र ने मुहम्मद का कार्टून छाप दिया अथवा पोप ने ऐसे किसी मध्यकालीन सुल्तान का हवाला दे लिया, जो कहता था कि हिंसा अल्लाह की प्रकृति के अनुरूप नहीं है।

सामान्यत: लोग उस मजहबी व्यवस्था के पक्ष में झुके होते हैं, जिसके अनुयायियों की संख्या अधिक होती है। उन्हें लगता है कि इस्लाम का विशाल आकार उसे मजहब कहे जाने योग्य बनाता है। पर क्या इस्लाम वास्तव में धर्म है? यह धर्म नहीं, महज एक भ्रांति है, जिसमें संख्या के आधार पर तर्क (आर्गुमेंटम एड न्यूमरम) किया जाता है।

कुछ लोग कहते हैं कि सभी धर्म एक संप्रदाय के रूप में ही शुरू हुए थे और समय के साथ धीरे-धीरे इनको स्वीकार्यता और धर्म की प्रतिष्ठा मिली। हालांकि धर्म और संप्रदाय में कुछ मूलभूत अंतर है, जो संप्रदाय को धर्म से अलग करती है।

कार्लो वेड ने 'साइकॉलजी 101' में कहा है, धर्म, राजनीति और अन्य संप्रदायों के अध्ययन में इस तरह के उत्पीड़कारी अनुनय में अनेक महत्वपूर्ण चालों की पहचान हुई है:

1. लोगों को शारीरिक अथवा भावनात्मक विक्षुब्धता वाली स्थिति में रखा जाता है।
2. उनकी समस्याओं को एक सरल व्याख्या के माध्यम से कम किया जाता है और यह व्याख्या जोर देकर बार-बार दोहराई जाती है।
3. उन्हें किसी करिश्माई नेता की ओर से बिना शर्त प्यार, स्वीकार्यता और महत्व मिलता है।
4. उन्हें समूह के आधार पर नई पहचान मिलती है।
5. वे फंसाए जाते हैं (दोस्तों, रिश्तेदारों और मुख्यधारा की संस्कृति से अलग-थलग किया जाता है) और सूचना तक और सच्चाई तक उनकी पहुंच पर कड़ाई से नियंत्रण रखा जाता है।[293]

इस्लाम के गठन के समय से ही उसमें ये सारे लक्षण रहे हैं। डॉ. जंजा लैलिच (Dr. Janja Lalich) और डॉ. माइकल डी. लैंगान (Dr. Michael D. Langone) ने इस तरह के लक्षणों की सूची तैयार की है और बाद में लैलिच के सह लेखन में इसे एक पुस्तक के रूप में प्रकाशित किया गया।[294] इस पुस्तक में संप्रदाय की व्याख्या बहुत ढंग से की गई है।[295] जितना अधिक किसी समूह या सिद्धांत में ये लक्षण होंगे, उतना ही इन्हें संप्रदाय के रूप में परिभाषित और निरूपित किया जाएगा। इस सूची में निम्नलिखित लक्षण शामिल हैं और मैंने इस्लाम के साथ इन लक्षणों का मिलान बिंदुवार किया है।

1. ऐसा समूह अपने महजब को लेकर अत्यधिक जोश में रहता है और अपने नेता (जीवित हो या मृत) को लेकर कोई सवाल न करने को प्रतिबद्ध होता है, अपनी रीतियों, विचार और मजहबी क्रियाकलापों को सत्य और कानून मानता है।

मुसलमान अपने मजहब को लेकर अति जोश में रहते हैं और अपने रसूल के बारे में किसी तरह का सवाल बर्दाश्त नहीं करते हैं और मानते हैं कि रसूल की किताब कुरान ही सत्य है और उनके लिए कानून है।

2. प्रश्न करना, संदेह करना अथवा असहमति व्यक्त करना हतोत्साहित किया जाता है और बल्कि ऐसा करने पर सजा दी जाती है।

   मुसलमानों के लिए अपने मजहब के बुनियादी सिद्धांतों के बारे में सवाल करना अथवा संदेह करना निषेध है और इन सिद्धांतों से असहमति की सजा मौत है।

3. मन फेरने वाले क्रियाकलाप (जैसे कि ध्यान, गुणगान, मन में बुदबुदाना, अन्य समूहों या सिद्धांतों की बुराई करना और थका देने वाली दिनचर्या) अधिकता में होते हैं और ये समूह और उसके नेता के प्रति संदेह को दबाने का काम करते हैं।

मुसलमान दिन में पांच बार अपना काम छोड़कर दुहराव वाली और मजहबी इबादत करते हैं और कुरान की आयतें बोलते हैं। इसके अलावा वे एक पूरा महीना रोजा रखते हैं और सूर्योदय से सूर्यास्त तक कुछ भी खाने या पीने से परहेज करते हैं। यह खासकर गर्मी के मौसम में उन पर भारी पड़ता है। इन मजहबी क्रियाकलापों से सनक के स्तर तक जुड़ाव और ये सब न करने अथवा इन सबकी प्रासंगिकता पर सवाल उठाने पर बुरा होने का डर इतना भयानक होता है कि मोमिन कभी इन मजहबी क्रियाकलापों, पैगम्बर और इस्लाम के बुनियादी सिद्धांतों पर संदेह नहीं कर पाता है।

4. नेतृत्व हुक्मनामा जारी करता है और कभी-कभी विस्तृत निर्देश भी जारी किए जाते हैं कि समूह के सदस्यों को किस तरह सोचना चाहिए, किस तरह व्यवहार करना चाहिए और किस तरह महसूस करना चाहिए। उदाहरण के लिए, समूह के सदस्यों को किसी के साथ डेट पर जाने, नौकरी बदलने, शादी करने से पूर्व अनुमति लेनी चाहिए। समूह का नेता बताता है कि किस तरह के कपड़े पहनने चाहिए, कहां रहना चाहिए, बच्चे पैदा करना चाहिए या नहीं करना चाहिए, बच्चों को अनुशासन में कैसे रखना चाहिए वगैरा-वगैरा।

मुसलमानों के जीवन का हर पहलू निर्धारित है। उसे बताया जाता है कि क्या हराम (निषेध) है और क्या हलाल (अनुमति) है, क्या खाएं, किस हाथ से खाएं, और कौन सी उंगली चाटें, कैसे कपड़ा पहने, कैसे दाढ़ी बनाएं, कैसे दांतों को साफ करें, नमाज पढ़ते समय क्या क्रियाकलाप हो, शौच निवृत्ति कैसे करें और नमाज के दौरान हवा खोलने से बचें (क्योंकि हवा खुलने से नमाज रद्द हो जाएगी।) किसी मुसलमान को डेट करने की इजाजत नहीं होती। शादी परिवार की रजामंदी से हो सकती हैं। बच्चों और वयस्कों दोनों के लिए मौत की सजा और शासक वर्ग की आज्ञा का उल्लंघन करने पर कठोर शारीरिक यातना देने की सजा निर्धारित है।

5. समूह स्वयं को संभ्रांतवादी बताता है और अपने लिए, अपने नेता और सदस्यों के लिए विशेष और ऊंचे दर्जे का दावा करता है। उदाहरण के लिए समूह का नेता मसीहा, एक विशेष प्राणी, अवतार माना जाता है अथवा समूह या उसका नेता खुद को मानवता का उद्धार करने के विशेष मिशन पर आने को बताते हैं।

मुसलमान अपने रसूल के लिए विशेष दर्जे का दावा करते हैं, जबकि वे दूसरे धर्मों को गाली देते हैं, तुच्छ बताते हैं और यहां तक कि वे उस ईसाइयत और यहूदी धर्म को भी गाली देते हैं, जिसका वे सम्मान करने का दावा करते हैं। कुरान के ईसा और मूसा बाइबिल के ईसामसीह और मोजेज की तरह नहीं माने

जाते हैं। यदि रसूल की उपेक्षा हो तो मुसलमान घोर हिंसक हो सकते हैं। मुसलमान अपने मजहब को श्रेष्ठ बताते हुए खुद को दूसरों से श्रेष्ठ मानते हैं। जब वे गैर-मुस्लिम देश में रहते हैं तो लगातार रियायतों और वरीयतापूर्वक व्यवहार की मांग करते हुए लामबंदी करते हैं। ऐसा करते हुए मुसलमानों को अक्सर उन मामलों में छूट मिलती है, जो अन्य धर्मावलंबियों को नहीं मिलती है। उदाहरण के लिए, जनता के पैसे से चलने वाले सरकारी स्कूल में मुसलमानों को अलग से विशेष कक्ष मुहैया कराने का विशेषाधिकार दिया जाता है, ताकि मुस्लिम छात्र उसमें नमाज पढ़ सकें। ओंटारियो में मुसलमानों ने दबाव बनाया कि इस्लामिक कानून (शरीया) को मान्यता मिले और इसे अनिवार्य बनाया जाए, ताकि वे कनाडा के कानून से बचकर निकल सकें। भला हो कि इस्लाम छोड़ चुके लोगों के प्रबल विरोध के कारण, मुसलमानों का यह प्रयास विफल कर दिया गया।

6. ऐसा समूह समाज के अन्य लोगों के खिलाफ खड़े होने की मानसिकता से ध्रुवीकरण करता है, जिससे मुसलमानों के वृहद समाज के साथ संघर्ष की स्थिति उत्पन्न होने की आशंका बनी रहती है।

मुसलमानों में 'हमारा बनाम अन्य' की मानसिकता गहरे बैठी होती है। वे सभी गैर मुसलमानों, चाहे वे किसी भी धर्म के हों, के लिए स्पष्ट रूप से अपमानजनक शब्द 'काफिर' का इस्तेमाल करते हैं। 'काफिर' का अर्थ होता है ऐसा इंसान जो अल्लाह की निंदा करता हो। उनके लिए दुनिया सदा के लिए दार-उल-इस्लाम (शांति की भूमि) और दार-उल-हरब (युद्ध की भूमि) में बंटी हुई होती है।

मुसलमान गैर-मुस्लिम देशों को युद्ध की भूमि मानते हैं। प्रत्येक मुसलमान का दीनी फर्ज है कि युद्ध भूमि में जेहाद छेड़े और गैर-मुस्लिमों से संघर्ष करे, उनका कत्ल करे और उन पर नियंत्रण कर उस भूमि को दार-उल-इस्लाम में बदले। इस्लाम के मुताबिक शांति केवल गैर-मुस्लिमों पर नियंत्रण करने और उनको इस्लामी कानून के अधीन लाने से ही आ सकती है। मुसलमानों का इरादा सबको इस्लाम कबूल करवाने से अधिक इस्लामी शासन स्थापित करना होता है। गैर-मुस्लिम अपने धर्म का पालन तो कर सकते हैं, लेकिन केवल ज़िम्मी के रूप में। ज़िम्मी का मतलब होता है 'संरक्षित' और यह केवल ईसाइयों और यहूदियों पर लागू होता है। जैसा कि कुरान में कहा गया है कि ईसाई और यहूदी (कुरान में उल्लिखित लोग) संरक्षित किए जाएंगे, पर शर्त यह है कि ये मुसलमानों को जज़िया के रूप में जाना जाने वाला 'संरक्षण कर' अदा करें और साथ ही खुद को नीच और पराजित भी महसूस करें।[296] यदि वे जज़िया अदा करने में नाकाम होते हैं तो उन्हें देश निकाला या मौत की सजा दी जा सकती है। यह ठीक वैसा ही है, जैसे कि एक माफिया काम करता है। यदि आप व्यापार करते हैं तो जब तक माफिया को संरक्षण धन (प्रोटेक्शन मनी) नहीं देंगे, आपको बख्शा नहीं जाएगा और आपका उत्पीड़न या कत्ल भी किया जा सकता है। दूसरे गैर-मुस्लिम जैसे मूर्तिपूजक, नास्तिक या जीववादी जो संरक्षित की श्रेणी में नहीं आ सकते हैं, उन्हें या तो धर्म बदलना पड़ेगा अथवा कत्ल कर दिए जाएंगे।

7. किसी भी अत्याचार या उत्पीड़न के लिए नेता उत्तरदायी नहीं होता है।

मुसलमानों के लिए मुहम्मद के सभी क्रियाकलाप कानून हैं। वह अपने किसी क्रियाकलाप के लिए जिम्मेदार नहीं ठहराया जा सकता है। वह जितनी चाहे उतनी औरतों से शादी कर सकता है या अवैध संबंध बना सकता है। वह मासूम नागरिकों पर हमला कर सकता है, निहत्थे आदमियों का कत्ल कर सकता है, उनकी धन-संपत्ति लूट सकता है और उनकी औरतों व बच्चों को गुलाम बना सकता है और यहां तक कि उनका बलात्कार कर सकता है। वह अपने आलोचकों का कत्ल कर सकता है और उनके खजाने का पता जानने के लिए उन्हें दर्दनाक शारीरिक यातना दे सकता है। वह बच्चों के साथ यौन संबंध बना सकता है। वह झूठ बोल सकता है और अपने विरोधियों को धोखा दे सकता है। वह जंग के दौरान पकड़े गए कैदियों की नृशंस तरीके से हत्या कर सकता है। उसके अनुयायियों

को उसकी ये हरकतें बिल्कुल परेशान नहीं करती हैं। पहले तो मुसलमान जोरदार तरीके से इन आरोपों का खंडन करते हैं और आप पर रसूल की छवि खराब करने का आरोप मढ़ देते हैं। लेकिन जब सबूत रख दिए जाते हैं तो उनका रुख एकदम से बदल जाता है और मुहम्मद का बचाव करने लगते हैं। वे कुतर्क करते हुए मुहम्मद की उन्हीं बुराइयों को न्यायोचित ठहराने लगते हैं, जिन्हें वे पहले चिल्ला-चिल्लाकर झूठा आरोप बताते हुए खंडन कर रहे थे। **मुसलमानों के लिए मुहम्मद के क्रियाकलाप मनुष्यों के सही या गलत के पैमाने पर नहीं मापे जा सकते हैं बल्कि मुसलमान यह मानते हैं कि सही या गलत मुहम्मद के व्यवहार और क्रियाकलापों से तय होता है। नतीजतन यदि मुहम्मद ने कोई अपराध किया था तो मुसलमानों के लिए वह अपराध पवित्र कार्य होता है और उसके अनुयायियों द्वारा बिना किसी शक-शुब्हे के उस अपराध को अपने जीवन में उतारा जाता है। मुसलमान अशिष्टता और वहशीपन भरे क्रूर कृत्य बिना किसी ग्लानि के करने में सक्षम होते हैं, क्योंकि ये उनकी सुन्नत (मुहम्मद द्वारा किए गए काम) हैं।**

8. ऐसा समूह सिखाता है अथवा बताता है कि उसकी मान्य रूप से ऊंची स्थिति हर उचित या अनुचित साधन, जिसकी जरूरत पड़े, को न्यायोचित कर देती है। इससे समूह के सदस्य उन गतिविधियों या व्यवहार में संलिप्त होने लगते हैं, जिन्हें वे समूह में शामिल होने से पहले पाप या अनैतिक मानते थे (उदाहरण के लिए, परिवार के सदस्यों या दोस्तों से झूठ बोलना अथवा फर्जी संस्था के लिए दान मांगकर धन इकट्ठा करना)।

इस्लाम में साध्य ही साधन के औचित्य या अनौचित्य को बताता है। उदाहरण के लिए हत्या करना गलत है, पर यदि इस्लाम को बढ़ावा देने के लिए हत्या की जाए तो वह अच्छा है। खुदकुशी करना मना है, पर गैर-मुस्लिमों की मौत का कारण बनने के लिए आत्मघाती विस्फोट करना पवित्र कार्य है। संगी-साथियों का धन या सामान चुराना हराम है, लेकिन गैर-मुस्लिमों का लूटना दीन में उल्लिखित कार्य है और ऐसा मुहम्मद करता था। औरतों से अवैध संबंध बनाना निषेध है, लेकिन गैर-मुस्लिम औरतों का बलात्कार करना जायज है। धरती पर अल्लाह का शासन स्थापित करने का लक्ष्य इतना उदात्त माना जाता है कि बाकी सब इसके आगे बेकार है। इस्लाम के इतिहास में हम पढ़ते हैं कि लोगों ने अपने बाप का कत्ल कर दिया या उनके खिलाफ जंग छेड़ दी। इस्लाम में इस तरह के कार्य को मुसलमानों के गहरे ईमान और अल्लाह की बंदगी मानकर सराहा जाता है। इस्लाम में झूठ बोलना हराम है, लेकिन जब गैर-मुस्लिमों को धोखा देना हो और इस्लाम के हित को आगे बढ़ाना तो ऐसा करना जायज है।

9. समूह का नेतृत्व सदस्यों पर प्रभाव जमाने या उन पर नियंत्रण करने के लिए उन्हें गुनाहगार अथवा पापी होने का अहसास कराता है। अक्सर ऐसा साथियों के दबाव के माध्यम से और बहुत बारीकी से समझा-बुझाकर किया जाता है।

मुसलमान अपराध-बोध के बोझ से ग्रस्त रहता है। यदि मुसलमान कुछ ऐसा करता है, जो उसके मजहब में हराम बताया गया है तो दूसरे मुसलमानों का फर्ज है कि उसे शरिया कानून की याद दिलाएं और उसका अनुपालन करने को कहें। अधिकतर इस्लामिक देश, खासकर सऊदी अरब और ईरान में राज्य ही प्रत्येक व्यक्ति द्वारा शरिया कानून का अनुपालन सुनिश्चित कराता है। साल 2002 में सऊदी अरब की मजहबी पुलिस ने स्कूली छात्राओं को उस बिल्डिंग से बाहर निकलने से रोक दिया था, जिसमें आग लगी थी। छात्राओं को यह कहकर बाहर नहीं निकलने दिया गया था कि उन्होंने इस्लामी तरीके से कपड़े नहीं पहने हैं।[297] इसका परिणाम यह हुआ था कि उस भवन में 15 छात्राएं जिंदा जलकर मर गईं।

10. समूह के नेता के मातहत या समूह को ऐसे सदस्यों की आवश्यकता होती है, जो अपने परिवार या दोस्तों से संबंध तोड़ लें और कट्टरतापूर्वक जीवन के उन उद्देश्यों और क्रियाकलापों को बदल दें, जो उनमें समूह में शामिल होने से पहले थीं।

जो गैर–मुस्लिम इस्लाम कबूल करते हैं, उन्हें अपने परिवार या दोस्तों से संपर्क खत्म करने के लिए उकसाया जाता है। जैसा कि अध्याय दो में मैंने लिखा है कि बड़ी संख्या में गैर–मुस्लिम अभिभावकों ने अपने उन बच्चों के बारे ऐसी हृदयविदारक घटनाएं भेजी थीं, जिन्होंने इस्लाम कबूल कर लिया था।

इसका नतीजा यह हुआ कि इन बच्चों ने अपने परिवार से संपर्क बिलकुल खत्म कर दिया। कभी–कभार उनके परिजनों को बच्चों की तरफ से फोन आता था अथवा वे बेरुखी भरी मुलाकात करते थे, लेकिन मुलाकात इतनी सीमित होती थी, या मुलाकात के समय बच्चे या उसके पति या पत्नी की ओर से इतनी बेरुखी दिखाई जाती थी कि रिश्तों की गर्माहट की इतनी कमी होती थी कि अभिभावक और अधिक सदमे में चले जाते थे। इन मुलाकातों का भी सामान्यत: एक ही मकसद होता था, वह यह कि वे अपने अभिभावकों पर इस्लाम कबूल करने का दबाव बना सकें। जैसे ही अभिभावक इसका विरोध करते थे, बच्चे उन्हें छोड़कर चले जाते थे।

11. ऐसा समूह नए सदस्यों की भर्ती के लिए उतावला रहता है।

मुसलमानों का एक ही मुख्य उद्देश्य होता है और वह है इस्लाम का प्रसार। इस्लाम के प्रसार के लिए कार्य करने को दावा कहा जाता है। प्रत्येक मुसलमान का यह फर्ज है कि वह नए लोगों को मुसलमान बनाए और इसकी शुरुआत वह अपने परिवार और दोस्तों से करे। इस्लाम का प्रसार करना प्रत्येक मुसलमान का जुनून होता है।

12. ऐसा समूह पैसे बनाने में तल्लीन रहता है।

जिहाद के लिए धन इकट्ठा करना सभी मुसलमानों का मुख्य उद्देश्य होता है। आज यह इस्लामी चैरिटी के रूप में किया जाता है। लेकिन मुहम्मद के समय में जिहाद के लिए धन मुख्यत: लूटमार करके जुटाया जाता था। **इस्लाम का मुख्य लक्ष्य खुद को दुनिया की सबसे विशिष्ट ताकत के रूप में स्थापित करना है।**

13. ऐसे समूह के सदस्यों से समूह और समूह की गतिविधियों के प्रति अधिक से अधिक समय देने अपेक्षा की जाती है।

मुसलमानों का मुख्य जुनून इस्लाम है। उनके लिए नियमित रूप से मस्जिद जाना, पांचों वक्त की नमाज अदा करना, तकरीरों को सुनना आदि अनिवार्य है। वे अपने मजहबी क्रियाकलाप करने, मजहबी तरीके से पहनने, हलाल तरीके से खाने, नमाज अदा करने आदि के बारे में सोचते हुए इतने संलिप्त होते हैं कि किसी और बात के बारे में सोचने की फुर्सत ही नहीं होती है। वास्तव में उन्हें यह भी बताया जाता है कि क्या सोचना है और क्या नहीं सोचना है।

14. ऐसे समूह के सदस्यों को केवल अपने समूह के सदस्यों के साथ रहने या सामाजिक होने की सीख दी जाती है, प्रोत्साहित किया जाता है।

मुसलमान को सिखाया जाता है कि काफिरों का साथ छोड़ दें और केवल मुसलमानों के साथ ही मेलजोल बढ़ाएं।

कुरान गैर–मुस्लिमों को दोस्त बनाने से मना करता है (कुरान.3:28), गैर–मुस्लिमों को नजिस (गंदे, अशुद्ध) कहता है (कुरान.9:28) और गैर–मुस्लिमों के साथ अशिष्टता व निष्ठुरता से पेश आने का हुक्म देता है (कुरान.9:123)। मुहम्मद के मुताबिक, गैरमुस्लिम अल्लाह की नजर में निकृष्ट जानवर हैं (कुरान.8:55)

15. समूह के सर्वाधिक निष्ठावान सदस्य (वास्तविक रूप में मानने वाले) महसूस करते हैं कि उस समूह से बाहर जीवन की प्रासंगिकता नहीं है। वे मानते हैं कि उसके अलावा कोई और रास्ता नहीं है और अक्सर उनके मन में यह भय पैदा होता है कि समूह छोड़ने पर (अथवा छोड़ने का विचार मन में लाने पर भी) उन्हें प्रतिहिंसा का सामना करना पड़ेगा।

सच्चे मुसलमानों के लिए इस्लाम को छोड़ने का विचार इस कदर बर्दाश्त से बाहर होता है कि वे इसकी कल्पना करने से भी बचते हैं। इस तथ्य के बावजूद कि हाल के वर्षों में लाखों की संख्या में मुसलमानों ने इस्लाम छोड़ दिया है। कट्टर मुसलमान इस खामख्याली में ही विश्वास करते हैं कि कोई इस्लाम छोड़ ही नहीं सकता और इस्लाम छोड़ने का दावा मनगढ़ंत और मोमिनों के विश्वास को कमजोर करने की साजिश का हिस्सा है। मुसलमानों से जो ईमेल मुझे मिलते हैं, उनमें एक बात समान होती है और वह यह है कि वे सभी मुझे मौत के बाद दोजख की आग में जलने की चेतावनी देते हैं। दोजख और प्रतिहिंसा के डर के बीच मुसलमान अपने ही बनाए आतंक के जाल में फंसे हुए हैं।

इस्लाम मानव को आध्यात्मिकता सिखाने के लिए नहीं बनाया गया था और न ही प्रबुद्ध बनाने के लिए इसको गढ़ा गया था। इस्लाम में आध्यात्मिक संदेश गौण है या कहें कि है ही नहीं। इस्लाम में ईश्वर भक्ति का अर्थ है मुहम्मद का अनुकरण करना है, उस मुहम्मद का जो पवित्रता से कोसों दूर रहता था। इस्लाम के मजहबी क्रियाकलाप जैसे नमाज और रोजा केवल गैरमुस्लिमों को इस्लामी दुनिया में लुभाने के लिए खिड़की पर लगाए गए आकर्षक पर्दे के जैसे हैं, ताकि इस्लाम का रूप धार्मिकता और आध्यात्मिकता का दिखे। झूठा रसूल उसी तरह होता है जैसे कि शेर की खाल में भेड़िया।

जितना कठोर उतना श्रेष्ठ

मुसलमान अक्सर पूछते हैं: यदि मुहम्मद इतना बड़ा झूठा था तो उसने इस तरह का धर्म क्यों बनाया, जो इतने सारे बंधनों वाला और कठोर है? वास्तव में इस्लाम उन कठोर धर्मों में से एक है, जिस पर अमल करना बेहद मुश्किल है। यह धर्म तमाम वर्जनाओं, कर्मकांडों और कर्तव्यों के साथ संताप देने वाला है। क्या भय दिखाकर और धमकी देकर बांधे रखने वाले धर्म को मानने में कठिनाई नहीं होती?

आस्था का एक स्वयंसिद्ध आधारभूत सिद्धांत वह भी होता है, जिसमें विरोधाभास होता है। इसे कुछ इस तरह कहा जा सकता है: किसी सिद्धांत के अनुपालन में जितनी अधिक कठिनाई होगी, उतना ही उसमें स्वाभाविक आकर्षण होगा। यह हमारे मन की प्रवृत्ति है कि हम उन चीजों की प्रशंसा करते हैं, जिसे पाने के लिए अधिक यत्न करना पड़ता है। दूसरे शब्दों में कहें कि जो चीज हमें आसानी से या मुफ्त में मिल जाती है, उसका मोल हम कम आंकते हैं। संप्रदाय कष्ट की बड़ाई करते हैं और सरल जीवन का तिरस्कार करते हैं। यह अस्ल में वह कष्ट ही है, जो इन्हें आकर्षक बनाता है।

सभी संप्रदायों की प्रकृति ऐसी होती है कि उनका अनुसरण करना कठिन होता है। द फंडामेंटलिस्ट चर्च ऑफ जीसस क्राइस्ट ऑफ लेटर डे सेंट्स, एफएलडीएस के रूप पहचाने जाने वाले मोर्मन पॉलीगैमिस्ट संप्रदाय के वारेन जेफ्स के अनुयायी उसके लिए मुफ्त में काम करते थे और अपनी सारी कमाई उसे सौंप देते थे। वह हर महीने दो मिलियन डालर से अधिक धन इकट्ठा कर लेता था, जबकि उसके अनुयायी जिंदा रहने के लिए दान पर निर्भर रहते थे। जेफ्स का अपने अनुयायियों पर अनन्य नियंत्रण था। उसने अनुयायियों के लिए टीवी देखने, रेडियो सुनने, अपने गानों के अलावा कोई और गाना सुनने आदि पर प्रतिबंध लगा रखा था।

उसने अनुयायियों को रहने के लिए घर दे रखे थे और कह रखा कि वे किसी गैरसंप्रदाय के व्यक्ति के साथ मेलजोल न बढ़ाएं। वह अनुयायियों के लिए पति या पत्नी चुनता था। यदि वह प्रसन्न नहीं होता था तो आदेश देता था कि अनुयायी अपनी पत्नी को छोड़ दे। उसके अनुयायी उसकी आज्ञा का पालन करते थे। संप्रदाय पूरा समर्पण और साथ ही बड़े त्याग की मांग करता है।

अन्य संप्रदायों जैसे जिम जोन्स, शॉको असहारा, द मूनीज या हैवेन्स गेट को देखें। इन संप्रदायों का अनुसरण करना सरल नहीं था। इन संप्रदायों के सदस्यों को अक्सर कहा जाता था कि वे अपने सारी धन-संपदा नेता को सौंप दें, अपने कामधाम, दोस्त-यार, रिश्तेदारों को छोड़ दें, ताकि संप्रदाय के नेता का अनुसरण कर सकें। इन संप्रदायों के अनुयायी कठोर जीवन जीने के लिए बाध्य किए जाते थे और कभी-कभी तो संभोग करने से परहेज करने को कहा जाता था। इस बीच, संप्रदाय का नेता वह सबकुछ करता था, जिसकी उसे इच्छा होती थी। डेविड कोरेश अपने अनुयायियों से कहता था कि महिलाएं ईश्वर से संबंधित होती हैं। चूंकि वह मसीहा है, इसलिए महिलाएं उससे संबंधित हैं। वह अनुयायियों को ब्रह्मचर्य का पालन करने का आदेश देता था, लेकिन उनकी पत्नियों और युवा बेटियों के साथ सोता था। शॉको असहारा, जिम जोन्स और सामान्यतः सभी संप्रदाय नेताओं ने अपनी आज्ञा का उल्लंघन करने वाले को कठोर सजाएं दी हैं। ऐसे दुर्व्यवहार और कठिनाई के बावजूद उन अनुयायियों के लिए सबसे सख्त सजा धर्म से बहिष्कृत किया जाना होती थी। इन संप्रदायों के कुछ लोग धर्म से बहिष्कृत किए जाने पर आत्महत्या कर लेते थे।

संप्रदाय के नेता उन अनुयायियों को समाज से बाहर निकाल देते थे, जो अनियंत्रित होते थे। लोग अपनी जड़ों के बिना जिंदा नहीं रह सकते। यदि व्यक्ति को समाज से बाहर निकाल दिया जाए तो अलग-थलग व अकेला पड़ जाएगा और अंत में हार मान लेगा। यही वह तरीका है, जिसके जरिए मुसलमान अपने बीच मौजूद गैर-मुस्लिम अल्पसंख्यकों को धर्म परिवर्तन के लिए मजबूर करते हैं।

संप्रदाय त्याग की मांग करते हैं। त्याग के माध्यम से व्यक्ति को उस संप्रदाय में अपना विश्वास और निष्ठा साबित करनी होती है। संप्रदाय के अनुयायियों को यह विश्वास दिलाया जाता है कि वे अपना सब कुछ छोड़कर ही, यहां तक कि जीवन त्याग कर, ईश्वर की कृपा अथवा गुरु की प्राप्त कर सकते हैं। इसमें तर्क यह है कि किसी चीज के लिए जितना आप त्याग करेंगे, उतना ही उसको महत्व देंगे। जब आपकी मुक्ति दांव पर हो तो कोई भी त्याग कम होता है। मुहम्मद ने उनको जन्नत में शाश्वत जीवन, हूरों और 80 पुरुषों के बराबर यौन क्षमता का लालच दिया, जो उसमें भरोसा करते हों और उसके लिए कुर्बानी देने को तैयार हों। जब पुरस्कार इतना बड़ा हो तो उसे हासिल करने के लिए कुर्बानी भी उतनी ही बड़ी होनी चाहिए। अपने अनुयायियों को और अधिक कुर्बानी देने के लिए प्रोत्साहित करते हुए मुहम्मद ने कहा:

माज़ूर लोगों के सिवा जिहाद से मुंह छिपा के घर में बैठने वाले और अल्लाह की राह में अपनी जान व माल से जिहाद करने वाले हरगिज़ बराबर नहीं हो सकते। अल्लाह अपने जान व माल से जिहाद करने वालों को उनसे ऊंचा दर्जा देता है, जो घर बैठे रहते हैं। अल्लाह ने सब ईमान वालों के लिए अच्छे का वादा कर लिया है। लेकिन जो जिहाद करते हैं, लड़ते हैं, उनको अल्लाह ने खास इनाम के लिए उनसे अलग कर लिया है, जो घर में बैठे हैं। (कुरान. 4:95)

दूसरे शब्दों में कहा जाए तो यदि तुम अल्लाह और उसके रसूल में विश्वास करोगे तो इनाम मिलेगा, लेकिन वह इनाम उनको मिलने वाले इनाम के बराबर नहीं होगा, जो जिहाद छेड़ते हैं, अपनी जान और माल कुर्बान करते हैं और अल्लाह की राह में शहीद हो जाते हैं।

किसी संप्रदाय की आवश्यकताएं जितनी दुसाध्य होंगी, वह संप्रदाय उतना ही खतरनाक होगा। कुछ संप्रदाय आपको पूर्णकालिक सदस्य के रूप में तब तक नहीं स्वीकार करते हैं, जब तक कि आप बड़ी कुर्बानी देकर अपनी निष्ठा सिद्ध नहीं कर देते हैं। मुहम्मद ने अपने अनुयायियों को यह भरोसा दिलाया कि ये कुर्बानियां आवश्यक हैं और मजहब का हिस्सा हैं। संप्रदाय के लिए खर्च करना अथवा अपनी सारी संपत्ति संप्रदाय के नेता को सौंप देना आपकी आस्था और प्रतिबद्धता का परिचायक माना जाता है। संप्रदाय के नेता मनोरोगी नार्सीसिस्ट और छलने में उस्ताद होते हैं। इन्हें यह देखकर अच्छा लगता है कि लोग उनके लिए श्रमसाध्य कार्य कर रहे हैं और वे इससे खुद की ताकत का अहसास करते हैं, अपने सर्वशक्तिमान होने का आनंद लेते हैं। इनकी नार्सीसिस्टिक भूख अपने अनुयायियों की गुलामी और त्याग देखकर शांत होती है। उनके अंधे अनुयायी कुछ भी करेंगे, यहां तक कि जंग छेड़ेंगे, हत्याएं करेंगे, अपनी जान दे देंगे ताकि नेता की दृष्टि में अच्छे सिद्ध हो सकें। नेता अथवा मालिक बनने की तृष्णा में जीने वाले नार्सीसिस्ट के प्रभुत्व और नियंत्रण के लिए अनुयायियों की गुलामी की मानसिकता खाद का काम करती है। ऐसे लोग ताकत का आनंद लेते हैं और उनके अनुयायी इस कठोरता को, अपने नेता के उद्देश्य को सत्य मानने की गलती कर बैठते हैं।

आखिर अधिकांश पैगम्बर पुरुष ही क्यों हुए? ऐसा इसलिए है, क्योंकि नार्सीसिस्म प्रमुखतः पुरुषों में होने वाली मनोविकृति होती है। यद्यपि कि महिलाएं भी नार्सीसिस्ट हो सकती हैं, फिर भी महिलाओं से अधिक पुरुष नार्सीसिस्ट हैं। परिणाम स्वरूप महिलाओं की तुलना में पुरुष पैगम्बरों, संप्रदाय के नेताओं, तानाशाहों की संख्या अधिक है। संप्रदाय पारंपरिक रूप से कठोर धार्मिक नियम-कायदों को लागू करते हैं। अनुयायी जब पूरी बारीकी से इन नियम-कायदों का पालन करते हैं तो वे इस इस विश्वास की ओर बढ़ने लगते हैं कि उन्हें दुखों से मुक्ति मिल जाएगी। वे इन मजहबी क्रियाकलापों के प्रति इतने आसक्त हो जाते हैं कि सोचने लगते हैं, इन्हें नहीं किया गया तो पाप होगा। ऐसी मान्यता फैला दी जाती है कि अल्लाह को खुश करने अथवा ज्ञान प्राप्त करने के लिए इन मूर्खतापूर्ण धार्मिक क्रियाकलापों का किया जाना अनिवार्य है। हालांकि इन मजहबी क्रियाकलापों (कर्मकांडों) का अस्ली उद्देश्य अनुयायियों को फंसाए रखना और बांधे रखना होता है। वास्तविकता में इन मजहबी क्रियाकलापों का ईश्वर के साथ कोई संबंध नहीं होता है। ये नार्सीसिस्ट को अपने अनुयायियों के ऊपर अधिकाधिक नियंत्रण बनाने के लिए होते हैं।

इस्लाम के मजहबी क्रियाकलाप अनिवार्य नमाज और रोजा विचारों और भावनाओं के प्रति असंवेदनशील बनाने का काम करते हैं। मुसलमानों को कुछ निश्चित खाद्य पदार्थों को खाने, संगीत सुनने और विपरीत लिंग से मेलजोल बढ़ाने से परहेज करने को कहा जाता है। यदि वह औरत है तो उसे चिलचिलाती धूप और गर्मी में भी बुर्के में रहना होता है, ढीला-ढाला कपड़ा पहनना होता है, गैर मुस्लिम परिवार व दोस्तों से संबंध खत्म करना होता है। ये कष्ट और त्याग अनुयायियों को विश्वास दिलाता है कि वे इनके बदले में अच्छा प्रतिफल पाएंगे। अनुयायी इन धार्मिक क्रियाकलापों और त्याग के प्रति जुनूनी हो जाता है। जब वह कष्ट सहता है तो सोचता है कि दूसरी दुनिया में अपने लिए ईश्वर की कृपा और इनाम इकट्ठा कर रहा है और इस तरह वह उल्लासोन्माद व आनंद से भर जाता है। विडम्बना यह है कि अनुयायी जितना अधिक कष्ट सहता है, उतना ही आनंद व संतोष का अनुभव करता है।

किसी संप्रदाय में विश्वास करने वाले लोगों द्वारा ईश्वर की कृपा प्राप्त करने के लिए स्वेच्छा से अपने शरीर को पीड़ा पहुंचाना असामान्य बात नहीं है। 'कष्ट के बिना फल नहीं मिलता' की कहावत पर विश्वास करना हम मनुष्यों की प्रवृत्ति है। प्राचीन काल में हमारे पुरखे ईश्वर को प्रसन्न करने के लिए त्याग किया करते थे। बड़ा प्रतिफल प्राप्त करने के लिए वे बड़ा बलिदान देते थे। कुछ संस्कृतियों में विश्वास इतना गहरा था कि वे लोगों और अपने बच्चों तक की बलि दे देते

थे। इस्लाम (साथ ही अन्य संप्रदायों) पर अमल करने में आने वाली कठिनाई और आज्ञाकारी व धर्मात्मा बने रहने के लिए मुसलमानों को बड़ी कुर्बानी देने का हुक्म इस्लाम की मुख्य अपील है। संप्रदाय पर अमल करना जितना कठिन होगा, यह उतना ही सत्य प्रतीत होगा। जो कुर्बानी नहीं देते हैं, वे अपराधबोध से ग्रस्त होते है। अक्सर कुर्बानी देने पर जो तकलीफ होती, उससे कहीं अधिक कष्ट कुर्बानी नहीं देने के अपराधबोध पर होने लगता है।

प्रमुख प्रख्यात नार्सीसिस्ट संप्रदायों के नेता

बहुत से विद्वानों के लिए मुहम्मद का व्यक्तित्व एक पहेली है। यहां तक कि जो विद्वान मुहम्मद के दावों को स्वीकार नहीं करते हैं, वे भी कहते हैं कि मुहम्मद का व्यक्तित्व प्रभावशाली करिश्माई था। वह अपने आसपास के लोगों को इस सीमा तक सम्मोहित कर सकता था कि वे उसमें पूरी आस्था रखने लगते थे। वे उससे इतना अधिक प्रभावित हो जाते थे कि उसके कहने से किसी का कत्ल तक कर सकते थे या अपनी जान दे सकते थे। इतने कम समय में कैसे वह इतने सारे प्रण कर सकता है, इतनी बड़ी-बड़ी इच्छाएं पाल सकता है, इतना बड़ा सोच सकता है और इतना ताकतवर हो सकता है? इसका राज क्या था?

ऐसी कौन सी चीज थी, जिसने मुहम्मद को इतनी बड़ी कामयाबी दिलाई। दरअस्ल, यह चीज और कुछ नहीं, बल्कि बचपन से वह जिस प्यार को तरस रहा था, उसे पाने की भूख थी। इतिहास के इस महान प्रसिद्ध नार्सीसिस्ट के पीछे का राज यही है। यही वह तत्व है, जो नार्सीसिस्टों को लगातार और बिना थके हुए आगे बढ़ने की प्रेरणा देती है। ऐसे लोगों की कमी नहीं है, जो खुद को पैगम्बर अथवा मसीहा बताते हैं। इसी तरह ऐसे मूर्खों की भी कमी नहीं है, जो ऐसे लोगों का अनुसरण इस हद तक करते हैं कि अपनी निष्ठा प्रकट करने के लिए किसी की जान ले सकते हैं या अपनी जान दे सकते हैं। ऐसे नार्सीसिस्टों की प्रेरणा का स्रोत सम्मान, प्रशंसा और ताकत होता है। नार्सीसिस्ट धूर्त कलाकार होते हैं। वे अपनी पहचान के लिए भूखे होते हैं। वे जिद्दी, जोड़तोड़ में माहिर और ढीठ होते हैं। वे होशियार, धूर्त और साधनसम्पन्न होते हैं। कुछ प्रसिद्ध नार्सीसिस्टों में नेपोलियन, हिटलर, स्टालिन, मुसोलिनी, पोलपोट, माओ, सद्दाम हुसैन, ईदी अमीन, जिम जोन्स, डेविड कोरेश, शॉको असहारा और चार्ल्स मैनसन आदि हैं। नार्सीसिस्ट लोग भावनात्मक रूप से विक्षुब्ध इंसान होते हैं। वे अपनी वैधता ताकत के रूप में ही देखते हैं और इसे हासिल करने के लिए कुछ भी करने को उतारू रहते हैं। वे अपना आत्मविश्वास और सुरक्षा की भावना बढ़ाने के लिए बड़े विश्वास के साथ झूठ बोलते हैं। हालांकि उनकी ये आदत और कुछ नहीं, बल्कि उनके भीतर की असुरक्षा की भावना और डर को छिपाने के लिए मुखौटा होता है।

आइए कुछ नार्सीसिस्टों पर नजर डालते हैं और मुहम्मद से उनकी तुलना करते हैं। यह तुलनात्मक विश्लेषण संभवतः मुसलमानों के व्यवहार और इस्लाम के प्रति उनके अंधे समर्पण की व्याख्या करेगा।

जिम जोन्स सामान्य और शिष्ट लोगों को विश्वास दिलाता था कि वह मसीहा (समाज का उद्धार करने वाला) है। वह इन लोगों को उकसाता था कि अपना घर-बार छोड़कर उसके साथ जंगल के बीच स्थित उसके 'मदीना' पर जाएं। उसने गुयाना सरकार को भी अपने प्रभाव में लेकर 300 एकड़ भूमि बिलकुल मुफ्त ली थी। उसने अपने अनुयायियों को इस बात के लिए तैयार किया कि वे अपनी बीबियों को उसके साथ सोने दें। उसने अपने आदमियों को बंदूक लेकर चलने को प्रोत्साहित किया और आज्ञा दी कि असंतोष या असहमति जताने वाले व्यक्ति को मार दें। ये आदमी उसमें इतनी आस्था रखते थे कि इन्होंने एक सीनेटर व उसके अंगरक्षक को गोली मार दी। इसके बाद जिम जोन्स ने अपने अनुयायियों को बिना कुछ सोचे साइनाइड मिला शरबत पीकर सामूहिक रूप से जान देने के

लिए राजी कर लिया। जोन्स के कहने पर 911 लोगों ने अपनी इच्छा से एकसाथ आत्महत्या कर ली। इन लोगों ने अपने बच्चों को भी जहरीला शरबत पिला दिया। हम इस जोन्स के बारे में बाकी बात अगले अध्याय में करेंगे।

डेविड कोरेश ने टेक्सास के वाको के बाहरी इलाके में स्थित एक परिसर में अपने अनुयायियों को एकत्र किया। उसने अनुयायियों से कहा कि वह ईश्वर का पुत्र है और अनुयायियों ने उस पर भरोसा किया। उसने पहली घोषणा दक्षिणी कैलीफोर्निया स्थित द सेवेंथ डे एडवेंटिस्ट चर्च के समक्ष की, जिसमें कहा गया: 'मेरी सात आंखें हैं और सात सींग हैं। मेरा नाम 'ईश्वर का संदेश' है। अपने ईश्वर से मिलने के लिए तैयार हो जाओ।'

कोरेश संप्रदाय के एक पूर्व सदस्य मार्क ब्रेआल्ट ने लिखा है कि वर्नन (डेविड कोरेश का वास्तविक नाम) उसे अपने मठ में विश्वास में लेकर बोला: 'मेरे पास बहुत सारी औरतें होंगी, जो मुझसे संभोग करने की मिन्नतें करेंगी। जरा कल्पना करो, कुंवारी औरतें और वो भी जिनकी गिनती नहीं है।' कुछ सालों बाद उसके पास सेविकाओं के रूप में कम से कम 20 युवा व सुंदर औरतें थीं। इनमें से दो की उम्र केवल 14 वर्ष थी और एक लड़की की उम्र केवल 12 वर्ष। उस अल्लाह की तरह ही, जो अपने रसूल की वासना पूरी करवाने के लिए पूरा ध्यान रखता था, डेविड का ईश्वर भी उसकी शारीरिक सुख की जरूरतों का ध्यान रखता था। शुरू में उपदेशक के रूप में खुद को स्थापित करने वाला डेविड शीघ्र ही ईश्वर के पुत्र के रूप में प्रतिष्ठित हो गया और अपने अनुयायियों की पत्नियों से कामक्रीड़ा की मांग करने लगा। वह मानता था कि ये औरतें उसकी हैं और इन औरतों ने उससे अनुमति लिए बिना दूसरे पुरुषों से शादी की है। डेविड अपने अनुयायियों से कहता था, 'तुम सब आदमी गंदे लोग हो। तुमने ईश्वर से अनुमति लिए बिना शादियां की हैं। इससे भी बदतर यह है कि तुमने मेरी पत्नियों से शादी की है। ईश्वर ने उन्हें पहले मुझे दिया था। अब मैं उनको वापस ले रहा हूं।' मार्क ब्रेआल्ट के अनुसार, यह सुनकर सभी लोग अचंभित थे, लेकिन उन्होंने कोई प्रतिक्रिया नहीं थी। जबकि डेविड कहता रहा, 'तो स्कॉट, तुम्हें यह जानकर कैसा लगेगा कि अब तुम शादीशुदा नहीं हो?' ब्रेआल्ट के अनुसार, 1980 में डेविड ने दूसरे व्यक्तियों की पत्नियों के साथ सोना शुरू कर दिया... और औरतों को आदेश दिया कि वे उसे बताएं कि कब उनका वह समय होता है, जब गर्भ ठहरने की अधिक संभावना होती है।'

उसके पुरुष अनुयायियों के मुताबिक, 'उसने उद्घोषणा की कि अनुयायियों का कर्तव्य है कि वे 'किंग सोलोमन की सेज' की रक्षा करें।' उसने न केवल अनुयायियों की पत्नियों के साथ संभोग किया, उन्हें गर्भवती किया और उन औरतों से 20 बच्चे भी पैदा किए, बल्कि उनके बच्चों से भी दुष्कर्म करने लगा। 'बच्चे जब लगातार 16 घंटे तक बाइबिल पढ़ते-पढ़ते रोने लगते थे, या डेविड की गोद में बैठने से मना करते अथवा पैगम्बर की अवज्ञा करने का दुस्साहस करते तो उनके नितंबों पर मारा जाता था। कुछ औरतें सोचती थीं कि उनके प्रेमी ईश्वर-पुत्र को खुश करने का सबसे अच्छा तरीका बच्चों में अनुशासन भरते समय विशेष रूप से सख्त होना है। लेकिन कभी-कभी बच्चों के नितंबों पर चोट पहुंचाना बड़ों के लिए भी आसान नहीं होता था। उन्हें बच्चों के नितंबों पर न तो काला धब्बा दिखता था, न चमड़ी नीली दिखती थी और न बहता खून दिखता था।' कभी-कभी तो औरतों के साथ भी यही बर्ताव किया जाता था। 29 साल की एक औरत जिसने कहा कि उसे आकाशवाणी सुनाई दे रही है, को उसी की जमीन पर एक छोटी सी झोपड़ी में बंद कर दिया गया। उसे पीटा गया और अंगरक्षकों ने उसका बलात्कार किया।[298] मुहम्मद की तरह डेविड कोरेश भी कयामत का पैगम्बर था। उसके अंगरक्षक हथियार बंद होते थे। जब पुलिस ने उसके यहां छापा मारा तो इन अंगरक्षकों ने गोलियां चलाईं और चार एटीएफ जवानों को मार दिया। इन्होंने आत्मसमर्पण करने के बजाय परिसर को बंद करके उड़ा दिया और अपने साथ परिवार की भी मौत का कारण बने। इस घटना में 90 लोग मारे गए थे। इस कहानी पर विश्वास नहीं होता है। कैसे कोई इस हद तक खुद को मूर्ख बना सकता है? अल्बर्ट

आईंसटीन कोई मजाक नहीं कर रहे थे, जब उन्होंने कहा था, 'दो बातें अनंत हैं: ब्रह्मांड और मनुष्य की मूर्खता, और मैं ब्रह्मांड के बारे में निश्चित रूप से कुछ नहीं कह सकता।'

आर्डर ऑफ सोलर टैम्पल: इस सर्वनाशी संप्रदाय ने विचित्र धार्मिक कर्मकांड के लिए तीन बार सामूहिक आत्महत्या करवाकर 74 लोगों की जान ले ली। इस संप्रदाय के अधिकतर सदस्य उच्च शिक्षित और समृद्ध परिवारों से थे और ये लोग अबू बक्र, उमर व अली और मुहम्मद के अन्य साथियों से कहीं अधिक बुद्धिमान थे। इस संप्रदाय में सूर्य का विशेष महत्व था। इनका उग्र धार्मिक कर्मकांड हत्या व आत्महत्या थी, जिसके पीछे दावा किया जाता था कि ऐसा करने वाले संप्रदाय के सदस्य 'सीरियस' नामक तारे पर स्थित एक नई दुनिया में पहुंच जाएंगे। इस नई दुनिया की यात्रा में सहायता करने के नाम पर कई सदस्यों और बच्चों को सिर में गोली मार दी गई, प्लास्टिक के काले बैगों से मुंह बांधकर दम घोंट दिया गया या जहर देकर मार दिया गया। इस समूह के दो नेता बेल्जियम के होमियोपैथिक डॉक्टर लुस जोरेट और एक बड़े व्यापारी जोसफ डी मैमब्रो थे। ये दोनों इस संप्रदाय के मुहम्मद और अबू बक्र थे। हालांकि इन दोनों पर पागलपन इस हद तक सवार था कि अपने अनुयायियों के साथ इन्होंने स्वयं भी आत्महत्या कर ली थी। यह कुछ ऐसा था, जो मुहम्मद कभी नहीं करना चाहता था। मुहम्मद ने अपनी जिंदगी खतरे में कभी नहीं डाली। वह हर समय अपने चारों ओर अंगरक्षकों को तैनात रखता था और दुश्मन के सामने कभी खुद नहीं गया।

उनकी मौत के बाद मिले एक पत्र में जौरेट और डी मैमब्रो ने लिखा है कि 'वे इस धरती को छोड़कर सत्य के नए आयाम और मुक्ति पाने के लिए दुनिया के पाखंड से दूर जा रहे हैं।'[299]

संप्रदायों में मृत्यु को लेकर एक विचित्र प्रकार का विमोह पाया जाता है। भय पैदा करने वाला यह विचार कुछ वैसा ही है, जैसा कि मुहम्मद अपने उपदेशों में बोलता था, हालांकि वो स्वयं इस दुनिया और इसके वासनामय आनंद के प्रति आसक्त था और इसलिए इन सबका त्याग करने की कल्पना भी नहीं करता था। पर वो दूसरों के लिए शहादत का उपदेश देता था। उसने आत्महत्या की वकालत नहीं की, बल्कि उसने अपने अनुयायियों को जिहाद छेड़ने, हत्याएं करने और मरने के लिए तैयार रहने को दुष्प्रेरित किया। वो अपने अनुयायियों से कहता था कि जीवन से अधिक मृत्यु को प्यार करो, लूटपाट करो और अल्लाह व उसके रसूल के लिए माल, औरत और गुलाम पकड़कर लाओ। वो अन्य संप्रदायों के नेताओं की तुलना में अधिक व्यवहारिक था और इसीलिए इन नेताओं से कहीं अधिक कपटी था।

हैवेन्स गेट: 26 मार्च, 1997 को हैवेन्स गेट नामक संप्रदाय के 39 सदस्यों ने इस ग्रह (धरती) को छोड़कर 'हेल-बाय नामक धूमकेतु की पूंछ में छिपे यान' में सवार होकर स्वर्ग के द्वार तक पहुंचने का निर्णय लिया। परिणाम यह हुआ कि धरती पर अंतिम बार भोजन करने का जश्न मनाने के बाद ये सभी तीन दिन में तीन बारी में मर गए। एक समूह ने पकवान में खतरनाक मादक पदार्थ फेनोबरबिटल मिला दिया और खाने के बाद वोदका पिलाया, जिससे वे सब बेहोश होकर लुढ़क गए। फिर दूसरे समूह ने मृत्यु और करीब लाने के लिए मुख को प्लास्टिक की काली थैली से बांध लिया। हर बार मारने के बाद समूह के सदस्य आसपास को साफ कर देते थे। आखिर में दो सदस्य बचे थे, जिन्होंने खुद को मारने से पहले किराए पर लिए गए उस भवन को व्यवस्थित किया और सारा कूड़ा-कचरा लेकर निकल गए। ऐसा प्रतीत होता था कि अपनी मौत के बाद भी ये लोग उपकारी बने रहना चाहते थे, इसलिए सभी मृतकों के शरीर पर एक तरह की पहचान बनी थी। हालांकि अजीब बात यह थी कि उनके पास पांच-पांच डालर का नोट, जेबों में फुटकर पैसे और उनके बिस्तर के नीचे करीने से टांका गया छोटा सा सूटकेस भी था।

यह कुछ उसी तरह का मामला लगता है, जैसे कि मुसलमान आत्मघाती आतंकी जन्नत में खूबसूरत वेश्याओं (हूरों) से मिलने की तैयारी करते हुए खुद को बम से उड़ाने से पहले शरीर के बाल बनवाते हैं और इनमें से कुछ अपने लिंग पर एलुमिनियम की पत्तर लपेट लेते हैं, ताकि विस्फोट में उनका वह अंग न नष्ट हो। ऐसा ही हैवेन्स गेट संप्रदाय के सदस्य सोचते होंगे कि वे स्वर्ग की यात्रा में सशरीर और सूटकेस के साथ जाएंगे।

चार्ल्स मैनसन: 60 के दशक के इस कुख्यात पागल मनोरोगी के पास एक समय 100 युवक व युवतियां अनुयायी (मुहम्मद ने भी कुछ इतनी ही क्षमता से लगभग इतने ही अनुयायियों को मक्का में इकट्ठा किया था) के रूप में थे, जिन्हें 'परिवार' कहा जाता था। चार्ल्स को वे मसीहा के रूप में देखते थे। चार्ल्स ने इन बागी बच्चों के मन में यह भर दिया था कि नस्ली युद्ध में सभ्यता समाप्त होने वाली है। इस युद्ध में अश्वेत लोग श्वेत लोगों से लड़ेंगे और विजय प्राप्त करेंगे, पर चूंकि उन अश्वेतों को यह नहीं पता कि दुनिया कैसे चलाई जाए, इसलिए वे उसके पास मदद मांगने आएंगे। इसके बाद वो और उसके अनुयायी दुनिया पर राज करेंगे। वह इस इंद्रजाल को लेकर इतना विश्वस्त था कि उसके अनुयायियों ने कभी उसकी बुद्धिमानी पर संदेह नहीं किया। इसके अनुयायियों ने वो सब किया, जो उनसे करने को कहा गया और यहां तक कि इन्होंने वेश्यावृत्ति, चोरी और हत्या जैसी वारदातें भी कीं।

यह वैसा ही है, जैसा मुहम्मद ने अपने अनुयायियों को करने का हुक्म दिया था। मुहम्मद ने अपने अनुयायियों को हमला करने, लूटमार करने, बलात्कार करने को कहा और उन्होंने ये सब किया। जब 1969 में वह तथाकथित नस्ली युद्ध नहीं शुरू हुआ तो मैनसन ने सोचा कि उसे खुद इस युद्ध के लिए चिंगारी फैलानी चाहिए। उसने अपने अनुयायियों को बड़े आदमियों के घरों में घुसकर उनकी हत्या करने का आदेश दिया और साथ ही यह भी हिदायत दी कि ये सब इस तरह से किया जाए, ताकि लगे अश्वेतों ने किया है। उसके युवा अनुयायियों ने ठीक वही किया जैसा कि मैनसन ने आदेश दिया था। ये युवा लोग यह मानने लगे थे कि मैनसन के पास दैवीय शक्ति है और उसे ऊपरवाले ने गूढ़ ज्ञान दिया है।

मैनसन का अपने अनुयायियों पर ऐसा प्रभाव था कि वर्ष 1975 में उसकी युवतियों (जिन्हें स्क्वीकी कहा जाता था) में से एक लिनेट फ्रोम ने राष्ट्रपति जेराल्ड फोर्ड की हत्या करने की कोशिश की और उसे उम्रकैद की सजा मिली। लिनेट के वकील ने उसके बारे में बताते हुए कहा था, 'वह प्रतिभाशाली, बुद्धिमान और खुशमिजाज महिला थी। वह उत्साह से लबरेज थी। जब आप उससे बात कर रहे हों तो सबकुछ अच्छा रहता था, पर यदि आपने मैनसन का नाम ले लिया तो वह पागलों की तरह आप पर झपट पड़ती थी।' यह बात सभी संप्रदायवादियों के बारे में सच है। जब तक आप उनके संप्रदाय के नेता का नाम नहीं लेते हैं, वे सामान्य व बुद्धिमान लोगों की तरह व्यवहार करते हैं। **जब तक आप मुहम्मद का नाम मत लीजिए, मुसलमान सामान्यतः मिलनसार और अच्छा व्यवहार करता मिलेगा। पर मुहम्मद के बारे में एक शब्द भी बोलते ही अचानक उसके सिर पर खून सवार हो जाता है, उसका व्यवहार पागलों जैसा हो जाता है और उनमें से कुछ तो हत्या और वहशीपन पर उतारू हो जाते हैं। संप्रदाय एक जैसे ही होते हैं। उनके भीतर उन्माद मनोरोगी नार्सीसिस्ट नेता से आता है।**

मैनसन की एक और युवती सैंद्रा गुड को 1976 में मेल के जरिए हत्या की धमकी देने के आरोप में सजा हुई थी और इसने दस साल की जेल काटी। जेल से छूटने के बाद वह कॉरकोरन जेल के निकट एक स्थान पर चली गई। मैनसन उस समय इसी जेल में बंद था। वहां रहकर 2001 तक वह मैनसन की वेबसाइट का संचालन करती रही। ब्रेनवाशिंग की ताकत ऐसी ही होती है। फ्रोम ने जब राष्ट्रपति की हत्या की कोशिश की तो उसके एक हफ्ते बाद सीबीसी रेडियो ने सांद्रा गुड का साक्षात्कार लिया। साक्षात्कार में उसने कहा, 'पूरी दुनिया में लोगों की हत्याएं होनी हैं। यह तो बस शुरुआत है। यह तो बस उन बहुत सारी हत्याओं की शुरुआत है जो होने वाली हैं।' जब उससे

पूछा गया कि वह इंसानों की तो परवाह करती नहीं, पर पेड़ों को संरक्षित करने की बात करती है, इसका क्या मतलब है? गुड ने जवाब दिया, 'ये इंसान जीवन की हत्या करते हैं, हार्प सील को मार डालते हैं, नदियों व समुद्र को जहरीला बना देते हैं और अब जिंदगी हम सबको खत्म कर रही है।'[300]

संप्रदायवादी अपने आतंकी कार्यों को न्यायोचित ठहराते हैं। यह वही बहाना है जो मुसलमान इस्लामिक आतंकवाद को उचित ठहराने के लिए बनाते हैं। पहले वे पश्चिम का हौवा खड़ा करके आरोप लगाते हैं कि वे मुसलमान बच्चों को मार रहे हैं और फिर इसी झूठ के आधार पर नागरिकों और बच्चों के खिलाफ किए जा रहे अपने जघन्य अपराधों को न्यायोचित ठहराते हैं। हमने कितनी बार टीवी पर मुसलमानों की प्रमुख शख्सियतों को कहते सुना है, 'हम आतंकवाद की निंदा करते हैं, किंतु (हां, इनकी बातों में सदा 'किंतु' चिपका रहता है) ये उसकी प्रतिक्रिया है, जो इजराइल, अमरीका और पश्चिमी देशों आदि मुसलमानों के साथ कर रहे हैं?'

मैनसन को अभी भी बड़ी मात्रा में मेल आता है। अमरीका के जेलों में बंद किसी व्यक्ति के पास आने वाले मेल की यह संख्या सबसे अधिक है। उसे मेल भेजने वालों में अधिकतर वो युवा होते हैं, जो उसके 'परिवार' में शामिल होना चाहते थे। क्या इस घटना से यह नहीं बताया जा सकता है कि इस्लाम नामक संप्रदाय क्यों अभी भी आगे बढ़ रहा है? बुरे लोग हमेशा बुराई की ओर आकृष्ट होते हैं।

सभी संप्रदायों की तरह मैनसन का भी एक मकसद था। उसका मकसद हवा, वृक्ष, जल, जानवर (एटीडब्ल्यए) का संरक्षण करना था। उसने अपने मकसद को इस कदर महत्वपूर्ण दिखाया कि इसमें हत्या भी उचित लगने लगती थी। जेल में तीन दशक से अधिक बिताने के बाद भी फ्रोम अभी भी मैनसन के प्रति निष्ठावान है और उसने एक साक्षात्कार में कहा: 'मैनसन ने मुझे बताया था कि वह मुझे प्राकृतिक दुनिया दे सकता है। लगभग 40 साल पहले उसने मुझे बताया, पैसे की इतनी अहमियत हो गई है कि लोग पैसे के लिए काम करते हैं। वह जल, जंगल, जमीन और जीवन के बारे में बात कर रहा था। मुझे नहीं पता कि ये सब कैसे हो पाएगा, इसलिए मैं बस प्रतीक्षा कर रही हूं। मैं इसके लिए और परिश्रम करूंगी तथा प्रकृति की दुनिया में निवेश करूंगी, क्योंकि इसका लाभ केवल मुझे ही नहीं, बल्कि आने वाली पीढ़ियों को सतत् रूप से मिलेगा।' ये बेचारी महिला अभी भी मैनसन में विश्वास करती है। यह घटना ब्रेनवाशिंग की ताकत का मुखर साक्ष्य है। इसलिए **मुसलमान यह तथ्य जानने के बावजूद भी इस्लाम नहीं छोड़ रहे हैं कि मुहम्मद घिनौने और शर्मनाक तरीके से जीवन जीता था। मजहबी आस्था एक ऐसा नशा है, जो सोचने-समझने के सामर्थ्य को खत्म कर देता है। अमरीकी दार्शनिक एल्बर्ट हब्बर्ड ने कहा था, 'बुद्धिमान लोगों की एक सीमा हो सकती है, पर मूर्खता तो असीम होती है।'**

एक बार जब मैनसन हत्या करने के लिए हमला बोलने गया तो मकान की खिड़की से अपने शिकार को देखने की कोशिश करने लगा। उसे वहां दीवार पर बच्चों की तस्वीर टंगी दिखी। पहले तो उसने सोचा कि इस घर को छोड़ दिया जाए, पर अचानक उसका दिमाग फिरा और बोला, हमारा मकसद इतना महत्वपूर्ण है कि इसकी राह में बच्चों की भी परवाह नहीं किया जाना चाहिए।

इस्लाम कबूल करने वाले यहूदी जोसफ कोहेन उर्फ यूसुफ खत्ताब ने यू ट्यूब पर उपलब्ध एक साक्षात्कार में कहा है, प्रत्येक इजराइली जायज शिकार है और उसे मार डाला जाना चाहिए। जब बच्चों के बारे में पूछा गया तो उसने कहा कि यहूदी बच्चों की हत्या करना और भी पुण्य का काम है, क्योंकि पाप करने का मौका मिलने से पहले ही वे मर जाएंगे और इसलिए वे जन्नत में जाएंगे।

जोसफ कोनी: एक पागल इंसान है जो दावा करता है कि वह अपने ऊपर आत्माएं बुला सकता है। इसने एक गुरिल्ला समूह लार्ड्स रेजिस्टैंस आर्मी (एलआरए) बनाई है। यह समूह 2006 तक युगांडा में 'ईश्वरीय कानून' से

चलने वाली सरकार बनाने के लिए हिंसक आंदोलन कर रहा था। कहा जाता है कि यह समूह द टेन कमांडमेंट्स पर आधारित था। इस संगठन ने 1987 से अनुमानत: 20 हजार बच्चों का अपहरण किया और उन्हें मौत की मशीन बना दिया। इन बच्चों को जबरन विशेष मजहबी शिक्षा दी गई, उसी तरह जैसे कि मुसलमान बच्चों को मदरसे में सिखाया-पढ़ाया जाता है। जो इस मत में विश्वास नहीं करते थे उन्हें बर्बरतापूर्वक मारापीटा गया। कोनी भी बहुपत्नीवादी था। वह रविवार को बाइबिल के उद्धरण के साथ रोजरी का उच्चारण करते हुए ईसाइयों के ईश्वर की प्रार्थना करता था, पर शुक्रवार को वह इस्लामिक अल-जुमा इबादत करता था।

जोसफ कोनी क्रिसमस मनाता था, लेकिन वह रमजान में तीसों दिन रोजा भी रखता था और इन दिनों सुअर का मांस खाने पर प्रतिबंध लगा देता था। जोसफ कोनी ने अपने युवा लड़ाकुओं को समझा दिया था कि ईमान रखने और प्रार्थना दोहराने से युद्ध में पवित्र आत्माएं रक्षा करती हैं। उसने वादा किया कि जादुई शक्ति उन्हें विजेता बनाएगी। उन्हें विश्वास दिलाया कि शत्रु सैनिकों द्वारा चलाई गई गोली हवा में ही घूम जाएगी और चलाने वाले को जा लगेगी। मुहम्मद अपने अनुयायियों से कहता था कि फरिश्ते उनकी मदद के लिए आएंगे और 20 मुसलमान 200 गैर-मुस्लिमों को खत्म कर सकते हैं, और सौ मुसलमान एक हजार गैर-मुस्लिमों को मिटा सकते हैं। (कुरान.8:65)। कोनी यूगांडा की सेना से रक्षा के लिए अपने लड़कों को एक बोतल पानी देता था। वह उनसे कहता था कि यदि वे बोतल का पानी उड़ेल देंगे तो एक नदी बन जाएगी और शत्रु सेना उसमें डूब जाएगी। मुहम्मद मुट्ठी भर बालू उठाकर शत्रु की ओर फेंकता था और उन्हें कोसता था। कोनी और मुहम्मद दोनों युद्ध में पीछे खड़े रहकर सुरक्षित रहते थे और अपने अनुयायियों को हिम्मत दिलाते थे, मृत्यु से न डरने का उपदेश देते थे। कोनी और मुहम्मद में एक और समानता यह है कि दोनों शैतानी ताकतों में विश्वास रखते थे।

2005 में अंतर्राष्ट्रीय अपराध न्यायालय (आईसीसी) ने मानवता के विरुद्ध अपराध के आरोप में जोसफ कोनी का गिरफ्तारी वारंट जारी किया। हत्या, गुलाम बनाना, सैक्स गुलाम बनाना, नागरिकों के साथ क्रूर व्यवहार, नागरिकों के विरुद्ध हमले के लिए इरादतन उकसाना, डाका डालना, बलात्कार के लिए दुष्प्रेरित करना और विद्रोही सेना में बच्चों की जबरन भर्ती करना आदि इसके विरुद्ध लगे आरोपों में शामिल थे। यही सब आरोप मुहम्मद पर भी लगते हैं। मुहम्मद की तरह कोनी भी जरा भी असंतोष बर्दाश्त नहीं करता था। जो भी एलआरए के नियम-कायदों का प्रतिरोध करता, अथवा निकल भागने की कोशिश करता, उसे मौत की सजा दी जाती थी। ऐसे लोगों को अक्सर वे लोग पीट-पीट कर मार डालते थे, जो कोनी की 'स्पिरिट आर्मी' में अपहरण कर नए भर्ती किए जाते थे।

मुहम्मद इसलिए कामयाब रहा क्योंकि वह ऐसे स्थान पर था, जहां उसे रोकने के लिए कोई केंद्रीय सत्ता नहीं थी। वह बेरोकटोक हमला करता रहा, लूटपाट करता रहा और जीतता रहा। एक लुटेरे के रूप में उसने शुरुआत की और आखिर में वह एक शहंशाह जैसा हो गया। उसने विजेता की क्रूरता का सम्मिश्रण संप्रदाय के नेता के सम्मोहन के साथ किया। नार्सीसिस्ट अक्सर इसलिए सफल होते हैं, क्योंकि उनके पास लक्ष्य को हासिल करने का अपार हौसला और दृढ़ संकल्प होता है। वे अपने अकेलेपन की भावना और प्यार की कमी को तृप्त करने के लिए ताकत और प्रभुत्व तलाशते हैं।

बड़े झूठ की ताकत

एडोल्फ हिटलर अपनी पुस्तक माइ काम्फ (1925) में लिखा है: 'छोटे झूठ की तुलना में बड़े झूठ से राष्ट्र के उदार जनसमुदाय को आसानी से अपना शिकार बनाया जा सकता है।' हिटलर इस काम में उस्ताद था। वह झूठ का मास्टर था।

उसने कहाः बड़े झूठ में विश्वसनीयता का निश्चित जोर होता है, क्योंकि राष्ट्र का जनसमुदाय जानबूझकर या स्वेच्छा से अधिक अपनी भावनाओं की प्रकृति के कारण आसानी से पतित हो जाता है। इस प्रकार मन के स्वाभाविक भोलेपन के कारण वे बड़े झूठ का शिकार बनने को खुद ही तैयार बैठे होते हैं। क्योंकि वे लोग खुद ही अपने जीवन में छोटे-छोटे मामलों में भी झूठ बोलते रहते हैं, लेकिन बड़े पैमाने पर फरेब का सहारा लेने पर वे लोग शर्मिंदा महसूस करते हैं। उनके दिमाग में कभी नहीं आता कि बड़ा झूठ गढ़ें और इसलिए यह विश्वास ही नहीं करते हैं कि कोई दूसरा इतने कुत्सित ढंग से सत्य को तोड़मरोड़ कर पेश करने की हिमाकत करेगा। यदि उनके झूठ को बेनकाब करने वाले तथ्य भी दिखाए जाएं तो भी वे शक करते हैं और सोचते हैं कि इन तथ्यों को काटने वाला कोई स्पष्टीकरण आएगा। झूठ बोलने में उस्ताद लोग और झूठ बोलने की कला में साथ देने वाले लोग इस बात को हमेशा जानते हैं कि झूठ अपने पीछे हमेशा सबूत छोड़ जाता है, और इसी सबूत से झूठ पकड़ा भी जाता है, पर जनभावनाओं की प्रकृति जानकर अपने झूठ के सफल होने को लेकर निश्चिंत होते हैं।

आप भले हिटलर को पसंद नहीं करते हों, लेकिन उसके इन शब्दों की सत्यता पर भरोसा जरूर करें। हमें हर उस बात की प्रशंसा करनी चाहिए, जो प्रशंसा के लायक हो। हिटलर झूठ की ताकत बता रहा है और यह भी कि कैसे यह एक सच्चे दार्शनिक की तरह लाखों लोगों को मूर्ख बना सकता है। पॉलीटिक्स एंड द इंग्लिश लैंग्वेज के लेखक जार्ज ओरवेल का यह बयान गौर करने लायक है। उन्होंने लिखा है: 'राजनीतिक भाषा... इस तरह गढ़ी जाती है, जो झूठ के सत्य होने का आभास कराए और प्रतिष्ठित लोगों को समाप्त कर दे, ताकि ऐसा लगे कि वह शुद्ध हवा का झोंका बहा रहा है।'[301]

बड़े झूठ इस कदर अनोखे होते हैं कि वे अक्सर सुनने वाले को अचंभित कर देते हैं। अधिकतर लोग उसे समझ पाने की पर्याप्त क्षमता नहीं रखते हैं। जब झूठ बड़ा हो तो औसत इंसान सोचने पर मजबूर हो जाता है कि कैसे कोई इतना खुलकर इस तरह की बात कहने का साहस कर सकता है। ऐसी स्थिति में आप तीन अजीब स्थितियों में कठिन निर्णय लेने के लिए फंस जाते हैं: जो व्यक्ति यह बात कह रहा है, वो या तो पागल, ढोंगी होगा अथवा जरूर सच बोल रहा है। अब सोचिए जरा, यदि आप किसी कारणवश उसकी अवज्ञा करने अथवा यह स्वीकार करने की बात मन में लाना भी पाप समझते हों कि वह इंसान पागल या धूर्त है, तो क्या होगा? ये कारण कुछ भी हो सकते हैं, जैसे कि उसके प्रति आदर भाव, उसका करिश्मा अथवा उसके प्रति प्रतिबद्धता आदि। तब आपके पास एक ही विकल्प बचेगा कि वह जो कह रहा है, उसे सच मान लिया जाए, भले ही उसकी बातों से पागलपन झलकता हो।

बड़े झूठ उन सवालों को शांत करने की कोशिश करते हैं, जो हमारे विवेक के कारण उत्पन्न होते हैं। यह कुछ वैसा ही होता है, जैसे कि किलोभर का वजन नापने के लिए बनाए गए तराजू पर टन भर सामान तौलने के लिए रख दिया जाए। जब ऐसा किया जाएगा तो तराजू सही वजन दिखाना बंद कर देगा और संभव है कि इसमें वजन की जगह शून्य दिखे। इसलिए हिटलर ने सही कहा था कि छोटे झूठ की तुलना में बड़े झूठ पर अधिक विश्वास किया जाता है। जब मुहम्मद ने जन्नत के सातवें दरवाजे के भीतर जाने की कहानी सुनाई, पहले तो अबू बक्र हैरत में पड़ गया। क्योंकि यह कहानी बिलकुल पागलपन का संकेत कर रही थी। उसके पास दो विकल्प थे:

या तो अबू बक्र यह स्वीकार कर लेता कि उसका वह विश्वस्त दोस्त बेवकूफ या झूठा है, जिसको उसने रसूल और आदरणीय माना था और जिसके लिए उसने अपनी सारी जमीन-जायदाद, प्रतिष्ठा भी लुटा दी थी तथा उपहास का भी पात्र बना था। अथवा अबू बक्र उसके बेसिरपैर की कहानी पर विश्वास कर लेता। अबू बक्र के पास इन दोनों बातों के अलावा तीसरा रास्ता नहीं था।

इब्ने-इसहाक कहता है, जब मुहम्मद ने जन्नत की सैर की काल्पनिक कहानी जाहिर की तो बहुत सारे मुसलमानों ने इस्लाम छोड़ दिया। कुछ लोग अबू बक्र के पास गए और बोले, 'तुम अपने दोस्त के बारे में क्या सोचते हो? वह दावा कर रहा है कि वह कल रात में जेरुसलम गया, वहां इबादत की और फिर मक्का लौट आया।' बक्र उल्टा इन लोगों को ही झूठा बताते हुए कहने लगा कि ये रसूल के बारे में झूठ बोल रहे हैं। तब इन लोगों ने उससे कहा कि वह तो उस समय जो वह जरुसलम जाने और मक्का लौटने का बता रहा है, उसी वक्त पर वो (मुहम्मद) मस्जिद में था और लोगों को यह कहानी बता रहा था। अबू बक्र बोला, 'यदि वो (मुहम्मद) ऐसा बोल रहे हैं तो वही सच है। इसमें इतना हैरान होने की क्या बात है? वो मुझे बताते हैं कि जन्नत से धरती पर अल्लाह की ओर से पैगाम दिन के किसी वक्त या रात में उनके पास आता है। मैं उनकी इस बात पर विश्वास करता हूं, जबकि यह तो उससे कहीं अधिक असामान्य बात है जिस पर तुम लोग संदेह कर रहे हो!''[302]

यह तर्क लाजवाब कर देने वाला था। अबू बक्र जो कह रहा था, उसका अर्थ यह था कि यदि एक बार तुमने विवेक का प्रयोग करना छोड़ दिया तो बेतुकी बातों पर भरोसा होने लगता है और फिर तो तुम किसी भी बात पर विश्वास कर सकते हो। एक बार यदि तुमने स्वयं को मूर्ख बनने दिया तो तुम्हें सदा मूर्ख बनने के लिए तैयार रहना चाहिए, क्योंकि मूर्खता का कोई अंत नहीं होता। ऐसे कितने लोग हैं जो किसी 54 साल के बुढ्ढे को अपनी 9 साल की बेटी के साथ सोने देंगे? लेकिन अबू बक्र ने ऐसा किया था। ऐसा करने के लिए अव्वल दर्जे की बेवकूफी की जरूरत होती है। ऐसी निरा मूर्खता केवल अंधश्रद्धा के वशीभूत ही संभव है। हमें यह भी याद रखना चाहिए कि अबू बक्र अब तक अपनी अधिकांश धन-संपत्ति मुहम्मद और उसके मकसद के लिए खर्च चुका था। इस आदमी का सब कुछ दांव पर लगा था, उसके पास इसके सिवा कोई और चारा नहीं था कि मुहम्मद जो भी कहे, उसके साथ चले। उसके लिए यह स्वीकार करना कि वो ठगा गया है, बहुत दर्दनाक था। वह अपनी बीबी को यह बात कैसे समझाता? वह मक्का के उन बुद्धिमान व्यक्तियों से क्या कहता, जो उस पर हँस रहे थे और बता रहे थे कि वह मूर्ख है। अबू बक्र के लिए वापस जाने का रास्ता बंद हो चुका था। यदि अपने सम्मान की रक्षा करनी थी तो उसे मुहम्मद के बारे पैदा हो रहे शक-शुब्ह को सही या गलत तरीके से दूर करना था। अब उसके पास इस दलदल में धंसने और मुहम्मद के कहे का अंधानुकरण के अलावा कोई विकल्प नहीं था। वह अपनी आत्मा को मारने और अपने मालिक की सनक पर विश्वास करने के सिवाय और कर भी क्या सकता था। जब आप किसी पर अपनी सारी श्रद्धा न्यौछावर कर देते हैं, उसके लिए अपना सबकुछ लुटा देते हैं तो आप अपना अस्तित्व गंवा देते हैं और उसके हाथों की कठपुतली बन जाते हैं। संप्रदाय के नेता अपने अनुयायियों से चाहते भी यही हैं। इस तरह की भक्ति ही उनकी नार्सीसिस्टिक भूख को शांत कर पाती है।

हिटलर, स्टालिन और बहुत से अन्य तानाशाह नेता पागल व उन्मादी थे। जिन्होंने इनके पागलपन, उन्माद को देखा, वे भी दूसरों को नहीं बता पाए। तानाशाह नेता का 'श्रेष्ठ ज्ञान' (सुपीरियर विजडम) राजा के अदृश्य चोगे की तरह होता है। उसके आसपास के लोग अर्थात दरबारी ऐसा दिखाते हैं, मानो उस अदृश्य चोगे को वे देख रहे हैं और वे उसकी स्तुति करते हैं। जो लोग इस घेरे में नहीं होते हैं, वे दूसरों की बातें सुनकर भरोसा करने लगते हैं।

इस तरह बड़े झूठ की उम्र लंबी की जाती है और इस पर किसी तरह की आलोचना बर्दाश्त नहीं की जाती है।

हिंसा का प्रयोग

कपटी मनोरोगी अपने झूठ का बचाव करने के लिए हिंसा का सहारा लेने के लिए तैयार रहता है। अपने दावे के समर्थन में बल प्रयोग करने का आह्वान ऐसा भुलावा होता है, जो तार्किक लगता है। तानाशाह अक्सर इसका

प्रयोग सफलतापूर्वक करते हैं। इस भुलावे को कर्मचारियों का हित (आर्ग्यूमेंटम एड बैकुलम) का नाम दिया जाता है। ऐसा तब होता है, जब कोई अपनी बात मनवाने के लिए बल का सहारा लेता है या इसके प्रयोग की धमकी देता है। (आर्ग्यूमेंटम एड बैकुलम को 'जिसकी लाठी उसकी भैंस' के रूप में परिभाषित किया जा सकता है।) यह धमकी प्रत्यक्ष हो सकती है जैसे:

- मूर्तिपूजकों को जहां पाओ, काट डालो (कुरान.9:5)
- मैं इस्लाम को नहीं मानने वालों के मन में भय पैदा कर दूंगा: तुम काफिरों की गर्दनों पर मारो और उनके पोर-पोर को काट डालो (कुरान.8:12)

या फिर इस तरह अप्रत्यक्ष तरीके से:

- और जो इस्लाम को नहीं मानते हैं, हमारी आयतों को झुठलाते हैं, वे जहन्नुम में जाएंगे। (कुरान.5:10)
- उन (इस्लाम को न मानने वालों) के लिए उनकी जिंदगी एक धब्बा है और कयामत के दिन हम उनको दोजख की आग में जलाकर सजा देंगे और मजा चखाएंगे। (कुरान.22:9)
- जो हमारी आयतों को मानने से इंकार करते हैं, उन्हें हम आग में झोंक देंगे, जब उनकी खालें जल जाएंगी तो हम उनके लिए दूसरी खालें बदलकर पैदा कर देंगे, ताकि वे कुफ्र करने की सजा का मजा चख सकें। यकीनन अल्लाह श्रेष्ठ और सबकुछ जानने वाला है (कुरान.4:56)

यह धमकी उस बड़े झूठ को ऐसा नाटकीय रूप देती है, कि जैसे वह कार्य किया जाना अतिआवश्यक हो। इसका प्रभाव इतना गहरा होता है कि कोई इसके बारे में सोचे बिना रह नहीं सकता। यह धमकी उस बड़े झूठ को ऐसा नाटकीय रूप देती है कि जैसे वह कार्य किया जाना अतिआवश्यक हो। इसका प्रभाव इतना गहरा होता है कि कोई इसको लेकर उदासीन रह ही नहीं सकते।' कैसे कोई इतने भरोसे के साथ कह सकता है कि जो उस पर भरोसा नहीं करेगा, उसे अल्लाह सजा देगा? अथवा कोई कैसे सिर्फ इस बात के लिए इतने सारे लोगों का कत्ल कर सकता है कि ये लोग उसकी बात पर भरोसा नहीं कर रहे थे?' ये सब सोचकर आप हैरत में पड़ जाते हैं और यह सोचने पर और मजबूर होने लगते हैं कि ऐसा कोई धमकी दी ही नहीं गई होगी। 'जिसकी लाठी, उसकी भैंस' का सिद्धांत काम करता है। अति हिंसा अधिक यकीन दिलाने वाली होती है। उत्तर कोरिया के लोग अपने पागल नेता किम जोंग-2 की वास्तव में पूजा करते हैं। ऐसा निश्चित ही इसलिए होता होगा क्योंकि यह तानाशाह हिंसा की पराकाष्ठा पर उतारू रहता है और असंतोष या असहमति को जरा भी सहन नहीं करता है। आप जिंदा रह पाएंगे या नहीं, जब यह जबरन थोपी गई आस्था पर निर्भर हो तो आपको न चाहते हुए भी ऐसे व्यक्ति या बात पर भरोसा करना ही पड़ेगा।

जब शोको असहारा के अनुयायियों को टोकियो के भूमिगत पारपथ में खतरनाक सैरीन गैस छोड़कर निर्दोष लोगों की हत्या का आदेश मिला तो उन्होंने इसके घिनौनेपन पर सवाल नहीं किया। उन्होंने अपनी आत्मा मार ली थी और इस जघन्य अपराध को गुरु के महान ज्ञान के प्रतीक के रूप में स्वीकार किया था। उनके सामने दो विकल्प थे: या तो यह मान लें कि शोको विक्षिप्त है और उन्हें मूर्ख बना रहा है तथा स्वीकार कर लेते कि उनका बलिदान व्यर्थ चला गया अथवा यह स्वीकार कर लेते कि शोको का ज्ञान इतना महान है कि वे इसकी थाह नहीं ले सकते और इसलिए उसके निर्णयों पर सवाल नहीं किए जाने चाहिए। इन लोगों ने सबकुछ शोको असहारा पर छोड़ दिया। इन्होंने अपने अतीत से सारे संबंध खत्म कर लिए थे। यदि ये लोग शोको को छोड़कर जाना भी चाहते तो उनके पास वापस जाने के लिए कोई रास्ता या कोई जगह नहीं बची थी। चूंकि असहारा से सवाल करना या असहमति व्यक्त करना बर्दाश्त नहीं किया जाता, इसलिए इनके पास यह मान लेने के सिवा और कोई चारा नहीं था, कि वह जो कह

रहा है, वही सही है। ये लोग अपने दिमाग में किसी तरह का सवाल पैदा होने से पहले ही उसे मार देते थे और अपनी आत्मा को अपने गुरु पर विश्वास करने के लिए मजबूर करते थे।

डॉ. इकुयो हयाशी एक प्रख्यात डॉक्टर था, जो असहारा का एक उत्साही अनुयायी बन गया था। वह उन पांच व्यक्तियों में से एक था, जिन्हें टोकियो के भूमिगत पारपथ में खतरनाक सैरीन गैस रखने का आदेश मिला था। हयाशी एक प्रशिक्षित फिजिशियन था और उसने डॉक्टरी की पढ़ाई पूरी करने के बाद लोगों का जीवन बचाने की शपथ ली थी। खतरनाक गैस से भरे हुए पैकेट में छेद करने से पहले उसने अपने सामने बैठी एक महिला की ओर देखा। थोड़ी देर के लिए वह सहम गया। वह जानता था कि वह उस महिला की मौत का कारण बनने वाला है। पर फौरन उसने अपनी अंतरात्मा की आवाज दबा दी। वह स्वयं को संतोष देने लगा कि इसमें क्या भलाई है, असहारा ही जानता है। इसलिए स्वामी के निर्णय पर संदेह करने का उसका कोई अधिकार नहीं है।

उमेर 16 साल का किशोर था जब वह मुहम्मद के साथ एक जंग पर गया था। मुहम्मद ने शहादत का ऐसा बखान किया कि यह किशोर कट्टरता से भर गया। उमर उस समय खजूर खा रहा था। उसने हाथ में लिया हुआ खजूर फेंका और चिल्लाया 'क्या यही वो चीज है, जो मेरे जन्नत जाने के रास्ते को रोक रही है ? अब जब तक मैं अल्लाह से मिल नहीं लूंगा, खजूर को मुंह तक नहीं लगाऊंगा।' इतना कहकर उसने तलवार निकाली और दुश्मन दस्ते की ओर दौड़ पड़ा। जल्द ही उसकी मुराद पूरी हो गई और वह मुर्दा हो गया।

जैसे ही आप इस्लाम पर विश्वास करने लगते हैं तो आप उस विचार को मस्तिष्क से निकाल फेंकते हैं कि आपका प्यारा रसूल झूठा हो सकता है। मनोरोगी हृदयहीन होते हैं। वे बिना किसी पछतावे के बड़े-बड़े झूठ बोल सकते हैं, लाखों लोगों की हत्या करने की सोच सकते हैं। उन्हें लगता है कि ये उनका विशेषाधिकार है। हिटलर को लगता था कि वह ईश्वर का कार्य कर रहा है। उसके सर्वाधिक स्पष्ट कथनों में एक कथन इस बात को बिलकुल स्पष्ट कर देगा। उसने लिखा:

आज से मेरा यह मानना है कि मैं सर्वशक्तिमान विधाता की इच्छा से और उसके अनुसार कर्तव्य निभा रहा हूं। यहूदियों के खिलाफ मैं ईश्वरीय कार्य के लिए लड़ रहा हूं।[303]

अयातुल्ला मुंतज़री अयातुल्ला खोमैनी का उत्तराधिकारी होने वाला था, लेकिन खोमैनी के साथ मतभेद होने के चलते उसकी इस संभावना को पलीता लग गया। मुंतज़री ने अपने संस्मरण में लिखा है: जब खोमैनी ने 3000 से अधिक लड़कों और लड़कियों का सामूहिक कत्ल करने का हुक्म जारी किया तो उसने इस पर आपत्ति की। इस पर खोमैनी ने कहा कि वो इसके लिए जवाब अल्लाह को देगा और बोला कि मुंतज़री को सिर्फ अपने काम से मतलब रखना चाहिए। नार्सीसिस्ट मनोरोगी को यह अच्छी तरह पता होता है कि उस बुरे काम को अंजाम देने जा रहा है, फिर भी पहला व्यक्ति वही होता है, जो अपने ही झूठ पर भरोसा करता है। हिटलर ने अपने बड़े-बड़े झूठ से जर्मनों के दिल में जगह बना ली और उनका समर्थन हासिल कर लिया। वह सम्मोहित कर देने वाला वक्ता था। जब वह बोलता था तो उसकी आवाज धीरे-धीरे तेज होती जाती थी, मानो वह जर्मनी के कथित शत्रुओं पर आग उगल रहा हो। उसने जर्मन लोगों के मन में देशभक्ति की लहर पैदा कर दी थी। उसकी यह धारणा कि जितना बड़ा झूठ होगा, उतना ही विश्वसनीय होगा, सच साबित हुई। लाखों की संख्या में जर्मन उसके झूठ पर भरोसा करने लगे। वे उसे जान से अधिक प्यार करने लगे। उसके उग्र भाषण लोगों को इतना भावुक बना देते थे कि उनकी आंखों से आंसू निकलने लगते थे। इब्ने-साद ने एक हदीस का विवरण दिया है, जिससे मुहम्मद और हिटलर के बीच तमाम समानताएं पता चलती हैं। इब्ने-साद ने लिखा है: धर्मोपदेश देते समय रसूल की आंखें लाल हो जाती थी, उनकी आवाज तेज हो जाती थी और वे इतने गुस्से में दिखने लगते थे, मानो वे फौज के कमांडर हों और अपनी फौज के लड़ाकों को चेतावनी देते हुए कह रहे हों कि

कयामत और मैं इन दो उंगलियों (अपनी तर्जनी और मध्यमा उंगली को दिखाते हुए) की तरह हैं। वो कहा करते थे, 'मागदर्शन में सर्वोत्तम मुहम्मद का मार्गदर्शन है। इस्लाम से अलग कोई नई खोज सबसे बुरी चीज है और किसी भी तरह की नई खोज तबाही लाती है।'[304]

इसी जगह पर इब्ने-साद कहता है: 'धर्मोपदेश देते समय रसूल एक छड़ी घुमाया करते थे।' (संभवतः यह उसके प्रभुत्व को दिखाने के लिए था!)

इतनी सफाई से दूसरों को मूर्ख बनाने की कला इतनी सरल नहीं होती कि आप और मैं इसे सीखकर इसमें उस्ताद हो जाएं। इस कला का सीखने में सबसे बड़ी बाधा हमारी अंतरात्मा होती है। इस तरह की योग्यता स्वाभाविक रूप से उन मनोरोगी नार्सिसिस्टों में होती है, जिनका अंत:करण समाप्त हो चुका होता है। हिटलर, माओ, पोलपोट, स्टालिन और मुहम्मद जैसे लोगों की अंतरात्मा मर चुकी थी।

इस्लामिक समाज निष्क्रिय, पितृसत्तात्मक, स्त्री जाति से द्वेष रखने वाला और तानाशाह होता है। इस समाज में न केवल महिलाओं के साथ दुर्व्यवहार होता है, बल्कि बच्चे भी अक्सर दुर्व्यवहार के शिकार होते हैं। उन्हें मारा-पीटा जाता है और अपमानित किया जाता है। परिणाम यह होता है कि वे दिल में गहरी चोट लिए बड़े होते हैं, उनके पास आत्मसम्मान की कमी होती है, उनमें आडम्बर भरे काल्पनिक विचार और मनोरोगी नार्सीसिस्म के प्रकट लक्षण पनपने लगते हैं।

युवावस्था के दौरान मेरा एक अफगानी दोस्त था, जिसमें ये सारे लक्षण थे। एक दिन उसने मुझसे कहा कि वो हिटलर बनना चाहता है। हिटलर इस्लामिक देशों में एक लोकप्रिय शख्सियत है। मैं उसकी इस मूर्खतापूर्ण बात से चिंतित हुआ और उसे समझाने के बाद वहां से चला गया। अगले दिन वह मेरे पास आया और बोला: उसने सपना देखा कि रसूल उसे डांट रहे हैं और कह रहे हैं कि उसे एक 'आध्यात्मिक हिटलर' बनना चाहिए। इस तरह का मूर्खतापूर्ण व्यवहार किसी नार्सिसिस्ट की मनोविकृत सोच को दर्शाता है। नार्सिसिस्ट छल-कपट करने में उस्ताद होता है। वे हमेशा आपसे एक कदम आगे होता है। कुरान में 'अबसा' (वे क्रोधित हुए) नाम का एक रोचक अध्याय है, जो बताता है कि मुहम्मद भी ऐसी ही मनोविकृत मानसिकता का था। शुरुआत में मुसलमान वो बने थे, जो अधिकतर गुलाम थे या फिर किशोरावस्था से युवावस्था में कदम रख रहे वे विद्रोही युवा थे, जिनका कोई सामाजिक स्तर नहीं था। मुहम्मद को यह अहसास था कि जब तक वह कुछ प्रभावशाली लोगों को अपने साथ नहीं जोड़ेगा, लोग उसे गंभीरता से नहीं लेंगे। अबू बक्र खदीजा के प्रभाव में आकर मुसलमान बना था। जहां तक अबू बक्र की बात है तो वह सोचता था कि यदि इतनी महत्वपूर्ण महिला खदीजा ने इस्लाम कबूल किया है तो जरूर यह मजहब सत्य होगा। जब अबू बक्र ने मजहब बदल लिया तो उमर को मुसलमान बनाना आसान हो गया। तर्कों के हिसाब से देखें तो यह और कुछ नहीं, बल्कि जिसकी लाठी उसकी भैंस का सिद्धांत अथवा प्रभावशाली के प्रति आकर्षण कहा जाएगा। यह वो तरकीब होती है, जिसमें किसी धारणा की वैधता सिद्ध करने के लिए किसी महत्वपूर्ण व्यक्ति की तारीफ का इस्तेमाल किया जाता है। मुस्लिम अक्सर इस तरकीब का सहारा लेते हैं।

अपने मिशन के शुरुआती सालों में मुहम्मद मक्का के प्रतिष्ठित लोगों के बीच बैठता था और उन्हें अपने दावों पर विश्वास दिलाने की कोशिश करता था। उसके अनुयायियों में एक गरीब अंधा आदमी इब्ने-उम्मे-मकतूम उसके पास एक सवाल लेकर आया। मुहम्मद को उसका टोकना बुरा लगा और वह उस पर गुस्सा हो गया। वहां आसपास बैठे लोगों ने मुहम्मद का यह अपमानजनक व्यवहार देखा। उन लोगों ने मुहम्मद के ढोंग और दोहरे चरित्र की निंदा की। मुहम्मद के पास उस अप्रिय स्थिति से निकलने का कोई रास्ता नहीं था, सिवाय इसके कि वह अपने इस दंभी व्यवहार पर अल्लाह की मुहर लगा दे। अगले दिन उसने दावा किया कि उस पर एक सूरा नाजिल हुई है, जिसमें

अल्लाह ने उसे अमीर आदमियों को प्रभावित करने के दौरान उस अंधे व्यक्ति की उपेक्षा करने पर फटकारा।

वह क्रोधित था और उसने मुंह फेर लिया
क्योंकि उसके पास वह अंधा व्यक्ति आ गया
और तुमको क्या मालूम कि वह पाकीज़गी हासिल करता
या वह नसीहत सुनता तो नसीहत उसके काम आती?
तो जो कुछ परवाह नहीं करता
उसके तो तुम दर पै हो जाते हो हालांकि अगर वह न सुधरे
तो तुम ज़िम्मेदार नहीं
और जो तुम्हारे पास लपकता हुआ आता है
और (अल्लाह से) डरता है
तो तुम उससे बेरुख़ी करते हो
देखो ये (कुरान) तो सरासर नसीहत है
तो जो चाहे इसे याद रखे
(लौहे-महफूज के) बहुत मोअज़्ज़िज औराक़ में (लिखा हुआ) है
बुलन्द मरतबा और पाक हैं
(ऐसे) लिखने वालों के हाथों में है (कुरान.80:1-15)

इन आयतों में मुहम्मद आरोप अपने ऊपर ले रहा है और यहां तक कि अपने अभियोग के लिए खुद को अल्लाह से धिक्कार दिलवा रहा है। दरअस्ल, नार्सीसिस्ट के रूप में उसे अपने आलोचकों पर आरोप मढ़ना था और आयत 17 से उसने उन लोगों पर जहरीली भड़ास निकाली है, जो उस पर भरोसा नहीं करते थे। हालांकि यह सूरा मुहम्मद के नार्सीसिस्म का एक और सूचक है, फिर भी मुसलमान इसे इस तरह नहीं देखते। **मुसलमान मुहम्मद के फरेब का शिकार होकर उसके बुने जाल में फंस गए हैं और उन्हें लगता है कि इससे उसकी नेकनीयती सिद्ध होती है। हालांकि इसे और कुछ नहीं, बल्कि मुहम्मद का अपनी भद पिटने से बचने की कोशिश कही जा सकती है।** मुहम्मद के पास अपनी गलती मानने के अलावा और कोई विकल्प नहीं था। जब कोई अपनी गलती खुद ही स्वीकार कर ले तो फिर आप उसे क्या कहेंगे?

सबने मुहम्मद की प्रशंसा क्यों की?

यह सवाल मुसलमानों के दिमाग़ में आता है कि यदि मुहम्मद इतना बुरा था तो उसके साथियों ने उसकी इतनी प्रशंसा क्यों की? उसकी मौत के बाद भी कोई उसकी बुराई के बारे में क्यों नहीं बोलता? इसका उत्तर यह है कि जो समाज व्यक्तित्व आधारित संप्रदाय पर आधारित हो, वहां अपने मन की बात बोलना सुरक्षित नहीं होता है। ऐसे समाज में सच बोलने का नतीजा समाज से बहिष्कार या इससे भी बुरा होकर आपकी जिंदगी खत्म कर सकता है। अधिकांश लोग भेड़चाल वाले होते हैं और हवा के रुख के साथ चलते हैं। यदि कुछ लोग अलग तरह से सोचते हैं तो वे भी अपना जीवन खतरे में डालने के बजाय चुप रहना बेहतर समझते हैं। अब्दुल्लाह इब्ने-अबी सरह मुहम्मद के लेखकों में से एक था। वह मदीना से भाग निकला और मक्का के सुरक्षित पनाहगार में चला गया। उसने लोगों को बताया कि मुहम्मद कुरान नामक एक पुस्तक की कल्पना कर रहा है। जब मुहम्मद ने मक्का पर जीत हासिल की तो उसने इब्ने-अबी सरह को पकड़वा लिया और उसकी हत्या का आदेश दिया। जबकि मुहम्मद ने वादा किया

था कि इस शहर में बिना विरोध के आत्मसमर्पण करने वाले किसी व्यक्ति की हत्या नहीं करेगा। हालांकि उस्मान के बीच में आ जाने के कारण इब्ने–अबी सरह की जान बख्श दी गई। उस्मान उसका सौतेला भाई था। जब उस्मान ने बीचबचाव कर इब्ने–अबी सरह का कत्ल न करने की गुजारिश की तो मुहम्मद चुप रहा। मुहम्मद के साथियों ने सोचा कि वह उस्मान की बात मानते हुए इब्ने–अबी सरह को जाने देना चाहता है। पर बाद में मुहम्मद ने अपने साथियों से शिकायत करते हुए कहा कि वह इसलिए चुप हो गया था, क्योंकि उस्मान की बात को काटना नहीं चाहता था, लेकिन वह यह उम्मीद कर रहा था कि उसके अनुयायी उसके मन की बात समझकर सरह का कत्ल कर दें। मुहम्मद का ढोंगी चरित्र ऐसा था!

जहां आलोचकों का मुंह बंद कर दिया जाता है, वहां चापलूस और चाटुकार झूठी बड़ाई, मक्खनबाजी के जरिए महिमामंडन करके अपने नेता का प्रिय बनाने की कोशिश करते हैं। इराक के अधिकांश लोग सद्दाम से नफरत करते थे, पर फिर भी जब वह सत्ता में था तो वहां उसकी प्रशंसा के अलावा और कुछ सुनाई नहीं देता था। नार्सीसिस्ट वास्तविकता से इस कदर कट जाते हैं कि वे अपनी झूठी प्रशंसा में ही इतराते रहते हैं और एक तरह से अपने ही धोखे का शिकार हो जाते हैं। चूंकि मुहम्मद पैगम्बर माना जाता था, इसलिए उसके आतंक की सत्ता उसकी मौत के बाद भी खत्म नहीं हुई। जो उसके बड़े झूठ के प्रभाव में आ गए थे, वे आतंक फैलाकर और विरोधियों की जुबान पर लगाम लगाकर झूठ का प्रसार करते रहे, जैसा कि वे आज भी करते हैं। जब मुहम्मद को व्यक्तिगत रूप से जानने वाले लोग मर–खप गए तो बाद की पीढ़ियों के पास सत्य जानने का कोई साधन नहीं बचा और इस कारण ये लोग उस पर ही विश्वास करने लगे, जो इन्हें बताया गया। इस तरह मुहम्मद का झूठ एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुंचाया जाता रहा। मुहम्मद की मौत के बाद चाटुकारों ने चापलूसी जारी रखी और उसकी फर्जी प्रशंसा करते रहे। उसके मनगढ़ंत चमत्कार भी बताते रहे। इससे उसकी प्रतिष्ठा बढ़ी और वह बड़ा पवित्र दिखने लगा। मुहम्मद से जुड़े तमाम ऐसे चमत्कार हैं, जिसके बारे में उसने स्वयं कुरान में स्वीकार किया है कि उसने ऐसा कोई चमत्कार नहीं दिखाया।[305]

1400 साल बाद, करोड़ों से ज्यादा की संख्या में मुसलमान वैसा ही व्यवहार कर कर रहे हैं, जैसा कि वे मुहम्मद के समय मदीना में किया करते थे। इस्लाम में असहमति रखने वाले अपनी बात कहने से डरते हैं और यदि कह दिया तो उन्हें फौरन चुप करा दिया जाता है। रसूल और उसकी खूबियों का गुणगान करने वाले गुलाम मानसिकता के चापलूसों का सम्मान किया जाता है। चापलूसी और चाटुकारिता भरे ऐसे दमनकारी माहौल में सच बाहर कैसे आ सकता है?

मुहम्मद द्वारा अपनी आलोचना करने वाले लोगों को मौत के घाट उतारने का आदेश देने की अनेक घटनाएं हैं। ऐसे ही मुहम्मद का दाहिना हाथ रहे उमर के बारे में भी तमाम किस्से हैं कि वह मुहम्मद की सत्ता को चुनौती देने का साहस करने वाले व्यक्ति का गला काटने के लिए हमेशा तैयार रहता था। मुहम्मद ने चापलूसी को प्रोत्साहित किया और स्वतंत्र विचार वाले आलोचकों को सजा दी। इस तरह के अत्याचारी माहौल में फंसे लोग अंततः नेता के दैवीय गुणों पर विश्वास करने लग जाते हैं और उनका विश्वास विशुद्ध व वास्तविक होता है। हाल ही आंख के सर्जनों का एक दल उत्तर कोरिया में मोतियाबिंद से पीड़ित लोगों की मदद के लिए गया। अपनी आंखों की रोशनी वापस पाने के लिए हजारों की संख्या में युवा और वृद्ध लोग आए थे। डॉक्टर यह देखकर हैरान थे कि ये मरीज पहले वहां लगे तानाशाह किम जोंग द्वितीय और उसके पिता के बड़े से चित्र के समक्ष दंडवत हुए और उन्हें धन्यवाद ज्ञापित किया। अर्थात इन लोगों ने मदद करने वाले डाक्टरों के बजाय उन व्यक्तियों के प्रति आभार प्रकट किया, जिनकी वजह से वे इतने सालों तक अंधे रहे। **मुहम्मद का मिशन इसलिए फलता–फूलता रहा क्योंकि वह उस समय और उस स्थान पर पैदा हुआ, जहां अज्ञानी, अंधविश्वासी और अधिकांशतः पुरुषसत्तावादी लोग थे।**

अपने लुटेरे मजहब को बढ़ाने के लिए मुहम्मद को जिन दुर्गुणों की जरूरत थी, वो उसके शुरुआती अनुयायियों में भरपूर थीं। पुरुषसत्तात्मक मानसिकता, कट्टरता, दंभ, अहंकार, अहंकारोन्माद, मूर्खता, शेखचिल्लीपन, लोभ, लालच, वासना, जीवन के प्रति घृणा और नीचता का लक्षण इस्लाम का हॉलमार्क है। ये सब अरब में कच्चे माल के रूप में पहले से ही उपलब्ध थे। जो बाद में इस्लाम के शिकार हुए, उन पर भी ये अवगुण थोप दिए गए। जिन देशों में पहले ये सारे अवगुण थे, उन्हें अपनी सामाजिक पतन और आपराधिक फितरत को 'दैवीय' वैधता देने के लिए इस्लाम में सहारा दिखा।

संप्रदाय के नेता के वासना की भूख

नार्सिसिस्ट के रूप में असीमित सत्ता धारण करने वाले संप्रदाय के नेता काम-वासना में डूबे रहना अपना अधिकार मानने लगते हैं, जबकि वे अक्सर अपने अनुयायियों को ऐसा करने की अनुमति नहीं देते हैं। मुहम्मद की एक और चारित्रिक विशेषता है जो उसे अन्य संप्रदायों के समूह में रखती है, वह विशेषता यह थी कि मुहम्मद अपने अनुयायियों और हमलों में बंदी बनाई गई औरतों से यौन सुख हासिल करने के लिए अपनी ताकत का दुरुपयोग करता था। उसमें युवा और खूबसूरत औरतों को पाने की सनक थी। नीचे मुहम्मद की तरह ही हवस में अंधे समकालीन संप्रदाय नेताओं की छोटी सी सूची दी गई है।

- जिम जोन्स (1931-1978), पीपुल्स टैम्पल पंथ का संस्थापक ने अनेक औरतों से संबंध बनाए थे और कुछ से तो बच्चे भी पैदा हुए।
- डेविड कोरेश (1959-1993), ब्रांच डेविडियन संप्रदाय का नेता, ने अपने अनुयायियों की यौन गतिविधियों पर पाबंदी लगाई थी, जबकि उसके पास कई पत्नियां थीं, जिसमें से एक की आयु केवल 12 वर्ष थी। क्योंकि ओल्ड टेस्टामेंट के समय में लड़की की माहवारी शुरू हो जाए तो उससे शादी वैध मानी जाती थी।
- चार्ल्स मैंसन (1934-) अपने कई महिला अनुयायियों के साथ यौन संबंध रखता था और इनसे उसके तीन बच्चे भी पैदा हुए।
- राएल (1946-) ने राएलिज्म की स्थापना की थी और उसने सैकड़ों औरतों के साथ यौन संबंध बनाए। उसे रोज नई लड़की चाहिए होती थी। वह अपने अनुयायियों में से सुंदर व युवा लड़की के साथ सोता था। ये लड़कियां सोचती थीं कि वह ईश्वर का रूप है। 15 साल तक उसकी पत्नी रही एक महिला ने कहा, 'समय बीतने के साथ मुझे यह अहसास होने लगा था कि राऐलियन मूवमेंट अधिक से अधिक यौन सुख लेने के लिए गढ़ा गया है।'[306]
- भगवान रजनीश (1931-1990) ने अपनी कुछ महिला अनुयायियों से यौन संबंध बनाए थे।[307] इस संप्रदाय में एक महिला सम्मिलित हुई थी, जिसके 4 साल के बच्चे का नाम टिम गेस्ट था। गेस्ट के अनुसार, ओशो मूवमेंट में ग्रुप लीडर अक्सर 14-15 साल की लड़कियों के साथ संभोग किया करते थे।[308]
- सत्य साईं बाबा (1926)। सैलोन डॉट कॉम के मुताबिक खासी तादाद में इनके भक्त इन पर यौन उत्पीड़न और बच्चों के साथ भी दुर्व्यवहार का आरोप लगाते हैं, बावजूद इसके इनके अनुयायियों की संख्या में खास कमी नहीं आई।
- केनेथ इमैनुअल डायर्स (1922-2007), जो केंजा कम्यूनिकेशन संप्रदाय के थे, उन पर बच्चों के साथ छेड़छाड़ और यौन हमला करने के कई आरोप लगे। साथ ही समूह में महिलाओं की अस्मिता के साथ खिलवाड़ के आरोप लगे। इन आरोपों के मद्देनजर इसने आत्महत्या कर ली।

293 Psychology 101, Carole Wade et al., 2005
294 Lalich, Janja and Tobias, Madeleine, Take Back Your Life: Recovering from Cults and Abusive Relationships, Bay Tree Publishing (2006), ISBN10 0972002154, ISBN 13 9780972002158.
295 Published at ICSA (International Cultic Studies Association) website, Janja Lalich, PH.D. & Michael D. Langone, Ph.D., www.csj.org/infoserv_cult101/checklis.htm, accessed June 21, 2007.
296 Qur'an 9:29 Fight those who believe not in Allâh nor the Last Day, nor hold that forbidden which hath been forbidden by Allâh and His Messenger, nor acknowledge the religion of Truth, (even if they are) of the People of the Book, until they pay the Jizya with willing submission, and feel themselves subdued.
297 http://news.bbc.co.uk/1/hi/world/middle_east/1874471.stm
298 Inside the Cult: A Member's Chilling, Exclusive Account of Madness and Depravity in David Koresh's Compound Breault & King, 1993
299 http://www-tech.mit.edu/V114/N47/swiss.47w.html
300 http://archives.cbc.ca/IDC-1-68-368-2086/arts_entertainment/frum/
301 Politics and the English Language 1946 http://www.resort.com/~prime8/Orwell/patee.html
302 Sira Ibn Ishaq:P 183
303 Adolf Hitler, Mein Kampf, Ralph Mannheim, ed., New York: Mariner Books, 1999, p. 65.
304 Ibn Sa'd Tabaqat, page 362
305 The unbelievers repeatedly asked Muhammad to perform a miracle so they could believe (Qur'an 17: 90) and Muhammad kept telling them "Glory to my Lord! Am I aught but a man- a messenger?" (Qur'an 17: 93)
306 http://www.rickross.com/reference/raelians/raelians68.html
307 297James S. Gordon, The Golden Guru, p. 79
308 Bedell, Geraldine (January 11, 2004). "The future was orange: Tim Guest's upbringing as a child of the Bhagwan Shree Rajneesh 'free love' movement in the Sixties left him anything but spiritually enlightened", The Observer, Guardian News and Media Limited

अध्याय 7

जब समझदार लोग पागलों का अनुसरण करते हैं

इस्लाम और इसके अनुयायियों का चरित्र चित्रण करने वाली धर्मांधता को समझने के लिए इसकी तुलना अन्य संप्रदायों से की जानी चाहिए। इस्लाम को मानने वालों की संख्या लगभग 120 करोड़ है। आप मुसलमान नहीं हैं तो आपको इसके बारे में बहुत कम पता होगा और आप इनके घृणित चेहरे को नहीं पहचान पाएंगे। ये लोग दिखने में वैसे ही हो सकते हैं, जैसे कि काम करने वाले और बच्चों एवं परिवार को पालने वाले दिखते हैं। ये लोग अच्छे कर्मचारी, सहकर्मी, बॉस, पड़ोसी और नागरिक जैसे दिखते हैं। इनका व्यवहार आम लोगों की तरह ही दोस्ताना होता है। इनमें कुछ ऐसा विशेष नहीं दिखता है, जिससे ये पता चले कि ये किसी संप्रदाय का हिस्सा हैं। पर, आप इनके इस तरह दिखने से बिलकुल धोखा न खाइए। इस्लाम एक संप्रदाय है और मुसलमान की मानसिकता घोर सांप्रदायवादी होती है।

शब्दकोष में धर्मांधता की परिभाषा अति उत्साह, अतार्किक धुन अथवा किसी विषय और विशेषकर मजहबी मसलों पर उग्र व उच्छृंखल विचार के रूप में की गई है। लोग हत्यारा बनने या आतंकवादी बनने के लिए धर्म नहीं स्वीकार करते हैं। पर मजहबों के बारे में यह बात बिलकुल उल्टी लगती है न? तो **आखिर वो कौन सी चीज है, जो मुसलमानों को इतना धर्मांध बना देती है कि वे मजहब के नाम पर बर्बरता, हत्या जैसे घृणित कार्यों में लग जाते हैं, विवेक का इस्तेमाल करना छोड़ देते हैं और यहां तक कि सहज ही अपनी जान देने को तैयार हो जाते हैं?** क्या मुसलमानों का जुनून उनके मकसद की सच्चाई को साबित करता है? आइए, पीपुल्स टैम्पल नामक संप्रदाय का विश्लेषण करते हैं और इस्लाम से इसकी तुलना करते हैं। सभी संप्रदायों में मूलत: एक ही तरह की विशेषताएं पाई जाती हैं। हम इस्लाम की तुलना किसी भी संप्रदाय से करें तो परिणाम एक जैसा ही मिलेगा। नील ऑशेरो ने पीपुल्स टैम्पल का अध्ययन किया है और उन्होंने 'एन एनालिसिस ऑफ जोन्सटाउन: मेकिंग सेंस ऑफ द नॉनसेंसिकल' शीर्षक वाले एक लेख में संप्रदायों का विश्लेषण बखूबी किया है।

पीपुल्स टैम्पल के सदस्यों ने अपने नेता जिम जोन्स द्वारा उकसावे में आकर अपने बच्चों को जहर मिला पेय पदार्थ अपने हाथों से पिलाया, नवजात शिशुओं को जहरीला शरबत पिलाया। एक-दूसरे का हाथ पकड़े हुए बच्चों के शव एक जगह पड़े हुए मिले। इस घटना में 900 बच्चों ने अपनी जिंदगी गंवा दी। ऐसी दुखद घटना कैसे हुई? इसका उत्तर यह है कि एक व्यक्ति का पागलपन और बहुत सारे लोगों के भोलेपन की वजह से यह घटना हुई। इस अध्याय में मैं पीपुल्स टैम्पल के बारे में ओशेरो के विश्लेषण को देखूंगा और बिंदुवार इसकी तुलना इस्लाम से

करूंगा, ताकि दोनों में समानता दिखाई जा सके और इस मजहब पर अपनी समझ और बढ़ाई जा सके। **जब तक मुसलमान यह मानते रहेंगे कि मुहम्मद पैगम्बर था तो उसने जो भी किया, उसे जायज मानते रहेंगे। इस अध्याय के अंत में समझ पाएंगे कि संप्रदायों में एक बार जिनका ब्रेनवाश कर दिया जाता है, उनके वापस लौटने की संभावना क्षीण हो जाती है। फिर भी ऐसे लोग जिनकी तार्किक क्षमता पूरी तरह कुंद नहीं हुई है और जिनकी आत्मा को झिंझोड़ा जा सकता है, उन्हें यह अपने महजब के आडंबर पर सवाल उठाने की हिम्मत देगा।** जिम जोन्स ने 1965 की सामूहिक आत्महत्या की घटना के करीब 20 साल पहले इंडियाना में उपदेश देना शुरू किया। तब उसके अनुयायियों की संख्या मुट्ठीभर थी। उसने नस्ली समानता और एकता पर जोर दिया। उसका समूह गरीबों को भोजन उपलब्ध कराता था और उनके लिए नौकरी का इंतजाम करता था। वह करिश्माई और प्रेरक शक्ति वाला व्यक्तित्व था। शीघ्र ही उसके अनुयायियों की संख्या कई गुना बढ़ गई। नए समूहों का गठन किया गया और सैनफ्रांसिस्को में मुख्यालय स्थापित किया गया।

परम आज्ञाकारिता

जोन्स अपने अनुयायियों के लिए प्रिय नेता था। वे प्यार से उसे 'पिता' या बस 'डैड' बुलाते थे। समय बीतने के साथ वह मसीहा की भूमिका में आ गया। जैसे-जैसे उसका प्रभाव बढ़ा, वह अपने अनुयायियों से और अधिक आज्ञाकारिता और निष्ठा की अपेक्षा करने लगा। उसने अनुयायियों के दिमाग में भर दिया कि नाभिकीय प्रलय में दुनिया नष्ट हो जाएगी। जो उसका अनुसरण करेगा, केवल वही उस प्रलय से बचकर निकल पाएगा। ऑशेरो लिखते हैं: 'उसके अधिकांश भाषण नस्लवाद और पूंजीवाद पर हमला करते थे, लेकिन उसका सबसे जहरीला गुस्सा पीपुल्स टैम्पल के 'शत्रुओं' के खिलाफ निकलता था। ये कथित शत्रु पीपुल्स टैम्पल की आलोचना करने वाले और विशेष तौर पर उसे छोड़कर जाने वाले लोग होते थे।'[309]

उपरोक्त तस्वीर समान रूप से इस्लाम का भी वर्णन करती है। शुरुआत में मुहम्मद लोगों को केवल चेतावनी देता था और कहता था कि अल्लाह में विश्वास करो और कयामत के दिन से डरो। जैसे-जैसे उसके अनुयायियों की संख्या और प्रभाव बढ़ा, वह अधिक धौंस जमाने लगा।

वह अनुयायियों से उनका घरबार छोड़कर पलायन करने को कहने लगा और धमकाने लगा कि यदि उसका हुक्म नहीं माना तो अल्लाह का कहर उनके ऊपर टूटेगा। मुहम्मद के अधिकतर व्याख्यानों में बहुदेववाद (शिर्क) को बुरा-भला कहा गया, लेकिन उसका सर्वाधिक उग्र गुस्सा इस्लाम के 'शत्रुओं' पर लक्षित होता था। उसकी नजर में इस्लाम के 'शत्रु' उसके आलोचक और विशेषकर उससे अलग होने वाले लोग थे।

जिम जोन्स अपने लोगों को गुयाना के जंगल में ले गया और उन्हें उनके परिवारों से दूर कर दिया। उन्हें सभी बाह्य प्रभावों से काट दिया और पूर्ण रूप से अपने नियंत्रण में ले लिया। अब वह आसानी से उनका ब्रेनवाश कर अपना मतावलंबी बना सकता था। मुहम्मद द्वारा अपने अनुयायियों को मदीना ले जाने के पीछे एक कारण यह भी था। उसने अपने करीबी अनुयायियों को उनके खिलाफ कर दिया, जो मक्का छोड़कर जाने को तैयार नहीं थे। निम्न आयत उसकी भावनाओं को व्यक्त करती है।

जो ईमान वाले हैं, मगर मक्का छोड़कर निर्वासन में नहीं आए, उनकी सुरक्षा की जिम्मेदारी तुम्हारी नहीं है। जब तक कि वे वह जगह छोड़कर यहां निर्वासन में रहने नहीं आ जाते। पर यदि वे मजहब के लिए मदद मांगने तुम्हारे पास आते हैं तो उनकी मदद करना तुम्हारा फर्ज है। याद रखना, तुम जो भी करते हो, अल्लाह उसे देख रहा है। (कुरान.8:72)

यह आयत कहती है कि मुसलमानों को उन मुसलमानों को सुरक्षा नहीं देनी चाहिए, जिन्होंने पलायन (निर्वासन) नहीं किया। दूसरे शब्दों में, यदि वे घर-परिवार छोड़ने और हुक्म मानने को तैयार नहीं होते तो उन्हें कत्ल कर डालना चाहिए। आयत का अंतिम हिस्सा यह बात विशेष रूप से कह रहा है। वह अपने अनुयायियों को हिदायत दे रहा है कि अल्लाह उनको देख रहा है और वह न केवल तुम क्या करते हो, यह जानता है, बल्कि उसे यह भी पता है कि तुम्हारे मन में क्या है।

मुहम्मद के अल्लाह और जार्ज औरवेल के उपन्यास नाइंटीन-एट्टी-फोर के 'बिग ब्रदर' नाम के ओसीनिया के पेचीदा तानाशाह में अलौकिक समानता है।

उनके इस काल्पनिक समाज में सत्ता प्रत्येक व्यक्ति पर मुख्यत: टेलीस्क्रीन के माध्यम से पूर्ण निगरानी रखती है। लोगों को 'बिग ब्रदर तुम्हें देख रहा है' की उक्ति सुनाकर लगातार इस बात की ताकीद की जा रही है। यह और कुछ नहीं, बस राज्य में प्रचार तंत्र का मूल वाक्य है। इस उपन्यास में यह भी स्पष्ट नहीं है कि बिग ब्रदर नाम का कोई इंसान है भी या नहीं, अथवा यह राज्य द्वारा गढ़ी गई छवि भर है। फिर भी, चूंकि इनर पार्टी टार्चर ओ ब्रिएन इंगित करता है कि बिग ब्रदर कभी नहीं मर सकता, इसलिए यह प्रत्यक्ष संकेत है कि बिग ब्रदर इस पार्टी का निरुपण मात्र है। उसे कभी किसी ने देखा नहीं है। उसका चेहरा होर्डिंगों पर बना है, टेलीस्क्रीन पर उसकी आवाज सुनाई देती है... बिग ब्रदर एक छद्मवेश है, जिसे पार्टी ने खुद को दुनिया के सामने प्रदर्शित करने के लिए ओढ़ रखा है। बिग ब्रदर का काम प्यार, भय, सम्मान और भावनाओं आदि के केंद्र बिंदु के रूप में काम करना है। क्योंकि ये चीजें किसी संगठन के बजाय किसी व्यक्ति के लिए अधिक आसानी से महसूस की जा सकती हैं।

ओसीनिया के निष्ठावान नागरिक बिग ब्रदर से डरते नहीं थे, बल्कि वह उसे प्यार करते थे, सम्मान देते थे। वे समझते थे कि वह बुरी ताकतों से उनकी सुरक्षा कर रहा है।[310] उपरोक्त बातें अल्लाह के बारे में भी सच हैं। अल्लाह एक अदृश्य, पर फिर भी हमेशा मौजूद रहने वाली सत्ता है। जिससे मुस्लिम प्यार भी करते हैं और साथ ही डरते भी हैं। वह उनकी प्रत्येक गतिविधि को देखता है और उनके विचारों की भी निगरानी करता है।

मजहब के प्रमाण के रूप में मृत्यु

ऑशेरो आगे लिखते हैं: 'लेकिन जब 1978 में पीपुल्स टैम्पल संप्रदाय के सदस्यों के रिश्तेदारों ने कांग्रेस के सदस्य (सांसद) लियो रेयान को इस संप्रदाय की जांच के लिए तैयार किया तो वे और उनके साथ पत्रकार संप्रदाय के ठिकाने का निरीक्षण करने गए। वहां रह रहे लोगों ने वहां की व्यवस्था की प्रशंसा की और कहा कि वे वहां आनंद का अनुभव करते हैं और वहीं रहना चाहते हैं। हालांकि वहां के दो परिवारों ने छिपकर रेयान तक सूचना भिजवाई कि वे इस स्थान को छोड़कर उनके साथ जाना चाहते हैं। परंतु जब निरीक्षण करने वाले दल और संप्रदाय को छोड़कर जाने वाले परिवार हवाई जहाज में सवार होने वाले थे तो उन पर घात लगाकर गोली चलाई गई, जिसमें रेयान सहित पांच लोग मारे गए।' इसके बाद जिम जोन्स ने अपने अनुयायियों को एकत्रित किया और उनसे जहर मिश्रित शरबत पीकर 'सम्मान के साथ' मरने का आह्वान किया।

इस घटना की एक वीडियो में दिखा कि कुछ को छोड़कर अधिकांश सदस्यों ने खुशी-खुशी स्वयं भी जहर पिया और अपने बच्चों को भी पिलाया। जिम जोन्स की बातें और वादे कुरान में की गई बातों व वादों से मिलते-जुलते हैं। एक औरत ने जहर पीने का विरोध किया, लेकिन भीड़ ने उसे चुप करा दिया और सब ने मरने के लिए तैयार होने की इच्छा प्रकट की। उस वीडियो रिकार्डिंग (यूट्यूब पर उपलब्ध) में अंधभक्ति की प्रकृति प्रकट करने वाला दृश्य वीभत्स है।

जिम जोन्सः मैंने आप सबको एक श्रेष्ठ जीवन देने का पूरा प्रयास किया। मेरे पूरे प्रयासों के बावजूद, कुछ मुट्ठीभर लोगों के झूठ ने हमारे उद्देश्य को विफल कर दिया। यदि हम शांति से जी नहीं सकते तो शांति से मर जाना अच्छा है। (तालियों की गड़गड़ाहट)...। हमारे साथ बड़ा विश्वासघात किया गया है...। कुछ मिनटों में यहां जो होने जा रहा है, उसमें हवाई जहाज पर सवार होने जा रहे लोगों में से एक पायलट को गोली मार देगा– और मुझे यह पता है। मैंने ऐसा नहीं कराया, लेकिन मुझे पता है कि ऐसा होने जा रहा है। इसलिए मेरा विचार है कि आप लोगों को वही करना चाहिए, जो आप प्राचीन यूनान में करते रहे हैं। शांतिपूर्वक आगे बढ़िए, क्योंकि हम आत्महत्या नहीं कर रहे हैं, बल्कि यह एक क्रांतिकारी कदम है... अब हम कदम पीछे नहीं खींच सकते।

पहली महिलाः मुझे लगता है कि जब तक जीवन है, तब तक आशा है।

जोन्सः बिल्कुल, पर एक दिन सबकी मृत्यु होनी है।

भीड़ः बिल्कुल सही, बिल्कुल सही!

जोन्सः उन लोगों ने जो किया और जो उनके साथ गए हैं, वे हमारा जीवन नर्क से बदतर बना देंगे। लेकिन मेरे लिए मृत्यु डरावनी नहीं है। अभिशापित जीवन डरावना है। ऐसा जीवन जीने लायक नहीं है।

पहली महिलाः पर मुझे मरने से डर लगता है।

जोन्सः मुझे नहीं लगता कि तुम डरती हो। मुझे नहीं लगता कि तुम डरती हो।

पहली महिलाः मुझे लगता है कि 1200 लोगों में से गिने–चुने ही ऐसे हैं, जो हमसे अलग हुए हैं। उन मुट्ठीभर लोगों के लिए अपना जीवन खत्म कर देना ठीक नहीं है...। मैं इन बच्चों की ओर देखती हूं तो मुझे लगता है कि उन्हें जीने का अधिकार है।

जोन्सः पर क्या वे इससे अधिक अच्छा पाने लायक हैं? वे इसके हकदार हैं कि उन्हें शांति मिले। हम सबसे बड़ा बलिदान इस अभिशापित दुनिया को छोड़ कर दे सकते हैं। (तालियों की गड़गड़ाहट)

पहला आदमीः अब बस, बहन...। हमारा आज का दिन शुभ है।

दूसरा आदमीः यदि आप कहते हैं कि हमें अपना जीवन त्याग देना चाहिए तो हम तैयार हैं।

(तालियों की गड़गड़ाहट) (बाल्टीमोर सन:1979)

वीडियो में जोन्स द्वारा सामूहिक आत्महत्या करने के आह्वान के बीच बच्चों के रोने–चिल्लाने की आवाज साफ सुनाई–दिखाई देती है:

जोन्सः कृपया कुछ दवाएं लाओ। सरल! यह बहुत सरल है। इसे लेने से कोई तकलीफ नहीं होगी। मृत्यु से मत डरो। अभी आप देखना कि लोग यहां आएंगे। वे हमारे लोगों को यातना देंगे...।

दूसरी महिलाः इसमें चिंता की कोई बात नहीं। सब लोग शांत रहें और अपने बच्चों को शांत करें...। बच्चे दर्द के कारण नहीं रो रहे हैं, बल्कि शरबत का स्वाद थोड़ा कड़वा है, इसलिए रो रहे हैं।

तीसरी महिलाः इसमें चीखने चिल्लाने की कोई बात नहीं। हम सबको इसका आनंद लेना चाहिए। (तालियों की गड़गड़ाहट)

जोन्सः कृपया, भगवान के लिए, जहर का प्याला मुंह में लगाएं...। यह क्रांतिकारी आत्महत्या है। यह खुद को नष्ट करने के लिए आत्महत्या नहीं है। (लोग भाव विभोर होकर चिल्लाते हुए 'डैड'। तालियों की गड़गड़ाहट)

तीसरा आदमीः डैड ने हमें इस मंजिल तक पहुंचाया है। डैड, मेरा वोट आपके साथ है...।

जोन्स: हमें आत्मसम्मान के साथ मरना चाहिए। जल्दी करो, जल्दी करो, जल्दी करो! हमें तेजी से यह करना होगा...। बंद करो पागलपन। जीवन में और परेशानी झेलने से लाख गुना अच्छा मृत्यु है...। यदि तुम जान जाओगे कि आगे क्या है तो आज की रात ही इस रास्ते पर आगे बढ़ने में आनंदित होगे...।

चौथी महिला: इस क्रांतिकारी संघर्ष में आप सब के साथ आगे बढ़ना प्रसन्नता का विषय है...। समाजवाद, साम्यवाद के लिए अपनी जिंदगी देने के अलावा कोई और रास्ता मैं नहीं चुनती। मैं इसके लिए डैड के प्रति आभारी हूं।

जोन्स: अपना जीवन स्वयं न्यौछावर करो...। हम आत्महत्या नहीं कर रहे हैं। हम इस अमानवीय दुनिया के माहौल का विरोध करने के लिए क्रांतिकारी आत्महत्या का काम करने जा रहे हैं।[311]

इस वीडियो टेप के सामने आने के बाद दुनिया स्तब्ध रह गई। इस्लाम भी इसी तरह की अंधश्रद्धा और विवेकशून्य अनुसरण, संप्रदायों के लक्षण से जुड़ा हुआ है। इस्लाम का मतलब है अधीनता स्वीकार करने वाला समर्पण। मुसलमान को अपनी इच्छा को त्यागना पड़ता है और इस्लाम के अलावा बाकी सब को अस्वीकार करना होता है। यहां तक कि अल्लाह और उसके रसूल के प्रति अपनी निष्ठा सिद्ध करने के लिए अपने परिवार और अपने जीवन को भी छोड़ना पड़ता है।

कुरान में लिखा है: '... अगर तुम सच्चे हो तो मौत की आरजू करो' (कुरान.2:94) एक जगह और मुहम्मद यहूदियों को चुनौती देते हुए कहता है कि सच्चाई सिद्ध करने के लिए वे मृत्यु की इच्छा करें।

कहा: 'ओ यहूदी धर्म के मानने वालो! यदि तुम सोचते हो कि तुम अल्लाह के दोस्त हो, और बाकी लोग नहीं। तो अगर तुम सच्चे हो तो मौत की तमन्ना करो। (कुरान.62:6)

जिम जोन्स और मुहम्मद जैसे विकृत मानसिकता वाले नार्सिसिस्ट के दिमाग में यह बात स्पष्ट थी कि श्रद्धा परखने का सबसे बड़ा तरीका अपने अनुयायियों से मरने के लिए कहना था। फिलिस्तीन के टीवी अक्सर दिखाते हैं कि आत्मघाती आतंकवादियों की अम्मियां उनकी मौत पर गर्व करती हैं और दूसरे बच्चों से भी इसी राह पर चलने की आशा प्रकट करती हैं।

सजा व उत्पीड़न

ऑशेरो वर्णन करते हैं: 'यदि आप किसी के माथे पर बंदूक लगा दें, तो उससे कोई भी काम करा सकते हैं। पीपुल्स टैम्पल के अनुयायी गंभीर सजा के भय के साये में रह रहे थे। उन्हें भय था कि अनजाने में हुई गलती या छोटी-मोटी भूल पर वे बर्बरता से पीटे जाएंगे, सार्वजनिक तौर पर बेइज्जत किए जाएंगे। जिम जोन्स अनुयायियों पर कठोर अनुशासन और अंध भक्ति थोपने के लिए अक्सर सख्त सजा का डर दिखाता रहता था। वह उन कारकों को नष्ट करने के उपाय भी करता था, जो अनुयायियों में प्रतिरोध या विद्रोह की भावना पनपने में मददगार प्रतीत होते थे।'

मुसलमान सख्त सजा के डर में जीते हैं। गुस्साए मुसलमानों ने मुझे हजारों की संख्या में ईमेल भेजे हैं, जिनमें उन्होंने बस एक ही बात कही है कि जिंदगी बहुत छोटी है और इस्लाम की आलोचना करने के कारण मैं जहन्नुम में जाऊंगा। वे मेरे तर्कों को चुनौती नहीं दे रहे हैं, वे मेरे तर्क पर विवाद नहीं कर रहे हैं, वे तो मुझे बस उस चीज से डरा रहे हैं, जिससे वे खुद बहुत डरते हैं। वह चीज है जहन्नुम। कुरान में जो थीम सर्वाधिक आई है, वह है जहन्नुम। जहन्नुम का उल्लेख लगभग 200 बार, इसके बाद कयामत के दिन का उल्लेख लगभग 163 बार और 'फिर से जी उठने' का उल्लेख 117 बार किया गया है। मुसलमानों में जहन्नम यानी दोजख का भय इस कदर बिठा दिया जाता है कि इस्लाम पर सवाल उठाने की कल्पना भर से वे कांप जाते हैं।

यह भय मनोवैज्ञानिक धमकी तक सीमित नहीं है। शारीरिक दंड देना भी इस्लामी पालन-पोषण का अभिन्न अंग है। इस्लामी मदरसों (मजहबी स्कूल) में बच्चों को छोटी-छोटी गलतियों के लिए बुरी तरह पीटा जाता है और कुछ मामलों में उन्हें जंजीरों से बांधकर रखा जाता है। ऐसा नहीं है कि केवल बच्चों की पिटाई होती है, बल्कि वयस्कों को भी शारीरिक दंड दिया जाता है। उन्हें इस्लामी कानून तोड़ने के आरोप में भरे चौराहे पर बेइज्जत किया जाता है, कोड़े मारे जाते हैं, अंग काट दिए जाते हैं या पत्थर मार-मार कर कत्ल कर दिया जाता है।

इस्लाम में बहुत सारे ऐसे कानून हैं, जो किसी भी प्रकार की स्वतंत्रता या विद्रोह को प्रतिबंधित करते हैं। इनके मुताबिक आलोचक, स्वतंत्र चिंतन वाले लोग, सुधारक और काफिर या नास्तिक का कत्ल कर दिया जाना चाहिए। सवाल तक पूछने की इजाजत नहीं होती! कुरान कहता है:

ऐ ईमान वालो! ऐसी चीज़ों के बारे में (रसूल से) न पूछा करो, जो यदि तुम पर जाहिर कर दी जाएगी तो तुम परेशानी में पड़ जाओगे। तुमसे पहले भी कुछ लोगों ने इस किस्म के सवाल पूछे थे और उस कारण उनका मजहब से भरोसा उठ गया था। (कुरान. 101-102)

बुखारी भी दो ऐसी हदीसें देता है जिसमें मुहम्मद कहता है, 'अल्लाह ने तुम्हें बहुत सारे सवाल पूछने से मना किया है।'[312] इस्लाम के भ्रम को बनाए रखने के लिए यह एकमात्र तरीका है, ताकि इसकी बाध्यकारी अंधभक्ति बनी रहे और इसे अज्ञानता और भय के माध्यम से थोपा जा सके।

ऑशेरो कहते हैं: 'सामाजिक मनोवैज्ञानिक शोधों में यह निष्कर्ष निकला है कि सत्ता की शक्ति को अपने आदेश के अनुपालन के लिए इतने खुले रूप से धमकी देने की आवश्यकता नहीं होती है। मिलग्राम के प्रयोगों[313] में भाग लेने वाले लोगों में ऐसे लोगों का अनुपात आश्चर्यजनक रूप से अधिक था, जिन्होंने प्रयोगकर्ता के उन निर्देशों का अनुपालन किया, जिसमें उन्हें लगता था कि दूसरे व्यक्ति को तेज बिजली का झटका देना है।'

असहमति को नष्ट करना

ऑशेरो के अनुसार, अनुसंधान बताते हैं कि यदि असंतुष्ट व्यक्तियों का छोटा समूह भी अस्तित्व में है तो यह पूर्ण आज्ञाकारिता कम होती जाएगी। वह लिखते हैं, 'कि एक 'अवज्ञाकारी' सहयोगी की उपस्थिति से मिलग्राम की प्रयोगात्मक स्थितियों[314] में 'शिक्षार्थी' माने जाने वाले व्यक्ति को झटका देने के निर्देश के अनुपालन का परिमाण बहुत घट गया। इसी प्रकार, ऐच[315] ने प्रदर्शित किया कि बहुमत से अलग विचार व्यक्त करने वाले सहयोगी को जोड़ने से वह व्यक्ति भी निर्देशों के अनुपालन के लिए बहुत कम सहमति देता है। चाहे दूसरे असंतुष्टों के निर्णय गलत और इस व्यक्ति के निर्णय से अलग भी हों तो भी यह शिक्षार्थी सहमति देने से हिचकने लगता है।'

मुहम्मद और जिम जोन्स दोनों असहमति या असंतोष सहन नहीं करते थे। इन्होंने अनन्य भक्ति की अपेक्षा की और प्रश्न पूछने और आलोचना करने के विकल्प को असंभव बना दिया। यदि कोई मुहम्मद के खिलाफ खड़ा हुआ हो, पर बाद में उसके नेतृत्व और इस्लाम को स्वीकार कर ले तो वह उसे क्षमा कर देता था। जैसा कि उसने अपने चचेरे भाई अबू सूफियान के साथ किया।

मुहम्मद ने अबू सूफियान को न केवल माफ किया, बल्कि मक्का पर फतह हासिल करने के बाद उसे इसका प्रभार भी दिया। लेकिन जो उससे असहमति जताते थे अथवा उसे छोड़कर चले जाते थे, उन्हें कभी नहीं बख्शता था। मुहम्मद के आदेश पर बहुत सारे लोग केवल इसलिए मार दिए गए, क्योंकि इन लोगों ने मुहम्मद का मजाक उड़ाया था या फिर उससे सवाल-जवाब किए थे।

यही कारण है कि **मुहम्मद असहमति से डरता था और आज तक उसके अनुयायी इस्लाम से नाइत्तिफाकी बर्दाश्त नहीं करते हैं। लेकिन इसी वजह से मेरा भी आत्मविश्वास मजबूत है कि एक बार मुसलमान से नास्तिक बने लोगों की आवाजें सुनी जाने लगीं तो दूसरे मुसलमान भी हिम्मत जुटा पाएंगे। इसके बाद इस्लाम की चीरफाड़ को रोक पाना असंभव हो जाएगा।**

जीन मिल्स पीपुल्स टैम्पल संप्रदाय को छोड़कर जाने वाले व्यक्ति थे। उन्होंने इस संप्रदाय में छह साल तक उच्च पदाधिकारी सदस्य के रूप में बिताए थे। जीन ने लिखा है: 'इस संप्रदाय के चर्च में एक अलिखित किंतु सर्वमान्य कानून था कि फादर, उसकी पत्नी या उसके बच्चों की आलोचना कोई नहीं करेगा।'[316]

मुहम्मद के बारे में भी क्या यह बात सच नहीं है? पाकिस्तान के एक कॉलेज में प्रोफेसर डॉ. यूनुस शेख ने टिप्पणी की थी कि मुहम्मद के माता-पिता मुसलमान नहीं थे। यह बात तर्कपूर्ण भी प्रतीत होती है, क्योंकि जब मुहम्मद के माता-पिता की मृत्यु हुई तो वह बच्चा था। हमारे पास हदीस भी हैं, जो यह बताते हैं कि मुहम्मद सोचता था, उसके माता-पिता जहन्नुम में जाएंगे। फिर भी डॉ. शेख के विद्यार्थियों में इससे रोष फैल गया। इन विद्यार्थियों को लगा कि डॉ. शेख ने रसूल के माता-पिता का अपमान किया है और इन लोगों ने शरीया अदालत में शिकायत करते हुए डॉ. शेख पर ईशनिंदा का आरोप लगाया। अदालत ने उन्हें ईशनिंदा का दोषी करार देते हुए मौत की सजा सुनाई। जब दुनिया भर में लोगों ने डॉ. शेख के समर्थन में प्रदर्शन किया तो कई वर्षों बाद उन्हें रिहा किया गया।

सूडानीज इंडिपेंट डेली अल-विफाक (Al-Wifaq) के संपादक मुहम्मद ताहा मुहम्मद अहमद को सितम्बर 2006 में मुसलमान उन्मादियों के एक समूह द्वारा अगवा कर लिया गया। उनके खिलाफ अदालत से बाहर मुकदमा चलाया गया और उनका गला उस तरह रेता गया, जैसे कि ऊंट को मांस के लिए काटा जाता है। फिर उनके सिर को धड़ से अलग कर दिया गया। उन पर ईश निंदा का आरोप था। दरअस्ल, उन्होंने अपने समाचार पत्र में इंटरनेट से लेकर एक लेख प्रकाशित कर दिया था, जिसमें मुहम्मद की पैदाइश को लेकर सवाल उठाए गए थे। बेचारे मोहम्मद ताहा का अपराध सिर्फ इतना था कि उन्होंने इस किताब के एक छोटे से अंश को लिया था और अपनी ओर से इसका खंडन लिखा था।[317]

यदि आप किसी इस्लामी देश में रहते हैं तो इस्लाम, मुहम्मद या उसके किसी साथी की आलोचना आपको मौत की सजा की ओर धकेल सकती है। यदि आप किसी गैर-मुस्लिम देश में रहते हैं तो भले ही आप मुसलमान न हों, पर ऐसा करने पर आपकी हत्या हो सकती है। डच फिल्म निर्माता थियो वैन गोफ को यह सबक बहुत देर से तब मिला जब एक मुसलमान ने उनको चाकू घोंपा, गोली मार दी और वो अपने ही खून से लथपथ हो गए। वैन गोफ के साथ ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि उन्होंने इस्लाम में महिलाओं की स्थिति पर फिल्म बनाने में इस्लाम छोड़ चुकी अयान हिरसी अली की मदद की थी।

जुलाई 1991 में सलमान रुश्दी की किताब शैतानी आयतें (द सैटेनिक वर्सेज) का इटालियन भाषा में अनुवाद करने वाले एत्तोर कैप्रिओली पर हमला हुआ और वे गंभीर रूप से घायल हो गए। इस पुस्तक का जापानी में अनुवाद करने वाले हितोशी इगैरीशी की टोकियो में हत्या कर दी गई, जबकि हितोशी साहित्य के प्रोफेसर और इस्लामी सभ्यता के प्रशंसक थे।

नार्वे की भाषा में इस पुस्तक का अनुवाद करने वाले विलियम नैगार्द को भी बाद में चाकू मार दिया गया। अस्ल में मुसलमानों की धारणा है कि लोगों के मन में इतना डर पैदा कर दो, ताकि कोई इस्लाम के खिलाफ बोलने की हिम्मत न कर सके। पीपुल्स टैम्पल संप्रदाय से निकल भागने में कामयाब रहे एक और पुराने

सदस्य देबोराह ब्लैकी ने बयान दिया है: 'जिम जोन्स की बातों से किसी भी तरह की असहमति का मतलब देशद्रोह माना जाता था।... यद्यपि, वहां जो चल रहा था, उसे देखकर बहुत डर लगता था, लेकिन मेरी किसी से कुछ कहने की हिम्मत नहीं पड़ती थी। क्योंकि मुझे पता था कि वहां स्वतंत्र विचार रखने का अर्थ जोन्स और अन्य सदस्यों के कोप का भाजन बनना था।'[318]

विसंगतियां

पीपुल्स टैम्पल संप्रदाय के कुछ सदस्यों की तरह ही प्रारंभ के बहुत से मुसलमानों को लगता था कि उनके महजब में बताए गए मकसद और उनके नेता के क्रियाकलाप में विसंगति और विरोधाभास है। जिम जोन्स अपने संघ में बहुत सी औरतों के साथ सोता था और उसमें इसको लेकर बिलकुल संकोच नहीं था। मुहम्मद ने भी अनेक ऐसे काम किए, जिससे उसके ढीले चरित्र को लेकर अरब के लोगों की दृष्टि सवालिया होने लगी। एक हदीस में आयशा कहती है: 'मैं उन औरतों को गिरी निगाह से देखती थी, जिन्होंने खुद को अल्लाह के रसूल को सौंप दिया था और मैं कहा करती थी, 'क्या कोई राजकुमारी अपना शरीर किसी ऐसे आदमी को सौंप सकती है?' लेकिन जब अल्लाह ने कहा: ओ (मुहम्मद)! तुम इनमें (बीबियों) से जिसको जब चाहो अलग कर दो और जिसको जब तक चाहो अपने पास रखो। यदि तुम उनको सोने के लिए बुलाते हो, जिनकी बारी नहीं थी, तो भी तुम पर कोई दोष नहीं जाएगा। (कुरान. 33:51) तो मैंने रसूल से कहा, 'मुझे लगता है कि तुम्हारा अल्लाह तुम्हारी इच्छाओं और वासना को पूरा करने की बड़ी जल्दबाजी में है।'''[319]

निश्चित रूप से आयशा केवल एक सुंदर लड़की ही नहीं थी, बल्कि तीक्ष्ण बुद्धि वाली थी। अस्ल में, कई मौकों पर हम पाते हैं कि मुहम्मद का अल्लाह उसकी मदद के लिए आ जाता था और उसे वह सब करने का लाइसेंस दे जाता था, जो उसको (मुहम्मद को) अच्छा लगता था।

मुहम्मद ने कई बार सामाजिक मर्यादाएं तार-तार कीं। जैसे कि अपनी बहू जैनब से शादी करना, अपनी एक बीबी की अनुपस्थिति में चोरी-छिपे उसकी नौकरानी मारिया के साथ संभोग करना। वह 51 साल का था और उसने छह साल की आयशा से शादी की थी। जब वह केवल आठ साल और नौ महीने की गुड़ियों से खेलने की उम्र में थी तो उसके साथ शारीरिक संबंध बनाए। उसने दावा किया कि उसके ऊपर अल्लाह ने सबसे बेहतरीन आयत इस छोटी सी लड़की के साथ सोते समय कम्बल के भीतर नाजिल की। जब मुहम्मद सत्ता के शिखर पर था तो उसने एक और बच्ची को देखा। यह बच्ची अभी चलना सीख रही थी। उसने उस बच्ची के मां-बाप को बोला कि जब वह बच्ची थोड़ी सी और बड़ी हो जाए, तो उससे शादी करेगा। उस बच्ची की किस्मत अच्छी थी कि वह इस घटना के थोड़े समय बाद मर गया।

वह हमले करता और कबीलों को तहस-नहस कर इनके परिवारों की हत्या कर देता था। फिर इन परिवारों की कम उम्र की बच्चियों को अपने लिए अल्लाह का पुरस्कार मानकर हरम में सैक्स गुलाम बनाकर रखने के लिए उठा लाता था। शुरुआत में जो मुसलमान बने थे, वे निश्चित ही आश्चर्यचकित होकर सोचते रहे होंगे कि यदि मुहम्मद अल्लाह का रसूल है तो उसके कर्म इतने राक्षसी क्यों हैं। हम यह नहीं मान सकते कि अरब के सारे लोगों की आत्मा मर चुकी थी और वे यह नहीं जानते थे कि जो मुहम्मद कर रहा है, वह गलत है। हालांकि यदि उन्हें संदेह हुआ भी तो उनके पास उसे प्रकट करने की सामर्थ्य नहीं थी। मुसलमान बहिष्कार और सजा से डरते थे। जिन्होंने मुहम्मद से असहमति जताई, उन्हें बलपूर्वक चुप करा दिया जाता था।

एक बार जब मुहम्मद के साथ मक्का से आए साथी हमला करने निकले थे तो मदीना वालों से उनकी झड़प हो गई। अब्दुल इब्ने-उबई बहुत क्रोधित हुए। इसी इंसान ने मुहम्मद के सामूहिक नरसंहार से बनू नज़ीर कबीले को बचाया था। इब्ने-उबई ने कहा, 'क्या सच में ये सब उन्होंने (प्रवासियों ने) किया है? वे हमारे ही अधिकार और वस्तुओं पर विवाद करने लगे, वे हमें अपने ही देश में अल्पसंख्यक बना रहे हैं, ये सब हम लोगों के लिए ठीक नहीं है। ये आवारा कुरैश उस पुरानी कहावत को चरितार्थ कर रहे हैं कि 'गली के आवारा कुत्ते को रोटी देंगे तो वो आप पर ही भौंकेगा।' ईश्वर की सौगंध, जब हम मदीना लौटेंगे तो लड़ेंगे। जो ताकतवर होगा, वो कमजोर को भगा देगा।' इसके बाद वो अपने लोगों के पास गए और बोले, 'ये किया है तुमने अपने लिए। तुमने उनको अपने देश पर कब्जा करने दिया। तुमने अपनी संपत्ति उनमें बांट दी है। यदि तुम लोगों ने अपनी संपत्ति बचाकर पास रखी होती तो वे कहीं और चले गए होते।' जब यह खबर मुहम्मद तक पहुंची तो उसने इब्ने-उबई की हत्या करने की ठान ली। यह सुनकर इब्ने-उबई का बेटा, जो इस्लाम कबूल कर चुका था, मुहम्मद के पास पहुंचा और बोला, 'मैंने सुना है कि आप अब्दुल्ला इब्ने-उबई की हत्या करना चाहते हैं। यदि आपको ऐसा करना ही है तो मुझे आदेश दीजिए। मैं उनका सिर काटकर आपने कदमों पर रख दूंगा। क्योंकि पूरा अल-खराज जानता है कि उनके पास मेरे अतिरिक्त कोई और ऐसा व्यक्ति नहीं है जो अपने पिता के प्रति इतना कर्तव्यनिष्ठ हो। यदि आप किसी और खारज को उनकी हत्या का आदेश देंगे तो मेरी आत्मा उनके हत्यारे को खुलेआम घूमते हुए देखते रहने की अनुमति नहीं देगी और मुझे डर है कि मैं उस व्यक्ति की हत्या कर दूंगा। इस तरह एक काफिर के लिए एक मुसलमान की हत्या करके मुझे दोजख में जाना पड़ेगा।'[320]

अब्दुल्ला इब्ने-उबई का अपने समाज में बड़ा सम्मान था और मदीनावासी उन्हें अपने बुजुर्ग मुखिया के रूप में सम्मान देते थे। मुहम्मद के सामने बड़ी विचित्र स्थिति उत्पन्न हो गई थी। इब्ने-उबई जैसे पिता को मारने के लिए उसके बेटे को आदेश देने का परिणाम गंभीर हो सकता था। क्या पता वह बेटा इस अफवाह की सच्चाई को परखना चाहता था और इसके बाद वह अपने पिता को बचाने के लिए मुहम्मद के विरुद्ध खड़ा हो जाता? मुहम्मद ने होशियारी दिखाते हुए उसकी इस भयानक योजना पर मुहर लगा दी। मुस्लिम इतिहासकार व टिप्पणीकार इब्ने-उबई के बेटे की भाव-भंगिमा की तारीफ करते हैं और सच्चे मजहबी के रूप में उसका सम्मान करते हैं। मुहम्मद अपने अनुयायियों पर इस हद तक नियंत्रण रखता था। उसने मुसलमानों को ऐसा बना दिया कि वे एक-दूसरे की ही जासूसी करें और किसी भी तरह के असंतोष को पनपने से पहले ही खत्म कर दें।

एक और रोचक बात है कि जब अब्दुल्ला इब्ने-उबई मर गए तो उनके बेटे ने मुहम्मद से भीख मांगी कि वह उसके पिता के लिए दफनाने से पहले मगरिब की दुआ फातिहा पढ़े। इब्ने-उबई के कद को देखते हुए मुहम्मद को लगा कि यह अहसान करने में कोई समस्या नहीं है। जैसे ही वह मृतक के लिए दुआ पढ़ने के लिए उठा, उमर को याद आया कि वह अपनी मां तक की कब्र पर फातिहा नहीं पढ़ना चाहता था। उमर ने मुहम्मद की बाहें पकड़ लीं और बोला: 'अल्लाह के रसूल, आप इस आदमी के लिए दुआ करने जा रहे हैं, जबकि अल्लाह ने आपको किसी गैर-मुस्लिम के लिए ऐसा करने से मना किया है?' मुहम्मद ने उत्तर दिया, 'अल्लाह ने मुझे विकल्प दिया है, जैसा कि अल्लाह ने कहा है: ऐ रसूल, तुम उन मुनाफिकों के लिए मगफिरत की दुआ मांगो या न मांगो, कोई फर्क नहीं पड़ता। यदि तुम सत्तर बार भी उनके लिए दुआ मांगोगे तो भी अल्लाह उनके गुनाहों को माफ नहीं करगा। क्योंकि उन लोगों ने अल्लाह और उसके रसूल के साथ कुफ्र किया है।' (कुरान. 9:80)। और मैं उस सत्तर में एक और जोड़ दूंगा।' अजीब विडम्बना है कि मुहम्मद इब्ने-उबई को पाखंडी कह रहा है, जबकि यह लफ्ज उसके स्वयं के लिए अधिक उपयुक्त है।

आगे की हदीस उस गुस्से का एक उदाहरण है, जो मुहम्मद उन लोगों के प्रति जाहिर करता था, जिन्होंने उस पर सवाल उठाने की हिमाकत की थी। यह घटना तब हुई थी, जब मुहम्मद हुनैन की जंग में लूटे गए माल का थोड़ा सा हिस्सा मक्का के मुखियाओं में बांट रहा था, ताकि उनके दिल में जगह बनाकर उनके मुख से इस्लाम की प्रशंसा कराई जा सके। तब उसने अपने आदमियों से कहा कि किसी और के लिए कुछ मत छोड़ना, उनके लिए भी नहीं जिन्होंने इस जंग में हमारी मदद की है। एक आदमी बोला: 'ऐ अल्लाह के रसूल! न्याय करो।' रसूल ने कहा, 'लानत है तुम पर! मैं न्याय नहीं करूंगा तो और कौन करेगा? अगर मैं न्याय न कर सका तो यह मेरी मायूसी और नाकामी होगी।' उमर ने कहा, 'ऐ अल्लाह के रसूल! मुझे इस व्यक्ति का सिर कलम करने की इजाजत दो।'[321]

यह आदमी बनू तमीम कबीले का था। उसका कबीला मुसलमान नहीं बना था। वे मुहम्मद के साथ केवल लूटपाट में मदद करने आए थे। अब मुहम्मद जीत चुका था और उसे न तो किसी के सवाल का जवाब देना था और न ही अपने वादे पूरे करने थे। यह आदमी मुहम्मद और उसके चरित्र से परिचित नहीं था। उसके लिए और वहां मौजूद अन्य व्यक्तियों के लिए यह अनुभव निश्चित ही आंख खोलने वाला था। इस घटना से सबक मिला कि मुहम्मद के निर्णयों पर किसी को उंगली उठाने की अनुमति नहीं थी, भले ही उसके निर्णय अन्यायपूर्ण हों। जिस किसी ने भी उसके निर्णयों पर उंगली उठाई, वह उसके गुस्से का शिकार होता था और मौत उसके सामने होती थी। वह केवल चापलूसी वाली बातों की अनुमति देता था। यह स्वाभाविक है कि इतने दमनकारी माहौल में सच कहना हमेशा घातक होता है। क्या इस घटना से उन वामपंथियों को सबक नहीं सीखना चाहिए, जिन्होंने यहूदियों-ईसाइयों की हत्याओं में मुसलमानों का साथ देना शुरू कर दिया है? यह पढ़कर वामपंथियों की आंखें निश्चित ही खुलनी चाहिए, लेकिन वे जानबूझकर आंखें बंद किए हुए हैं।

ऑशेरो लिखते हैं: 'पीपुल्स टैम्पल की हालत इतनी उत्पीड़क हो गई, जिम जोन्स के बताए उद्देश्यों और उसके कार्यव्यवहार में इतनी विसंगति दिखने लगी थी कि यह मानना लगभग असंभव है कि चर्च को लेकर सदस्यों के मन में कोई प्रश्न नहीं आते थे। पर इन असंतोषों को और भड़कने की हवा नहीं मिल पाई। क्योंकि वहां नेता के आदेश की अवज्ञा का समर्थन करने वाला कोई नहीं था और न ही बहुमत के साथ असहमति प्रकट करने का साहस का समर्थन करने वाला कोई था। सार्वजनिक रूप से अवज्ञा करने वाले अथवा असहमति जताने को फौरन सजा दी जाती थी। जोन्स के शब्दों पर प्रश्न खड़ा करना खतरनाक था और यहां तक कि यदि आप अपने मित्रों या परिजनों के बीच यह करते तो भी नतीजा भुगतना पड़ता।

भेदिये और सलाहकार इस 'धृष्टता' की सूचना तत्परता से ऊपर पहुंचाते थे और कई बार तो भेदिया रिश्तेदार ही होता था।' जोन्स की तरह मुहम्मद भी चापलूस भेदियों पर भरोसा करता था। जैसा कि ऑशेरो कहते हैं: 'इससे न केवल असंतोष को दबाने में सहायता मिलती थी, बल्कि सदस्यों का अपने परिवार और मित्रों के प्रति अभिन्नता व निष्ठा को चकनाचूर करने में भी लाभ मिलता था।'

इस्लाम में मुसलमानों को एक-दूसरे पर नजर रखने का कहा जाता है। साथ ही यदि कोई 'सही रास्ते' से भटकता हुआ पाया जाए तो उसे चेतावनी देने को भी कहा जाता है। इसे अम्र बिल मारूफ (सही का आदेश देना) और निही अनिल-मुन्कर (गलत से निषेध) कहा जाता है। हालांकि यहां सही या गलत वह नहीं होता है, जो मानवता की दृष्टि में और बुद्धि-विवेक के अनुसार होता है, बल्कि यहां मुहम्मद ने जो हलाल व हराम बताया है, उसी से सही या गलत की परिभाषा निश्चित होती है। दूसरे शब्दों में इस्लाम में प्रत्येक व्यक्ति 'बिग ब्रदर' और दूसरों

की निगरानी करने वाला होता है, साथ ही साथी मुसलमानों के व्यवहार पर टोकना और गंभीर मामलों को ऊपर के लोगों तक पहुंचाना भी उसका फर्ज है। ईरान में इस्लामिक विप्लव के बाद बच्चों को कहा गया कि वे अपने माता-पिता की गैर-इस्लामी गतिविधियों की शिकायत दर्ज कराएं। बहुत सारे युवाओं ने अपने पिता के बारे में शिकायत की और इन पिताओं को मृत्युदंड मिला। इसके बाद इन मुखबिरों का सम्मान किया गया, ताकि दूसरे लोग भी ऐसा करने को प्रेरित हों।

ऑशेरो कहते हैं: 'जोन्स अपने उपदेशों में कहता था कि चर्च में बंधुत्व की भावना होनी चाहिए। उसने स्पष्ट शब्दों में कहा कि प्रत्येक सदस्य को व्यक्तिगत रूप से फादर के प्रति समर्पित होना चाहिए।'

इस्लाम में कहा जाता है कि मुसलमान आपस में एक-दूसरे के भाई हैं, लेकिन उनकी पहली निष्ठा मुहम्मद के प्रति है। अथवा जैसा कि मुहम्मद ने होशियारीपूर्वक निष्ठा को 'अल्लाह और उसके रसूल' से जोड़ दिया। जिस समय कोई इस्लाम छोड़ता है, उसी समय वही लोग उसका गला काट देते हैं, जो खुद को भाई बताते थे। मुहम्मद और जिम जोन्स में जबरदस्त समानता है। कभी-कभी तो लगता है कि जिम जोन्स मुहम्मद का प्रतिरूप था। सच्चाई यह है कि ये सभी नार्सिसिस्टों के मनोविकृत मस्तिष्क का स्वाभाविक प्रतिबिंब है। नाजीवाद से लेकर फासीवाद तक, साम्यवाद से लेकर इस्लाम तक सभी अधिनायकवादी हुकूमतें सांप्रदायिक हैं और जार्ज औरवेल के उपन्यास 'नाइंटीन एटटी फोर' में वर्णित लक्षणों से मेल खाते हैं।

पारिवारिक बंधनों का नाश

जिम जोन्स मानता था: ''परिवार की व्यवस्था शत्रुओं का हिस्सा होती है।' क्योंकि यह 'उद्देश्य' के प्रति समर्पण में बाधा उत्पन्न करती है।'[322] स्पष्ट है, यह उद्देश्य कुछ और नहीं, बल्कि वह स्वयं था। इस प्रकार कोई व्यक्ति जिसे सजा दी जानी हो, जब दंडाधिकारी के समक्ष बुलाया जाता था तो उसके मन में विचार आ सकता था कि उसका सबसे पहला और सबसे बड़ा आलोचक अपना परिवार ही है।[323]

मुहम्मद यह कहकर परिवारों में बिखराव पैदा करता था कि मुसलमानों को अल्लाह और उसके रसूल के प्रति समर्पित होना चाहिए और यदि उनके और इस्लाम के बीच उनके माता-पिता आते हैं तो उनका भी कहना नहीं मानना चाहिए। कुरान की निम्नलिखित आयत इस बिंदु को स्पष्ट करती है:

और हमने इन्सान को अपने मां-बाप से अच्छा बरताव करने का हुक्म दिया है और (ये भी कि) अगर तेरे मां-बाप तुझे इस बात पर शिर्क करने को मजबूर करें कि ऐसी चीज को मेरा शरीक बना, जिनके शरीक होने का मुझे इल्म तक नहीं तो उनका कहना न मानना।[324]

ऑशेरो सवाल करते हैं, 'अधिकतर लोग ऐसे संप्रदाय या मजहब को छोड़ क्यों नहीं पाते थे?' फिर बताते हैं: 'जब पीपुल्स टैम्पल के भीतर संप्रदाय छोड़कर जाना हतोत्साहित किया जाने लगा तो छोड़ने वाले लोग घृणा का पात्र बनने लगे थे।' ऑशेरो कहते हैं, 'जिम जोन्स किसी और बात से उतना परेशान नहीं होता था, जितना कि किसी के संप्रदाय से विद्रोह करने से। उसे छोड़कर जाने वाला व्यक्ति उसके तीखे हमले का शिकार बनता था। यदि उस बस्ती में कोई भी समस्या होती थी तो उसका जिम्मेदार वही व्यक्ति ठहराया जाता था।' इस समूह के एक सदस्य ने अपनी यादों को ताजा करते हुए कहा कि कुछ किशोरवय सदस्य टैम्पल छोड़ गए थे। हम इन 8 सदस्यों से इस कदर घृणा करते थे कि पूछिए मत। हमें लगता था कि ये आठों किसी दिन हम पर बम गिराएंगे। मेरा मतलब यह है कि जिम जोन्स ने इस कदर इन सदस्यों के खिलाफ हमारे मन में जहर भर दिया था।''[325]

मुसलमान भी इसी मानसिकता के साथ बड़े होते हैं। मुसलमान सबसे अधिक अगर किसी से घृणा करते हैं तो वो है इस्लाम में विश्वास न करने वाले से। इस्लाम में नास्तिक, स्वतंत्र विचार के लोग और आलोचकों को धमकियां दी जाती हैं और उनकी हत्या कर दी जाती है। मुसलमानों में असंतोष जताने वाले व्यक्ति को ईशनिंदा का आरोपी बनाकर पत्थर मार-मार कर या फांसी पर लटका कर मार दिया जाता है।

ऑशेरो लिखते हैं: 'समूह को छोड़कर जाना जोखिम भरा हो गया था। अधिकतर सदस्यों को यह समझ में नहीं आ रहा था कि उन्हें इस समूह से जुड़ने पर मिलेगा क्या। भाग जाना आसान नहीं था। विरोध करना बहुत महंगा पड़ सकता था। कोई विकल्प न होने के कारण चुपचाप आदेशों का पालन करना ही समझदारी का काम था। जिम जोन्स के पास जो ताकत थी, वह सदस्यों को कड़े अनुशासन में रखती थी और छोड़कर जाने में जो समस्याएं थीं, वे इनको समूह के भीतर बनाए रखने में सहायक हो रही थीं।' कुरान स्पष्ट करता है इस्लाम छोड़कर जाना अस्वीकार्य है।

यदि तुम अपना महजब छोड़ते हो तो तुम ज़ाहिराना तौर पर इस दुनिया का सबसे बुरा काम कर रहे हो। तुम उन्हीं की तरह हो जाओगे जो इस्लाम में विश्वास नहीं करते। इस्लाम में विश्वास नहीं करने वालों पर अल्लाह की लानत है और (जैसे कि ख़ुद उसने) उनके कानों को बहरा और आंखों को अंधा कर दिया है। इसलिए जो लोग अल्लाह की नाज़िल की हुई किताब को जानने के बावजूद कुफ्र (इस्लाम छोड़ना या इस्लाम के खिलाफ काम करना) की ओर जाएंगे, वे शैतान के प्रभाव में हैं और शैतान से प्रेरित हैं। (कुरान. 47:23-28)

यहां मुहम्मद मजहब छोड़ने वालों को दूसरी दुनिया में अल्लाह की ओर से सजा मिलने की धमकी दे रहा है। उसने इस दुनिया में भी ऐसे लोगों को सजा देने का प्रावधान किया। बुखारी ने निम्नलिखित हदीस में दिया है:

अल्लाह के रसूल ने कहा, 'मुसलमान जिसने यह माना है कि अल्लाह के अलावा किसी और की इबादत नहीं की जा सकती और मैं अल्लाह का रसूल हूं, ऐसे इंसान का खून नहीं बहाया जा सकता, सिवाय इन तीन स्थितियों के: कत्ल की सजा देने के लिए, ऐसा शादीशुदा व्यक्ति जिसने अनैतिक यौन संबंध बनाया हो और ऐसा व्यक्ति जिस ने इस्लाम और मुसलमानों को छोड़ दिया हो।'[326]

एक और हदीस बताती है कि इस्लाम छोड़ने वाले कुछ लोग अली के सामने लाए गए और उसने उन सबको जिंदा जला दिया। जब यह खबर इब्ने-अब्बास के पास पहुंची तो उसने कहा, 'यदि अली की जगह मैं होता तो उनको जलाता नहीं, क्योंकि अल्लाह के रसूल ने यह कहते हुए ऐसा करने से मना किया है कि किसी को भी अल्लाह की सजा (आग) से दंड मत दो। मैं उनको अल्लाह के रसूल द्वारा बताए गए तरीके से कत्ल करता, क्योंकि रसूल ने कहा है कि जो कोई भी इस्लाम मजहब बदले, उसे कत्ल कर दो।'[327]

प्रभावित करने की ताकत

ऐसी क्या बात थी, जो लोगों को जोन्स के चर्च में शामिल होने के लिए आकर्षित करती थी? आइए हम इस प्रश्न का विश्लेषण करते हैं और इस बात से तुलना करते हैं कि इस्लाम में शामिल होने वाले नए लोगों को क्या चीज आकर्षित करती है। ऑशेरो जोन्स के सम्मोहक वक्ता होने को उसके करिश्माई व्यक्तित्व का आधार बताते हैं। कमजोर लोगों को पाठ पढ़ाने की उसकी कला भी उसके लिए सहायक होती थी। वह ढेर सारे लुभावने वादे करता था और अपनी प्रस्तुति इस तरह देता था कि उससे प्रत्येक विशिष्ट श्रोता प्रभावित हो। इससे वह लोगों के दिलो-दिमाग को आसानी से जीत लेता था। सिसेरो के शब्दों में 'दुनिया में ऐसा कुछ भी नहीं है, जो वाक कला से स्वीकार न कराया जा सके।'

मुहम्मद वाक कला की ताकत से बखूबी परिचित था। वह मानता था कि वाकपटुता में जादू होता है।[328] वह कहा करता था: 'वाकपटु भाषण का असर जादुई तरीके से होता है (उदाहरण के लिए, कई लोग हैं जो कोई काम करने से इंकार कर देते हैं। तभी कोई अच्छा वक्ता उन्हें संबोधित करता है और वे उसी काम को करने के लिए तैयार हो जाते हैं।)'[329]

मुहम्मद एक जगह और डींग हांकता है, 'मुझे भाषण देने की कला और भय से विजय प्राप्त करने की कुंजी दी गई है।'[330] वह अपने लाभ के लिए वाक कला, समझाने की कला, आतंक और डांट-फटकार सबका प्रयोग करता था।

ऑशेरो लिखते हैं: 'पीपुल्स टैम्पल के सदस्यों में अधिकतर समाज के जरूरतमंद और उपेक्षित लोग थे: शहरी क्षेत्र के गरीब, अश्वेत, वृद्ध, नशे के आदी लोग और पूर्व के सजायाफ्ता लोग।'[331]

इसकी तुलना मक्का में बने मुहम्मद के अनुयायियों से करें। इनमें से अधिकतर गरीब, अधिकारविहीन गुलाम, विद्रोही युवा और कुछ असंतुष्ट औरतें थीं। वह गुलामों को उकसाता था कि उन्हें अपने मालिकों का जुआ उतार कर फेंक देना चाहिए और शहर छोड़कर दूसरी जगह चले जाना चाहिए। वह युवाओं से कहता था कि उन्हें अपने अभिभावकों की बात नहीं माननी चाहिए और उसके पीछे आना चाहिए। वह मुसलमानों में सामाजिक समानता और बंधुत्व की बात करता था। उसने लोगों को लालच दिया कि मुसलमान बनने पर उन्हें इस लोक में तो धनसंपदा मिलेगी ही, मरने के बाद भी बड़ा पुरस्कार मिलेगा। बाद में मुसलमानों ने इस लोक की धनसंपदा लूटपाट करके इकट्ठा की।

तीन इतिहासकार तबरी, इब्ने-साद और इब्ने-इसहाक मानते हैं कि बहुत थोड़े से लोग ही आस्था के कारण मुसलमान बने थे। अधिकांश लोग डर के कारण या फिर लूट के माल में हिस्सा मिलने के लालच में मुसलमान बने थे। वैसे इन लोगों के मुसलमान बनने के पीछे का कारण भले ही डर या लूट के माल में हिस्सा मिलने का लालच था, पर इन्होंने भूभागों को जीतकर कब्जा करने के मुहम्मद के लक्ष्य में उसका साथ दिया।

तड़कभड़क वाले दावे

संप्रदाय के नेता अहंकारोन्मादी व्यक्तित्व के होते हैं। जिम जोन्स और मुहम्मद दोनों में अहंकार कूट-कूट कर भरा हुआ था। नए लोगों को अपने समूह में आकर्षित करने के लिए जोन्स विभिन्न शहरों में जनसेवा का अभियान चलाता था। इस दौरान जो पर्चे बांटे जाते थे, उसमें लिखा होता था: पेस्टर जिम जोन्स... अद्भुत! चमत्कारिक! आश्चर्यजनक!

आपने इससे पहले दुख हरने वाले, सेवा करने वाले किसी पैगम्बर को नहीं देखा होगा! ध्यान से देखिए, ऐसा पैगम्बर हमारे बीच सशरीर उपस्थित है![332]

मुहम्मद ने भी अपने बारे में तमाम बड़े-बड़े हवाई दावे किए। उसकी मनगढ़ंत कठपुतली अल्लाह अक्सर इन शब्दों में उसकी तारीफ करता था जैसे कि:

ऐ रसूल, मैंने तुमको दुनिया जहान के लोगों के हक में रहमत बनाकर भेजा है। (कुरान. 21:107)

और निश्चित रूप से तुम्हारी (मुहम्मद की) नैतिकता आला दर्जे की हैं। (कुरान. 68.4)

तुम्हारे लिए तो अल्लाह के रसूल ऐसी मिसाल हैं, जिसका अनुसरण करना चाहिए। (कुरान.33:21)

वास्तव में यह शब्द सर्वाधिक इज्जतदार पैगम्बर के लिए है। (कुरान.81:19)

पर (ऐ रसूल) तुम्हारे परवरदिगार की क़सम, ये लोग सच्चे मुसलमान न होंगे, जब तक कि अपने सभी झगड़ों में तुमको अपना हाकिम (न्यायाधीश) ना बना लें और यही नहीं बल्कि जो कुछ तुम फै़सला करो, उसे जरा भी नाखुश हुए बिना ख़ुशी-ख़ुशी मान लें। (कुरान.4:65)

अंतिम आयत यह साफ करती है कि मुहम्मद असीमित प्रभुत्व (आज्ञाकारिता) चाहता था और किसी भी आलोचना या असहमति से गुस्से में आ जाता था।

अॅशेरो लिखते हैं: 'समूह में जोन्स के बड़े-बड़े वादों और पीपुल्स टेम्पल में जोन्स की व्यक्तिगत कमियों के लिए भी सदस्यों पर दोष मढ़ने के कारण उत्पन्न जीवन की कठिनाई स्पष्ट दिखती थी। एक पूर्व सदस्य नेवा स्लाई उद्धृत करते हैं: 'जो चीजें ठीक नहीं थीं, उनके लिए हमने स्वयं को दोष दिया।'[333] चर्च के भीतर एक विचित्र और विकृत भाषा विकसित हो गई थी, जिसमें जिम जोन्स जो भी कहता था, वही सदस्यों के लिए जीवन का लक्ष्य हो जाता था।[334] आखिरकार, वाकपटुता के इस्तेमाल, धूर्तता और भाषा के जरिए जोन्स मृत्यु को भी प्रगतिशीलता बताता और जिससे वहां छल का एक आवरण फैल गया, जो स्वयं को नष्ट करने को महान और 'क्रांतिकारी आत्महत्या' को बहादुरी के कार्य के रूप में प्रस्तुत करता था। लोग उसके शब्दों को अक्षरश: स्वीकार भी करते थे।'

इस्लाम में भी ऐसा ही है, जहां मुसलमान कुछ भी गलत होता है, तो उसका जिम्मेदार खुद को बताता है और जो कुछ अच्छा होता है, उसका श्रेय अल्लाह को देता है। मृत्यु को लेकर मुहम्मद के अनुयायियों और जिम जोन्स के अनुयायियों के दृष्टिकोण में समानता देखी जा सकती है। अमरीका को लिखे अपने कुख्यात पत्र में ओसामा बिन लादेन ने लिखा था कि 'हम मौत से उतना ही प्यार करते हैं, जितना कि तुम जिंदगी से।' इस कथन की जड़ 636 ईसवी में कादसीया की जंग में मिलती है, जहां मुसलमान फौज के कमांडर खालिद बिन वलीद ने खलीफा अबू बक्र की ओर से पैगाम लेकर एक दूत फारस के कमांडर खुसरो के पास भेजा था। उस पैगाम में लिखा था, 'तुम लोग (खुसरो और उसकी प्रजा) इस्लाम कबूल कर लो तो सुरक्षित रहोगे, यदि तुम लोग ऐसा नहीं करते तो जान लो कि मैं वहां ऐसे लड़ाकों को लेकर आ रहा हूं जो मौत से उतनी ही मुहब्बत करते हैं, जितना कि तुम अपने जीवन से।' यह कथन आज की मुस्लिम तकरीरों, अखबारों और किताबों में उद्धृत किया जाता है।

गूढ़ ज्ञान का दावा

संप्रदाय के नेता अपने अनुयायियों को प्रभावित करने के लिए चमत्कार दिखाते हैं और दावा करते हैं कि उनके पास ऊपर वाले की तरफ से दिया गया ज्ञान है। जिम जोन्स मंच पर कई तरह के चमत्कार दिखाया करता था।

जोन्स नए सदस्यों या अतिथियों को उनके स्वयं के बारे में कुछ ऐसी बातें बताता था, जो इन व्यक्तियों के अतिरिक्त दूसरा कोई नहीं जानता था। यह चमत्कार दिखाने से पहले वह अपने किसी विश्वस्त को उस अतिथि के सामानों की तलाशी लेने, उनके निजी पत्रों को खंगालने, उनकी बातें छिपकर सुनने के लिए भेजता था। वह विश्वस्त व्यक्ति इन तरीकों से जो जानकारी हासिल करता था, उसे आकर जोन्स को बता देता था। इसके बाद वह उन लोगों के 'गुप्त रहस्य' बताकर अचंभित कर देता था। मुहम्मद ने भी बिलकुल यही किया। मुहम्मद के जासूस हर जगह फैले हुए थे। ये जासूस ही उसके पास लोगों के बारे में सूचनाएं पहुंचाते थे। इन्हीं सूचनाओं से वह लोगों के सामने प्रकट करता और दावा करता था कि उसे फरिश्ते जिब्राईल ने बताया है...।'

अध्याय दो में हमने मारिया के साथ मुहम्मद के अवैध संबंधों के स्कैंडल, इस पर हफ्सा की प्रतिक्रिया, फिर मुहम्मद द्वारा मारिया को अपने लिए हराम कहने की कसम खाने और इसके बाद अल्लाह को बीच में डालकर इस कसम को तोड़ने की घटनाओं की चर्चा की थी। यह आयत बताती है कि मुहम्मद ने हफ्सा को आदेश दिया था कि वो मारिया के साथ उसके अवैध संबंध के बारे में किसी को न बताए। पर हफ्सा यह बात पचा नहीं सकी और आयशा के सामने उगल दिया। मुहम्मद यह जानकर गुस्से से लाल हो गया कि उसकी अय्याशी की पोल खुल गई है। यह तो एक छोटा सा बच्चा भी जान सकता था कि हफ्सा ने ही इस राज को खोला होगा। पर मुहम्मद ने दावा किया, अल्लाह ने उसे जानकारी दी है कि हफ्सा ने आदेश की अवहेलना की है।

और जब पैगम्बर ने अपनी एक बीबी हफ्सा से चुपके से कोई बात कही फिर जब उसने मना करने के बावजूद उस बात की (आयशा को) ख़बर दे दी और अल्लाह ने इस अम्र को रसूल पर जाहिर कर दिया तो रसूल ने (आयशा को) उस बात (किस्सा मारिया) का कुछ हिस्सा बता दिया और कुछ हिस्सा बताने से टाल गए। जब रसूल ने इस बात को बताया तो आयशा हैरत से बोल उठीं, आपको इस बात (राज) की किसने ख़बर दी। रसूल ने कहा मुझे सब जानने वाले खबरदार अल्लाह ने बता दिया। (कुरान. 66:3)

यह पूरी कहानी ऊटपटांग है। कायनात को बनाने वाला पहले एक दलाल की भूमिका में आता है और जिस औरत पर रसूल की वासना जग गई थी, उसके साथ संभोग करने में मदद करता है। फिर वह (अल्लाह) गप्पें हांकता है कि उसने अब (रसूल) को खबर की है कि उसकी बीबी ने उसकी चुगली की है। इस मूर्खतापूर्ण कहानी पर बहस करने को कोई मतलब नहीं है। इस किस्से से यह स्पष्ट है कि जब मुहम्मद को यह पता चल गया कि हफ्सा ने आयशा से उसके राज को फाश कर दिया है तो वह दावा करने लगा कि अल्लाह ने उसकी बीबी की चुगलखोरी की खबर उसको दी है। जबकि एक छोटा बच्चा भी यह अनुमान लगा सकता है कि आयशा को मारिया और मुहम्मद के अवैध संबंधों की खबर किसने दी होगी।

ये वे तरीके हैं जिनके जरिए संप्रदाय के नेता लोगों को गुमराह करते हैं और अपने पास गुप्त ज्ञान होने का दावा करते हैं। आश्चर्य की बात यह है कि अनुयायी अक्सर नेता के गलत कार्यों में सहयोगी बन जाते हैं।

चमत्कार दिखाना

ॲशेरो जीन मिल्स द्वारा लिखित एक घटना का उल्लेख करते हैं, जिसमें जोन्स भोजन को कई गुना करने का चमत्कार दिखा रहा है:

रविवार के इस कार्यक्रम में लोगों की संख्या सामान्य से अधिक है। किसी कारण से चर्च के सदस्य इतना भोजन नहीं ला सके हैं कि कार्यक्रम में उपस्थित सभी लोगों को भोजन कराया जा सके। यह पता चल गया था कि पंगत में बैठे आखिरी पचास लोगों को खाने को कुछ नहीं मिल जाएगा। जिम ने घोषणा की, 'यद्यपि कि यहां इतने सारे लोगों को खिलाने के लिए पर्याप्त भोजन नहीं है। मैं आशीर्वाद दे रहा हूं, जो भी भोजन हमारे पास है, वह अपने आप कई गुना हो जाएगा। जैसा कि जीसस ने बाइबिल के समय किया था।'

जिम के यह कहने के चंद मिनट बाद ही ईवा पुग मुर्गे (चिकन) के भुने हुए मांस से भरा दो प्लेट लेकर रसोई से मुस्कुराते हुए निकली। कक्ष में उपस्थित लोग खुशी के मारे में चिल्लाने लगे और खासकर वे लोग जो पंगत के आखिर में बैठे थे।

यह विशेष चिकन बहुत स्वादिष्ट था और पंगत में से कई लोग कहने लगे कि जिम की कृपा से यह चिकन इतना स्वादिष्ट है कि ऐसा स्वादिष्ट चिकन जीवन में कभी नहीं खाया था।

एक आदमी चुक बेकमैन ने अपने आसपास खड़े लोगों से मजाकिया लहजे में कहा कि उसने ईवा को कुछ देर पहले केंटुकी फ्राइड चिकन स्टैंड से दो बाल्टियां लाते हुए देखा है। उसने मुस्कुराते हुए कहा, 'जिस व्यक्ति की कृपा से ये चिकन इतना स्वादिष्ट बना है, उसका नाम है कर्नल सैंडर्स।'

शाम की सभा के दौरान जिम ने कहा कि चुक ने उसके उपहार का मजाक उड़ाया है। जिम गुस्से से चीखा, 'उसने यहां कुछ सदस्यों से झूठ बोला है कि चिकन स्थानीय दुकान से आया था। पर न्याय के देवता हर जगह उपस्थित रहते हैं। चुक ने झूठ बोला और अभी पुरुषों के कक्ष में पड़ा है, अपनी मौत की भीख मांग रहा है। उसने इतना गलत बोला है कि उसे उल्टियां हो रही हैं और डायरिया हो गया है।'

करीब एक घंटे बाद कमजोर और बुरी हालत में चुक बेकमेन सभा कक्ष में लोगों के बीच आया, और जिम के समक्ष खड़ा हुआ, उसे पहरेदारों ने सहारा दे रखा था। जिम ने उससे कहा, 'तुम कुछ कहना चाहते हो?' चुक ने दुर्बलता पूर्वक ऊपर देखा और बोला, 'जिम! मैं अपने अपराध के लिए क्षमा मांगता हूं। कृपया मुझे क्षमा करें।'

जब हमने चुक की ओर देखा तो मन ही मन सोचा कि अब वह कभी जिम के 'चमत्कारों' पर सवाल नहीं उठाएगा। उसके मन में संदेह पैदा भी होगा तो उसे जुबान तक नहीं लाएगा। कई सालों बाद हमें पता चला कि जिम ने केक में मीठा जहर डालकर चुक को खाने को दिया था।[335]

अब यह चमत्कार दिखाने के लिए जिम जोन्स को ईवा की सहायता के भरोसे रहना था। प्रश्न यह उठता है कि यह महिला ईवा जिम के इस स्कैम में सबकुछ जानते हुए भी उसका साथ क्यों दे रही थी? इसी तरह के कई चमत्कार मुहम्मद के साथ जुड़े हैं।

एक हदीस में किसी ने दावा किया है कि उसने देखा कि मुहम्मद ने एक बरतन में हाथ डाला और उससे पानी निकलने लगा। पानी लगातार निकलता रहा और पूरी फौज ने एक ही बरतन के पानी से वजू कर लिया।

अस्र (शाम) की नमाज का वक्त हो चला था। लोग वजू करने के लिए पानी ढूंढ़ रहे थे, पर पानी कहीं नहीं था। कुछ देर बाद वजू करने के लिए रसूल के पास पानी से भरा एक पात्र लाया गया। मैंने देखा कि रसूल ने उस पात्र में अपना हाथ डाला और लोगों को हुक्म दिया कि इस पानी से वजू कर लें। मैंने देखा कि जब तक सब लोगों ने वजू नहीं कर लिया, उनकी उंगलियों के बीच से पानी निकलता रहा। (यह रसूल के चमत्कारों का एक नमूना है।)[336]

एक और हदीस में हमें बताया गया है कि मुहम्मद चमत्कार दिखाते हुए रोटी की मात्रा कई गुना कर देता था।[337] या वह अपनी किसी चट्टान पर कुदाल चलाता था और वह चट्टान बालू में बदल जाता था।[338] अथवा खाने की मात्रा इतनी होती थी कि महज चार-पांच लोग ही पेट भर सकते थे, पर वह फूंक मारता था और उतने ही खाने में पूरी फौज का पेट भर जाता था।[339]

ऐसे दसियों कथित 'चमत्कार' हैं, जो मुसलमान मुहम्मद के साथ जोड़ते हैं। इनमें से अधिकांश तथाकथित चमत्कारों का दावा स्वयं मुहम्मद ने ही किया है। ये ऐसे चमत्कार थे, जिसकी पुष्टि किसी और ने नहीं की, केवल मुहम्मद ने स्वयं की है। फिर भी कोई मुसलमान इन कथित चमत्कारों पर संदेह नहीं करता है। इसी तरह के एक कथित चमत्कार में मुहम्मद ने दावा किया कि वह जिन्नातों के शहर गया था। एक जगह उसने कहा कि मदीना में जिन्नातों के एक समूह ने इस्लाम कबूल कर लिया है।[340] एक और मजेदार कहानी में वह दावा करता है कि उसकी एक दैत्याकार शैतान से लड़ाई हुई और उसने उस शैतान को हरा दिया।

'बीती रात एक दैत्याकार शैतान (अफ्रीत) मेरे सामने आ गया और मेरी इबादत में खलल डालने की कोशिश करने लगा (या कुछ ऐसा कहा), लेकिन अल्लाह ने मुझे ताकत दी और मैंने उसे हरा दिया। मैं उसको मस्जिद के एक खंभे से बांधकर रखना चाहता था, ताकि तुम सब जब सुबह उठो तो उसे देख सको।...'[341]

ये किस्से या तो मुहम्मद के विभ्रम के विकार के कारण पनपे या फिर उसने भोले-भाले लोगों को धोखा देने के लिए ये कहानियां गढ़ीं। इब्ने-साद अबू राफ़े द्वारा कहे गए एक किस्से को उद्धृत करते हुए कहता है: अबू राफ़े ने कहा कि एक दिन मुहम्मद उनके पास आया और रात के भोजन के लिए उन्होंने एक मेमना मारा। मुहम्मद को गोश्त में चाप (जानवर कंधे का हिस्सा) पसंद था, इसलिए उन्होंने उन्हें वह परोसा। इसके बाद उन्होंने और चाप मांगा। (याद रखिए, मुहम्मद की भूख अतृप्त रहती थी।) अबू राफ़े ने कहा, 'मैंने आपको दोनों चाप तो परोस दिए। और

कितने चाप होते हैं? मुहम्मद ने जवाब दिया, 'यदि तुमने यह नहीं कहा होता तो मैं जितने भी चाप मांगता, तुम परोसने में सक्षम होते।''[342] इस अजीबोगरीब हवाहवाई दावे को जब संशयवादियों ने चुनौती दी तो मुहम्मद बार-बार कहने लगा कि वो चमत्कार दिखाने में सक्षम नहीं है। उसने स्वीकार किया कि दूसरे पैगम्बरों के पास चमत्कार दिखाने की ताकत थी, पर उसके पास नहीं है और उसका एकमात्र चमत्कार कुरान है।

रसूल ने कहा, 'अल्लाह ने पहले आए पैगम्बरों को चमत्कार दिखाने लायक बनाया था, ताकि लोग उन पर विश्वास कर सकें और उनके साये में खुद को सुरक्षित महसूस कर सकें। लेकिन अल्लाह ने मुझे केवल एक चमत्कार करने की क्षमता दी और वह है खुदाई पैगाम, जिसे अल्लाह ने मुझ पर नाजिल किया।'[343]

प्रश्न यह है कि मुसलमान हर तर्क को नकारते हुए रसूल से जुड़े फर्जी चमत्कारों को क्यों मानते हैं? इसका जवाब मुसलमानों को देना चाहिए। जहां तक मेरा मानना है तो मुसलमान एक बार अपने मजहब की सच्चाई पर भरोसा करना शुरू करता है तो वह सबकुछ ही ठीक ठहराने लगता है, यहां तक कि झूठ को भी। मजहब में गहरा ईमान रखने वाले लोग जो सामान्यत: शिष्ट और नैतिक दिखते हैं, अपने मजहब के समर्थन में जानबूझकर झूठ बोलते हैं, धोखाधड़ी करते हैं, दूसरे धर्म के लोगों को अपशब्द कहते हैं और यदि जरूरत पड़े तो हत्या भी करते हैं। उनके लिए अपने मजहब का लक्ष्य इतना महत्वपूर्ण हो जाता है कि वे बाकी चीजों पर विचार करना बंद कर देते हैं। जब लोग अपने मजहबी मकसद की सच्चाई को लेकर इतना भरोसा करने लगें तो वे इसके लिए मरने को भी तैयार हो जाते हैं। फिर वे मजहब के लिए झूठ बोलने लगते हैं, हत्याएं तक करने लगते हैं और फिर यह प्रवृत्ति बन जाती है। फ्रेंच दार्शनिक व गणितज्ञ पास्कल लिखते हैं: 'इंसान बुरे काम अपनी खुशी से कभी नहीं करता, लेकिन यदि उसे मजहबी धारणा के वशीभूत होकर करना हो तो वह उतनी ही खुशी और शिद्दत से बुरे काम करता है।' पास्कल के शब्दों की सच्चाई का गवाह इतिहास है। दुनिया में अधिकतर अपराध मजहब के नाम पर किए जा रहे हैं। मजहब अंधा बनाता है और मजहब में अंधा विश्वास पूरी तरह जहनी तौर पर अंधा बना देता है।

इस्लाम में इमाम गजाली[344] की स्थिति और प्रभाव निर्विवाद है। उन्होंने कहा, 'जब ऐसा लगे कि सच बोलकर मकसद हल नहीं हो सकता, जबकि झूठ बोलकर मकसद हासिल किया जा सकता है तो झूठ बोलने की इजाजत है, बशर्ते कि वह मकसद हलाल (मजहबी तौर पर उचित) हो।'[345]

ऑशेरो कैसिंड्रोफ का हवाला देते हुए कहते हैं, 'जिम जोन्स नए सदस्यों के सामने बड़ी कुशलता और चालाकी से अपने चर्च द्वारा प्रस्तुत विचारों को पेश करता था। वह अपनी सार्वजनिक छवि को बहुत ध्यान से व्यवस्थित करता था। वह राजनीतिज्ञों और प्रेस के लोगों को अपने पक्ष में करने के लिए उन नेताओं और प्रेस के लोगों को प्रशंसाभरे पत्र लिखा करता था, जो पीपुल्स टैम्पल का समर्थन करते थे। वह राजनीतिज्ञों व प्रेस पर प्रभाव जमाने के लिए इनके दफ्तरों पर अपने सैकड़ों सदस्यों को भेजकर दबाव भी बनवाता था। वह अपने विरोधियों की आलोचना करने और धमकाने के लिए भी इन्हीं सब का सहारा लेता था।'[346]

यदि किसी समाचारपत्र में कोई चीज छपे और मुसलमानों को वह अपमानजनक लगे तो सम्पादक के दफ्तर पर शिकायत करने के लिए एक साथ एकत्र हो जाते हैं। जब तक कि समाचारपत्र सार्वजनिक रूप से माफीनामा न छापे और उस संस्करण को वापस न लेले, वे उसके सम्पादक और कर्मियों को डराते-धमकाते हैं। हम यह कैसे भूल सकते हैं, जब डेनमार्क के समाचारपत्र जाइलैंड्स-पोस्टन ने मुहम्मद के कुछ कार्टून प्रकाशित किए थे तो दंगे हुए और निर्दोष लोगों का कत्ल किया गया। अथवा दंगों और हत्याओं का वह दौर कैसे भूला जा सकता है, जो तब हुए थे जब पोप

बेनेडिक्ट 16 ने एक लेख में मुहम्मद को लेकर एक बेंजेंटाइन सम्राट के सवाल का हवाला दिया। इसमें सम्राट ने कहा था कि 'क्या तुम लोग एक भी ऐसी चीज दिखा सकते हो, जो मुहम्मद ने दुनिया को अनोखी दी हो?'[347]

10 नवंबर, 2003 को ब्रिटेन की सीएआईआर की सहयोगी मुस्लिम सार्वजनिक मामलों की समिति एमपीएसी ने ईशनिंदा का आरोप लगाते हुए एक प्रकाशन संस्थान अम्बर बुक्स के खिलाफ क्षोभ व्यक्त करने वाला पत्र छापा। मुसलमान अम्बर बुक्स के खिलाफ इसलिए गुस्से में थे, क्योंकि इसने द हिस्ट्री ऑफ पनिशमेंट नामक पुस्तक छापी थी। इस पुस्तक में विभिन्न संस्कृतियों व सभ्यताओं में सजा के बारे में दिया गया था। इसमें सजा देने के लिए प्राचीन तरीकों के बारे में बताया गया था, जैसे कि बाइबिल युग में सजा, रोमन काल में सजा और शरीया कानून। पुस्तक में कई चित्र थे और इनमें से एक मुहम्मद का भी था। इसी वजह से मुसलमान हिंसक विरोध पर उतारू हो गए थे। प्रकाशक को हजारों की संख्या में शिकायतें और धमकी भरे पत्र मिले। अंत में प्रकाशक को झुकना पड़ा। इस पुस्तक की सारी प्रतियां वापस मंगाकर मुसलमानों को संबोधित करते हुए सार्वजनिक माफीनामा जारी करना पड़ा।

एक और मामले में सीएआईआर ने पैरामाउंट पिक्चर्स नामक प्रकाशक को टॉम क्लैंसी के उपन्यास 'द सम ऑफ ऑल फीअर्स' के मूल कथानक में मुस्लिम आतंकवादी शब्द बदलकर उसकी जगह न्यू-नाजी शब्द रखने का दबाव डाला। सीएआईआर ने फिल्म निर्देशक फिल एल्डेन रोबिन्सन को माफी मांगने पर मजबूर किया। रोबिन्सन ने सीएआईआर से लिखित माफी मांगते हुए कहा कि मुसलमानों की छवि नकारात्मक दिखाने का उनका कोई इरादा नहीं था। इतना ही नहीं, रोबिन्सन ने माफीनामा के साथ यह भी लिखा कि 'भेदभाव दूर करने में मुसलमानों के सतत् प्रयास की वे सराहना करते हैं।'

वर्ष 2002 में ईसाई धर्म प्रचारक पैट राबर्टसन और जेरी फॉलवेल ने इस्लाम के बारे में अपने विचार का प्रसारण किया। इसको लेकर पूरी दुनिया में मुसलमानों ने दंगे किए। ईरान के मुल्लाओं ने इसका बदला लेने की धमकी दी। पाकिस्तान में स्कूली बच्चों सहित कई ईसाइयों की हत्या कर दी गई। लेबनान के सिडान में 31 साल की ईसाई नर्स बोनी पेन्नर विदेराल की गोली मारकर हत्या कर दी गई।

बाहरी व्यक्तियों पर अविश्वास और आरोप मढ़ना

ॲशेरो लिखते हैं: 'जोन्स ने अपने अनुयायियों के मन में विरोधाभासी संदेशों के प्रति अविश्वास की भावना भर दी थी। वह चुनौती देने वाली किसी भी बात को अविलंब शत्रुओं की कारस्तानी बता देता था। वह ऐसी बातों या संदेशों के स्रोत पर सवाल उठाकर इनकी विश्वसनीयता को खत्म कर कर देता था। उसने एक तरह से अनुयायियों पर बाहरी आलोचना का प्रभाव नगण्य करने के लिए उन्हें मानसिक कवच पहना दिया था।'

कुछ ऐसा ही मुसलमानों के साथ भी है। उनकी कोई आलोचना करे या उनकी कमियां तार्किक ढंग से बताए तो भी वे उस पर यहूदी होने या 'इस्लाम के शत्रुओं' द्वारा पाले गए एजेंट होने का आरोप मढ़ने लगते हैं। यदि कोई इस्लाम की आलोचना करे तो मुसलमान उसे व्यक्तिगत आलोचना के रूप में लेते हैं। **मुसलमान आलोचना में दिए गए तर्कों का जवाब तर्क से देने के बजाय, आलोचक पर बिना सोचे-समझे हमला करने लगते हैं। वे आलोचना करने वाले को गाली देने लगते हैं और उसे अपमानित करते हैं, संदिग्ध बनाने की कोशिश करने लगते हैं।**

ॲशेरो लिखते हैं: 'जोन्स टाउन में अनुयायियों के बीच जैसे ही कोई विरोधाभासी विचार उठता था, उसकी विश्वसनीयता पर सवाल उठाकर संदिग्ध बना दिया जाता था। सदस्य यह देखने के बजाय कि उस विचार में कोई तथ्य है या नहीं,

उसकी व्याख्या ऐसे करने लगते थे, मानो उनकी स्वयं की कमी हो अथवा उनके स्वयं के विश्वास में कमी हो।' ऐसा मुसलमान भी सोचते हैं। **मुसलमान यह महसूस करते हैं कि उनका जीवन नर्क है, उनका देश एक कसाईखाना है, फिर भी वे खुद को कोसते हुए कहते हैं कि सच्चे इस्लाम पर अमल न करने के कारण ही उनकी यह दुर्गति है। जबकि सच्चाई यह है कि सच्चे इस्लाम के कारण ही इन मुसलमानों का जीवन कष्टमय और नारकीय है।**

अपने आपको जस्टीफ़ाई करना

टॉलस्टाय ने कहा, 'मनुष्य की मुक्ति और सजा दोनों इस तथ्य पर निर्भर करता है कि वह जीवन कैसे जी रहा है। यदि वह गलत तरीके से जिंदगी जी रहा है तो अपने आगे खुद ही अंधेरा पैदा कर रहा है और उसे अपनी स्थिति की विकटता का अहसास नहीं होगा।'[348]

जिम जोन्स ने सम्पूर्ण प्रभुत्व और नियंत्रण का वातावरण तैयार किया था। ॲरैशो कहते हैं: 'जोन्स टाउन में आज्ञाकारिता और सत्ता की स्थिति का विश्लेषण किया जाए तो इसकी व्याख्या की जा सकती है कि वहां लोगों का व्यवहार वैसा क्यों था। जब पीपुल्स टैम्पल जोन्स टाउन में आ गया तो वहां सदस्यों के लिए जिम जोन्स की आज्ञा का आंख बंद करके पालन करने के अतिरिक्त और कुछ और करने की गुंजाइश बहुत कम थी। वे एक निरंकुश सत्ता के साये में रह रहे थे। चारों ओर से घिरे जंगल के बीच में सशस्त्र पहरेदारों की निगरानी में इन सदस्यों के पास बहुत कम विकल्प थे। सदस्यों ने अपने पासपोर्ट, अन्य आवश्यक दस्तावेज और कबूलनामा[348] द क्रूजर सोनाटा जोन्स को सौंप दिए थे।'

ये लोग ऐसा विश्वास करने लगे थे कि बाहर की दुनिया में स्थितियां और खतरनाक हैं। कम खाना, काम का भारी बोझ, निद्रा की कमी और जोन्स के उग्र भाषणों के प्रभाव से लगातार गहरी होती उनकी पीड़ा और दुर्दशा आदि के जबरदस्त दबाव के कारण वे अंधों की तरह उसके हुक्म की तामील करने को बाध्य होते थे।'

हम जानते हैं कि मुहम्मद उन लोगों से प्रसन्न नहीं रहता था, जो उसे छोड़कर जाते थे। जैसा कि हम देख सकते हैं, मुहम्मद और जोन्स के सोचने के तरीके में मामूली फर्क है। हालांकि यह मानना भूल होगी कि संप्रदाय के अनुयायी केवल इसलिए छोड़कर नहीं जाते क्योंकि उनका उत्पीड़न होता है। मनोवैज्ञानिक उत्पीड़न अधिक ताकतवर और दीर्घकालिक प्रभाव वाला होता है। पीड़ित अपने ही प्रति दुर्व्यवहार और दासता की भावना को अपनी इच्छा से स्वीकार करता है और यहां तक कि उत्पीड़न करने वाले का साथ देकर भी उसके प्रति कृतज्ञता का भाव रखता है।

ॲशेरो लिखते हैं: 'जिस दिन अंतिम कर्मकांड (सामूहिक आत्महत्या) हुआ, तब सदस्यों के लिए यहां से भागना या इसका विरोध करना लगभग असंभव था। फिर भी यह मानना कठिन है कि इनमें से अधिकतर लोग इसका विरोध करना या भाग जाना चाहते थे। अधिकांश सदस्य जोन्स पर अंधविश्वास करते थे। एक महिला का शव मिला, जिसकी बांह पर गुदा था, 'जोन्स दुनिया में मात्र एक है।'[349]

ऐसा लगता है कि इन लोगों ने इस अपरिहार्य घटना को स्वीकार कर लिया था और यहां तक कि 'मृत्यु को सुंदर' मान लिया था। जैसे ही सामूहिक आत्महत्या का संस्कार शुरू हुआ, एक पहरेदार टैम्पल द्वारा रखे गए अटार्नियों में से एक चार्ल्स गैरी के पास भागता हुआ आया और चिल्लाने लगा, 'यह क्षण महान है... हम सब मरने जा रहे हैं।''[350]

इस घटना के एक साल बाद इस समूह के ऐसे सदस्य का साक्षात्कार लिया गया, जो इसलिए बच गया था क्योंकि वह उस वक्त अपने दांत दिखाने डॉक्टर के पास गया था। उसने कहा: 'यदि मैं वहां रहा होता तो पहला व्यक्ति होता जो आगे बढ़कर जहर का प्याला पीता। मैं ऐसा करके गर्व महसूस करता।'[351]

वह कौन सा तत्व है, जो एक सामान्य मनुष्य को इतना अतिवादी कदम उठाने को मजबूर कर देता है? यह समझना या समझाना कठिन है कि जब लोग अपने संप्रदाय के नेता को दिव्य आत्मा मान लेते हैं तो वे उसकी सनक को पूरा करने में भागीदार बनने और उसके मनोविकृत मस्तिष्क का विस्तार बनने को सहर्ष तैयार हो जाते हैं।

शुरुआत में मुसलमान बनने वाले लोगों में मुहम्मद के प्रति अंध समर्थन, उन्माद और अंधभक्ति को क्या इससे समझा जा सकता है? क्या शुरुआती मुसलमान मुहम्मद में वही देखते थे, जो जिम जोन्स के अनुयायी उसमें देखते थे? निम्नलिखित हदीस इस कट्टरता का बखूबी बयान करती है।

अल्लाह के रसूल दोपहर के समय आए और वजू के लिए उनके पास पानी लाया गया। जब उन्होंने वजू कर लिया तो लोग बचा हुआ पानी ले गए और उसे अपने शरीर पर मलने लगे (मानो कि वह कोई बहुत पवित्र चीज हो।)[352]

एक और जगह लिखा है:

अली की आंखें सूज गई थीं। तब रसूल ने उसकी आंखों पर अपना थूक मला और अल्लाह का आह्वान किया कि उसे ठीक करें। उसकी आंखें तुरंत ठीक हो गईं, जैसे कि कुछ हुआ ही नहीं था।[353]

ये सारे झूठ मुसलमानों द्वारा गढ़े गए। मुहम्मद अपनी बीमारी तो ठीक नहीं कर पा रहा था और स्वयं शारीरिक दर्द से लगातार परेशान था। फिर वह थूक लगाकर दूसरे का दर्द कैसे ठीक कर सकता था?

पृथकतावाद

ॲशेरो पृथकतावाद को जोन्सटाउन के एक ऐसे पहलू के रूप में परिभाषित करते हैं, जो संभवतः सर्वाधिक कष्टकारी है। वो कहते हैं, 'पीपुल्स टैम्पल के बहुसंख्यक अनुयायी आखिरी क्षण तक जिम जोन्स में भरोसा करते रहे। ताकत या प्रेरणा के रूप में बाह्य शक्ति स्वीकृति उत्पन्न कर सकती है। पर सदस्यों के मन में उन धारणाओं को गहरे बिठाने की पड़ताल करने के लिए प्रक्रियाओं के एक अलग समूहों पर अवश्य विचार करना चाहिए। हालांकि जोन्स के कथन अक्सर असंगत होते थे और उसका तरीका क्रूर, फिर भी अधिकांश सदस्य उसके नेतृत्व पर अगाध विश्वास करते थे।'

कुरान में तमाम असंगतियां, विरोधाभास और गलतियां हैं। यह किताब अस्त-व्यस्त, भ्रांति फैलाने वाली, गंदे तरीके से लिखी गई तथा विसंगतियों और बेतुकी बातों से भरी हुई है। यह किसी संपादक के लिए भयावह सपने से कम नहीं है। जो मुसलमान कहते हैं कि कुरान एक चमत्कार है, उन्हें इसकी इतनी विसंगतियों, विरोधाभासों और बेतुकेपन में से कुछ भी परेशान नहीं करता, क्योंकि मुहम्मद ने ऐसा कहा है।

ॲशेरो ने पीपुल्स टैम्पल में इसका अच्छा स्पष्टीकरण दिया है कि इतने बेतुकेपन पर लोग विश्वास क्यों करते हैं। वह कहते हैं: 'जोन्स टाउन में वे एक बार अलग-थलग कर दिए जाते थे तो उनके पास सोचने-विचारने का अवसर या प्रेरणा न के बराबर होती थी। प्रतिरोध करने या बचकर भागने का तो सवाल ही नहीं था। इस स्थिति में कोई इंसान अपनी दुर्दशा को ही उचित मानने के लिए प्रेरित किया जाता है। ऐसे अपरिहार्य स्थितियों का लगातार सामना करने के कारण वह इन कठिन परिस्थितियों को सकारात्मक रूप से लेने लगता है। उदाहरण के लिए, सामाजिक मनोवैज्ञानिक शोध दिखाते हैं कि क्यों बच्चे यह मानते हैं कि उन्हें वही सब्जी अधिक दी जाएगी, जो वे नापसंद करते हैं। फिर एक दिन वे अपने आपको समझा लेते हैं कि ये सब्जियां उतनी बुरी नहीं हैं।[354] इसी तरह जब कोई व्यक्ति मन में किसी व्यक्ति के साथ रहने का विचार लाता है तो वह उस व्यक्ति के चित्रण को और अधिक सकारात्मक ढंग से देखने-समझने लगता है।'[355]

संप्रदाय के नेता अक्सर अपने अनुयायियों को एक सीमा में बांध देते हैं, ताकि बाह्य जगत से उनका संबंध कम कर सकें। जिम जोन्स ने गुयाना के जंगलों ने अपने नाम पर जोन्स टाउन बसाया। मुहम्मद यसरब गया, जबकि यह शहर मूलत: यहूदियों द्वारा बसाया गया था। मुहम्मद ने यहां रहने वाले अरबी लोगों को अपना अनुयायी बनाने के बाद उसने इस शहर का नाम अपने नाम से जोड़कर मदीनत उल-नबी (रसूल का कस्बा) कर दिया। मदीना में मुहम्मद ने उन सबको कत्ल करना या सार्वजनिक रूप से बेइज्जत करना शुरू कर दिया, जो उसके प्रभुत्व पर सवाल उठाते थे। मदीनत उल नबी बिलकुल जोन्स टाउन की तरह था। जहां मुहम्मद सर्वोच्च सत्ता था और किसी भी प्रकार का असंतोष जाहिर करने पर सख्त सजा दी जाती थी। एक बार कोई व्यक्ति मदीना में प्रवेश कर गया और मुसलमान बन गया तो उसके लिए वापस लौटना लगभग नामुमकिन होता था।

मुहम्मद का साथ छोड़कर जाने वालों में एक अब्दुल्ला इब्ने-साद अबी सरह था। मुहम्मद ने जब मक्का मदीना को जीत लिया तो उसने दस लोगों को छोड़कर बाकी सभी निवासियों को अभयदान दे दिया। ये दस लोग वे थे, जिन्होंने मुहम्मद की आलोचना की थी या उसका उपहास किया था। अबी सरह भी इन्हीं दस लोगों में शामिल था।

अबी सरह कुरान की उन आयतों को लिखता था, जो मुहम्मद बोलता था। वह मुहम्मद से अधिक पढ़ा-लिखा था। वह अक्सर मुहम्मद की रचनाओं को ठीक किया करता था और उन्हें और अच्छे तरीके से लिखने का सुझाव देता था, जिसे मुहम्मद मान लेता था। इससे उसको लगा कि कुरान किसी और दुनिया से नहीं आई है, बल्कि वह मुहम्मद के दिमाग की उपज है। वह वहां से भागकर वापस मक्का चला गया। मक्का में उसने सबको मुहम्मद के कुरान की हकीकत बता दी। जब मुहम्मद ने मक्का पर फतह हासिल की तो उसने लोगों को आश्वासन दिया था कि आत्मसमर्पण करने वाले किसी व्यक्ति को न तो सजा दी जाएगी और न ही उसका जबरन धर्मांतरण कराया जाएगा। बावजूद इसके उसने आदेश दिया कि अबी सरह का सिर कलम कर दिया जाए। हालांकि अबी सरह बच गया। इसके बचने के दो कारण थे। एक तो उस्मान बीचबचाव करने आ गया था और दूसरे मुहम्मद संकेतों में अपनी इच्छा ठीक से प्रकट नहीं कर सका। उस्मान अबी सरह का चचेरा भाई था। जब उस्मान ने मुहम्मद से गुहार लगाई कि अबी सरह को कत्ल न करे तो मुहम्मद ने चुप्पी साध ली। उसके साथियों ने समझा कि रसूल ने उस्मान की बात मान ली है, और उन्होंने अबी सरह को उसके साथ जाने दिया। जब ये दोनों चले गए तो मुहम्मद ने शिकायत के लहजे में अपने साथियों से कहा कि वह उस्मान की बात काटना नहीं चाहता था, लेकिन उसे उम्मीद थी कि लोग (उसके साथी) उसके चेहरे पर नाखुशी भांप लेंगे और उस व्यक्ति (अबी सरह) का कत्ल कर देंगे। यह कहानी अल्लाह के रसूल के दोगले चरित्र को बयान करती है कि कैसे वह एक ओर उस्मान को खुश करने की कोशिश कर रहा था, तो दूसरी ओर चाहता था कि दूसरे लोग अबी सरह का कत्ल भी कर दें, ताकि उस्मान उस पर आरोप न लगा सके।

इब्ने-इसहाक वर्णन करता है: 'उन्होंने (रसूल ने) उसे (अबी सरह) को कत्ल करने का हुक्म इसलिए दिया था, क्योंकि पहले वह मुसलमान था और मुहम्मद की आयतें लिखा करता था। फिर वह इस्लाम छोड़कर मक्का में कुरैश कबीले में वापस लौट गया।... उसे अपना मजहब छोड़ने के कारण कत्ल किया जाना था, लेकिन उस्मान के हस्तक्षेप ने उसे बचा लिया।'[356]

मदीना में माहौल बहुत तनावपूर्ण था। इस्लाम और जिहाद नागरिकों के जीवन का मुख्य भाग हो चुका था। मुहम्मद ने नागरिकों को हुक्म दिया था कि वे मस्जिद जाएं और पांच वक्त की नमाज पढ़ें। मुहम्मद के आदमी

अक्सर हमला करने, डाका डालने, कारवां को लूटने, गांवों को नष्ट करने, आदमियों की हत्या करने, औरतों का बलात्कार करने में व्यस्त रहते थे।

एक हदीस है, जिसे इमाम बुखारी और मुस्लिम दोनों ने लिखा है। इस हदीस में अत्याचार के उस स्तर का पता चलता है, जो मुहम्मद अपने हुक्म की तामील कराने के लिए लोगों पर कर रहा था। इसमें लिखा है:

मैंने सोचा कि मैं नमाज (रात की) शुरू करने का हुक्म दूं और एक व्यक्ति को मस्जिद में नमाजियों का नेतृत्व करने को लगाऊं। इसके बाद ईंधन के गट्ठर के साथ कुछ लोगों को लेकर उन लोगों के पास जाऊं, जो मस्जिद में नमाज (सामूहिक) में शामिल नहीं हुए थे और उनके घरों को आग लगा दूं।[357]

इस हदीस में मुहम्मद उनको आग लगाने की धमकी दे रहा है, जो मस्जिद में सामूहिक नमाज में शामिल होने से बच रहे थे।

मदीना में जिंदगी पूरी तरह बदल गई थी। मुहम्मद के आने से पहले यसरब के लोग किसान थे, शिल्पी थे, व्यापारी थे। उद्योग-व्यापार में अधिकांश के स्वामी यहूदी थे, जो मेहनतकश, शिक्षित और समृद्ध थे। अरबी अनपढ़, काहिल और कामचोर थे। अरबियों के पास जो थोड़े-बहुत हुनर थे तो वे यहूदियों के लिए काम करते थे। जब यहूदियों का नाश कर दिया गया तो शहर बहुत तेजी से बदल गया। अब वहां कोई ऐसा व्यापार या धंधा नहीं बचा था, जहां अरब काम करके अपनी आजीविका कमा सकें। इस शहर की अर्थव्यवस्था एकसाथ ढह गई थी। जंग और लूटपाट में मिले माल में से मुहम्मद जो कुछ उनको दे देता था, उसी पर शहर के लोग जिंदा थे। इनके लिए अब वापस लौटने का रास्ता बंद हो चुका था। ये लोग मुहम्मद और उसकी जंग में लूटे गए माल पर निर्भर हो गए थे। यहां तक कि मुहम्मद के मजहब को न मानने वाले लोग भी जैसे कि अबदुल्ला इब्न-उबई और उसके अनुयायी, मुहम्मद के हमलों में उसके साथ हिस्सा लेने लगे। ये ऐसा इसलिए नहीं करते थे, क्योंकि उन्हें इस्लाम का समर्थन करना था, बल्कि इसलिए करते थे क्योंकि लूटपाट में मिला माल मदीना के लोगों की आय का एकमात्र स्रोत था। यदि ये लोग मुहम्मद के हमले या लूटपाट में हिस्सा नहीं लेते तो भूखे मर जाते। पीपुल्स टैम्पल के सदस्यों की तरह ही मुसलमान भी अपरिहार्य स्थितियों का सामना कर रहे थे। इस कारण वे अपनी दुर्दशा को ही अपनी किस्मत मानने को मजबूर होते थे। जो लोग इस नए नेता के खिलाफ आवाज उठाने का साहस करते थे, वे या तो मार दिए जाते थे अथवा समाज से बहिष्कृत कर दिए जाते थे। मदीना की अरबी जनसंख्या बेहद गरीब थी। ये जाहिल, अभागे और अंधविश्वासी लोग थे। इनके लिए एक ऊंट या एक कपड़ा भी संपत्ति जैसा होता था। ये लोग यहूदियों के लिए भाड़े के टट्टू के रूप में काम करते थे। कई हदीसें इन अरबों के बारे में बताती हैं कि इन अरबों ने जीवन में पहली बार संपत्ति लूटपाट के जरिए ही हासिल की। हालांकि कुरान ने बड़े सलीक़े से लूटपाट में मिले माल को अल्लाह का इनाम कहकर इसे जायज ठहरा दिया गया।

हमलों में यौन लूट का भी माल मिलता था। **जंग में जो औरतें बंदी बनाई जाती थीं, उन्हें मुसलमानों के लिए प्रोत्साहन इनाम माना जाता था और खासकर उन अप्रवासियों के लिए जो शादीशुदा नहीं थे। जब मदीना से यहूदियों को मार डाला गया और उन्हें समाप्त कर दिया गया तो दरिद्र अरबियों के लिए मुहम्मद की फौज शामिल होकर उसके साथ जंग लड़ने के अलावा और कोई विकल्प नहीं बचा था। जिहाद (जंग) में बढ़-चढ़कर हिस्सा लेने वाले मुसलमानों के लिए प्रमुख इनाम धन और सैक्स था।**

क्रमिक समावेशन

भीतर के द्वंद्व और बिना कोई सवाल किए बेतुके मजहबी कर्मकांडों को करते रहने से मुसलमानों की जिंदगी

बहुत दुष्कर होती है। वह धीरे-धीरे इस कठिन जिंदगी के आगे समर्पण कर देता है। ॲशेरो लिखते हैं: 'पीपुल्स टैम्पल में किसी सदस्य का जुड़ाव जोन्स टाउन में नहीं शुरू होता था, बल्कि यह बहुत पहले ही उसके घर से ही शुरू हो जाता था। पहले संभावित सदस्य इस संप्रदाय की सभाओं में अपनी इच्छा से जाता था और फिर सप्ताह में कुछ घंटे चर्च की सेवा में खर्च करता था। हालांकि इसके पुराने सदस्य ऐसे लोगों को जोन्स टाउन में सम्मिलित होने के लिए प्रेरित किया करते थे, लेकिन वह सदस्य वहां रुकने या न रुकने के लिए स्वतंत्र था। समूह में सम्मिलित होने का निर्णय करने के बाद व्यक्ति चर्च की सेवा का कार्य और बढ़ा देता था और इसके प्रति अधिक प्रतिबद्ध हो जाता था। जोन्स ऐसे सदस्यों पर एकाएक अपनी बातें नहीं थोपता था, बल्कि ऐसा करते हुए लंबे समय के बाद वह इन सदस्यों पर अपनी सत्ता के कठोर नियम-कायदे और अपनी आज्ञा का अनुपालन थोपना तेज करता था। थोड़ा-थोड़ा करके उस व्यक्ति के पास विकल्प सीमित होते जाते थे। चरणबद्ध रूप से वह व्यक्ति अपनी बदली हुई प्रतिबद्धता और व्यवहार को स्वयं ही सही सिद्ध करने लगता था।'

जो इस्लाम कबूल करते हैं, वे भी इसी तरह का अनुभव करते हैं। उनका समावेशन धीरे-धीरे होता है। जैसे-जैसे उनका जुड़ाव गहराता जाता है, मजहबी अपेक्षाएं भी उसी अनुपात में बढ़ने लगती हैं। औरतों को कहा जाता है कि बालों को ढंक कर रखना अनिवार्य नहीं है, लेकिन यदि वे ऐसा करेंगी तो अच्छा होगा। इसके बाद नए मुसलमान को कुछ विशेष खाद्य सामग्री से परहेज करने को कहा जाता है, हलाल खाना खाने को कहा जाता है, नमाज, रोजा और जकात करने को कहा जाता है और धीरे-धीरे उन्हें जिहाद की अच्छाई और इससे होने वाले लाभ के बारे में बताया जाने लगता है। यह काम सभी मुसलमानों द्वारा किया जाता है। चूंकि नया-नया मुसलमान बना व्यक्ति उस समुदाय में स्वीकार्यता का भूखा होता है और इसलिए जो कुछ उससे कहा जाता है, वह करने को तैयार रहता है। यहां तक कि वह पैदाइशी मुसलमानों से अधिक मजहबी कर्मकांड करने लगता है। इसीलिए कहावत भी है कि 'नया मुल्ला अधिक प्याज खाता है।'

नए व्यक्ति की मुसलमानी की प्रक्रिया इतनी धीमी रखी जाती है कि इन लोगों को ऐसा लगे, जैसे कि इनमें ये बदलाव अपने आप आ रहा है। वे आखिर में वही काम करने लगते हैं, जिसे वे मुसलमान बनने के पहले आपत्तिजनक और हास्यास्प्रद मानते थे। इस्लाम छोड़ने वाली एक अमेरिकन महिला ने मुझे पत्र लिखा और बताया कि पहले जब वो काले बुर्के में लिपटी औरतों के समूह को देखती थी तो वह उन पर हँसती थी और उन पर दया आती थी।

और फिर इस अमेरिकन महिला ने इस्लाम कबूल कर लिया और कड़ाई से बुर्का पहनने लगी और ऐसी पर्दानशीं रहने लगी कि अपना चेहरा भी नकाब से ढंककर रखती थी। मेरा इस औरत से ऑनलाइन परिचय हुआ। इस औरत ने एक इंटरनेट साइट बनवाई थी, जिस पर इस्लाम का प्रचार करती थी और मेरे बारे में उल्टा-पुल्टा बोलती थी। वह दूसरी औरतों को मेरे लेख नहीं पढ़ने की चेतावनी देती थी। जाहिर है, वह इस्लाम के अनुसार जी नहीं रही थी, बल्कि इस्लाम के बारे में उपदेश दे रही थी और इसलिए वह मेरे लेख पढ़े बिना नहीं रह पाती थी। आखिर में वह इस्लाम की घिनौनी हकीकत जान गई और इस्लाम को छोड़ दिया, बिलकुल चिंताजनक स्थिति में। उसने मुझे बताया कि किस तरह धीरे-धीरे वह इस्लाम के दलदल में फंसती चली गई। इस दलदल में वह इस सीमा तक फंस गई थी कि एक समय उसने अपने गैर-मुस्लिम पति को भी इस्लाम स्वीकार कर एक और बीबी लाने को कह दिया।

मैं ऐसी मुस्लिम औरतों से मिल चुका हूं, जिनका इस कदर ब्रेनवाश कर दिया गया है कि वे **मुहम्मद के उस दावे का भी समर्थन करती हैं, जिसमें कहा गया है कि औरतों की बुद्धि मर्दों से कम होती है और वे स्वाभाविक रूप से मर्दों से कमतर होती हैं। विडम्बना यह है कि वे साथ ही यह भी मानती हैं कि इस्लाम औरतों की आजादी की हिमायत करता है।** मजहब अस्ल में दिमाग को बंद कर देने वाला नशा है। जो लोग इस्लाम कबूल करते हैं, वे संभवत इसके अद्वैतवाद से आकर्षित होकर यह कदम उठाते हैं अथवा वे एक बड़े 'बंधुत्व' वाले समूह में शामिल होने की इच्छा से ऐसा करते हैं। ये लोग ही कुछ ही समय में यहूदियों से नफरत करने लगते हैं और अपने देश से भी। फिर वे अपने गैर-मुस्लिम अभिभावकों के प्रति नफरत पालने लगते हैं और अपने गैर-मुस्लिम दोस्तों से दूरी बनाने लगते हैं। अंत में वे मुसलमान के तौर पर अपने सबसे बड़े मजहबी फर्ज को निभाने के लिए जिहादी, आतंकवादी बनने की ओर खुद ही अग्रसर हो जाते हैं और खुशी-खुशी सबसे बड़ा शहादत की कुर्बानी देने के लिए तैयार हो जाते हैं।

कनाडा के एक व्यक्ति ने इस्लाम कबूल किया था अथवा जैसा कि मुसलमान सोचते हैं कि अपने मूल मजहब की ओर लौट आया था। इस व्यक्ति ने इस्लाम छोड़ने के बाद उन अनुभवों को लिखा है, जो उसे मुसलमान रहने के दौरान हुए थे:

किसी काफिर (गैर-मुस्लिम) के लिए विशुद्ध इस्लाम को पचा पाना बहुत कठिन है। इसलिए मजहब के स्थापित व्यवहार के मानकों में तब्दीली स्पष्ट रूप से इस्लाम के प्रचार (दावा) में उच्च सफलता दर दे रही थी। इसके लिए मुसलमानों ने इस्लाम के सिद्धांतों में ऐसे बदलाव किए थे, जो नए-नए मुसलमान बने लोगों की दैहिकता के उपयुक्त हो। इस्लाम का उदार और साफ-सुथरा संस्करण, जिसने अस्ल में मुझे धर्मांतरण के लिए प्रेरित किया। इस्लाम के इस रूप को परखना अभी बाकी था। स्थानीय मस्जिद के मुसलमान नए मुसलमानों से हाथ मिलाने और गले लगाने के लिए हमेशा तैयार रहते थे। इतना प्यार-मुहब्बत घर पर नहीं मिलता था। विशेषकर ऐसे माहौल में जहां, मां पढ़ाई-लिखाई को लेकर हमेशा डांटती रहती हो और पिता को मेरी प्रगति से कोई लेना-देना ही न हो। मेरे मुस्लिम साथियों के प्रोत्साहन से मेरे मन में हमेशा यह ख्याल आता था कि मैं अपने मजहब का पालन पूरी शिद्दत से करूं, संभवतः शादी करूं, अरबी भाषा सीखूं और मुजाहिद (जिहाद में भाग लेने वाला) और शहीद बनूं।

जो लोग मुसलमान बनने से पहले भोलेभाले और सरल स्वभाव के थे, वे अब चारों ओर व्याप्त क्रुद्ध व्यवहार एवं अधिकांश मुस्लिम समाज में फैलाई जा रही षडयंत्रकारी बातों को आसानी से ग्रहण करने लगते थे। कुफ्र से बचने के लिए, हम बाकायदा आसपास चल रही गैर-इस्लामिक बातों या गतिविधियों की ओर देखते तक नहीं थे।

धर्मांतरित होकर मुसलनमान बने एक व्यक्ति ने घोषणा की थी कि ओसामा बिन लादेन दस लाख जार्ज बुश और एक हजार टोनी ब्लेयर से बेहतर था, क्योंकि वह मुसलमान था। (3:110) इसलिए जब भी मुसलमानों द्वारा अल्लाह के नाम पर किया गया कोई अत्याचार सुनाई पड़ता था तो हमारे साथी भाई और बहन प्रसन्न होते थे। हम मुस्लिम देशों में हो रहे मानवाधिकार उल्लंघन के मामलों पर नीचतापूर्वक ध्यान नहीं देते थे, भले ही इन घटनाओं के पीड़ित मुसलमान हों। मेरे मुस्लिम समाज में यह बात प्रचलित थी कि मुसलमानों को बदनाम करने के लिए दूसरे लोग मुसलमान के नाम पर गलत कर रहे हैं और यह बात और कुछ नहीं, बल्कि सीधे-सीधे मुसलमानों को धोखे में रखने के लिए जानबूझकर फैलाई जाती थी। यहां तक कि जो उदारवादी मुसलमान थे और जो नमाज नहीं पढ़ते थे और जो ज़िना (अवैध संबंध, बिना शादी के यौन संबंध बनाना, व्यभिचार आदि) करते थे, वे भी ये स्वीकार करने

से बचने की कोशिश कर रहे थे कि 9/11 के आतंकवादी हमले को अंजाम देने वाला पायलट मुसलमान था। जैसा कि मेरे अफगानी सहपाठी ने टिप्पणी की थी, 'वह (पायलट) यहूदी था!' जब हमें आत्मालोचना का अवसर मिला तो अपनी कमजोरियां देखने के बजाय हमने बिना सोचे बलि का बकरा बनाते हुए यहूदियों पर आरोप मढ़ दिया। खुद को इस्लामी उम्मत (समुदाय) में रचाने-बसाने की प्रक्रिया ज़ाहिरी तौर पर तब पक्की मानी जाती थी, जब वह व्यक्ति अरब-मुस्लिम के नए एजेंडे की हिमायत करता था। अरब-मुस्लिम नवीनतम एजेंडे में लंबी दाढ़ी रखना, यहूदियों के प्रति घृणा प्रदर्शित करना, समय-समय पर बिदआ बोलना (आधुनिकतावादियों की निंदा करना) और इजराइयल देश की वैधता को स्वीकार न करना आदि शामिल है। हम बड़े गर्व से जिहाद को स्वीकार करते थे और जब कोई काफिर जिहादी गतिविधि (आतंकी गतिविधि) पर सवाल करता था तो बेवकूफाना हरकत करते थे और बेतुके आरोप लगाकर उसके सवाल को टाल जाते थे। ये बेतुके आरोप ऐसे होते थे जैसे कि 'तुम्हें कैसे पता कि यह मुसलमानों द्वारा किया गया है? तुम्हारे पास क्या प्रमाण है?' हालांकि काफिर लोग इतने अंधे नहीं थे कि वे मुसलमान आतंकवादियों द्वारा आतंकी वारदात को अंजाम देने की घटना की जिम्मेदारी लेते हुए वीडियो में कबूलनामा देखकर न समझ सकें। सभी मुसलमान आतंकवादी नहीं होते, यह बात जितनी साफ है उतनी ही चिंताजनक भी, क्योंकि अधिकांश आतंकवादी मुसलमान ही होते हैं। **यदि किसी अमेरिकन या यहूदी के मरने की खबर आती थी तो वहां पर खुशी मनाई जाती थी। मैंने इस बात पर प्रसन्न होते एक ऐसे मुसलमान को देखा, जो महज पांच साल का था। इसका मतलब यह हुआ कि मुसलमानों में गैर-मुस्लिमों की मौत पर खुशी मनाने की धारणा बचपन से ही भरी जाती है।** नए मुसलमान उन इस्लामी देशों से आए प्रवासियों द्वारा की गई इस्लाम की कठोर व्याख्या को ग्रहण करते थे, जिन देशों में इज्तिहाद (स्वतंत्र परिचर्चा) प्रतिबंधित है और स्वतंत्र सोच रखना, इस्लाम के अलावा कुछ और सोचना अपराध है तथा सत्ता अपरिवर्तनीय है।[358]

जीन मिल्स, जो पीपुल्स टैम्पल के गुयाना में स्थानांतरित होने से दो साल पहले समूह छोड़कर भाग आई थीं, ने अपनी आंखों देखी 'सिक्स इयर्स विद गॉड (1979)' में लिखा है:

'जब भी मैं किसी को पीपुल्स टैम्पल में सदस्य के रूप में बिताए गए अपने छह साल की घटनाओं के बारे में बताती थी, तो मेरा सामना उत्तर के बजाय ऐसे सवालों से होता था, जिनका जवाब नहीं दिया जा सकता था: जैसे कि यदि चर्च इतना बुरा था तो तुम अपने परिवार के साथ इतने लंबे समय तक वहां क्यों रही?'

ॲशेरो कहते हैं, 'स्व-औचित्यीकरण की प्रक्रिया और संज्ञानात्मक असंगति सिद्धांत[359] का परीक्षण करने के लिए सामाजिक मनोवैज्ञानिक शोधों के कई शास्त्रीय अध्ययन इस प्रकार के प्रकट रूप से अतार्किक व्यवहार की व्याख्या कर सकते हैं।'

अमरीकन तालिबान के रूप में कुख्यात जॉन वाकर लिंद, जो एक युवा के रूप में अल-कायदा में भर्ती होने अफगानिस्तान गया और अपने ही देश के खिलाफ लड़ा, एक रात में आतंकवादी नहीं बन गया था। इस्लाम में जॉन की रुचि जब जगी, तब वह महज 12 साल का था। उसकी मां उसे स्पाइक ली की फिल्म मैलकॉम एक्स दिखाने ले गई थी। टाइम मैग्जीन ने इस महिला के हवाले से कहा, 'वह फिल्म का एक दृश्य देखकर भावुक हो गया। इस दृश्य में दिखाया गया था कि सभी राष्ट्रों के लोग एक ईश्वर के आगे सिर झुका रहे हैं।'[360]

किसी ने न तो इस बात की परवाह की और न ही कोई यह समझ सका कि इस युवा को इस्लाम के खतरों के बारे में पर्याप्त ढंग से चेताया जाना चाहिए था। इसके विपरीत, अपने माता-पिता से इस युवा को दिल की इच्छा पूरी

करने की अनुमति और आशीर्वाद मिल गया, क्योंकि वे भी इस्लाम के बारे में ठीक से नहीं जानते थे। 29 सितम्बर, 2002 के अंक में टाइम मैग्जीन ने लिखा: 'जॉन के माता-पिता यह देखकर प्रसन्न थे कि उनके बेटे को कुछ ऐसा मिल गया, जिसमें उसे खुशी मिल रही है। जिस समय उनके साथ के दूसरे अभिभावक अपने बच्चों के ड्रग्स लेने, शराब पीने और तेज ड्राइविंग जैसी बुराइयों से जूझ रहे थे, उस समय इन्हें अपने बच्चे का रुझान बड़ा मासूम लगता था। मर्लिन (जॉन की मां) शुक्रवार की नमाज के लिए उसे खुद मस्जिद तक छोड़ने जाती थी और शाम को जॉन का कोई साथी मुसलमान उसे घर छोड़ने आता था।'

सहिष्णु अमरीकी समाज एक युवा अमरीकी के इस्लाम कबूल करने में कुछ भी गलत या चेताने वाला नहीं देख पाया। वह अपने अजीब से इस्लामिक कपड़ों में गली में आता-जाता था और अच्छे अमरीकी लोग इसको जरा भी अजीब नहीं मानते थे। टाइम मैग्जीन ने लिखा: 'यह एक और बच्चा था, जो अपनी जिंदगी के आध्यात्मिक पक्ष से प्रयोग कर रहा था, इसमें निश्चित ही डरने या नापसंद करने जैसा कुछ नहीं था।'

इस्लाम की हकीकत की पड़ताल करने के बजाय जॉन के पिता ने स्वयं को ही बेवकूफ बनाया और यह मानते रहे कि उनके बच्चे को मुसलमान इसलिए घर तक छोड़ने आता है, क्योंकि ऐसा करना साथी मुसलमान के लिए मेहमाननवाजी की इस्लामिक परंपरा का हिस्सा है। जबकि वास्तव में यह अपने आप में इस्लाम की सांप्रदायिक (पंथिक) प्रकृति की चेतावनी का संकेत था। संप्रदायवादी उन लोगों के प्रति जरूरत से अधिक प्यार लुटाते हैं, दोस्ताना व्यवहार करते हैं, जिन्हें वह अपने संप्रदाय में लाना चाहते हैं। अपने बेटे को इस्लाम के खतरों से आगाह करने के बजाय इन्होंने उसके विश्वास की सराहना करने की कोशिश की। एक दिन इन्होंने अपने बेटे से कहा, 'मुझे नहीं लगता कि तुम इस्लाम में धर्मांतरित हुए हो, बल्कि तुमने इस्लाम को अपने भीतर ढूंढ़ा है और अपने भीतर के मुसलमान को जिंदा किया है।'

उसके अभिभावक और बाकी भोले-भाले अमरीकी, इस बात से अनजान थे कि इस तेजी से प्रभावित होने वाले नवयुवक का धीरे-धीरे ब्रेनवाश किया जा रहा है और उसके मन में अपने ही देश के प्रति नफरत करने का भाव भरा जा रहा है। टाइम मैग्जीन ने यमन के एक भाषा अध्यापक की बात को उद्धृत करते हुए लिखा: 'यूएस से आया लिंद अमरीका से पहले से ही नफरत करता था।' मैग्जीन ने लिखा: 'लिंद ने 23 सितम्बर, 1998 को यमन से अपनी मां को एक पत्र लिखा था, जिसमें उसने यूएस के प्रति दुविधा जताई थी। उसने पिछले महीने अफ्रीका में यूएस दूतावास पर बम से हमले की घटना का उल्लेख करते हुए कहा था कि यह संभावना अधिक है कि इन हमलों को किसी मुसलमान के बजाय अमरीका की सरकार ने अंजाम दिया हो।'

गैर-मुस्लिम धीरे-धीरे उस इस्लामिक कपट से परिचित हो रहे हैं, जिसमें वारदात को अंजाम देने के बाद शिकार पर ही दोष मढ़ देने का सिलसिला चल पड़ा है। **9 नवंबर, 2011 की उस बदकिस्मत सुबह, 4000 यहूदियों के काम पर नहीं आने की मजेदार कहानी कुछ मुस्लिमों द्वारा षडयंत्र सिद्धांत के तहत गढ़ी गई। मुसलमानों ने 'षडयंत्र सिद्धांत' का अविष्कार इसलिए किया है, ताकि दुनिया में मुसलमानों द्वारा किए जा रहे आतंकवादी हमलों का दोष अमरीका की खुफिया एजेंसी सीआईए और इजराइल की खुफिया एजेंसी मोसाद पर मढ़ा जा सके। हैरत की बात यह है कि मुसलमानों ने 9/11 के दिन वर्ल्ड ट्रेड सेंटर में यहूदियों के काम पर नहीं आने की कहानी उस हमले के बचाव में गढ़ी थी, जिसकी जिम्मेदारी ओसामा बिन लादेन ने बड़े गर्व से अपनी जीत के दावे के रूप में ली थी।** तो यह मासूम बच्चा धीरे-धीरे यह विश्वास करने लगा था

कि केवल इस्लाम ही समस्त मानव जाति के लिए सच्चा मजहब है। वह पूरी शिद्दत और जोश से इस्लाम को सीखने और इसकी राह पर चलने की कोशिश कर रहा था। वह कुरान पढ़ने और याद करने लगा। अपनी नोटबुक में उसने एक वाक्य लिखा: 'जब तक हम जिंदा रहेंगे, जिहाद करते रहेंगे।'[361] मुसलमान होने के साथ ही जॉन वाकर लिंद मुहम्मद के नार्सिस्टिक निराधार संसार में प्रवेश कर गया था। वह पहले से ही अतार्किक और नार्सिस्टिक इस्लामी सोच दर्शाने लगा था। वह अच्छी तरह जानता था कि 9/11 हमले का जिम्मेदार कौन था। एक ओर उसने इस हमले में मुसलमानों का हाथ होने से इंकार किया तो दूसरी ओर वो जीवन की आखिरी सांस तक जिहाद करने का संकल्प ले रहा था।

जॉन ने खुद को अपने देशवासियों से दूर कर लिया। कुरान के अनुसार, मुसलमान के लिए गैर-मुस्लिमों के साथ दोस्ती अच्छी नहीं मानी जाती है: 'ऐ मुसलमानो! अगर तुम्हारे मां-बाप और तुम्हारे भाई-बहन ईमान के मुकाबले कुफ्र को तरजीह देते हो तो तुम उनको (अपना) हमदर्द न समझो (कुरान.9:23)।' मुसलमान को उनसे जंग लड़ने और उनका कत्ल करने हुक्म है, जो अल्लाह को नहीं मानते: 'अहले किताब में से जो लोग न तो (दिल से) अल्लाह पर ईमान रखते हैं और न रोजे पर और न अल्लाह व उसके रसूल की हराम की हुई चीज़ों को हराम समझते हैं और न सच्चे मजहब (इस्लाम) को अपनाते है, उन लोगों से जंग करो, उन्हें इतना जलील करो कि वे जज़िया (गैर-मुस्लिमों के जिंदा रहने के लिए कर) दें (कुरान.9:29)।' 'ऐ ईमान वालो! (मुसलमानो) अपने आसपास के काफ़िरों (गैर-मुस्लिमों) से लड़ो और इस तरह लड़ो कि वे लोग तुम में सख्ती महसूस करें (कुरान.9:123)।' एक मुसलमान को दूसरा धर्म स्वीकार करने की इजाजत नहीं होती: 'और जो शख्स इस्लाम के सिवा किसी और धर्म को स्वीकार करे, उसका वह धर्म किसी भी तरह स्वीकार न किया जाएगा वह आखिर में घाटे में रहने वालों में से एक होगा (कुरान.3:85)'

इसमें कोई हैरत की बात नहीं है कि जब उसने 2000 के अमरीकी राष्ट्रपति के चुनाव के बाद अपनी मां को पत्र लिखा तो जॉर्ज डब्ल्यू बुश को 'तुम्हारे नए राष्ट्रपति' के रूप में इंगित किया और आगे लिखा कि 'मुझे खुशी है कि वह मेरा राष्ट्रपति नहीं है।' बिल्कुल नहीं! एक मुसलमान गैर-मुस्लिम के शासन को स्वीकार नहीं कर सकता: 'तुम काफिरों (गैर-मुस्लिमों) का हुक्म न मानना (इताअत न करना) और उनके खिलाफ कुरान की प्रेरणा से आगे बढ़ो (कुरान.25:52)'

जॉन वाकर लिंद पश्चिमी समाज की बीमारी, जिसे राजनैतिक औचित्य कहा जाता है, का शिकार था। क्या ये रोनाल्ड रीगन ही नहीं थे, जिन्होंने अफगानिस्तान में इस्लामी आतंकवादियों को 'स्वतंत्रता सेनानी' कहा था? जॉन स्वतंत्रता सेनानी बनने गया था। उसमें गलत क्या था? क्या राष्ट्रपति जॉर्ज डब्ल्यू. बुश और टोनी ब्लेयर ने बार-बार घोषणा नहीं की थी कि, 'इस्लाम शांति का मजहब है?' शांति के मजहब के अनुयायी को जेल में क्यों डाला, उसने तो बस अपने शांति के मजहब के निर्देशों का पालन किया है? **पश्चिम दोषी है- सहअपराध का, तुष्टीकरण का और स्वयं को धोखा देने का।**

नॉर्थ कैरोलिना विश्वविद्यालय के प्रोफेसर माइकल सैल्स ने प्रथम वर्ष के स्टूडेंट के समर रीडिंग के लिए 'अप्रोचिंग द कुरान' नामक पुस्तक का संकलन किया था। इसमें उन्होंने मक्का में शुरुआती दिनों में लिखी गई उन आयतों को लिया, जो अच्छी सीख देती थी, लेकिन उन हिंसक, खूनी आयतों को जानबूझकर छोड़ दिया, जिसमें गैर-मुस्लिमों के कत्ल, लूटपाट और बलात्कार करने का हुक्म दिया गया था।

बाद में मदीना में लिखी गई ये वो आयतें हैं, जिन्हें पढ़कर कोई भी स्वस्थ चित्त वाला इंसान घृणा से भर जाएगा। यह और कुछ नहीं, बल्कि धोखा देने का खेल था। इसी तरह का धोखा कैरन आर्मस्ट्रांग और जॉन एसपॉसितो ने अपनी पुस्तकों में इस्लाम की परिभाषा में किया है। युवा अमरीकियों से इस्लाम का घिनौना सच छिपाते हुए झूठ बोला जा रहा है। इन युवाओं के लिए कुछ पश्चिमी अकादमीशियन द्वारा इस्लाम की झूठी तस्वीर पेश की जा रही है। ईश्वर जाने ये अकादमीशियन ऐसा क्यों कर रहे हैं! और जब ये बच्चे परोसे गए झूठ पर विश्वास कर लेते हैं, दूसरों के विचारों को मानने लगते हैं, और इस्लाम की राह पर चलने लगते हैं, तो हम उन्हें आतंकवादी बनाकर जेल में डालते हैं, मुकदमा चलाते हैं, सजा देते हैं। क्या ये पाखंड नहीं है? ये बच्चे दोषी नहीं हैं। ये राजनीतिक औचित्य के नाम पर बनाए गए हमारी बीमार लोकनीति की पैदाइश हैं।

जब इस्लाम की बात आती है तो कितने समाचार पत्र, टेलीविजन या रेडियो स्टेशन सच दिखाने का साहस रखते हैं? **कौन सा ऐसा राजनेता है, जिसमें इतना दम हो कि कैमरे के सामने आकर कहे कि इस्लाम शांति का मजहब नहीं है? अपने बच्चों पर निगरानी रखिए।** यदि कोई सच कहने की हिम्मत करता भी है तो उस पर तुरंत नस्लभेदी होने और नफरत फैलाने वाला होने का तमगा लगा दिया जाता है और उसका सिर झुका दिया जाता है। जबकि, इस्लामिक प्रचार करने वालों को सच को तोड़मरोड़ कर पेश करने और झूठ के प्रचार की पूरी आजादी दी जाती है, और ये इस्लामी प्रचारक जानते हैं कि वे जो भी कहें, उस पर कभी कोई सवाल नहीं उठाएगा।

काउंसिल ऑफ अमेरिकन-इस्लामिक रिलेशंस (सीएआईआर) (इन्हें 'धूर्त अमेरिकन के साथ इस्लामिक ठग' कहना अधिक उचित होगा) देशभर में इस्लामिक किताबों वाली हजारों लाइब्रेरियां चलाती हैं, इस उम्मीद में कि और जॉन वाकर लिंद पैदा हों। अमरीका के प्रति अमरीकी बच्चों में नफरत भरने के लिए देश के सभी शहरों और कस्बों में मस्जिदें बनाई जा रही हैं। यूरोप, आस्ट्रेलिया, कनाडा और अन्य गैर-मुस्लिम देशों में स्थिति और विकट है। द संडे टेलीग्राफ के सिक्यूरिटी कॉरेसपांडेंट सीन रेयमेंट ने 25 फरवरी, 2007 को एक सीक्रेट रिपोर्ट के हवाले से खुलासा किया था, ब्रिटेन की सुरक्षा एजेंसियों का मानना है कि देश में 2000 से अधिक मुसलमान आतंकवादी वारदातों को अंजाम देने के लिए साजिश रच रहे हैं। कोई ऐसा दिन नहीं गुजरता है, जिस दिन दुनिया के किसी न किसी हिस्से में मुसलमान आतंकवादियों के हाथों कोई न कोई मारा न जाता हो। आखिर दुनिया कब जागेगी और मानेगी कि इस्लाम कोई धर्म नहीं, बल्कि एक खतरनाक संप्रदाय है? **हम कब कुरान और इस्लाम के इतिहास को बारीकी से देखेंगे, ताकि यह समझ सकें कि आतंकवादी उग्रवादी नहीं हैं, बल्कि वे इस्लाम को मानने वाले सच्चे मुसलमान हैं, जो अपने 'पवित्र' पुस्तक के मूल संदेशों और अपने प्यारे रसूल द्वारा बनाई गई मिसालों पर चल रहे हैं?**

एक बार लोग इस्लाम में धर्मांतरित हो जाएं तो वे भ्रम, अज्ञान और भय के पाताल में प्रवेश कर जाते हैं, जहां विचित्र कल्पनाएं हकीकत का रूप लेती हैं और बुराई ईश्वरीय मानी जाती है। उनके जीवन मूल्य विघटित हो जाते हैं और वे उस तरीके से जीने लगते हैं, जिसे वे इस्लाम में दाखिल होने से पूर्व अप्रिय और अस्वीकार्य मानते थे। जितना ही वे इस भ्रष्ट तरीके से जीते हैं, उतना ही वे भीतर से कठोर होते जाते हैं और इस सीमा तक संवेदनहीन हो जाते हैं कि वास्तविक दुनिया में वापस लौटना उनके लिए लगभग असंभव हो जाता है।

इस्लाम फालिज की उस बीमारी की तरह फैलता है, जो धीरे-धीरे शरीर के अंगों को बेकार कर देता है। यह धीरे-धीरे मन और आत्मा दोनों को भ्रष्ट कर देता है और तब तक ऐसा करता है, जब तक कि

मुसलमानों में उत्कृष्ट अर्थात जिहादी या साधारण भाषा में कहें कि आतंकवादी नहीं बना देता है। जिहादी या आतंकवादी अल्लाह और उसके रसूल का सबसे प्यारा जीव होता है।

ॲशेरो इस परिघटना की विस्तृत मनोवैज्ञानिक व्याख्या प्रस्तुत करते हैं: 'विसंगति के सिद्धांत के अनुसार, जब इंसान कोई ऐसा कार्य या अनूभूति करता है, जो मनोवैज्ञानिक रूप से उसकी अवधारणा से असंगत होता है तो यह असंगति उसके भीतर एक अप्रिय तनाव की स्थिति पैदा करती है। फिर इंसान इस विसंगति को कम करने का प्रयास करता है, और ऐसा वह सामान्यत: अपने मनोभाव को बदलकर करता है, ताकि पूर्व के प्रतिकूल कार्य या धारणा को अधिकाधिक समायोजित कर सके। पीपुल्स टैम्पल की अनेकों घटनाएं इस प्रक्रिया के प्रकाश में देखकर समझी जा सकती हैं। जोन्स टाउन की भयावह घटनाओं का कारण केवल बल प्रयोग की धमकी नहीं थी, और न ही ये घटनाएं अचानक हुई थीं। ये घटनाएं ऐसी नहीं थी कि मानो लोगों के दिमाग में अचानक कुछ भर गया और वे विचित्र व्यवहार करने लगे। बल्कि, संज्ञानात्मक विसंगति के सिद्धांत के अनुसार, यहां ऐसा था कि लोग अपनी पसंद और प्रतिबद्धताओं को जायज ठहराने की कोशिश कर रहे थे। जैसे कि ऊंचाई से गिरता झरना जहां से शुरू होता है, वहां पानी केवल टपकता है और नीचे आते-आते वह तेज धारा में परिवर्तित हो जाता है, वैसे ही इंसान जब कदाचित तुच्छ कार्य करने की सहमति के साथ आगे बढ़ता है तो उसका परिणाम यह होता है कि आगे चलकर यही छोटी-छोटी गलतियां अतिवादी या घातक कार्य-व्यवहार में बदल जाती हैं। पीपुल्स टैम्पल में यह प्रक्रिया चर्च में शामिल कराने को लेकर चल रहे उपक्रम के प्रभाव के साथ शुरू होती थी और अपनी प्रतिबद्धताओं को सही ठहराने की प्रवृत्ति के साथ यह प्रक्रिया और तेज हो जाती थी। फिर इसके बाद अपने व्यवहार को चर्च के नियम-कायदों के मुताबिक ढालने की आवश्यकता पर जोर देकर इसके प्रभाव में जकड़ने की कोशिश की जाती थी।'

इस्लाम कबूल करने वाले नए लोग इस पर अमल करने में अक्सर तमाम परेशानियों का सामना करते हैं और इन परेशानियों को वे 'अल्लाह का इम्तहान' और 'स्वच्छ बनाने की प्रक्रिया' बताते हैं। यह शराब पीने और सुअर का मांस खाने से परहेज के साथ शुरू होता है। क्या खाएं, यह देखना और फिर खाने से पहले यह तय करना कि वह हलाल है या नहीं, मुसलमानों की स्वतंत्रता पर पहरा देने जैसा होता है। आदमी धीरे-धीरे औरतों से मिलनाजुलना बंद कर देते हैं और अपनी यौन इच्छाओं को दबाने की कोशिश करते हैं। ये सब बेहद दु:साध्य कार्य होते हैं, और इन्हें लगातार सायास करते रहने से ये सब दिमाग में घर कर जाते हैं, जिससे उनमें अपराधबोध की मन:स्थिति में जीने की आदत पड़ जाती है। यौन इच्छाओं को आसानी से दबाया नहीं जा सकता है। नतीजा यह होता है कि इनमें से अधिकांश लोगों में सैक्स के प्रति जुनून सवार हो जाता है। उनकी सारी मानसिक ऊर्जा भीतर के 'शैतान' के साथ संघर्ष में खर्च होने लगती है। जितना ही सैक्स को लेकर वे अपराध बोध से ग्रस्त होते हैं, उतना ही वे औरतों से नफरत करने लगते हैं, यह सोचकर कि औरतें उनको अपनी ओर आकर्षित कर रही हैं। इसके अलावा उनके ऊपर रोजाना दिन में पांच बार नमाज पढ़ने की बाध्यता भी होती है और नमाज भी ऐसी भाषा में पढ़नी होती है, जिसे अधिकांश समझते नहीं। यदि कोई नमाज उनसे छूट जाए तो उन्हें अपराध बोध से ग्रस्त कराया जाता है और इसके एवज में प्रतिपूरक नमाज थोप दी जाती है। इस तरह दिन में पांच बार गिनती करके इबादत करना मानसिक दासता का एक रूप है। कुरान को समझना आवश्यक नहीं होता, लेकिन पढ़ना और अक्षरश: याद करना अनिवार्य होता है। सबसे अधिक जोर कुरान की आयतों के सही उच्चारण पर होता है। कुरान में लिखी बातों पर सवाल करना अथवा इसकी आलोचना करने का मतलब मौत को दावत देना है। फिर ऐसी चीजों की लंबी फेहरिस्त होती है, जो

'अपवित्र' मानी जाती हैं और मुसलमान को इन चीजों से सख्त परहेज करना चाहिए। इन चीजों में जैसे कुत्ते, सुअर, पेशाब और काफिर (गैर-मुस्लिम) शामिल हैं।

मुसलमान को इन अपवित्र चीजों के बारे में अवश्य जानना चाहिए और इनके संपर्क में आने पर फौरन नहाना चाहिए। यदि यह कोई मुसलमान औरत है तो उसके लिए तो और अधिक पाबंदियां हैं। उसे अपना सिर ढंकना, ढीले-ढाले कपड़े पहनना और पसीने से तरबतर करने वाली गर्मियों में भी बुर्का पहनना, सिर से पांव तक बदन को ढंक कर रखना अनिवार्य होता है। प्रचंड गर्मी में भी इस्लामिक हिजाब पहनकर बाजार आदि जाने के लिए बाहर निकलना अपने आप में एक प्रकार की यातना है। इन सब अग्निपरीक्षाओं से गुजरते हुए मुसलमान का अपने मजहब में विश्वास मजबूत होता है और वे इस्लाम को और अधिक महत्व देने लगते हैं। मुसलमानों को लगता है कि इस जीवन में जितना कष्ट उठाएंगे, मरने के बाद जन्नत में उतना ही सुख पाएंगे। **मुसलमान औरतों को हमेशा अपने परिवार के मर्दों का हुक्म मानना चाहिए, उन्हें हमेशा मर्दों के आगे झुककर और आदरपूर्वक रहना चाहिए। वे डराई-धमकायी जाएंगी, अपमानित की जाएंगी, मारी-पीटी जाएंगी, उनका बलात्कार किया जाएगा और कत्ल भी कर दिया जाएगा, पर उनके लिए कानूनी या सामाजिक सुरक्षा की उम्मीद न के बराबर होगी।**

इस्लाम मुसलमानों के लिए इसलिए कीमती है, क्योंकि वास्तव में इसकी राह पर चलना बहुत कष्टकारी है। ॲशेरो ने इस परिघटना के मनोविज्ञान की व्याख्या इस तरह की है: 'उदाहरण के लिए, पीपुल्स टैम्पल के संभावित सदस्य के प्रारंभिक दौरे पर विचार करें। जब किसी समूह में प्रवेश को प्रेरित करने के लिए किसी व्यक्ति के मन में लगातार बीजारोपण किया जाता है तो वह व्यक्ति समूह को अधिक आकर्षक मानकर उसके बारे में सुखद कल्पना करने लगता है, ताकि समूह में शामिल होने के बाद उसे जो दु:साध्य श्रम करने होंगे अथवा कष्ट सहना होगा, उसका औचित्य साबित कर सके।' एरोन्सन एंड मिल्स[362] ने प्रदर्शित किया कि एक परिचर्चा समूह में शामिल होने के लिए जिन छात्रों ने अधिक परेशानियां सहीं, उन्होंने परिचर्चा के वार्तालाप को काफी रुचिकर माना (जबकि वास्तव में ये वार्तालाप काफी नीरस था)। वहीं उन छात्रों को परिचर्चा उतनी रुचिकर नहीं लगी, जिन्हें इसमें बिना किसी परेशानी के प्रवेश मिल गया था। इनमें किसी भी परिस्थिति में मकसद पर नजर रखने के लिए खुद पर बीत रही बातों को जायज ठहराने की प्रवृत्ति भर नहीं होती है, बल्कि कष्टदायी जीवन की राह पर चलने का अनुभव उनके उस इंसान के लिए बेचैनी और दर्द के बोध के भाव को बदल देता है। जिम्बारदो[363] और उनके सहयोगियों ने प्रदर्शित किया कि जब लोग उस प्रक्रिया में सम्मिलित होने के लिए अपनी इच्छा से आगे बढ़े, जिसमें बिजली के झटके दिए जाने थे, तो इनमें से उन लोगों को झटकों से दर्द का अहसास कम हुआ, जो यह सोच रहे थे कि उनके पास इस मामले में और भी विकल्प थे। और सटीक भाषा में कहें तो उन लोगों ने इसकी पीड़ा की तीव्रता कम होने का अहसास जताया, जिन्होंने यह पीड़ा सहने की खुद की मानसिक तैयारी जानने के लिए बाह्य औचित्य का सहारा न के बराबर लिया था और अधिक विसंगति का अनुभव किया था। इससे यह उनके हावभाव और मौखिक विवरण से परे हो गया, इस कार्य में उनका प्रदर्शन लगभग बाधारहित रहा और त्वचा में करंट की प्रतिक्रिया जानने वाले मनोवैज्ञानिक यंत्र पर माप की रीडिंग कुछ हद तक निम्न रही। इस प्रकार विसंगति कम करने की प्रक्रिया दोधारी हो सकती है: यदि कोई व्यक्ति अपनी इच्छा से उचित मार्गदर्शन में कठिन दीक्षा प्राप्त करने के लिए तैयार होता है तो वह न केवल अंत तक इस कष्टसाध्य प्रक्रिया का पालन करेगा, बल्कि इस प्रक्रिया में अपनाए गए साधनों की प्रतिकूलता को भी अनुकूलता की तरह देखना शुरू कर देगा: हमने देर तक चलने वाली नीरस बैठकों में रस लेना शुरू कर दिया,

क्योंकि हमें बताया गया था कि आध्यात्मिक उन्नति आत्मत्याग से आती है।' (मिल्स, 1979)

यह दर्शाता है कि मुसलमान क्यों यातना सहने के लिए अपनी इच्छा से तैयार होते हैं, क्यों इन यातनाओं के प्रति कृतज्ञ महसूस करते हैं और क्यों इन्हें वे रहमत (कृपा) मानते हैं। ये सब कष्ट बड़ा पुरस्कार पाने के लिए छोटी कुर्बानी के रूप में देखा जा सकता है। जितनी बड़ी कुर्बानी होगी, उतना ही बड़ा इनाम होगा। भक्ति का अतिवादी रूप आशूरा के महीने में देखा जा सकता है, जब शिया मुसलमान अपनी छातियां पीटते हैं, अपनी पीठ पर लोहे की चेन से मारते हैं, और अपने माथे को चाकू से चीरकर खूब खून बहाते हैं। इस तरह, वे अपने ही खून में सनकर जुलूस निकालते हैं, जिससे दांते द्वारा की गई जहन्नुम की व्याख्या की तस्वीर जहन में ताजी हो जाती है। मुसलमान के लिए पांच वक्त की अनिवार्य नमाज के अलावा एक माह रोजा रखना और दिनभर पानी नहीं पीना और अन्य कष्टकारी मजहबी क्रियाकलाप करना अनिवार्य है। अपनी आय का पांचवां हिस्सा मस्जिद को खुम्स (सामुदायिक कर) के रूप में देने के अलावा मुसलमान जकात के रूप में दान देने के लिए प्रोत्साहित किए जाते हैं।

मुहम्मद ने अपने अनुयायियों को जिहाद करने और गैर-मुस्लिमों की संपत्ति लूटने का निर्देश दिया था। इससे उन मुसलमानों में परेशानी का भाव पैदा होता है, जो अभी भी थोड़ा-बहुत मानवता के संपर्क में हैं। ये लोग सोचते हैं कि क्या लूट के जरिए कमाया गया धन जायज हो सकता है ? मुहम्मद का कहना था कि डकैती या लूट के जरिए कमाया गया धन जायज होगा, यदि वे लूट के माल का पांचवां हिस्सा उसे दे दें। उसने अपने कठपुतली अल्लाह के मुंह से खुद को हुक्म दिलाते हुए यह आयत कहलवाई:

(ऐ रसूल) तुम उनके माल की ज़कात लो (और) इसकी बदौलत उनको (गुनाहों से) पाक साफ करो।[364]

जैसा कि पूर्व में बताया गया है कि **यहूदियों के नरसंहार और समाप्त होने के बाद मदीना में न कोई उद्योग-धंधे बचे थे और न ही उस शहर में कुछ पैदा होता था। इस शहर में धन डकैती डालने और अरब के दूसरे कबीलों के साथ लूटपाट करने से आता था। यहां के मुसलमान मुहम्मद के हमलों की योजना पर काम करते हुए लूटपाट पर ही निर्भर थे। खुम्स देने की रिवायत रसूल ने इसलिए बनाई थी, ताकि पाप से कमाए गए धन को पाकसाफ बनाया जा सके और साथ ही इस कथित पवित्र रसूल का खजाना भरा जा सके और उसके बिस्तर तक नई औरतों की आपूर्ति की जा सके।** आज मुसलमान भले ही सम्मानजनक पेशों से धन कमा रहे हों, पर उनके लिए खुम्स और जकात देना अनिवार्य है। मुसलमानों को बार-बार याद दिलाया जाता है कि उन्हें अपनी कमाई अल्लाह की राह में खर्च करना चाहिए: 'और अल्लाह की राह में खर्च करो। अपने हाथों अपनी जान हलाकत में न डालो और नेकी करो, बेशक खुदा नेकी करने वालों को दोस्त रखता है (कुरान.2:195)।' मुसलमानों को उकसाया जाता है कि 'वे अपने जान और माल से मजहब के लिए लड़ें। (कुरान.8:72)'

जिन्होंने मुहम्मद में भरोसा किया और उसके लिए जंग लड़ने गए, उन्हें मुहम्मद ने सांसारिक अय्याशियों के साधन से भरपूर एक ऐसी जन्नत का ख्वाब दिखाया था, जिसमें ये लोग नंगा नाच कर सकते थे। जन्नत और असीमित सैक्स करने की सुविधा तक पहुंचाने की गारंटी हासिल करने के लिए किसी को बस इतना करना होता है कि अपना बुद्धि-विवेक खत्म कर तर्क करना छोड़ दे और मुहम्मद द्वारा कही गई बातों पर अंधा होकर भरोसा करे। जब कोई व्यक्ति इस्लाम या किसी अन्य संप्रदाय में भर्ती होता है तो धीरे-धीरे उसे समझाया जाने लगता है कि उसके पास जो भी धन और समय है, वह संप्रदाय को दे। शीघ्र ही यह व्यक्ति इन सबमें इतना लीन हो जाता है कि उसके लिए ये सब छोड़ पाना न केवल कठिन हो जाता है, बल्कि खतरनाक हो जाता है।

जब किसी को पता चलता है कि उसे इतना गहरा धोखा मिला है तो यह पीड़ा इतनी भयावह होती है कि व्यक्ति इस सच का सामना नहीं करना चाहता।

ॲशेरो व्याख्या करते हैं: 'एक बार जुड़ने के बाद सदस्य पाता था कि पीपुल्स टैम्पल के प्रति समर्पित उसके जीवन की ऊर्जा और समय लगातार बढ़ता जा रहा है। हर सप्ताह के आखिरी दिन और शाम सेवा कार्य और सभाओं में बीत जाते थे। जो थोड़ा-बहुत समय बच जाता था वो टैम्पल की परियोजनाओं पर काम करने और राजनेताओं व प्रेस को चिट्ठियां लिखने में खर्च हो जाता था। अपेक्षित वित्तीय योगदान ऐच्छिक दान (हालांकि सारे दान का रिकार्ड रखा जाता था) आय के एक चौथाई हिस्से को दान करने की बाध्यता में बदल गई। अंत में सदस्य से उम्मीद की जाती थी कि वह अपनी सारी व्यक्तिगत संपत्ति, बचत, सामाजिक सुरक्षा चैक और इस तरह की अन्य चीजों को टैम्पल को सौंप देगा। सेवा कार्य में लगने से पूर्व सदस्य को एक मेज के पास रुककर अपनी कमियां बताते हुए चिट्ठी लिखनी पड़ती थी अथवा एक सादे कागज पर दस्तखत करना पड़ता था, जो चर्च के समक्ष खोली जाती थीं। यदि कोई ऐसा करने पर आपत्ति जताता था तो उसके इंकार की व्याख्या जोन्स में 'विश्वास की कमी' के सूचक के रूप में की जाती थी। प्रत्येक नई मांग के दो परिणाम होते थे: व्यवहारिक रूप से, यह उस व्यक्ति को टैम्पल के जाल में और फंसा लेता था तथा समूह को छोड़ना और कठिन हो जाता था, अथवा व्यवहार के स्तर पर, यह उपरोक्त अपने कार्य-व्यवहार को स्वयं ही उचित ठहराने की प्रक्रिया को और तेज कर देता था। जैसा कि मिल्स (1979) वर्णन करते हैं: 'हमें दर्दनाक वास्तविकता का सामना करना पड़ता था। जिम ने मांग की कि हम जीवन बीमा पॉलिसी को बेच दें और उससे मिली राशि को चर्च के नाम कर दें और ऐसा ही हुआ। हमारी संपत्तियां हमसे ले ली गईं। विदेशी मिशन पर जाने का हमारा सपना लुट गया था। हमने खुद को पहले ही अपने अभिभावकों से दूर कर लिया था, यह बताकर कि हम देश छोड़ रहे हैं। यहां तक कि जिन बच्चों को हमने कैरल व बिल की देखरेख में छोड़ रखा था, वे भी खुले तौर पर हमें दुश्मन मानने लगे थे। जिम ने ये सब देखते-देखते कर डाला! हमारे पास अब जिम और उसके मकसद के अलावा कुछ नहीं बचा था। इसलिए हमने भी इन्हीं दोनों में सिमट कर इन्हीं पर सारी ऊर्जा लगाने का तय कर लिया।'

ऐसा ही शुरुआती मुसलमानों के बारे में भी कहा जा सकता है। जो मुहम्मद की बातों में आकर शरणार्थी के रूप में मदीना चले आए थे, उनके पास कुछ नहीं बचा था, जिसके सहारे वे जिंदा रह पाते। उनके पास कोई काम-धंधा नहीं था और न ही घर था। मुहम्मद ने अंसारों (मददगार, मदीना में रहने वाले मुसलमान) से कहा कि उनके पास जो है, उसे मक्का से आए उसके लोगों में बांटें। निश्चित रूप से ऐसा करना किसी भी पक्ष के लिए आसान नहीं था। बड़ी संख्या में प्रवासी मस्जिद में रहते थे।

एक कौतुहल भरी कहानी है, जिसमें एक अंसार अपनी बीबी को अप्रवासी को सौंप देता है:

अब्दुल रहमान बिन औफ़ ने कहा, जब हम प्रवासी के रूप में मदीना आए तो अल्लाह के रसूल ने मेरे और साद बिन अर-रबी के बीच बंधुत्व की भावना पैदा की। साद बिन अर-रबी ने मुझसे कहा, 'मैं अंसारों में सबसे अधिक अमीर हूं। इसलिए मैं तुम्हें अपनी आधी संपत्ति दे दूंगा। तुम मेरी दोनों बीबियों को देख लो और इनमें से जिसे तुम चुनोगे, उसे मैं तलाक दे दूंगा। जब नियत समय (इद्दत) पूरी हो जाए तो तुम उससे शादी कर लेना।'

'कुछ दिन बाद अब्दुल रहमान आया तो उसके बदन से हल्की-हल्की खुशबू आ रही थी। अल्लाह के रसूल ने उससे पूछा कि क्या उसने शादी कर ली? उसने कहा, हां। रसूल ने पूछा, 'किससे शादी की?' उसने जवाब दिया,

'अंसार की एक औरत से।''[365]

मुसलमान इस किस्से को अक्सर सुनाकर बताते हैं कि मुहम्मद ने मुसलमानों के बीच में बंधुत्व की भावना कैसे कायम की थी। पर यह किस्सा यह भी दिखाता है कि मुसलमानों पर कट्टरता इस कदर हावी हो चुकी थी कि वे अपनी निजता और अपनी शादी की पवित्रता को नष्ट कर देते थे। उनकी आजादी और स्वावलंबन सबकुछ छिन चुका था। अधिकतर मामलों में वे अपनी आजादी इच्छा से त्याग देते थे। अगर किसी को इस विकट स्थिति का अहसास भी हो जाता था तो वह इसके बारे में किसी से बात करने की हिम्मत नहीं जुटा पाता था। प्रवासी वापस जा नहीं सकते थे। असंतोष जाहिर करना सबसे बड़ा अपराध माना जाता था। अंसार किसी से इस तरह की बात नहीं कर सकते थे। कोई भी मुखबिर हो सकता था। वे अगले ही दिन कत्ल किए जा सकते थे। ऐसे जुनूनी मुसलमानों की कमी नहीं थी, जो खुशी से अपने किसी असंतुष्ट साथी का कत्ल कर दें। जैसा कि आज भी होता है, अधिकतर मुसलमान बड़ी प्रसन्नता से किसी ऐसे व्यक्ति की हत्या कर देते हैं, जो इस्लाम के खिलाफ एक शब्द भी कहता है। जो इस विकट स्थिति को देख पा रहे थे, उनके पास भी चुप रहने और जो हो रहा है, उसे देखते रहने के अलावा कोई चारा नहीं था। एक हदीस में लिखा है:

एक अंधे आदमी के पास एक लौंडी (गुलाम औरत) थी, जो रसूल को बुरा-भला कहती रहती थी और उन्हें नीचा दिखाती रहती थी।... तो उस आदमी ने खंजर लिया और उस औरत की छाती पर चढ़कर बैठ गया। फिर उसने उसके पेट में खंजर उतार दिया। वह औरत मर गई। एक बच्चा उस औरत के पैरों के बीच में था और वह भी वहां पड़े खून से सना हुआ था। अगले दिन सुबह, यह खबर रसूल तक पहुंची। उन्होंने सबको बुलाया और उस अंधे को भी बुलाया गया। उससे पूछा गया कि उसने इतनी जघन्यता से कत्ल क्यों किया। वह आदमी भय से कांप रहा था। उसने कहा, 'मैं उस औरत का मालिक हूं। वह आपके बारे में गलत बोलती थी, आपको नीचा दिखाती थी। मुझे उससे दो मोती जैसे बेटे हैं और वह मेरी साथी थी। पिछली रात वह आपको गाली देने लगी और आपकी हंसी उड़ाने लगी। इसलिए मैंने खंजर लिया और उसके ऊपर चढ़कर पेट में तब तक भोंकता रहा, जब तक वह मर नहीं गई।' इस पर रसूल ने कहा, 'अरे, फिर तो सनद रहे, उस औरत के खून के बदले कोई सजा नहीं दी जानी चाहिए।'[366]

एक आदमी ने दो-दो हत्याएं की और अपने बचाव में यह कह दिया कि उस औरत ने रसूल का अपमान किया है और मुहम्मद ने उसे छोड़ दिया। इस प्रकार के आतंक के माहौल में कोई मुहम्मद की बात मानने से इनकार कैसे कर सकता था? क्या पता इस आदमी ने सजा से बचने के लिए झूठ बोल दिया हो? मुहम्मद इस घटना के जरिए जो पैगाम देना चाहता था, वह स्पष्ट था कि उसका अपमान जो करेगा, उसे मरना होगा और ऐसे व्यक्ति की हत्या करने वाला व्यक्ति आरोपी नहीं माना जाएगा। आप कल्पना कर सकते हैं कि इस घटना के आधार पर दुनिया में कितनी सारी हत्याएं की गई होंगी।

आज भी, मुस्लिम देशों में निजी रंजिश में अल्पसंख्यकों की हत्याएं कर दी जाती हैं और हत्यारे के सिर्फ इतना कह देने भर से उसे मामूली सजा देकर छोड़ दिया जाता है कि पीड़ित ने रसूल का अपमान किया था। पाकिस्तान की दंड संहिता की धारा 295-सी कहती है: 'जो कोई भी, शब्दों के द्वारा, या मौखिक या लिखित रूप में, या दृश्यीय निरुपण के माध्यम से, या किसी अभियोग, व्यंग्य या आक्षेप के जरिए, प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से पाक रसूल मुहम्मद के पाक नाम का अपमान करता है, मौत की सजा का हकदार होगा और अर्थदंड के लिए भी जिम्मेदार होगा।'

मुहम्मद अपनी इच्छाओं को प्रकट करने में संकोच नहीं करता था। एक हदीस में लिखा है कि उसने कहा:

'तुममें से कोई भी तब तक ईमान वाला नहीं होगा, जब तक कि अपने पिता, अपने बच्चों और सभी मानवजाति से अधिक मुझे प्यार नहीं करेगा।'[367] वह प्रमुखता और महत्व पाने के लिए इतना अधीर रहता था कि जब अरब का एक समूह उससे भेंट करने आया और उसके सामने उस सम्मान से पेश नहीं आया, जैसा कि वह अपेक्षा करता था तो उसने अपने अल्लाह से कहलवाया:

ऐ ईमान वालो! बोलते समय अपनी आवाजें रसूल की आवाज़ से ऊंची न किया करो और जिस तरह तुम आपस में एक दूसरे से जोर-जोर से बोला करते हो, उनके सामने ऐसे जोर से न बोला करो। ऐसा न हो कि तुम्हारा किया कराया सब व्यर्थ चला जाए और तुमको खबर भी न हो (कुरान.49:2)। बेशक जो लोग अल्लाह के रसूल के सामने अपनी आवाजें धीमी कर लिया करते हैं, वे यही लोग हैं जिनके दिलों को अल्लाह ने परहेजगारी के लिए जांच लिया है: उनके लिए (आखिरत में) माफी और बड़ा इनाम है (कुरान.49:3)। ऐ रसूल जो लोग तुमको हुजरों के बाहर से आवाज देते हैं, उनमें से अधिकतर बेअक्ल हैं (कुरान.49:4)।

परम बलिदान की मांग

जिंदगी और मौत पर नियंत्रण करना किसी नार्सिसिस्ट का सबसे बड़ा नशा होता है। जीवन और मृत्यु ईश्वर के हाथों में होती है। नार्सिसिस्ट जीवन नहीं दे सकता है। हालांकि वह लोगों को फर्जी चमत्कारों के जरिए ठीक करने का बहाना बनाता है। पर यदि वह किसी को मौत दे सकता है तो उसे लगता है कि वह ईश्वर जैसा है। नार्सिसिस्ट संप्रदाय का नेता अपने अनुयायियों को न केवल परम बलिदान देने के लिए प्रोत्साहित करता है, बल्कि अपने विरोधियों की हत्या के लिए भी उकसाता है।

ॲशेरो कहते हैं: 'आखिरकार, जिम जोन्स और उसके उद्देश्य को सदस्यों की जिंदगी की कुर्बानी लेने की आवश्यकता पड़ गई।'

संप्रदाय के नेता अपनी आज्ञा के अनुपालन को लेकर इतने जुनूनी होते हैं कि वे अपने अनुयायियों से सबकुछ त्याग, यहां तक कि जीवन को भी त्याग कर, निष्ठा से सिद्ध करने की मांग करने लगते हैं। इस तरह की मांग के पीछे मकसद का वास्ता देना केवल बहाना होता है। कुरान शहीद होने वालों को जन्नत में बड़े इनाम का वादा करता है और मुसलमानों को प्रेरित करता है कि वे मुहम्मद के लक्ष्य के लिए अपने जीवन का बलिदान दें।

और जो लोग अल्लाह की राह में शहीद किए गए उन्हें हरगिज मुर्दा न समझना, बल्कि वह लोग जीते जागते मौजूद हैं, अपने परवरदिगार की तरफ से वह तरह-तरह की रोजी पाते हैं (कुरान.3:169)। और ख़ुदा ने जो फ़ज़्ल व करम उन पर किया है, उसकी ख़ुशी से वे फूले नहीं समाते। और जो लोग उनसे पीछे रह गए और उनमें आकर शामिल नहीं हुए उनकी निस्बत ये खयाल करके ख़ुशियां मनाते हैं कि (ये भी शहीद हों तो) उन पर न किसी किस्म का खौफ होगा और न दुखी होने का कारण होगा (कुरान.3:170)।[368]

शहीद को मिलने वाले इनाम के बारे में हदीस भी है:

रसूल ने कहा, 'जन्नत में अल्लाह ने मुजाहिदीन (मुसलमान लड़ाके) के लिए सौ गुना ऊंचे दर्जे का इनाम रख रखा है, जो अल्लाह की राह में लड़कर शहीद होते हैं।'[369]

रसूल ने कहा, 'जन्नत में पहुंचने के बाद कोई भी दोबारा धरती पर लौटकर नहीं आना चाहता, भले ही धरती पर उसको सबकुछ मिले, सिवाय मुजाहिद के, जो इस दुनिया में वापस आना चाहता है, ताकि वह दस बार शहीद हो सके, उस सम्मान के लिए जो उसे अल्लाह की ओर से मिलता है।'[370]

हमारे रसूल ने हमें हमारे मालिक का पैगाम सुनाया है कि 'हममें से जो कोई भी शहीद के रूप में मारा जाएगा, वह सीधे जन्नत जाएगा।' उमर ने रसूल से पूछा, 'क्या यह सच नहीं है कि हमारे आदमी जो मारे जाते हैं, वे जन्नत जाएंगे और उनके आदमी (मूर्तिपूजकों की ओर से शहीद होने वाले) जहन्नुम की आग में जलाए जाएंगे?' रसूल ने कहा, 'हां, यह सच है।'[371]

ॲशेरो आश्चर्यचकित होते हुए कहते हैं: 'वह कौन सी बात होती है, जिससे लोग अपने बच्चों और खुद को खत्म करने का कदम उठाने को प्रेरित हो जाते हैं?' अलग परिप्रेक्ष्य में देखें तो यह तस्वीर बिलकुल अविश्वसनीय मालूम होगी। पर वास्तव में, पीपुल्स टैम्पल में तस्वीर पहली नजर में ऐसी ही दिखती थी, जहां बहुत सारे लोग अपना समय, धन और यहां तक कि अपने बच्चों का नियंत्रण टैम्पल के लिए छोड़ देते थे। जोन्स युक्तिसंगत बनाने की उस प्रक्रिया का लाभ लेता था, जिसमें लोग उद्देश्य के प्रति आस्था और सुदृढ करने तथा इससे होने वाली हानि के बारे सोचना बंद करने के जरिए अपनी प्रतिबद्धता के औचित्य को स्वयं ही सिद्ध करने की ओर बढ़ने लगते हैं।'

जैसा कि हम देख सकते हैं कि मुहम्मद ने इसे भी कुशलतापूर्वक आजमाया था। वह अपने अनुयायियों को भरोसा दिलाता था कि वह उसका मकसद बहुत महत्वपूर्ण है और यह कि वे सब उसमें (मुहम्मद) भरोसा करने और उस अल्लाह की इबादत करने के एकमात्र उद्देश्य के लिए पैदा किए गए हैं, जो केवल उसके (मुहम्मद) माध्यम से ही बोलता है। 'और मैंने जिन्नों और आदमियों को इसी ग़रज़ से पैदा किया कि वह मेरी इबादत करें। (कुरान.51:56)' हदीस कुदसी के मुताबिक (मुसलमान इसे बिलकुल सत्य मानते हैं) जिंदगी का मकसद अल्लाह को जानना और उसकी इबादत करना है और निश्चित रूप से ऐसा करना उसके रसूल मुहम्मद के माध्यम से ही मुमकिन है। उसने (अल्लाह) उन लोगों के लिए बड़े पुरस्कार का वादा किया है, जो उसके लिए अपना सबकुछ छोड़ देते हैं और उन्हें कभी न खत्म होने वाली यातना देने की धमकी दी है, जो उसके निराधार दावों पर शक करते हैं।

इस प्रकार की मन:स्थिति में, उसके अंधे बन चुके अनुयायी उसके लिए सबकुछ छोड़ने को तैयार हो गए। वे अपने पिता और भाइयों के खिलाफ ही जंग करने और उनकी हत्या करने या उनके हाथों मरने को तैयार थे। अन्य संप्रदायों के अनुयायियों की तरह ही मुसलमान निर्दोष लोगों के अपहरण और सिर काटने, नागरिकों पर बम गिराने और हजारों की संख्या में उनका नरसंहार करने सहित सभी तरह के अपराधों को जायज और तर्कसम्मत ठहराते हैं। अपने मकसद पर इनका विश्वास इतना मजबूत होता है कि इसके आगे सबकुछ व्यर्थ लगने लगता है।

मुसलमानों को वश में कर लेना

उदारवादी मुसलमान से आतंकवादी बनने तक का सफर एक धीमी और अक्सर पकड़ में न आने वाली प्रक्रिया है। मुसलमान बनने वाला नया व्यक्ति निस्संदेह उदार होता है। पहले इन्हें 'इस्लाम की खूबसूरती' बताई जाती है। इन्हें बताया जाता है कि इस्लाम एक आसान मजहब है, शांति का मजहब है, एक अल्लाह की इबादत और समानता का मजहब है। इन्हें विश्वास दिलाने की कोशिश की जाती है कि इस्लाम अन्य धर्मों, विशेषकर यहूदी धर्म और ईसाई धर्म को भी मान्यता देता है, क्योंकि ये दोनों धर्म भी अद्वैतवादी हैं। इस्लाम इन धर्मों के मानने वालों से केवल इसलिए असहमत रहता है, क्योंकि इन लोगों ने अपने धर्म को भ्रष्ट कर दिया है। फिर इनके मन में यह भरा जाता है कि इस्लाम ही वह एकमात्र मजहब है, जो दूषित नहीं हुआ है। इसलिए यह इकलौता धर्म है, जिसे अल्लाह स्वीकार करता है। जो इस्लाम में विश्वास नहीं करते हैं, वे सत्य (अल्लाह) को नकारते हैं और वे बर्बाद अभागे और

पापी हैं। फिर इनसे कहा जाता है कि कुरान के ईसा और मूसा वे नहीं हैं, जो बाइबिल में जीसस और मूसा के रूप में उल्लिखित हैं। नए मुसलमान धीरे-धीरे दूसरे धर्मों के लोगों को अल्लाह के दुश्मन के रूप में देखने लगते हैं और उनके प्रति मन में नफरत पालने लगते हैं। फिर इनको सिखाया जाता है कि केवल मुसलमान ही एक-दूसरे के भाई हैं और दूसरे लोग केवल भाई होने का दिखावा करते हैं। जैसे-जैसे आपका ब्रेनवाश होता जाता है, आप खुद को पीड़ित के रूप में देखना शुरू कर देते हैं। आप अपनी पहचान खो देते हैं। आप अदृश्य उम्मत (अल्लाह के गुलाम) के गुमनाम हिस्से बन जाते हैं। किसी चीज को देखने का आपका नजरिया बदल जाता है। प्रतिदिन आपके भीतर 'हम' बनाम 'वे' की भावना बढ़ती जाती है। आपकी नजर में 'वे' बुरे लोग होते हैं, अल्लाह के दुश्मन और आलोचक होते हैं। 'वे' अत्याचारी और गलत काम करने वाले होते हैं। जो भी मुसलमान नहीं है और खासकर आपके ब्रांड वाले इस्लाम को नहीं मानता है, वह उस 'वे' का हिस्सा है। 'हम' यानी जिन पर अत्याचार हुआ है, जिनके साथ अन्याय हुआ है और जो पीड़ित हैं। 'हम' सच्चे मुसलमान होते हैं, जो अल्लाह की मर्जी से चलते हैं और अल्लाह की राह में काम करते हैं। इन सबके बाद आप यह विश्वास करना शुरू कर देते हैं कि आप का विश्वास और आपका वह मजहब ही सत्य है, जो कहता है कि लड़ो, उन दुश्मनों को मार डालो, जो तुम्हें सताते हैं और उनके साथ कड़ाई से पेश आओ। आपको बताया जाता है कि अल्लाह आपको फतह दिलाएगा और आपको कभी समाप्त न होने वाला कामुक आनंद देगा। यह सब सुनने के बाद 'उदारवादी मुसलमान' रातोंरात एक चरमपंथी और आतंकवादी बन सकता है। **जब तक मुसलमान इस्लाम में विश्वास करते रहेंगे, उनमें से प्रत्येक के भीतर आतंकवादी बनने की संभावना बनी रहेगी।**

इस्लाम अपने मानने वालों को अल्लाह के नाम पर गैर-मुस्लिमों का कत्ल करने का हुक्म देता है। इस्लाम में यह पवित्र कर्तव्य अद्वितीय है। वास्तव में, अल्लाह कहता है कि वह सबसे अधिक मुजाहिदीन (मुसलमान लड़ाकों) को प्यार करता है। मुसलमानों में मुजाहिदीन सर्वोत्तम होते हैं। ये जन्नत में अनंतकाल तक सर्वाधिक लज्जतदार और कामुक सुविधाओं का भोग करेंगे। उदारवादी मुसलमान पाखंडी और अपने मजहब में कमजोर होता है। धीरे-धीरे दिमाग को दीक्षित करना सभी संप्रदायों की मॉडस ऑपरेंडी (कार्यप्रणाली) होती है। इस मॉडस ऑपरेंडी में संप्रदायों के वास्तविक सच और एजेंडे को छिपा हुआ रखा जाता है और सदस्यों को धीरे-धीरे भरा जाता है। संप्रदाय के कट्टर सदस्य बाहर की दुनिया में अलग बात कहते हैं, जबकि अपने लोगों के बीच दूसरी बात कहते हैं।

अॅशेरो लिखते हैं: 'जितना जोन्स सदस्यों से अपनी अपेक्षाएं बढ़ा रहा था, उतना ही वह सदस्यों के समक्ष 'सबसे बड़ी दीक्षा' के लिए लोगों को तैयार करता जा रहा था।' उसने अनुयायियों को अपने नियमों-कानूनों के और निकट लाने के लिए इनके द्वारा पहले दिखाई गई प्रतिबद्धता से मिली ताकत का प्रयोग किया। जैसा सामाजिक मनोविज्ञानी और सेल्स के लोगों ने पाया है कि यदि आप किसी के यहां जाएं और वह आपको अपने दरवाजे पर खड़ा होने की अनुमति दे दे तो यह मानकर चलना चाहिए कि वह इंसान आपकी बात मानने को भी तैयार हो जाएगा।[372] आपको बस इतना करना होगा है कि शुरुआत में उस अतार्किक बात को भी तुलनात्मक रूप से सामान्य दिखाइए। ऐसा करने से सामने वाले व्यक्ति का व्यवहार आपके प्रति और सहज हो जाएगा और वह आपकी दूसरे निवेदन को मानने में सहजता महसूस करेगा।'

अॅशेरो इसके बाद व्याख्या करते हैं कि जोन्स किस तरह धीरे-धीरे अपने अनुयायियों को सामूहिक आत्महत्या करने के लिए तैयार कर रहा था। 'उसने सदस्यों की उस धारणा को कमजोर करना शुरू किया कि मृत्यु से डरना

चाहिए और उससे लड़ना चाहिए। जोन्स ने इसके लिए बाकायदा कई बार आत्महत्या का पूर्वाभ्यास कराया। यह अनुयायियों की आस्था और मौत तक जोन्स का अनुसरण करने की इच्छा का परीक्षण था। जोन्स लोगों से पूछता था कि क्या वे मरने के लिए तैयार हैं और कई मौकों पर वह अपनी इच्छाओं के अनुपालन के लिए वोटिंग कराकर लोगों से ही अपना भाग्य तय कराता था। समूह के एक पूर्व सदस्य ने याद करते हुए कहा कि एक बार जोन्स मुस्कराया और बोला, 'अच्छा, यह एक अच्छा सबक है। मैं देख रहा हूं कि तुम लोग मृत नहीं हो।' उसने यह अहसास कराने की कोशिश की कि हमें आधा घंटा अपने भीतर झांककर गंभीर चिंतन करना चाहिए। हम सब उसके प्रति पूर्णत: समर्पित और स्वयं गर्व का अनुभव कर रहे थे। जोन्स ने हमें उपदेश दिया कि अपनी आस्था पर मर-मिटना इंसान का विशेषाधिकार होता है और यही वह चीज है, जो हम करते आ रहे हैं।'[373]

मुहम्मद ने आत्महत्या की वकालत नहीं की। बल्कि इसके बजाय उसने शहादत की अपार प्रशंसा की। अल्लाह का रसूल जोन्स के मुकाबले अधिक उपयोगितावादी था। आत्महत्या उसके लिए किसी काम की नहीं थी। अनुयायियों को जिंदा रखना उसकी आवश्यकता थी, ताकि वे उसके लिए जंग लड़ सकें। उसने शहादत और जंग के मैदान में मौत का महिमामंडन किया।

मुहम्मद के उपयोगितावाद की प्रशंसा इस अर्थ में भी की जा सकती है कि जहां जोन्स व अन्य संप्रदायों के नेताओं ने आत्महत्या की और अपने अनुयायियों के साथ मर गए, वहीं मुहम्मद जंग के मैदान में स्वयं लड़ने बहुत कम गया।

कोई भी स्वस्थ चित्त मनुष्य अल्लाह के नाम पर जंग छेड़ने और निर्दोष लोगों का कत्ल करने को पागलपन ही कहेगा, पर कोई मुसलमान और यहां तक कि एक भी तथाकथित उदारवादी मुसलमान इस्लाम की इस गंदगी को देख नहीं पाता है। जिहाद इस्लाम का महत्वपूर्ण स्तंभ है और जो मुसलमान इससे असहमत होता है, उसे मजहब से बेदखल कर दिया जाता है। इसलिए **'उदारवादी मुसलमान' नामक शब्द विरोधाभाषी है। ऐसा कोई भी इंसान उदारवादी नहीं कहा जा सकता है, जो गैर-मुस्लिमों के कत्ल की विचारधारा का समर्थन करता है। आतंकवादी मुसलमान और उदारवादी मुसलमान के बीच सिर्फ इतना फर्क होता है कि पहला यानी आतंकवादी जिहाद (जंग) छेड़ना चाहता है, जबकि दूसरा यानी उदारवादी सोचता है कि जब तक मजबूत न हो जाओ, इंतजार करो और जब ताकतवर हो जाओ तो जिहाद करो।** सैद्धांतिक रूप से कोई मुसलमान जिहाद की अवधारणा से असहमत नहीं हो सकता है।

कैसे करोड़ों लोग या कहें तथाकथित स्वस्थचित्त लोग, इस प्रकार के उन्माद में विश्वास कर सकते हैं? इसका उत्तर फिर से जोन्सटाउन में पाया जा सकता है।

ॲशेरो लिखते हैं: 'टैम्पल को जोन्सटाउन में स्थानांतरित किए जाने के बाद सामूहिक आत्महत्या का पूर्वाभ्यास, जिसे 'द व्हाइट नाइट' कहा जाता था, दोहराया जाने लगा था। एक ऐसा अभ्यास जो पागलपन दिखता था, पर बार-बार किया जाता था और पीपुल्स टैम्पल के सदस्य इन अभ्यासों को उचित मानते थे।'

पीपुल्स टाउन के सदस्य सामान्य लोग थे। वे पागल या उन्मादी नहीं थे। हालांकि, इन्होंने अपना बुद्धि-विवेक एक उन्मादी व्यक्ति के हाथों में गिरवी रख दिया था। ये लोग अंधों की तरह उस उन्मादी इंसान के पागलपन में भी अनुसरण करते थे।

ॲशेरो लिखते हैं: 'पाठक यह सवाल उठा सकते हैं कि क्या इससे (आत्महत्या के पूर्वाभ्यास) लोगों के मन में यह बात बैठ गई थी कि वास्तविक आत्महत्या के दिन भी केवल अभ्यास ही हो रहा था। वैसे बहुत सारे ऐसे संकेत थे, जो यह बताते थे कि सामूहिक आत्महत्या के मौके पर दिया जाने वाला जहर घातक था।' रेयान के दौरे

ने आग में घी का काम किया। वहां बहुत से नए विद्रोही पैदा हो गए थे। कई रसोइयों को पहले के अभ्यासों में भाग न लेने की छूट दे दी गई थी, ताकि वे भोजन बना सकें। ये रसोइए भी बागी हो गए थे। जोन्स के भीतर गुस्सा और हताशा बढ़ रही थी और अनुयायियों के लिए इसका अनुमान लगाना भी कठिन था। अंत में, वह दिन भी आ गया, जब लोगों ने पहले बच्चे को अपनी आंखों के सामने मरते देखा। सदस्यों को गुमराह किया गया था, लेकिन वे इस बात से अनजान थे कि इस बार आत्महत्या का अभ्यास नहीं, बल्कि वास्तव में आत्महत्या होगी।'

ॲशेरो बताते हैं कि इन स्थितियों में लोग अपने कार्यों को उचित ठहराने के लिए तत्पर हो जाते हैं और विशेषत: उन हिंसक कार्यों में लिप्त होने को भी उचित बताने लगते हैं, जो वे अपने नेता के कहने पर करते हैं। वो कहते हैं, 'अपराध बोध को दूर करने के लिए स्वयं ही अपने अनुचित कार्य-व्यवहार को भी उचित ठहराने के प्रभाव का नाटकीय उदाहरण पीपुल्स टैम्पल में दिए जाने वाले शारीरिक दंड से जुड़ा हुआ है।' जैसा कि पहले चर्चा की गई थी कि पीटे जाने या अपमानित किए जाने का डर सदस्यों को जोन्स के आदेश का अनुपालन करने को विवश करता था। कोई मनुष्य तभी तक आज्ञा का पालन करेगा, जब तक उसमें डर हो और उसकी निगरानी की जा रही हो। किसी की मन:स्थिति को प्रभावित करने के लिए गंभीर के बजाय हल्का डर दिखाने की युक्ति अधिक कारगर पाई जाती है।[374]

इसका प्रभाव अधिक समय तक बना रहता है।[375] मनुष्य इस तरह के छोटे-मोटे बाह्य अवरोधों के प्रति अपने व्यवहार पर आरोप मढ़ना अधिक कठिन महसूस करता है। इस तरह वह अपने कार्य-व्यवहार को उचित ठहराने के लिए अपने व्यवहार को ही बदलने लगता है। गंभीर किस्म की धमकियां अनुपालन सुनिश्चित कराती हैं, पर जब उसे बाहर से थोपा जाता है तो ये सामान्यत: व्यवहार को भीतर से नहीं बदल पाती हैं। पर जब कोई बात किसी व्यक्ति पर इस तरह थोपी जाती है कि व्यक्ति को उसका पता न चले तो एक अलग तरह का प्रभाव निकलकर आता है। जब कोई व्यक्ति यह महसूस करता है कि उसके कार्य में उसकी सक्रिय भूमिका औरों को कष्ट देगी तो ऐसे में वह प्रेरणा तेजी से अपना काम करने लगती है, जिसमें वह अपनी क्रूरता को आवश्यक मानते हुए तर्कसंगत बताने लगता है अथवा पीड़ित के प्रति पूर्वाग्रह पालते हुए स्वयं को यह समझाने लगता है कि पीड़ित उस सजा का हकदार है।'[376]

यह बात बहुत क्रूर है। जोन्सटाउन में अनुयायी अपने उस साथी की निंदा करते थे, जो पीपुल्स टैम्पल संप्रदाय के नियम-कानूनों के अनुरूप नहीं चलता था, टैम्पल के उद्देश्य से अधिक स्वयं या अपने परिवार को महत्व देता था। टैम्पल के अनुयायी ऐसे लोगों को दंड देते थे। सामान्य व्यक्ति के लिए क्रूरताभरा कार्य करना पीड़ादायी होता है। ऐसे में अनुयायियों में आत्मधिक्कार की भावना दूर करने के लिए पीड़ित को तुच्छ बताने और उसे उसकी करनी की सजा दिलाने जैसी बातें करके उनकी क्रूरता को उचित ठहराने की कोशिश की जाती थी। **मुसलमान के लिए गैर-मुस्लिमों के खिलाफ जंग छेड़ना आवश्यक होता है और यदि अभिभावक व रिश्तेदार भी गैर-मुस्लिम हों तो उनके खिलाफ भी जंग छेड़ना आवश्यक होता है।** मुसलमानों की इस तरह की हिंसा और क्रूरता को सही ठहराने के साथ इसे पुण्य का काम सिद्ध करने की कोशिश की जाती है। **मुसलमानों को सिखाया जाता है कि गैर-मुस्लिमों के प्रति उनका सख्त रवैया और असहिष्णुता अल्लाह की इच्छा के अनुरूप है और पवित्र इस्लाम के नियमों के मुताबिक है।** साथ ही यह भी पढ़ाया जाता है कि इस तरह की हिंसा व क्रूरता न केवल स्वीकार्य है, बल्कि प्रशंसनीय है। जब मुसलमानों ने निर्दोष लोगों पर हमला किया और उनका सामूहिक नरसंहार किया तो मुहम्मद ने उन्हें आश्वासन देते हुए कहा, 'और (मुसलमानों) उन काफिरों (गैर-मुस्लिमों) को कुछ तुमने नहीं मारा,

बल्कि उनको तो अल्लाह ने कत्ल किया और जब तुमने तीर मारा तो तुमने नहीं मारा, बल्कि खुद अल्लाह ने तीर मारा और ताकि अपनी तरफ से मुसलमानों पर खूब अहसान करे। बेशक अल्लाह सबकी सुनता है और सब कुछ जानता है। (कुरान.8:17)'

बीबीसी के संवाददाता जेम्स रेनाल्ड्स ने हुसाम अब्दो का साक्षात्कार लिया। 15 साल का अब्दो अर्द्ध विक्षिप्त आत्मघाती हमलावर था, जो इसराइल के चैकपॉइंट पर पकड़ा गया था। उससे पूछा गया, 'जब तुमने बम लगा हुआ बैल्ट कमर में बांधा तो क्या तुम्हें पता था कि तुम लोगों की भी हत्या करने जा रहे थे और खुद की भी, क्या तुम्हें पता था कि इससे तुम्हारे माता-पिता बहुत दुखी होते, क्या तुम्हें पता था कि तुम सामूहिक हत्या करने जा रहे थे? क्या तुमको वास्तव में इस सब का भान था?' हुसाम ने कहा: 'हां, जिस तरह वे लोग आए और हमारे माता-पिता को दुख पहुंचाया, उसी तरह उन्हें भी नतीजा भुगतना चाहिए। जिस तरह हमने महसूस किया, वैसे ही उन्हें भी अहसास होना चाहिए।'

उससे पूछा गया, 'क्या तुम्हें मरने से डर लग रहा था?'

उसने उसी तरह का जवाब दिया, जैसा कि जोन्स के अनुयायियों ने अपने जीवन के आखिरी क्षणों में कहा था।

'नहीं, मुझे मौत से जरा भी डर नहीं लगता।'

'क्यों नहीं?'

'कोई भी हमेशा जिंदा नहीं रहता है। हम सब एक दिन मरेंगे।'

मुहम्मद के कथनों में एक यह रत्न यह भी है:

बुद्धिमान व्यक्ति वह है जो लगातार मौत के बारे में सोचता है और उसकी तैयारी करता है।[377]

मक्का के एक युवा मुसलमान अबू हुज़ैफा का किस्सा है। अबू हुज़ैफा ने बदर की जंग में हिस्सा लिया था। इस जंग में उसके पिता कुरैशों की ओर से लड़ रहे थे। यह कहा गया कि जब मुहम्मद ने अपने अनुयायियों को निर्देश दिया कि उसके अपने चाचा अब्बास को बख्श दें। अब्बास भी कुरैशों में से आते थे। तो हुज़ैफा चिल्ला पड़ा, 'क्या? हम अपने पिता, भाई, चाचा वगैरा को मार दें और अब्बास को छोड़ दें? नहीं, ऐसा नहीं होगा। अगर अब्बास मुझे मिल गया तो उसे सच में कत्ल कर दूंगा।' यह धृष्ट टिप्पणी सुनकर उमर अपने चापलूसी वाले हावभाव से उठा, आगे बढ़ा, तलवार निकाली और रसूल की ओर देखा कि उस अशिष्ट युवक का सिर कलम करने का इशारा करें।[378]

इस धमकी का त्वरित प्रभाव हुआ। हुज़ैफा के व्यवहार में अचानक नाटकीय बदलाव हुआ। जंग के बाद हम उसे बिलकुल कातर और अलग व्यक्ति के रूप में पाते हैं। जब उसने देखा कि उसके पिता का कत्ल कर दिया गया और उनकी लाश को बेहद घृणित तरीके से घसीटते हुए ले जाकर कुएं में फेंक दिया गया तो वह व्याकुल हो गया और रोने लगा। मुहम्मद ने पूछा, 'क्या तुम अपने पिता की मौत पर दुखी हो?' उसने जवाब दिया, 'ऐ, अल्लाह के रसूल! ऐसा नहीं है। मुझे मेरे पिता की नियति से न्याय को लेकर कोई संदेह नहीं है। पर मैं जानता हूं कि वह एक समझदार और उदार हृदय वाले इंसान थे। मुझे विश्वास था कि अल्लाह उन्हें दीन की राह में ले आएगा। पर अब मैं उनकी लाश देख रहा हूं और मेरी उम्मीदें टूट चुकी हैं! मैं इसलिए दुखी हूं।' इस बार मुहम्मद उसके जवाब से खुश हुआ और हुज़ैफा को दुआएं देता हुए सांत्वना देने की कोशिश की। मुहम्मद उससे बोला, 'सब अच्छा होगा।'[379]

हुज़ैफा द्वारा उसका हुक्म मानने से इनकार करने से मुहम्मद का खफा होना और उमर द्वारा फौरन उसको कत्ल करने के लिए उठ खड़ा होना, ऐसे ही ताकतवर उत्प्रेरक थे, जिससे हुज़ैफा ने अपने व्यवहार में तुरंत परिवर्तन कर

लिया और एक दिन बाद उसे अपने पिता की हत्या में भी 'न्याय' नजर आने लगा।

एक बार जब हुज़ैफा ने अपने पिता को खो दिया और बड़ी बात यह थी कि अपने पिता के हत्यारों के साथ साजिश में उसने साथ भी दिया, तो उसके वापस लौटने की गुंजाइश ही खत्म हो गई। अब उसे अपने किए को जायज ठहराने और अपने पिता की हत्या को न्यायोचित ठहराने के अलावा कोई चारा नहीं था। अब होश में आकर अपने अपराध का बोध करना उसके लिए अपमानजनक होता। अब यह उसकी मजबूरी बन गई थी कि वह अपने चुने हुए रास्ते पर आगे बढ़े और खुद को विश्वास दिलाए कि इस्लाम ही सच्चा मजहब है, या फिर जिंदगी भर आत्मग्लानि में जीता रहे।

संप्रदाय के नेताओं में अपने अनुयायियों के मन को वश में कर लेने की धूर्त योग्यता होती है। जैसा कि हिटलर ने कहा है, बड़े झूठ पर जनता का विश्वास आसानी से जमाया जा सकता है और मनोविकृत संप्रदाय के नेता बड़ा झूठ बोलने में उस्ताद होते हैं।

अब्दुल्ला इब्ने-काब बिन मलिक ने एक किस्सा बताया है। यह किस्सा बताता है कि मुहम्मद अपने अनुयायियों पर किस कदर मनोवैज्ञानिक रूप से और सामाजिक रूप से नियंत्रण रखता था। इब्ने-काब कहता है, वह एक आस्थावान मुसलमान था और उसने मुहम्मद के साथ सभी जंगों में भाग लिया था। इन्हीं जंगों में मिले लूट के माल से वह बड़ा आदमी हो गया था। जब मुहम्मद ने अपने अनुयायियों से तबूक की जंग के लिए तैयार होने को कहा तो यह प्रचंड गर्मी का दिन था और पेड़ों पर फल अभी कच्चे थे। इसलिए वह हीलाहवाली करने लगा और जंग लड़ने नहीं गया। जंग खत्म होने के बाद जब मुहम्मद वापस आया तो उसने पूछा कि जंग में कौन-कौन लोग नहीं गए थे। मुहम्मद ने उनसे जंग में न जाने का कारण पूछा। बहुतों ने उचित कारण बता दिए तो मुहम्मद को न चाहते हुए भी उन्हें बख्श देना पड़ा। लेकिन इब्ने काब और दो अन्य कट्टर समर्थक खुद को बचाने के लिए मुहम्मद के सामने झूठ बोलने की हिम्मत नहीं कर सके।

इब्ने-काब आगे लिखता है:

अस्ल में, अल्लाह की कसम, मेरे पास कोई बहाना नहीं था। अल्लाह की कसम, मैं कभी उतना ताकतवर या अमीर महसूस नहीं करता हूं, जितना कि उस समय जब आपके (रसूल) पीछे खड़ा रहता हूं।' तब रसूल ने कहा, 'जहां तक इस आदमी का संबंध है, तो इसने निश्चित ही सच कहा है। इसलिए जब तक अल्लाह तुम्हारी किस्मत तय नहीं कर देता है, पड़े रहो। अल्लाह के रसूल ने सभी मुसलमानों को निर्देश दिया कि वे गजवा में पीछे रहने वाले हम तीनों व्यक्तियों से बातचीत बंद कर दें। हम सबसे अलग-थलग पड़ गए। हम तीनों के प्रति बाकी लोगों का व्यवहार बदल गया। अब वही जगह जहां मैं रहता था, हमारे लिए इतनी अजनबी लगने लगी, जैसे कि हम इस जगह को जानते ही न हों। हम लोग इस स्थिति में करीब 15 रात रहे। मेरे दोनों साथी अपने घरों में रहे और रोते रहे। लेकिन मैं तीनों में सबसे छोटा और सबसे मजबूत दिल वाला था, इसलिए मैं बाहर निकलता था और मुसलमानों की नमाज में शामिल होता था, बाजार में घूमता-फिरता था। लेकिन कोई मुझसे एक शब्द नहीं बोलता था। अल्लाह के रसूल जब नमाज के बाद जमात में बैठते थे तो मैं उनके पास जाता था, उन्हें सलाम करता था और सोचता रहता था कि मेरे सलाम के जवाब में रसूल के होंठ हिलेंगे या नहीं। तब मैं उनके पास बैठकर नमाज पढ़ता था और चुपके-चुपके उन्हें देखता रहता था। जब मैं नमाज में व्यस्त होता था तो वे अपना चेहरा मेरी ओर घुमाते थे, पर जब तक मैं उनकी ओर देखता, वे मुंह फेर लेते थे। जब लंबे समय तक लोगों का हमारे प्रति व्यवहार ऐसा ही सख्त रहा तो

मैं अपने चचेरे भाई और प्रिय अबू कतादा के पास गया। मैं अबू कतादा के बाग की दीवार फांदकर भीतर पहुंचा और उन्हें सलाम किया।

अल्लाह की कसम, उन्होंने मेरे सलाम का जवाब नहीं दिया। मैंने कहा, 'ऐ अबू कतादा! मैं अल्लाह के वास्ते तुमसे गुजारिश कर रहा हूं! क्या तुम्हें नहीं पता कि मैं अल्लाह और उसके रसूल से कितनी मुहब्बत करता हूं? वो चुप रहे। मैंने उन्हें अल्लाह का वास्ता देकर फिर पूछा, पर वे चुप रहे। मैंने फिर अल्लाह का वास्ता देकर पूछा। तब उन्होंने कहा, 'अल्लाह और उसके रसूल यह बात बेहतर जानते हैं।' यह सुनकर मेरी आंखों में आंसू आ गए और मैं वापस लौटा, दीवार फांदकर निकल गया।'

जब 15 में से 14 रातें ऐसे ही बीत गईं तो अल्लाह के रसूल का एक संदेशवाहक मेरे पास आया और बोला, 'अल्लाह के रसूल ने हुक्म दिया है कि तुम अपनी बीबी से दूर रहो।' मैंने पूछा, 'क्या मैं उसे तलाक दे दूं, या कुछ और करना है! मैं क्या करूं?' उसने कहा, 'नहीं, केवल उससे दूर रहो और उसके साथ सहवास मत करो। रसूल ने यही संदेश मेरे और दोनों साथियों के पास भिजवाया। फिर मैंने अपनी बीबी से कहा, 'तुम अपने मायके चली जाओ और तब तक वहां रहो, जब तक अल्लाह इस मामले में फैसला नहीं दे देता।' काब ने आगे लिखा है: हिलाल बिन उमैया की बीबी रसूल के पास आई और बोली, 'ऐ अल्लाह के रसूल! हिलाल बिन उमैया एक लाचार बूढ़ा आदमी है और उसके पास कोई नौकर नहीं है, जो उसकी देखभाल कर सके। यदि मैं उसकी सेवा करूं तो क्या आपको बुरा लगेगा?' उन्होंने कहा, 'नहीं, तुम उसकी सेवा कर सकती हो, पर वो तुम्हारे पास नहीं आए।' उसने कहा, 'अल्लाह की कसम, उसके मन में किसी चीज की इच्छा नहीं है। उस दिन की घटना के बाद से उसकी आंख के आंसू थमे नहीं हैं।'

इस पर, मेरे परिवार के कुछ सदस्य मेरे पास आए और बोले, 'क्या तुम भी अल्लाह के रसूल के पास जाकर इजाजत मांगोगे कि जैसे उन्होंने हिलाल बिन उमैया की बीबी को उसकी सेवा की इजाजत दी है, वैसे ही इजाजत तुम्हारी बीबी को भी दें? मैंने कहा, 'अल्लाह के वास्ते, मैं अल्लाह के रसूल से ऐसी इजाजत नहीं मांगूंगा। मुझे नहीं पता कि यदि मैंने अपनी बीबी के लिए ऐसी इजाजत मांगी तो रसूल क्या कहेंगे, क्योंकि मैं जवान हूं।' इसके बाद मैंने इसी स्थिति में और दस रातें गुजारीं। इससे पहले उस घटना को हुए 15 रातें बीत चुकी थीं, जब रसूल ने और लोगों से कहा था कि हम तीनों से बातचीत बंद कर दें। 50वें दिन जब मैं अपने घर की छत पर फज्र की नमाज पढ़ने के बाद उस हालत में बैठा था, जो अल्लाह ने कुरान में बताया है, तो अचानक ऐसा लगा जैसे मेरी रूह बेचारगी की स्थिति में पहुंच गई हो और मुझे जमीन सिकुड़ती नजर आई। तब मुझे एक आवाज सुनाई दी, जो सला की पहाड़ियों से आती हुई मालूम हुई। तेज आवाज में सुनाई पड़ा, 'ऐ काब बिन मलिक! खुश हो जाओ, तुम्हारे हक में अच्छी चीजें होने वाली हैं।' मैं अल्लाह के सामने दंडवत हो गया और महसूस करने लगा कि राहत मिल रही है। अल्लाह के रसूल ने फज्र की नमाज के बाद ऐलान किया कि अल्लाह ने हम तीनों के-प्रायश्चित को स्वीकार कर लिया है। इसके बाद लोग मुझे मुबारकबाद देने लगे। लोग मेरे पास झुंड में आ रहे थे, मेरे प्रायश्चित पर अल्लाह की मुहर लगने पर मुबारकबाद देते हुए कह रहे थे, 'मुबारक हो, अल्लाह ने तुम्हारा प्रायश्चित स्वीकार किया।'[380]

मुहम्मद ने इस किस्से को कुरान में भी लिखा है:

और उन तीनों पर भी फज़्ल (दया) की जो जिहाद से पीछे रह गए थे। उन्होंने इस कदर आत्मग्लानि महसूस की। जमीन इतने फैलाव के बावजूद उन पर तंग हो गई और उनकी रूह तक उन पर तंग हो गई। और उन लोगों ने

समझ लिया कि अल्लाह के सिवा और कहीं पनाह की जगह नहीं है। फिर अल्लाह ने उनको तौबा की तौफीक दी ताकि वह अल्लाह की तरफ रुजू करें। बेशक अल्लाह ही बड़ा तौबा कुबूल करने वाला मेहरबान है। (कुरान.9.118)

जैसा कि हम उपरोक्त किस्से में देख सकते हैं कि मुहम्मद अपने अनुयायियों पर जबरदस्त नियंत्रण रखता था। मदीना का माहौल बहुत गर्म था। वह अपने अनुयायियों को हुक्म दे सकता था कि अपने साथियों, अपने रिश्तेदारों को छोड़ दो और यहां तक कि अपनी बीबियों से दूरी बना लो। मनोवैज्ञानिक नियंत्रण इतना तगड़ा था कि कुछ तो झूठ बोलने या बहाने बनाने में भी डरते थे। मुहम्मद को खुद नहीं पता रहा होगा कि उनके (तीनों) दिमाग में क्या चल रहा है, जो बहाने उन्होंने बनाए हैं, वे सच हैं या झूठ। पर उसने (मुहम्मद) ने उन तीनों के मन में यह बात कामयाबी से भर दी कि अल्लाह उनके मन की बात जानता है। इस तरह उसने तीनों को लाचार और बेचारा बना दिया और उन्हें अपने पूर्ण नियंत्रण में ले आया। काबू का इससे बड़ा तरीका नहीं होता। अदृश्य 'बिग ब्रदर' न केवल तुम्हारी हर गतिविधि देख रहा है, बल्कि तुम्हारे भीतर की बातों की भी निगरानी कर रहा है। इस प्रकार के अंकुश से बढ़कर और कोई गंभीर बात हो ही नहीं सकती।

मुहम्मद अपने मजबूत तंत्र का इस्तेमाल करके लोगों पर न केवल अंकुश रखता था, बल्कि उनके दिमाग को भी अपने वश में किए रहता था और ऐसा पिछले 1400 सालों से होता चला आ रहा है। **जब तक इसको चुनौती नहीं दी जाएगी, यह ऐसे ही चलता रहेगा और सोचने की स्वतंत्रता और अपना निर्णय खुद करने के मानव अधिकारों को नष्ट किया जाता रहेगा।**

मुहम्मद ने उनकी ओर इशारा करते हुए निम्न आयत लिखी, जिन्होंने जायज कारण बताए थे और इन तीनों की तरह दंडित नहीं किए गए थे:

जब तुम जिहाद से लौटकर उनके पास आओगे तो वे तुम्हारे सामने अल्लाह की कसमें खाएंगे, ताकि तुम उनसे दरगुज़र करो तो तुम उनकी तरफ से मुंह फेर लो। बेशक ये लोग नापाक हैं और उनका ठिकाना जहन्नुम है। ये सजा है उसकी जो ये दुनिया में किया करते थे। (95) तुम्हारे सामने ये लोग कसमें खाते हैं ताकि तुम उनसे राजी (सहमत) हो जाओ। तुम राजी हो भी जाओ तो भी अल्लाह उन लोगों से कभी खुश (राजी) नहीं होता, जो हुक्म की नाफरमानी करते हैं। (कुरान.9:95-96)

मुहम्मद के पास उन आदमियों के बहाने की सत्यता परखने का कोई रास्ता नहीं था, इसलिए उसने इन चेतावनियों के साथ उन्हें धमकी दी कि यदि वे झूठ बोल रहे होंगे तो अल्लाह उन्हें कड़ी सजा देगा। **जब तक व्यक्ति नार्सिसिस्ट संप्रदाय के नेता के झूठ पर विश्वास करके उसके धोखे में रहता है, उसके मन-मस्तिष्क पर इस प्रकार का नियंत्रण काम करता है। जैसे ही व्यक्ति नार्सिसिस्ट के झूठ पर भरोसा करना बंद करता है, संप्रदाय के नेता का उस पर से नियंत्रण बिलकुल खत्म होने लगता है। मुसलमान आज भी मुहम्मद के प्रभाव में हैं, क्यों वे उस पर भरोसा करते हैं। जहन्नुम के डर ने उनके सोचने-समझने की क्षमता को सुन्न कर दिया है।**

मुहम्मद पर संदेह करने के विचार मात्र से मुसलमानों में डर के मारे सिहरन पैदा होने लगती है और फौरन इस तरह के विचार को खारिज कर देते हैं। ॲशेरो व्याख्या करते हैं: 'आइए कुछ देर के लिए थोड़ा पीछे चलते हैं। जोन्स टाउन में जो प्रक्रिया चल रही थी, वह जाहिर है कि उतनी सरल नहीं थी जो एक सुनियंत्रित प्रयोगशाला में हो रहे प्रयोग में चलती है, जहां कई विषयों पर एक साथ प्रयोग किया जा रहा होता है। उदाहरण के लिए, जिम जोन्स के पास वह ताकत थी कि वह पीपुल्स टैम्पल में ऐसी कोई भी सजा दे सकता था, जो उसका मन करे। विशेष तौर पर

आखिर के दिनों में जोन्स टाउन में बर्बरता और आतंक चरम पर था। लेकिन जोन्स बहुत ध्यान से इस बात को निगरानी करता था कि सजा कैसे दी जाए। वह अक्सर अपने अनुयायियों का आह्वान करता था कि वे पिटाई किए जाने की सजा पर सहमति दें। उन्हें अपने साथी सदस्यों पर इसे आजमाने का निर्देश दिया गया था। बड़े सदस्यों को निर्देश था कि वे छोटे सदस्यों को पीटें, बीबियां या प्रेमिकाएं अपने आदमियों को यौनिक रूप से अपमानित करें और अभिभावक अपने बच्चों की पिटाई में सहमति दें और सहयोग करें।' (मिल्स, 1979, किल्दफ एंड जेवर्स, 1978)। सजाएं क्रूर से क्रूरतम होती जा रही थीं और सदस्यों को इतना पीटा जाने लगा था कि वे बेहोश हो जाते थे, उन्हें गंभीर चोटें आती थीं, जो हफ्तों दर्द देती थीं। जैसा कि मनोचिकित्सक डोनाल्ड लुंडे, जिन्होंने अति हिंसा की घटनाओं की जांच की है, बताते हैं:

'जब आप कोई बड़ी गलती कर देते हैं तो अपने आप में भी यह स्वीकार कर पाना मुश्किल होता है कि आपने इतनी बड़ी भूल की है। फिर आप अवचेतन में अपनी गलती को सही सिद्ध करने की कोशिश करने लगते हैं। यह करिश्माई नेता द्वारा हद दर्जे तक शोषण करने के लिए इस्तेमाल किया जाने वाला कपटपूर्ण बचाव का मैकेनिज्म होता है।' (न्यूजवीक, 1978ए)। जीनी मिल्स द्वारा इस प्रक्रिया के व्यक्तिगत प्रभाव का विवरण दिया गया है। एक संगत में, उन्हें और उनके पति को मजबूर किया गया कि अपनी बेटी की पिटाई की सहमति दें। जबकि उनकी बेटी ने बहुत मामूली सी गलती की थी। वे इस पिटाई से अपनी पीड़िता बेटी पर और इसकी जिम्मेदार होने का अहसास करते हुए खुद पर भी पड़े प्रभाव को यूं बताती हैं:

'जब हम घर आ रहे थे, कार में सबलोग चुप बैठे थे। हम सब डरे हुए थे कि हमारी कही गई बातें द्रोह मानी जाएंगी। केवल लिंडा की आवाज सुनाई पड़ी। वह कार में पिछली सीट पर सुबक रही थी। जब हमने अपने घर में प्रवेश किया तो अल और मैंने लिंडा से बात करने की कोशिश की। उसे इतना दर्द हो रहा था कि वह बैठ नहीं पा रही थी। जब हम उससे बात कर रहे थे तो वह चुपचाप उठ गई। अल ने पूछा, 'रात में तुम्हारे साथ जो हुआ, उस पर क्या कहना है ?' लिंडा ने कहा 'फादर सही थे और उन्हें मुझे कोड़े मारने का पूरा अधिकार है। मैं इधर कुछ दिनों से काफी बागी तेवर दिखा रही थी और हमने बहुत से ऐसे काम किए, जो गलत थे। मुझे पक्का मालूम है कि फादर उन बातों को जानते थे। इसलिए उन्हें मुझे इतनी बार मार लगानी पड़ी।' जब मैंने अपनी बेटी को शुभरात्रि कहते हुए चूमा तो हमारे सिर घूम रहे थे। यह तय कर पाना कठिन था कि कब चीजें गड़बड़ हुईं। लिंडा इसकी शिकार बनी थी, फिर भी टैम्पल में सिर्फ हम लोग ही ऐसे थे, जिन्हें इन सब पर गुस्सा आ रहा था। लिंडा भी इन सब पर क्रोधित हो सकती थी और विद्रोही हो सकती थी, पर वह नहीं हुई, बल्कि उसने कहा कि जिम ने अस्ल में उस पर मेहरबानी की है। हमें पता था कि जिम ने उसके साथ क्रूरता की है, पर फिर भी हर कोई ऐसे बर्ताव कर रहा था, मानो वह हमारे दुष्ट बच्चे को कोड़ा मारकर बहुत अच्छा काम कर रहा था।

जब उस बच्ची को कोड़े मारे जा रहे था तो जिम के चेहरे पर क्रूरता के भाव नहीं थे। कोड़े पड़ने से बच्ची चीख रही थी, पर वह बिलकुल शांत होकर कोड़े गिन रहा था और उस वक्त उसके चेहरे से प्यार का भाव टपक रहा था। हमारा दिमाग इस स्थिति में नहीं था कि स्थिति की क्रूरता को समझ पाते, क्योंकि हमें सही फीडबैक नहीं मिल पा रहा था। टैम्पल के बाहर से मिलने वाला फीडबैक न के बराबर था और टैम्पल के सदस्य सही बात बताने के बजाय तोड़मरोड़ कर पेश करते थे। पहले के कृत्यों और संकल्पों को उचित ठहराते हुए इस परम संकल्प (सामूहिक आत्महत्या के संकल्प) को स्वीकार करने की जमीन तैयार की जा चुकी थी। हमने टैम्पल छोड़ा, उसके एक महीने

के बाद हम समझ सके कि हम जहां रह रहे थे, वह किस तरह का जाल था। तब हम उस मास्टर 'छलिए' के धोखे, दूसरों को दुख देने की प्रवृत्ति और भावनात्मक ब्लैकमेल को समझ सके।[381]

जीनी मिल्स कई मायनों में इस्लाम छोड़ने वाले उन लोगों जैसी थीं। इस्लाम छोड़ने के बाद ही लोग उस दुर्व्यवहार का अहसास करते थे, जो उन पर मुसलमानों द्वारा किया जाता था। इस्लाम छोड़ने के बाद ही इन्हें अपने मन-मस्तिष्क पर किए गए नियंत्रण और अत्याचार का अहसास हो सका। एक मुसलमान से शादी करने वाली मुसलमान औरत को उतना ही घरेलू हिंसा का सामना करना पड़ता है, जितना कि इस्लाम कबूल कर एक मुसलमान से शादी करने वाली औरत के साथ अत्याचार होता है। हालांकि मुसलमान औरत अक्सर अपने साथ हो रहे दुर्व्यवहार के प्रति जागरूक नहीं रहती है। क्योंकि वह इन्हीं अत्याचारों को सहते हुए बड़ी होती है। मुसलमान औरतें बचपन से ही देखती हैं कि कैसे उनकी मां, चाची और अन्य औरतों के साथ घर में ही दुर्व्यवहार, अत्याचार होता है। उसके लिए ये सब घटनाएं सामान्य होती हैं और वह बिना किसी शिकवा-शिकायत को खुद को किस्मत के हवाले कर देती है। मुसलमानों से शादी करने वाली गैर-मुस्लिम औरतें अक्सर उन परिवारों से आती हैं, जहां औरतों को नीचा नहीं दिखाया जाता, जहां औरतों को मारापीटा नहीं जाता है और जहां औरतों के साथ दुर्व्यवहार नहीं किया जाता है। मुसलमान के रूप में पैदा हुई और पली-बढ़ी औरतों की तुलना में ऐसी औरतों का मुसलमान से शादी करना अधिक कष्टकारी-दमनकारी होता है। क्योंकि पैदाइशी मुसलमान औरतें अपने ऊपर पति द्वारा किए जा रहे जुल्म को जायज ठहराते हुए उसका बचाव भी करने लगती हैं।

ईसाई, यहूदी और हिंदू भी अपना धर्म छोड़ते हैं, लेकिन इनके समुदायों में इसको लेकर अधिक गुस्सा या रोष नहीं दिखता है। जब कोई मुसलमान इस्लाम छोड़ता है तो बाकी मुसलमानों के मन में उसके प्रति नफरत और कड़वाहट भर जाती है। ऐसा इसलिए होता है, क्योंकि वे किसी के इस्लाम छोड़ने की घटना को भी अपने ऊपर जुल्म होना मान लेते हैं। **अन्य धर्मों को छोड़कर नास्तिक बने लोग अपने पैगम्बरों या धार्मिक शख्सियतों के बारे में ऐसा नहीं सोचते हैं। जबकि इस्लाम छोड़ने वाले लोग मुहम्मद से बेइंतेहा नफरत करते हैं। यह अहसास निश्चित ही पीड़ादायी है। जब लोगों को इस्लाम की हकीकत पता चलने लगती है तो उनके लिए यह बड़ा पीड़ादायी होता है। ये लोग यानी पूर्व मुस्लिम सबसे अधिक आहत इस बात को लेकर होते हैं कि इस्लाम ने उनके साथ मजहब के नाम पर धोखा किया है।**

ऑशेरो लिखते हैं: 'अपनी हत्या के कुछ देर पहले सांसद रेयान ने पीपुल्स टैम्पल के सदस्यों को संबोधित करते हुए कहा था: मैं आपको अभी यह बता सकता हूं कि आप में से कुछ लोगों से बातचीत के बाद मुझे पता चला कि कुछ लोग हैं, जिन्हें लगता है कि यह उनके जीवन में होने वाली सर्वोत्तम घटना है।' (तालियों की गड़गड़ाहट और प्रसन्नता व्यक्त करने वाली आवाजें पीछे से सुनाई दे रही थीं।)(क्राउज, 1978)

वहां उपस्थित बड़ी संख्या में लोगों की मौन स्वीकृति और इन लोगों द्वारा पहले लिखे गए पत्र इस बात के सूचक थे कि यह भावना अधिकांश लोगों की थी।'

पीपुल्स टैम्पल की तरह ही इस्लाम भी समाज के कमजोर तबके को अपनी ओर आकर्षित करता है। यह वर्ग ऐसा होता है, जो दबा-कुचला होता है और उसे लक्ष्य की आवश्यकता महसूस होती है। पश्चिम के समाज में वैयक्तिकता इतनी हावी हो चुकी है कि वहां अकेलेपन की भावना है। इस्लाम मुसलमान बनने वाले नए लोगों को सामुदायिकता का भाव देता है। यह उनको अपने जीवन को देखने का वैकल्पिक मार्ग, दिशा, अपनेपन की भावना,

श्रेष्ठता की भावना देता है, लेकिन इसके एवज में डरावनी कीमत वसूलता है। यह डरावनी कीमत अपनी संस्कृति और देश से इस सीमा तक दूर हो जाने तक की होती है कि अपने परिवार, दोस्तों को छोड़ना पड़ता है और इन्हीं अपने लोगों को नष्ट करने की साजिश करनी पड़ती है। पीपुल्स टैम्पल की तरह इस्लाम अपने अनुयायियों को अपने मजहब से बाहर की सभी चीजों और सभी इंसानों पर शक करना और गैर-मुस्लिमों को दुश्मन मानना सिखाता है। जोन्स के अनुयायियों की तरह ही, सच्चा मुसलमान किसी और तरह की जीवनशैली की संभावना से घृणा करता है। इनके अनुसार इस्लाम ही एकमात्र सही रास्ता है और बाकी सब का नाश हो जाना चाहिए। मुसलमान गैर-मुस्लिमों को लेकर कुछ अधिक ही सशंकित रहते हैं और 'बदमाश पश्चिम' के बारे में गढ़े गए षडयंत्र के सिद्धांत पर उत्कट विश्वास करते हैं। **मैंने बहुत से पढ़े-लिखे और बुद्धिमान मुसलमानों को यह कहते सुना है कि पेंटागन पर हमला और न्यूयार्क के वर्ल्ड ट्रेड सेंटर पर 11 सितम्बर, 2011 को हुआ हमला सीआईए और यहूदियों ने करवाया था। किसी में इस हद तक बौद्धिक दिवालियापन तभी आ सकता है, जब वह किसी संप्रदाय के जाल में फंस गया हो।**

सूचना पर नियंत्रण

अपने रसूल मुहम्मद की तरह ही मुसलमान भी व्यामोह नामक विकार अथवा पागलपन से पीड़ित होते हैं। ये सोचते हैं कि जो मुसलमान नहीं हैं, वे उनके दुश्मन हैं और इन दुश्मनों को नष्ट कर दिया जाना चाहिए। मैं वह वक्त याद करता हूं, जब मेरे दोस्त ने कहा कि वह सलमान रुश्दी की शैतानी आयतें नाम की किताब पढ़ना चाहता है तो मैंने गुस्से में उसे किस तरह घूरा था। मजे की बात यह है कि मैं खुद भी नहीं जानता था कि इस पुस्तक में क्या लिखा गया है। पर **एक मुसलमान के रूप में आपको कुछ भी ऐसा पढ़ने की इजाजत नहीं होती है, जिसमें इस्लाम की आलोचना की गई हो। ऐसा नहीं है कि आपको पकड़े जाने का डर होता है, बल्कि आप अल्लाह और उसकी दर्दनाक सजा से डरते हैं। इस्लाम विरोधी सामग्री पढ़ने से आपकी मजहब के प्रति निष्ठा की स्वनिर्मित भावना आहत होती है।**

पीपुल्स टैम्पल से इसकी तुलना करें। ॲशेरो लिखते हैं, 'पीपुल्स टैम्पल संप्रदाय और विशेषकर जोन्स टाउन में जिम जोन्स सूचनाओं पर पहरा रखता था। वह यह तय करता था कि कौन सी सूचनाएं सदस्यों तक पहुंचनी चाहिए और कौन सी नहीं। वह बाहर की दुनिया से आने वाले विरोधाभासी संदेशों और इससे चर्च के भीतर उपजने वाले रोष को फौरन कुचल देता था, जो सदस्यों के बीच में आपसी अविश्वास पैदा कर रहा हो। आखिरकार, कथित बाहरी शत्रु द्वारा फैलाई गई उस सूचना की विश्वनीयता ही क्या होती, जिससे पीपुल्स टैम्पल के झूठ का पर्दाफाश हो सकता था? कोई विकल्प न देख और कोई सूचना नहीं पाकर, सदस्य की रोष या प्रतिरोध की क्षमता ही न्यूनतम कर दी जाती थी।

इसके अतिरिक्त, अधिकांश सदस्यों को टैम्पल के प्रति आकर्षण की वजह अपनी अधिकतर जिम्मदारियों से मुक्त होने और अपने जीवन पर नियंत्रण छोड़ने की इच्छा भी थी। इसमें शामिल होने वालों में मुख्यत: गरीब, अल्पसंख्यक, वृद्ध और असफल लोग थे। ये लोग अपनी व्यक्तिगत स्वतंत्रता त्यागने के बदले सुरक्षा, बंधुत्व, चमत्कार के भ्रम और मुक्ति का आश्वासन पाकर प्रसन्न थे। इनके मन में यह धारणा थी कि इनकी दुर्दशा की जिम्मेदार इनकी व्यक्तिगत जिम्मेदारियां हैं। स्टैनली कैथ नाम के मनोचिकित्सक ने संप्रदायों द्वारा धर्मांतरण के तरीकों पर अध्ययन किया है। कैथ लिखते हैं: 'धर्मांतरित होने वालों को जो उन्हें बताया जाता है केवल उसी पर

भरोसा करना होता है। उनके लिए सोचना मना होता है और इससे काफी सारा तनाव कम हो जाता है' (न्यूजवीक, 1978 ए)।'' उपरोक्त तथ्य मुसलमानों की स्थिति को बखूबी बयान करता है, खासकर इस्लामिक देशों में जहां शासन या इस्लाम को लेकर थोड़ी भी विरोधाभासी सूचनाएं आने पर उन्हें तुरंत सेंसर कर दिया जाता है और मुसलमानों को केवल वही दृष्टिकोण जानने की अनुमति होती है, वो इस्लामी अधिकारियों द्वारा मुहैया कराई जाती हैं। **वास्तव में मुसलमान गैर-इस्लामिक देशों में भी इस्लाम विरोधी संदेशों को सेंसर कराने की पूरी कोशिश करते हैं। यदि कोई ऐसी किताब या लेख प्रकाशित होता है, जिसे मुसलमान पसंद नहीं करते हैं तो वे विरोध प्रदर्शन करके प्रकाशक को माफी मांगने और उस लेख या किताब को वापस लेने का दबाव बनाते हैं। आप उस नियंत्रण और सेंसरशिप की कल्पना कर सकते हैं, जो मुहम्मद मदीना में अपने अनुयायियों पर लगाता होगा। कई मौकों पर उमर ने अपनी तलवार निकाली और मुहम्मद की ओर देखा कि रसूल के प्रभुत्व को चुनौती देने वाले व्यक्ति का सिर कलम करने का उसका इशारा मिले।**

जिस तरह से मक्का का इस्लामीकरण हो गया, जिस तरह पर्सिया (ईरान), सीरिया, इजीप्ट (मिस्र) और पचास से अधिक देश इस्लाम के प्रभुत्व में आ गए, वैसे ही दुनिया के अन्य देशों पर भी खतरा बरकरार है। 2000 साल पहले चीन के संत सुन जी (जे) ने कहा था, 'अपने दुश्मन को पहचानो, स्वयं को जानो और तब तुम्हारी विजय पर कोई खतरा नहीं होगा।' ये शब्द आज भी उतने ही प्रासंगिक हैं, जितना कि तब थे। सवाल यह है कि क्या हम अपने दुश्मन को पहचान पा रहे हैं और क्या हम अपनी जड़ों को सच में जान पा रहे हैं? दुख इस बात का है कि दोनों सवालों के उत्तर न में हैं। **हम इस्लाम की गंदी हकीकत भी नहीं जानते हैं और हमारे बीच बहुत से ऐसे लोग भी हैं, जो अपने हेलेनो-क्रिश्चियन संस्कृति के द्वेष के कारण खुद को उन लोगों के पक्ष में खड़ा कर लेते हैं, जो इसी तरह का द्वेष रखते हैं।**

इब्ने-इसहाक मुहम्मद के अनुयायियों द्वारा ओरवा के साथ किए गए व्यवहार के अनुभव पर एक किस्सा बताता है। कुरैशों की ओर से ओरवा मक्का के बाहरी इलाके में स्थित हुदैबिया के शिविर में मुहम्मद से मिलने गए, ताकि उस साल उसे अपने 1500 सशस्त्र अनुयायियों के साथ मक्का में तीर्थाटन करने से रोक सकें, क्योंकि मक्का के लोग मुहम्मद व उसके आदमियों के वहां जाने को चिढ़ाने वाली कार्रवाई मान रहे थे।

मुहम्मद शांत था और उसकी तरफ से अबू बक्र बात कर रहा था। ओरवा अबू बक्र की बातों पर बिलकुल ध्यान नहीं दे रहे थे और उनकी व्यग्रता बढ़ रही थी। फिर ओरवा ने बद्दू परंपरा के अनुसार अपना हाथ आगे मुहम्मद की दाढ़ी पर फिराने के लिए आगे बढ़ाया। यह दोस्ती का हाथ और जान-पहचान बढ़ाने का एक प्रतीक था, न कि अपमान का।

इतने में वहां खड़ा एक व्यक्ति अपना हाथ लहराते हुए चिल्लाया, 'पीछे हट! अल्लाह के रसूल के पास से अपना हाथ हटा।' ओरवा इस युवा की दखलंदाजी से भौंचक्के रह गए और पूछा, 'कौन है यह इंसान?' युवक ने जवाब दिया, मैं तुम्हारा भतीजा मुग़ीरा हूं। ओरवा (अपने भतीजे द्वारा की गई कुछ हत्याओं के बदले जान बख्शवाने के लिए दिए गए मुआवजे की ओर संकेत करते हुए) चीखे, 'कृतघ्न! अभी कल ही मैंने तेरी जान छुड़ाई है।'

ओरवा अनुयायियों द्वारा अपने रसूल मुहम्मद पर लुटाए जा रहे सम्मान और समर्पण का परिमाण देखकर बड़े प्रभावित हुए। मक्का वापस लौटने पर उन्होंने लोगों से कहा कि उन्होंने बहुत से राजा, खुसरो, कैसर और नजाशी देखे हैं, लेकिन मुहम्मद के प्रति अनुयायियों का जो सम्मान और निष्ठाभाव दिखा, वैसा उन्होंने पहले कभी नहीं देखा

था। 'वे लोग उस पानी को हासिल करने के लिए दौड़ पड़ते थे, जो मुहम्मद के वजू करने के बाद छूट जाती थी। मुहम्मद के थूकते ही उसे लेने के लिए अनुयायी दौड़ पड़ते थे, मुहम्मद के बाल यदि गिरने वाले होते थे, तो उसे लपकने के लिए अनुयायी कूद पड़ते थे।'[382]

मुहम्मद ने अपने चारों ओर अपनी व्यक्तिगत इबादत का एक माहौल रच रखा था। वह अनुयायियों को ऐसा उपदेश देता था, मानो कि वह अपने अल्लाह का अवतार सरीखा हो। उसकी आज्ञा का पालन करने का मतलब अल्लाह की आज्ञा का पालन करना था और उसके हुक्म की नाफरमानी, अल्लाह के हुक्म की नाफरमानी थी। ईश्वर का अवतार होना, यही तो वो इच्छा है जो नार्सिसिस्ट मनोरोगी के मन में होती है। **जब तक मुहम्मद अल्लाह की गद्दी पर नहीं बैठ गया और एक तरह से अल्लाह नहीं हो गया, उसने हर व्यक्ति को झूठा साबित करने की कोशिश की।** जीनी मिल्स टिप्पणी करती हैं: 'मैं यह देखकर अचंभित होती थी कि चर्च के सदस्यों के बीच न के बराबर असहमति होती थी। हमारे चर्च से जुड़ने से पहले अल और मैं इस बात पर सहमत नहीं हो पाते थे कि राष्ट्रपति चुनाव में किसे वोट दें। लेकिन अब जब हम सब एक समूह से तअल्लुक रखते हैं तो परिवार के तर्क-वितर्क अतीत की बातें हो चुकी हैं। अब यह प्रश्न ही सामने नहीं आता कि कौन सही था, क्योंकि जिम जो करे, वही ठीक होता था। जब हमारा परिवार पारिवारिक समस्याओं पर चर्चा के लिए बैठता था तो हम परिवार के लोगों के विचार जानने का प्रयास नहीं करते थे। बल्कि, हम बच्चों से सीधा प्रश्न करते थे, 'जिम क्या करेगा?' एक प्रकार की 'प्रत्यक्ष नियति थी, जो कहती थी कि समूह का उद्देश्य सत्य है और यह सफल होगा। जिम सत्य था और उससे सहमति जताने वाले ही सही थे। सीधी सी बात थी कि जो उससे असहमति जताते थे, वे गलत थे।'[383]

मुसलमान दो बातों का अनुसरण करते हैं, एक है कुरान और दूसरा सुन्नत। कुरान मुहम्मद के शब्द हैं (जिसे अल्लाह के शब्द होने का दावा किया गया है।)[384] सुन्नत वह है, जो मुहम्मद के साथ के लोगों द्वारा कहे गए किस्से हैं कि रसूल ने क्या कहा और क्या किया। सुन्नत का विवरण हदीस की मोटी-मोटी किताबों में लिखा गया है। इस्लामी कानून के विद्वान सालों इन किताबों का अध्ययन करते हैं और मास्टरी हासिल करते हैं। मुसलमान इन इस्लामी विद्वानों से सलाह लिए बगैर और सुन्नत के मुताबिक सही जीवनशैली सीखे बिना कुछ नहीं करते हैं। सुन्नत मुहम्मद द्वारा बनाई गई मिसालों और जिस तरह मुहम्मद जीवन जीता था, उसके आधार पर इस्लामी तरीके से जीवन जीने का मसौदा है।

हदीस में मुहम्मद के जीवन के वो विवरण दिए गए हैं, जो उसके साथियों और बीबियों ने बताए हैं। इसमें सब कुछ विस्तार से दिया गया है। इसमें मुसलमानों का हर कार्य व व्यवहार निर्धारित किया गया है। सभी मुसलमानों के लिए इस्लामिक तरीके से जीने के लिए इनके रसूल द्वारा स्थापित मिसालों की रोशनी में इन महत्वपूर्ण नुस्खों को सालों तक सीखना अनिवार्य होता है। साथ ही इन पर इस विश्वास के साथ चलना अनिवार्य होता है ताकि इससे मुसलमान होने का फर्ज अदा किया जा सके और जन्नत में अपना 'इनाम' पक्का किया जा सके।

इस्लाम में अच्छा या बुरा सही या गलत के आधार पर निर्धारित नहीं होता है, बल्कि मुहम्मद ने जो हलाल या हराम बताया है, उस आधार पर तय होता है।

मुहम्मद आखिर कैसे वह योग्यता हासिल कर सका कि लोगों को इस हद तक गुमराह करने में कामयाब रहा? यह गुत्थी सुलझाने में मनोवैज्ञानिकों को वर्षों लगे। अस्ल में, मुहम्मद एक नार्सिसिस्ट था और उसने जो कुछ किया, वो सब उसके नार्सिसिस्टिक व्यक्तित्व विकृति का नमूना था। उसमें वो सब क्षमताएं स्वाभाविक रूप से पहले से थी, जो दूसरे सफल नार्सिसिस्टो जैसे हिटलर, स्टालिन, जिम जोन्स और सद्दाम में थी।

अॅशेरो जब जिम जोन्स के बारे में बात करते हैं तो यह लिखते हैं: 'हालांकि ऐसा नहीं था कि जिम जोन्स सामाजिक मनोवैज्ञानिक साहित्य के संपर्क में औपचारिक रूप से था, पर जिम ने लोगों के व्यवहार पर नियंत्रण करने और मन-मस्तिष्क को बदलने की शक्तिशाली और प्रभावशाली तकनीक का प्रयोग कई रूप में किया। कुछ विश्लेषकों ने उसकी युक्ति की तुलना उन लोगों से की है, जो 'ब्रेनवाश करने, पारस्परिक संवाद पर अंकुश लगाने, आत्मग्लानि को दूसरे रूप में प्रस्तुत करने और लोगों के अस्तित्व पर नियंत्रण करने जैसी युक्ति आजमाते हैं।'[385] साथ ही अलग-थलग करना, खानपान पर संयम लगाना, भौतिक रूप से दबाव डालना और पाप-स्वीकारोक्ति जैसे दांव आजमाते हैं।[386] पर ब्रेनवाश शब्द का प्रयोग इस प्रक्रिया को गूढ़ व असामान्य भी दिखाता है। जिम जोन्स के व्यक्तित्व में कुछ अजीब और डरावनी विकृति थी, जैसे कि कुलीन होने का भ्रम, परपीड़ा-आसक्ति और आत्महत्या के प्रति लगाव आदि। उसकी व्यक्तिगत प्रेरणा चाहे जो रही हो, लेकिन अपनी योजनाओं और कल्पनाओं को हकीकत में बदलने के लिए उसने सुस्थापित मनोवैज्ञानिक युक्तियों का खूब इस्तेमाल किया। उसका पूरे समुदाय को नष्ट करने का निर्णय अपने आप में पागलपन था, लेकिन इस पागलपन में भाग लेने वाले लोग सामान्य मनुष्य थे, जो एक अति उत्तेजक वातावरण, शक्तिशाली आंतरिक शक्तियों और बाह्य दबाव के वश में थे।'

यह परिभाषा इस बात की व्याख्या करती है कि किस तरह स्वस्थचित्त मनुष्यों की भीड़ भी एक अस्वस्थ मानसिकता के व्यक्ति का अनुसरण कर सकती है। ऐसा जर्मनी में हुआ। हिटलर जुनूनी था, लेकिन उस पर भरोसा करने वाले लाखों की संख्या में जर्मन पागल नहीं थे। कैसे लाखों की संख्या में शिक्षित और बुद्धिमान लोग एक मनोरोगी के जाल में फंस जाते हैं? जैसा कि हम पाते हैं कि यह कोई पहली बार नहीं हुआ था, बल्कि यह बहुत बार हो चुका है। तानाशाह अक्सर मनोरोगी होते हैं, फिर भी लाखों की भीड़ को वे नियंत्रित करते हैं और सामान्य व स्वस्थचित्त लोगों को बेवकूफ बनाते हैं।

ये मनोरोगी अपने शिकार पर जिस तरह की पकड़ रखते हैं, वो अचंभित करने वाली होती है। जोन्स टाउन में हुई भयावह घटना के तीन माह बाद, माइकल प्रोक्स ने कैलीफोर्निया के एक मोटल में प्रेस वार्ता बुलाई। माइकल प्रोक्स वह व्यक्ति था, जो उस घटना में बच गया था, क्योंकि उसे पीपुल्स टैम्पल के खजाने के बक्से को वहां से हटाने के लिए भेज दिया गया था। माइकल ने यह दावा करने के बाद कि जोन्स को गलत समझा गया, उस वीडियो रिकार्डिंग का टेप जारी करने की मांग की थी, जो सामूहिक आत्महत्या के समय बनाई गई थी। इसके फौरन बाद वह बाथरूम में गया और अपने सिर में गोली मार ली। वह एक नोट छोड़ गया, जिसमें लिखा था कि यदि उसकी मौत जोन्स टाउन पर एक और किताब लिखने की प्रेरणा देगी, तो उसका मरना सार्थक हो जाएगा। (न्यूजवीक, 1979)। क्या इस घटना से आत्मघाती हमलावर की मानसिकता पता नहीं चलती है?

जीनी व अल मिल्स उन लोगों में शामिल थे, जो पीपुल्स टैम्पल छोड़ने के बाद उसके मुखर आलोचक हो गए थे और ये लोग दुश्मन की 'मौत की सूची' में शीर्ष स्थान पर थे। जोन्स टाउन के मरने के बाद भी मिल्स ने कई बार अपनी जिंदगी पर खतरे की आशंका जताई थी। आखिर पीपुल्स टैम्पल के सामूहिक नरसंहार के ठीक एक साल बाद, जीन और उनकी बेटी की हत्या उनके बर्कले के घर में कर दी गई। जीन के किशोरवय बेटे ने बताया कि वह इसलिए बच गया, क्योंकि उस वक्त वह मकान के दूसरे हिस्से में था। आज तक इस मामले में किसी पर भी अभियोग नहीं चल सका। क्योंकि मकान में जबरदस्ती प्रवेश का कोई चिह्न नहीं था और मां-बेटी को नजदीक से गोली मारी गई थी। जीन मिल्स कहा करती थीं, 'यह (हमला) होगा, आज नहीं तो कल।' जोन्सटाउन की रिकार्डिंग

बताते हैं कि जिस दिन सामूहिक आत्महत्या की घटना हुई, जिम जोन्स ने जीनी मिल्स का नाम लेकर आरोप लगाया था और वादा किया था कि 'सैन फ्रांसिस्को में उसके अनुयायी हमारी मौत को व्यर्थ नहीं जाने देंगे।'(न्यूजवीक, 1980)

मुसलमान हर उस व्यक्ति का कत्ल करना उचित मानते हैं, जो इस्लाम छोड़ता है। इस्लाम छोड़ने वालों और इस्लाम को न मानने वालों के प्रति उनकी नफरत अविश्वसनीय रूप से बहुत अधिक होती है। मुसलमान इस्लाम छोड़ने वालों से इतनी नफरत करता है कि जब तक उसे ढूंढकर कत्ल नहीं कर देते हैं, उन्हें चैन नहीं मिलता है। जिन्हें भी इस्लाम का अनादर करना है, वो यह अपने जोखिम पर करें। इस संबंध में मुहम्मद का हुक्म स्पष्ट है:

पर यदि उन्होंने अपना मजहब छोड़ दिया है तो उन्हें गिरफ्तार करो और जहां पाओ उनको क़त्ल करो। (कुरान.4:89)

---

309 Osherow, Neal. "Making Sense of the Nonsensical: An Analysis of Jonestown." In Readings about the Social Animal, 7th edition, ed. Elliot Aronson. New York: W. H. Freeman. Available online. [URL=http://www.academicarmageddon.co.uk/library/OSHER.htm] All Osherow's quotes in this chapter are taken from this source.
310 Wikipedia.com
311 Newsweek, 1978, 1979
312 Bukhari V. 3, B.41, N 591and V.2, B.24, N. 555:
313 Milgram, S. Behavioural study of obedience. Journal of Abnormal and Social Psychology, 1963, 67, 371-378.
314 Milgram S. Liberating effects of group pressure. Journal of personality and Social Psychology, 1965, 1, 127-134.
315 Asch, S. Opinions and social pressure. Scientific American, 1955, 193.
316 Mills, J. Six years with God. New York: A & W Publishers, 1979.
317 http://www.news24.com/News24/Africa/News/0,,2-11-1447_2034654,00.html
318 Blakey, D. Affidavit: San Francisco. June 15, 1978.
319 Sahih Al-Bukhari, Volume 6, Book 60, Number 311
320 Ibn Ishaq. Sira
321 Sahih Bukhari Volume 4, Book 56, Number 807
322 Mills, J. Six years with God. New York: A & W Publishers, 1979.
323 Cahill, T. In the valley of the shadow of death. Rolling Stone. January 25, 1979.
324 Qur'an, Sura 29, Verse 8
325 Winfrey, C. Why 900 died in Guyana. New York Times Magazine, February 25, 1979.
326 Sahih Bukhari Volume 9, Book 83, Number 17
327 Sahih Bukhari Volume 9, Book 84, Number 57
328 Sunnan Abu Dawud; Book 41, Number 4994
329 Sahih Bukhari Volume 7, Book 62, Number 76
330 Sahih Bukhari Volume 9, Book 87, Number 127
331 Winfrey, C. Why 900 died in Guyana. New York Times Magazine, February 25, 1979.
332 Suicide Cult: The Inside Story of the Peoples Temple Sect and the Massacre in Guyana (201P) by Marshall Kilduff and Ron Javers (1978)
333 Winfrey, C. Why 900 died in Guyana. New York Times Magazine, February 25, 1979.
334 Mills, J. Six years with God. New York: A & W Publishers, 1979
335 Mills, J. Six years with God. New York: A & W Publishers, 1979
336 Sahih Bukhari Volume 1, Book 4, Number 170
337 Sahih Bukhari Volume 5, Book 59, Number 428
338 Sahih Bukhari Volume 5, Book 59, Number 427
339 Sahih Bukhari, Volume 7, Book 65, Number 293
340 Shih Muslim Book 026, Number 5559
341 Sahih Bukhari Volume 1, Book 8, Number 450
342 Tabaqat, Volume 1, Page 375
343 Sahih Bukhari Volume 9, Book 92, Number 379

344 Abu Hamid Muhammad al-Ghazzâlî (1058-1111) known as Algazel is one of the most celebrated scholars in the history of Islamic thought. Born in Iran, he was an Islamic theologian, philosopher, and mystic. He contributed significantly to the development of a systematic view of Sufism and its integration and acceptance in mainstream Islam.
345 Ahmad Ibn Naqib al-Misri, The Reliance of the Traveler, translated by Nuh Ha Mim Keller, Amana publications, 1997, section r8.2, page 745
346 Kasindorf, J. Jim Jones: The seduction of San Francisco. New West, December 18, 1978.
347 Speech of Pope Benedict XVI in münchen, altötting and regensburg (september 9-14, 2006)
348 The Kreutzer Sonata
349 Cahill T. In the valley of the shadow of death. Rolling Stone. January 25, 1979.
350 Lifton, R. J. Appeal of the death trip. New York Times Magazine, January 7, 1979.
351 Gallagher, N. Jonestown: The survivors' story. New York Times Magazine, November 18, 1979.
352 Bukhari Volume 1, Book 4, Number 187
353 Bukhari Volume 4, Book 52, Number 253
354 Brehm, J. Increasing cognitive dissonance by a fait-accompli. Journal of Abnormal and Social Psychology, 1959, 58, 379-382.
355 Darley, J. and Bersceild, E. Increased liking as a result of the anticipation of personal contact. Human Relations, 1967, 20, 29-40.
356 Sirat, p. 550
357 Muslim Book 004, Number 1370; and Bukhari Volume 1, Book 11, Number 626
358 www.faithfreedom.org/Testimonials/Abdulquddus.htm
359 See Aronson, E. The social animal (3rd ed.) San Francisco: W. H. Freeman and Company, 1980. AND Aronson, E. The theory of cognitive dissonance: A current perspective. In L. Berkowitz (ed.), Advances in experimental social psychology. Vol. 4, New York: Academic Press, 1969.
360 By Timothy Roche, Brian Bennett, Anne Berryman, Hilary Hylton, Siobhan Morrissey And Amany Radwan The Making of John Walker Lindh. http://www.time.com/time/magazine/article/0,9171,1003414-5,00.html
361 Ibid.
362 Aronson, E., AND Mills, J. The effects of severity of initiation on liking for a group. Journal of Abnormal and Social Psychology. 1959, 59, 177-18 1.
363 Zimbardo, P. The cognitive control of motivation. Glenview, Ill.: Scott Foreman, 1969.
364 Qur'an, Sura 9, Verse 103
365 Sahih Bukhari *Volume 3, Book 34, Number 264*
366 Sunan Abu-Dawud Book 38, Number 4348
367 Sahih Bukhari Volume 1 Number 14
368 Qur'an, Sura 3, Verse 169-170
369 Bukhari Volume 4, Book 52, Number 48
370 Bukhari Volume 4, Book 52, Number 72
371 Bukhari Volume 4, Book 52, Number 72
372 Freeman, J., AND Fraser, S. Compliance without pressure: The foot-in-the-door technique. Journal of Personality and Social Psychology, 1966, 4, 195-202. 373 Winfrey, C. Why 900 died in Guyana. New York Times Magazine, February 25, 1979. 374 Aronson, E. , and Carlsmith, J. M. Effect of the severity of threat on the devaluation of forbidden behavior. Journal of Abnormal and Social Psychology, 1963, 66. 584-588
375 Freedman, J. and Long-term behavioural effects of cognitive dissonance. Journal of Experimental Social Psychology, 1965, 1, 145-155.
376 Davos, K., AND Jones, E. Changes in interpersonal perception as a means of reducing cognitive dissonance. Journal of abnormal and Social Psychology, 1960, 61, 402-410.
377 http://blog.mashy.com/blog/loly?page=2
378 Muir; The Life of Mohammet Vol. III Ch. XII, Page 109.
379 Muir; The Life of Mohammet Vol. III Ch. XII, Page 109; (Waqidi, p. 106; Sirat p. 230; Tabari, p. 294)
380 Bukhari Volume 5, Book 59, Number 702
381 Mills, J. Six years with God. New York: A & W Publishers, 1979.
382 Sirat Ibn Ishaq, p.823
383 Mills, J. Six years with God. New York: A & W Publishers, 1979
384 There are also those who believe the Qur'an is the work of multiple hands. Among the is Denis Giron http://www.infidels.org/library/modern/denis_giron/multiple.html
385 Lifton, R. J. Appeal of the death trip. New York Times Magazine, January 7, 1979.
386 Cahill, T. In the valley of the shadow of death. Rolling Stone. January 25, 1979.

अध्याय 8

हलचल और प्रभाव

यह महज किस्मत का खेल था और बल्कि यह कहना अधिक उचित होगा कि यह अस्ल में किस्मत के खेल की पूरी श्रृंखला थी, जिसने मुहम्मद को उस परिघटना में बदल दिया, जिसके लिए वह जाना जाता है। वह ऐसी मां से पैदा हुआ, जो उसे बिलकुल प्यार नहीं करती थी। उम्र के जिस दौर में बच्चे का चरित्र निर्माण होता है, उसने वह समय गोद लिए हुए परिवार में गुजारा। बच्चे को इन निर्णायक दौर में लाड़-प्यार की जरूरत होती है। पर मुहम्मद फोस्टर परिवार यानी गोद लिए हुए परिवार में पलते हुए अपने अनाथ होने का अहसास लिए बड़ा हुआ। फिर जब जीवन में अनुशासन सीखने का वक्त आया तो उसके दादा और चाचा ने आवश्यकता से अधिक छूट देकर उसका जीवन बर्बाद किया।

मनोवैज्ञानिकों का मानना है कि नार्सिसिज्म आनुवंशिक हो सकता है। यद्यपि हम इस बात को यकीन से नहीं कह सकते हैं कि मुहम्मद की मां अमीना एनपीडी से पीड़ित थी या नहीं। इतना कहना ठीक होगा कि वह अपरिपक्व, स्वार्थी और वात्सल्यहीन मां थी, जिसने अपने बच्चे को पालने के लिए एक अजनबी के पास छोड़ दिया। जबकि ऐसा करने की कोई खास वजह समझ में नहीं आती। बच्चे के जीवन के पहले पांच साल में प्यार की कमी और इस उम्र के बाद अनुशासन की कमी नार्सिसिस्टिक पर्सनॉलिटी डिस्ऑर्डर (एनपीडी) यानी आत्मप्रवंचक व्यक्तित्व विकृति उत्पन्न होने का बड़ा कारण बन सकती है। यह लक्षण मुहम्मद में जीवनपर्यंत दिखा।

मुहम्मद बचपन से ही अकेला था। वह खुद को दूसरे बच्चों से अलग-थलग रखता था और उसका कोई दोस्त नहीं था। खदीजा से शादी होने तक वह बिलकुल एकाकी जीवन बिता रहा था। खदीजा से शादी के बाद मक्का के लोगों के बीच यकायक उसकी सामाजिक प्रतिष्ठा बढ़ गई। शादी के बाद भी वह अपना अधिकांश समय खोह में अकेला बिताता था। वह उन लोगों के बीच खुद को सहज नहीं महसूस करता था, जो उसे अपनी बराबरी का दर्जा देते थे। हां, जब वह केंद्र बिंदु होता था, तो उसे अच्छा लगता था। वह केवल अपने अनुयायियों के बीच सहज महसूस करता था, जिनके बीच में वह फर्जी दावे और जन्नती इनाम के खोखले वादे करके सम्मान हासिल करता था।

9 ए.एच. (मदीना में उसके पहुंचने के 9 साल बाद) के आसपास बनू तमीम कबीले से अरबों का एक समूह उससे मिलने आया। अरब की परंपरा के अनुसार वे उसे उसकी बीबियों के ठिकाने (हुजरात) के बाहर से आवाज लगाने लगे। 'ऐ, मुहम्मद! हम तुमसे भेंट करने बहुत दूर से आए हैं।' मुहम्मद को उनका बुलाने का अंदाज अच्छा नहीं लगा। वह चाहता था कि उसके साथ अदब और इज्जत से पेश आया जाए, जैसे कि वह कोई सुल्तान हो। उसने उन लोगों की आवाज पर कोई जवाब नहीं दिया और अपने अदृश्य अल्लाह के मुंह में यह रखकर कहलवाया कि हरेक को उसके साथ सम्मानपूर्वक पेश आना चाहिए।

ऐ मुसलमानो! अल्लाह और उसके रसूल के सामने किसी बात में आगे न बढ़ जाया करो और अल्लाह से डरते रहो। बेशक अल्लाह बड़ा सुनने वाला, जानने वाला है। (1) ऐ ईमान वालो! बोलने में अपनी आवाज पैगम्बर की

आवाज से ऊंची न किया करो और जिस तरह तुम आपस में एक दूसरे से जोर-जोर से बोला करते हो, उस तरह उनके सामने जोर से न बोला करो। ऐसा न हो कि तुम्हारा किया कराया सब व्यर्थ हो जाए और तुमको खबर भी न हो। (2) बेशक जो लोग अल्लाह के रसूल के सामने अपनी आवाज़ें धीमी कर लिया करते हैं, वे यही लोग हैं जिनके दिलों को ख़ुदा ने परहेजगारी के लिए जांच लिया है और उनके लिए (आखिरत में) बख़्शिश (माफी) और बड़ा अज्र (इनाम) है। (3) (ऐ रसूल) जो लोग तुमको हुजरों के बाहर से आवाज देते हैं, उनमें से अक्सर बेअक्ल होते हैं। (4) और अगर ये लोग इतना तहम्मुल (सब्र) करते कि तुम ख़ुद निकल कर उनके पास आ जाते (तब बात करते) तो ये उनके लिए बेहतर था और अल्लाह तो रहम वाला, मेहरबान है। (5) (कुरान49:1-5).

ये लोग अल्लाह के प्रति निरादर नहीं कर रहे थे, बस मुहम्मद के साथ उनका व्यवहार सामान्य था, जिसकी उसे उम्मीद नहीं थी। ये कोई अल्लाह के शब्द नहीं हैं, बल्कि मान्यता और सम्मान तलाश रहे एक नार्सिसिस्ट की तुच्छ चिंता है। जैसा कि किस्मत में लिखा था, मुहम्मद ऐसी अमीर औरत से मिला, जो व्यक्तित्व विकार की अपनी समस्या से पीड़ित थी। नार्सिसिस्ट अक्सर परावलंबियों में अपना साथी ढूंढते हैं। इनके सैडोमैसोचिस्टिक (स्वपीड़क व परपीड़क) संबंध दोनों को संतुष्ट करते हैं और एक विकृत तरीके से वे दोनों आश्चर्यजनक रूप से क्रियाशील और टिकाऊ रिश्ते बनाते हैं। ये एक-दूसरे को प्यार नहीं करते हैं, क्योंकि दोनों में से कोई भी प्यार की कोमल भावना को नहीं समझता है पर दोनों को एक-दूसरे की जरूरत होती है, क्योंकि दोनों एक-दूसरे की नार्सिसिज्म की भूख को शांत करते हैं।

इस बात के निष्कर्ष तक पहुंचने के लिए पर्याप्त साक्ष्य हैं कि मुहम्मद टैम्पोरल लोब इपीलैप्सी की बीमारी से ग्रस्त था। इसलिए, जब उसने घंटियों की आवाज, रोशनी, फरिश्ते व भूतों को देखने का दावा किया तो वह झूठ नहीं बोल रहा था, बल्कि उसे इन सबकी भ्रांति हो रही थी। अपनी उम्र के पांचवें साल से लेकर किशोरावस्था और फिर व्यस्क होने पर उसे जीवन में कई बार मिर्गी के दौरे पड़े थे।

हालांकि उम्र बढ़ने के साथ उसे दौरे पड़ने बंद हो गए। टीएलई के मरीजों के साथ अक्सर ऐसा होता है। यद्यपि अल्लाह के रसूल होने का दर्जा हासिल करने और ऐश्वर्य प्राप्त करने की नार्सिस्टिक भूख के कारण मुहम्मद तब भी आयतों का जाल बुनता रहा, जबकि उसे मतिविभ्रामक अनुभव होने बंद हो चुके थे। एक नार्सिसिस्ट के रूप में वह खुद को श्रेष्ठ प्राणी मानता था और समझता था कि उसके पास केवल झूठ बोलने का ही लाइसेंस नहीं है, बल्कि उसके पास नियम-कायदे तोड़ने का भी विधिक अधिकार है और साथ ही वह जो भी करे, उसे स्वीकार्य व सही माना जाए। नार्सिसिस्ट अपने आप को किसी मर्यादा से नहीं बांधते हैं। वे समझते हैं कि कानून सामान्य लोगों के लिए बने हैं, उनके लिए नहीं हैं। वे स्वयं को नियम-कायदे या किसी बंधन से ऊपर मानते हैं।

नार्सिसिस्ट सोचता है वह ब्रह्मांड के केंद्र में है, उसी के कारण दुनिया का अस्तित्व है, वह ब्रह्मांड में सर्वोत्तम है और सबको उसे प्यार करना चाहिए, उसकी आज्ञा का पालन करना चाहिए और उससे डरना चाहिए। वह दूसरों को तभी तक महत्व देता है, जब तक कि वह व्यक्ति उसके काम का हो और उसके पाखंड में उसकी मदद कर सके, उसकी नार्सिस्टिक भूख को शांत करता रहे। यदि व्यक्ति ऐसा नहीं कर पाता है, तो नार्सिसिस्ट उसे जीने लायक नहीं समझता। एक नार्सिसिस्ट पूरे होशोहवास में एवं बिना किसी पछतावे के लाखों लोगों का कत्ल करने में सक्षम होता है। सद्दाम हुसैन ने ईराक में हजारों लोगों को जहरीली गैस से मरवा दिया और मरने के दिन तक बागी बना रहा। वह कहता रहा कि राज्य के मुखिया के रूप में देश में स्थायित्व लाने के लिए कत्ल करना उसका विशेषाधिकार था। उसने जो नृशंस हत्याएं कराईं, उस पर कभी उसे पछतावा नहीं हुआ। **सद्दाम, हिटलर और मुहम्मद खूब झूठ बोलते थे, लेकिन उन्हें झूठा कहना बहुत सतही होगा, क्योंकि ये अपने झूठ पर विश्वास करते थे। ये मनोरोगी थे। मुहम्मद का बहुत सा विभ्रम उसे वास्तविक लगता था। फिर भी वह अधिकांश समय यह**

सोचकर झूठ बोलता रहा कि ऐसा करना उसका अधिकार है, क्योंकि वह अद्वितीय, विशेष और कानून से ऊपर है।

कोई भी इंसान न तो हमेशा झूठ बोलता है और न ही हमेशा सच। मुहम्मद भी इस मामले में आम इंसानों से अलग नहीं था। खोह में उसके अनुभव वास्तविक होते थे, फिर भी वह अधिकतर समय झूठ बोलता था और अपने झूठ को जायज मानता था। वह अपने आपको इतना महत्वपूर्ण और अपने मकसद को इतना बड़ा मानता था कि छोटी-छोटी बातों में भी झूठ बोलता था और उसे नहीं लगता था कि इन छोटी-छोटी बातों पर उसका झूठ उसका किसी दिन पर्दाफाश भी करेगा। वह सोचता था कि सच बोलना, ईमानदार रहना आदि नियम-कायदे सिर्फ छोटे लोगों के लिए बनाए गए हैं, न कि ब्रह्मांड के सर्वश्रेष्ठ किसी ऐसे इंसान के लिए, जिसे अल्लाह ने अपना रसूल चुना है, और जिस इंसान के लिए अल्लाह ने यह कायनात बनाई है।

मुहम्मद में ऑब्सेसिव-कम्पल्सिव डिस्ऑर्डर की भी बीमारी थी। मुहम्मद का मजहबी कर्मकांडों के प्रति अति की मात्रा में आग्रह उसमें इस बीमारी का संकेत करता है। मजे की बात यह है कि मुहम्मद खुद इनमें से अधिक कर्मकांड तब करता था, जब उसे कोई देख नहीं रहा होता था। हालांकि उसके साथी इन सबको उसकी बीमारी नहीं मानते हैं, बल्कि इनकी व्याख्या उसकी नेकनीयती बताते हुए करते हैं।

मुहम्मद अंधविश्वासी इंसान था। उसने बहुत सी बेतुकी और हास्यास्प्रद बातें कही हैं, जिसको उसके अनुयायी बिना सोचे-समझे ग्रहण कर लेते हैं। जैसे कि:

यदि तुममें से कोई सोकर उठता है और शौच-स्नान के लिए जाता है तो उसे अपनी नाक में पानी डालकर धोना चाहिए और फिर पानी तीन बार उलीचना चाहिए, क्योंकि शैतान पूरी रात नाक के ऊपरी भाग में रहता है।[387]

मुहम्मद ने जब ये बेवकूफी भरी बातें कही थीं तो वह झूठ नहीं बोल रहा था। दरअस्ल वह जो कहता था, उस पर वह खुद यकीन करता था। मुहम्मद को समझने के लिए हमें उसकी मनोविकृति समझनी होगी। वह झूठा नहीं था, बल्कि वह मनोरोगी था जो कई तरह की मानसिक बीमारियों से ग्रस्त था। उसने झूठ बोला था और खुद में पक्का मानता था कि उसे ऐसा करने का अधिकार है और यदि कोई उसकी बातों पर भरोसा नहीं करता था तो वह चिढ़ जाता था।

उसे कभी अपने दावों का प्रमाण देने की आवश्यकता महसूस नहीं हुई। जहां तक उसका संबंध है तो बिलकुल यही तथ्य है कि इस तरह का उच्च प्राणी यदि कोई दावा करता है तो वह दावा ही अपने आप में उसकी वैधता का प्रमाण है और प्रत्येक व्यक्ति को उस दावे को बिना संशय के मानना होगा, या फिर विनाश का सामना करना होगा।

आज करोड़ों स्वस्थचित्त और बुद्धिमान लोग अंधों की तरह एक मनोविकृत (पागल) इंसान पर भरोसा करते हैं और उसका अनुसरण करते हैं। पूरी उम्मत में मुहम्मद के पागलपन के लक्षण स्पष्ट दिखते हैं। **मुसलमान इस्लाम के मकसद को आगे बढ़ाने के लिए बेशर्मी से झूठ बोलते हैं। ईमानदार लोग जो अपने लिए कभी झूठ नहीं बोलते, वे इस्लाम के लिए भी शर्म-लिहाज छोड़कर झूठ बोलते हैं।** एक ओर वे जानते हैं कि जो वे कह रहे हैं, वो असत्य है और दूसरी ओर वे बड़े विश्वास के साथ उन बातों को कहते हैं और यदि उसका खंडन किया जाए तो वे आहत हो जाते हैं। 'तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई करोड़ों की आस्था पर सवाल उठाने की?' मुसलमान असहमति के प्रति असहिष्णु होते हैं। वे यह नहीं सोचते कि यदि कोई सवाल खड़ा हुआ है तो उसका जवाब तर्क से दिया जाए, बल्कि वे आपको इस्लामोफोबिक, नफरत फैलाने वाला और नस्लभेदी कहकर हमला करने लगते हैं। इस मामले में मुसलमान वैसे ही व्यवहार करते हैं जैसा उनका रसूल करता था। उनका रसूल भी उन लोगों को नासमझ, अंधा, बहरा और गूंगा कहता था, जो उसकी झूठी बातों पर भरोसा नहीं करते थे।[388] जो उसकी बातों पर संदेह करते थे,

उन्हें यह कहते हुए धमकी देता था कि, 'कयामत के दिन हम उनको (काफिरों को) पकड़कर लाएंगे, हम उन लोगों को मुंह के बल अंधे और गूंगे और बहरे कब्रों से उठाएंगे। उनका ठिकाना जहन्नुम है: जब जहन्नुम में आग बुझने वाली होगी तो हम उन लोगों पर आग और भड़का देंगे। (कुरान.17:97)

इस्लाम झूठ मजहब ही नहीं, बल्कि एक मानसिक बीमारी भी है। यह एक ऐसी बीमारी है, जो अच्छे-खासे स्वस्थचित्त इंसान को भी पागलों की जमात में ले जाकर खड़ा कर देती है।

सामाजिक-राजनैतिक कारक

यह उल्लेख करना जरूरी होगा कि इस्लाम की सफलता का एक बड़ा कारक, जिस दौर में मुहम्मद ने अपनी पैगम्बरी की शुरुआत की, उस दौर का सामाजिक-राजनैतिक परिवेश भी था। सातवीं सदी के अरब में किसी केंद्रीय सत्ता का अभाव था। वहां का समाज जनजातीय था और प्रत्येक जनजाति (कबीला) स्वायत्तापूर्वक व स्वतंत्रतापूर्वक रहती थी। आपसी प्रतिद्वंद्विता अक्सर आपसी झगड़े या संघर्ष का रूप ले लेती थी, लेकिन थोड़ा-बहुत खून बहने के बाद मामला शांत हो जाता था। विभिन्न जनजातियां अपनी सुरक्षा के लिए एक-दूसरे से गठबंधन करती थीं। कुछ घात लगाकर लूटपाट करने के जरिए आजीविका चलाते थे। केंद्रीय सत्ता का अभाव था, इसलिए मुहम्मद और लुटेरों के उसके गिरोह को अनुकूल वातावरण मिल गया। **मुहम्मद अपने लुटेरे गिरोह के साथ एक कबीले पर हमला करता, जबकि दूसरे से गठबंधन करके डकैती में शामिल होने का न्यौता भी देता और लूट के माल में हिस्सा देता था। हालांकि एक दिन वह दिन भी आता था, जब मुहम्मद अपना साथ दे रहे कबीले को ही शिकार बनाते हुए उन्हें लूटता और सामूहिक कत्ल करता था।**

उसने मदीना के यहूदियों के साथ एक समझौता किया ताकि वह मक्का के कारवां को लूट सके। जब वह ताकतवर हो गया तो उसने यहूदियों से मांग की कि वे उसकी जंग का खर्चा दें। इसके बाद उसने यहूदियों का सबकुछ छीन लिया और उनका सामूहिक नरसंहार करके उन्हें समाप्त कर दिया। उसने मक्का के लोगों से भी संधि की और इस संधि में वादा किया कि अब वह दस साल तक उनसे शत्रुता नहीं रखेगा। इस संधि से उसे उत्तरी नगरों पर ध्यान केंद्रित करने और खैबर व फिदक पर हमला करने का मौका मिल गया। इसके बाद मुहम्मद ने मक्का वालों से की गई संधि तोड़ दी और बनू तमीम के साथ संधि की। उसने बनू तमीम कबीले से कहा कि यदि वे मक्का पर हमला करने में उसका साथ देंगे तो उन्हें वहां से लूटे गए माल में हिस्सा और सुरक्षा मिलेगी। जब मक्का तहस-नहस हो गया तो वह खुद को सुरक्षित महसूस करने लगा और अब उसे बनू तमीम कबीले की सहायता की जरूरत नहीं रह गई थी। उसने बनू तमीम से किए गए वादे को पूरा करने से इंकार कर दिया और उन्हें मक्का लूटने में मिले माल में हिस्सा देने के बजाय कहने लगा कि बनू तमीम कबीला उसे रंगदारी दे या जंग का सामना करे।

मक्का पर फतह हासिल करने के बाद मुहम्मद खुद को इतना ताकतवर मानने लगा कि उसने अपने अल्लाह से यह सूरा कहलवाया:

(ऐ मुसलमानों) जिन मूर्तिपूजकों से तुम लोगों ने सुलह की थी। अब अल्लाह और उसके रसूल की तरफ से उनसे (एक दम) बेज़ारी है। (1) तो (ऐ मूर्तिपूजकों) बस तुम चार महीने (ज़ीकादा, जिल हिज्जा, मुहर्रम, रजब) चैन से अपनी ज़मीन में घूम-फिर लो और यह जान लो कि तुम (किसी तरह) अल्लाह को कमजोर नहीं कर सकते। यह भी जान लो कि अल्लाह काफिरों को रुसवा करके रहेगा। (2) और अल्लाह और उसके रसूल की तरफ से हज अकबर के दिन तुम लोगों को मुनादी की जाती है कि अल्लाह और उसका रसूल मूर्तिपूजकों के प्रति किसी भी तरह जवाबदेह, जिम्मेदार नहीं है। तो (मूर्तिपूजकों) अगर तुम लोगों ने (अब भी) तौबा की तो तुम्हारे

हक़ में यही बेहतर है। और अगर तुम लोगों ने इससे मुंह मोड़ा तो समझ लो कि तुम लोग अल्लाह को बिलकुल कमजोर नहीं कर सकते और जिन लोगों ने कुफ्र इख्तियार किया है (अर्थात मुसलमान नहीं हैं), उनको दर्दनाक सजा मिलने का ऐलान होगा। (कुरान. 9:1–3)

इस प्रकार मुहम्मद ने यह स्पष्ट किया कि वह अब किसी भी ऐसी सुलह से नहीं बंधा है, जो उसने पहले की थी और अब जो मुसलमान नहीं हैं, उनके पास अपना धर्म बदल कर इस्लाम स्वीकार करने के लिए केवल चार महीने हैं और वे उसे रंगदारी दें अथवा दर्दनाक सजा भुगतने को तैयार रहें।

मैं आशा करता हूं कि **अब तक यह स्पष्ट हो चुका होगा कि इस्लाम कुछ और नहीं, बस हुकूमत का टूल है, जिसका अविष्कार एक मनोविकृत नार्सिसिस्ट ने किया और इस्लाम में सुधार का कोई भी विचार व्यर्थ है। इस्लाम में सुधार तो नहीं किया जा सकता है, लेकिन इसे जड़ से खत्म किया जा सकता है।** आप किसी झूठ से छुटकारा, इसमें सुधार करके नहीं पा सकते, क्योंकि एक झूठ छिपाने के लिए और अधिक झूठ बोलना पड़ता है। झूठ से छुटकारा पाने का उपाय बस एक ही है और वह है सत्य सामने लाना। आप इस्लाम के आकार से मत डरिए। **इस्लाम झूठ की रेत से बनी ऊंची इमारत है। एक बार इसकी नींव हिली तो रेत भरभराकर गिर जाएगी और यह भवन ताश के पत्तों की तरह बिखर जाएगा। वास्तव में इस्लाम का अंत सामने दिख रहा है।**

सभ्यताओं के मध्य संवाद

मुहम्मद के अहंकारोन्माद, आक्रामक आत्मविश्वास और आत्मस्थापना, अधिकार भाव और अन्य नार्सिस्टिक लक्षण हर मुसलमान में पाए जाते हैं। मुसलमानों में ये लक्षण इस हद तक होते हैं कि वे अपने रसूल का अंधा अनुसरण करते हुए उसी तरह जीने की कोशिश करते हैं। राजा हो या रंक हो, राष्ट्रपति हो या चौकीदार, यदि वह मुसलमान है तो अपने को अन्य मानवों से श्रेष्ठ मानता है। इनको यह विश्वास है कि एक दिन इस्लाम पूरी दुनिया पर राज करेगा और संसार की मानवजाति इस्लाम के अधीन होगी, ये लोग दुनिया के मालिक होंगे।

मलेशिया के प्रधानमंत्री डॉ महातीर मुहम्मद ने 2003 में ऑर्गनाइजेशन ऑफ इस्लामिक कांफ्रेंस (ओआईसी) में अपने भाषण में स्वयं को महत्व देने की भावना का प्रदर्शन किया था। महातीर मुहम्मद ने ये स्वीकार किया था कि मुसलमानों ने यूनानी और इस्लाम के पहले के विद्वानों का अध्ययन करके अपनी 'सभ्यता' तैयार की। फिर महातीर मुहम्मद डींगे हांकते हुए कहने लगे कि यूरोप के लोगों को अपनी ही शास्त्रीय विरासत तक पहुंचने के लिए मुसलमानों के कदमों में गिरकर गिडगिड़ाना पड़ा। अपने भाषण में उन्होंने मुसलमानों को बंदूक और राकेट, बम और युद्ध विमान, टैंक और युद्ध के साजोसामान इकट्ठा करने का आह्वान किया, ताकि गैर-मुस्लिम आलोचकों को परास्त कर उन पर फिर से शासन किया जा सके।[389]

मुसलमानों द्वारा दुनियाभर में किए जा रहे दंगे-फसाद, प्रदर्शन और हिंसा उनके नार्सिस्टिक व्यक्तित्व के लक्षण का प्रकटीकरण हैं। यह मुसलमानों की हीन भावना ही है, जो उन्हें अहंकारोन्माद और श्रेष्ठ होने का दंभ पालने पर मजबूर करती है। वे अहंकार दिखाकर और डींगें हांककर अपनी हीन भावना छिपाने का प्रयास करते हैं। वे अपनी श्रेष्ठता धमकी, हिंसा और आतंक के माध्यम से स्थापित करना चाहते हैं। मुसलमान दावा करते हैं कि वे 'सभ्यताओं के मध्य संवाद' चाहते हैं। 'सभ्यताओं के मध्य संवाद' नामक पारिभाषिक पद ईरान के पूर्व राष्ट्रपति द्वारा सैमुअल पी. हंटिंगटन के सिद्धांत 'सभ्यताओं के मध्य संघर्ष' के जवाब में दिया गया था। पर कैसी सभ्यता? **इस्लाम तो सभ्यता के ही खिलाफ है। उनके दिमाग में तो संवाद का विकल्प सबसे आखिर में तब होता है, जब उनकी दूसरी प्रत्येक युक्ति नाकाम हो जाए।**

सितम्बर, 2006 में मुसलमान फिर से एक बार आगबबूला थे। इस बार वे जर्मनी के रीगेंसबर्ग विश्वविद्यालय

में पोप बेनीडिक्ट 15वें के भाषण पर उग्र हो गए थे। 'विश्वास और तर्क' शीर्षक वाले अपने भाषण में इस पादरी ने ईश्वर के बारे में ईसाइयत और इस्लामी धारणा में बुनियादी अंतर का चित्रण किया था। उनका कहना था कि ईसाई के मत में ईश्वर वस्तुत: तर्कसंगत (चैतन्य) है, जबकि इस्लाम की नजर में ईश्वर मनुष्य के भौतिक अनुभवों से परे है। ईसाइयत में ईश्वर की धारणा ईसामसीह (लोगोज) की यूनानी संकल्पना से प्रेरित है। जबकि इस्लाम में ईश्वर की धारणा यह है कि वह मानवीय अनुभव से परे हैं, अपनी प्रसन्नता के लिए कुछ करता है और किसी चीज से बंधा नहीं है, तर्क से भी नहीं। इसलिए इस्लाम में जिस ईश्वर की धारणा की गई है, उसके कार्य मानव के लिए मूर्खतापूर्ण अथवा तर्कहीन प्रतीत हो सकते हैं।

पोप बेनीडिक्ट ने 1931 में विद्वान बैजेंटाइन सम्राट मैनुअल द्वितीय पैलिओलॉगस और एक पर्शियन विद्वान के बीच ईसाइयत और इस्लाम विषय पर हुई एक परिचर्चा का हवाला दिया।

पोप ने कहा, 'उस परिचर्चा में सम्राट ने पवित्र युद्ध के विषय को उठाते हुए अपने दुभाषिए से कहा था, 'मुझे दिखाओ कि ऐसी कौन सी चीज है, जो मुहम्मद ने दुनिया को नई दी है। मुहम्मद ने जो चीजें दी हैं, उनमें केवल दुष्टता और अमानवीयता है, जैसे कि मुहम्मद का अपने मजहब का प्रसार तलवार के दम पर करने का हुक्म देना।' सम्राट ने अपनी बात मजबूती से कहने के बाद उन कारणों को विस्तार से बताया कि क्यों हिंसा के जरिए मजहब का प्रचार-प्रसार करना गलत है। हिंसा ईश्वर की प्रकृति और आत्मा की प्रकृति के प्रतिकूल है। धर्म आत्मा का उदय करता है, न कि शरीर का। जो कोई भी किसी को किसी धर्म के निकट ले जाता है, उसे बिना हिंसा या धमकी के, ठीक से अपनी बात कहना और उचित तर्क रखना आना चाहिए।... किसी की आत्मा को अपनी बात समझाने के लिए, मजबूत भुजा अथवा किसी प्रकार का हथियार या फिर मौत की धमकी देने वाले किसी साधन की आवश्यकता नहीं होती है।... इस संवाद में हिंसक धर्मांतरण के विरुद्ध सबसे मजबूत कथन यह है कि: बुद्धि-विवेक के अनुकूल व्यवहार न करना ईश्वर की प्रकृति के विरुद्ध होता है।'

पोप ने फिर थिओडोर खुरी का हवाला दिया, जिनकी पुस्तक से उपरोक्त कथा ली गई थी। थिओडोर का प्रेक्षण था: 'यूनानी दर्शन से प्रेरित बैजेंटाइन के रूप में इस सम्राट के लिए यह कथन स्वत:सिद्ध था। लेकिन मुसलमानों के लिए ईश्वर पूर्णत: मानवीय अनुभव से परे है। उस इस्लामी ईश्वर की इच्छा किसी तर्क या किसी पद के अधीन नहीं है। यहां खुरी प्रख्यात फ्रेंच इस्लामिस्ट आर. अर्नालदेज के अध्ययन का हवाला देते हैं। अर्नालदेज ने इंगित किया है कि इब्ने-हम ने बताया कि 'अल्लाह अपने शब्दों से भी नहीं बंधा है और ऐसी कोई चीज नहीं है, जो उसे हम तक सत्य प्रकट करने को विवश करे। यदि यह अल्लाह की इच्छा होती तो हमें मूर्तिपूजा भी करनी पड़ती।'

पोप के इस भाषण से मुसलमान आहत हो गए। उनके नेताओं ने उग्र प्रदर्शन किया और पादरी की निंदा की। कुछ ने तो पादरी की हत्या का आह्वान किया। यह बताने की जरूरत नहीं है कि पोप के भाषण के बाद कई दंगे हुए और तमाम निर्दोष लोगों की जानें गईं। कोई संवाद हो कैसे सकता है, जबकि इस्लाम पर सवाल उठाने भर से हिंसा होने लगती है और सवाल उठाने वाले का कत्ल हो जाता है? यदि इस्लाम को 'गलत समझा गया' है तो क्या मुसलमानों को प्रश्नों का स्वागत करते हुए उनका जवाब नहीं देना चाहिए, ताकि इस्लाम को लेकर गलतफहमी दूर हो सके? कुरान में बहुत सारी आयतें हैं, जिनका स्पष्टीकरण जरूरी है। गैर-मुस्लिमों को जहां पाओ, वहीं कत्ल करो। (कुरान.2:191) उनसे तब तक लड़ो, जब तक कि इस्लाम से असहमति जताने वाला एक भी व्यक्ति और अल्लाह के मजहब के अलावा कोई दूसरा मजहब धरती पर है। (कुरान.2:193) अल्लाह की नजर में प्राणियों में सबसे दुष्ट वह है, जो इस्लाम को नहीं मानता। (कुरान.8:55) 'मैं उनके मन में खौफ पैदा कर दूंगा, जो मुसलमान नहीं हैं: ऐसे लोगों के गले काट डालो और उनकी उंगलियों को छपक दो' (कुरान.9:28) आदि।

कोई मुसलमान इन खूनी आयतों की व्याख्या कैसे करेगा? क्या इन आयतों के साथ ही बहुत सारी कुरानी आयतें दुनिया में फैले इस्लामी हिंसा की जिम्मेदार नहीं हैं? अधिकतर धर्मों का अतीत हिंसक रहा है, लेकिन इस्लाम एकमात्र ऐसा धर्म है जो अपनी पवित्र पुस्तक में हिंसा का उपदेश देता है।

सम्राट मैनुअल द्वितीय पैलिओगस के प्रश्न आज तक अनुत्तरित हैं।

'तुम्हारी संवेदना मर गई है, तुम्हें माफी मांगनी चाहिए, तुम धर्मांध हो, तुम हमें हिंसक होने पर मजबूर कर रहे हो, वगैरा..वगैरा..' ये उन प्रश्नों के तार्किक उत्तर नहीं हैं। ये तो बस सवालों को टालने वाली बातें हैं। यदि मुसलमान संवाद चाहते हैं तो उन्हें कुछ सख्त सवालों का जवाब देने को खासकर कुरान के बारे में और उनके रसूल के कृत्यों के बारे में तैयार होना पड़ेगा।

अपने भाषण में पोप ने पश्चिम जगत का आह्वान किया कि वे तर्क के आधार पर ईश्वर पर विश्वास और मजबूत करें। फिर उन्होंने कहा: 'यह उस महान ईसामसीह के लिए है, यह उस तर्क की व्यापकता के लिए है कि हमने इस 'संस्कृतियों का संवाद' कार्यक्रम में अपने साझीदारों को आमंत्रित किया है।'

अधिकतर मुसलमानों के लिए संवाद का अर्थ होता है कि आप उनकी बात सुनें और फिर उनसे सहमति जता दें। यदि आपने ऐसा सवाल किया, जिसका उत्तर हमारे पास नहीं है तो हम आहत हो जाएंगे और आप शर्मिंदा। इस प्रकार के एक दूसरे के बिलकुल उलट दृष्टिकोण के साथ संवाद कैसे संभव हो सकता है?

यदि कुरान कहता है कि उसके धर्म में कोई जबरदस्ती नहीं है तो फिर कुरान की इतनी सारी आयतों में मुसलमानों को लड़ने और जिहाद छेड़ने के लिए क्यों कहा गया है? क्यों कुरान की इतनी सारी आयतें धर्म की स्वतंत्रता के प्रति असहिष्णु हैं? क्यों इस्लाम छोड़ने की सजा मौत है?

यह संवाद का दौर है। पर संवाद वास्तविक प्रश्नों के आधार पर होना चाहिए। संवाद सख्त सवालों के आधार पर होना चाहिए। संवाद उन प्रश्नों के साथ होना चाहिए, जिनका आज तक उत्तर नहीं दिया गया। एक जगह मिलना, एक-दूसरे को गले लगाना और हाथ मिलाना संवाद नहीं होता है। 1400 सालों की गंदगी को छिपाने से हम एक-दूसरे के करीब नहीं आने वाले। इस्लाम को लेकर बहुत से परेशान करने वाले सवाल हैं, जिनका जवाब मिलना आवश्यक है। मुहम्मद के चरित्र की फिर से समीक्षा करनी होगी और उसके पाठ का पुनर्मूल्यांकन करना होगा।

दुनिया में अब तक कितने युद्ध हो चुके हैं, कितना खून बह चुका है और कितनी निर्मम हत्याएं हो चुकी हैं। अब इन सबकी और जरूरत नहीं है। हमें बात करना चाहिए। हमें अपने मजहबी उन्माद को किनारे रखकर वास्तविक संवाद स्थापित करना चाहिए और सख्त सवालों का जवाब देना चाहिए। तब हम इस्लाम को देख पाएंगे कि यह दूर-दूर तक शांति का मजहब नहीं है, बल्कि नफरत का सिद्धांत है। इस्लाम को धर्मों की श्रेणी में रखना और बराबरी का दर्जा देना गंभीर भूल है। इस्लाम एक फासीवादी सियासी आंदोलन है, तो एक विक्षिप्त इंसान द्वारा खोजे गए नाजीवाद का एक रूप है। इस्लाम लोगों के दिलों को जोड़ने के लिए नहीं बनाया गया, बल्कि लोगों को बांटने के लिए, उनके दिलों में नफरत भरने के लिए, प्रत्येक व्यक्ति को गुलाम बनाने के लिए बनाया गया है। यह दुनिया को गुलाम बनाने के लिए धर्म के बहाने से लाया गया है। **इस्लाम अपने अनुयायियों के लिए दुर्दशा लाता है और दूसरे लोगों के लिए आतंक।** इस्लाम के अनुयायी ख्वाब देखते हैं कि प्रत्येक व्यक्ति इस्लाम कबूल करेगा और ऐसे में मारकाट का दौर और तेज होगा, क्योंकि मुसलमान एक-दूसरे से जंग लड़ते रहेंगे। प्रत्येक समूह सच्चे इस्लाम का अपना संस्करण थोपने का प्रयास करेगा और दूसरों को विधर्मी और मौत की सजा का हकदार कहता रहेगा।

मानवता को बचाना है तो इस्लाम को समूल नष्ट करना होगा। इस्लाम को सत्य ही नष्ट करेगा। सत्य का सामना होने पर इस्लाम के पास बचाव का रास्ता नहीं होगा। मुहम्मद को यह बात मालूम थी। इसलिए उसने

इस्लाम की आलोचना को प्रतिबंधित किया और इस्लाम से बाहर जाने वालों के लिए मौत की सजा मुकर्रर की।

मानव जाति के भविष्य को बचाने के लिए दुनिया में इस्लाम के लिए कोई जगह नहीं होनी चाहिए। इस्लाम खत्म होना चाहिए, न केवल इसलिए कि यह असत्य है, बल्कि इसलिए भी क्योंकि यह हिंसक, असहिष्णु और बुरा है।

यह हम पर निर्भर है कि इस्लाम कैसे समाप्त होगा। यदि हम कुछ नहीं करेंगे और इसे बेरोकटोक बढ़ने देंगे तो मुसलमान दुनिया को तीसरे विश्वयुद्ध में झोंक देंगे और परमाणु युद्ध (आर्मागेडन) में लाखों-करोड़ों लोगों की जान ले लेंगे। साम्यवाद एक बुराई था, लेकिन साम्यवादी जीवन को प्यार करते थे और इसी कारण शीतयुद्ध बिना परमाणु संघर्ष के समाप्त हो गया। हम जितना अधिक जिंदगी से प्यार करते हैं, मुसलमान उससे कहीं अधिक मौत से प्यार करते हैं। इससे सबकुछ बदल जाता है। आप इसे पागलपन कह सकते हैं, लेकिन उनके लिए यह जीवन के बाद की आस्था है।

परमाणु आर्मागेडन (धर्मयुद्ध) इस्लाम को समाप्त कर देगा, लेकिन ऐसा मानवता का बड़ा हिस्सा मिटाने के बाद होगा। **यदि हम अभी चेत जाएं और संवाद शुरू कर दें, इस्लाम पर सवाल उठाना शुरू कर दें और मुसलमानों को सच देखने में मदद करना शुरू कर दें तो इस्लाम कमजोर हो जाएगा और मुसलमान आजाद हो जाएंगे। ये लोग एक बड़े झूठ के पीड़ित हैं। इन्हें सजा नहीं, बल्कि मार्गदर्शन की आवश्यकता है।** यदि संवाद नाकाम हुआ तो युद्ध तय है। यदि नाजीवाद के शक्तिशाली होने से पहले इसे विचारधारा से हरा दिया गया होता तो 50 मिलियन लोगों को अपनी जान नहीं गंवानी पड़ती। मुसलमानों और स्वतंत्र दुनिया के बीच परमाणु युद्ध इससे भी कहीं अधिक लोगों की जान ले लेगा।

एक बात तय है कि इस्लाम के गिने-चुने दिन बचे हैं। यह या तो महाविस्फोट में समाप्त हो जाएगा, जैसे कि नाजीवाद मिटा था, अथवा यह साम्यवाद की तरह खुद ही इतने टुकड़ों में बंट जाएगा कि मुसलमान जब सत्य देखेंगे तो बड़ी संख्या में इस्लाम छोड़ेंगे।

इन सवालों के जवाब इस पर निर्भर करेंगे कि हम आज क्या करते हैं। प्रकृति अच्छा या बुरा नहीं पहचानती है: यह केवल बल को पहचानती है। मुसलमान उग्रवादी हैं। वे सक्रियता से अपने मजहब का प्रचार धोखा देकर और आतंक के जरिए कर रहे हैं। धोखा और आतंक जिहाद की दो रणनीतियां हैं। **जिहाद वह संघर्ष है, जिसमें सभी मुसलमान अपनी-अपनी क्षमता के हिसाब से शामिल होते हैं। कुछ आतंकवाद के माध्यम से अपनी जिंदगी देकर जिहाद में शामिल होते हैं, कुछ आतंकवाद के वित्तपोषण के लिए धन देकर इसमें शामिल होते हैं तो बाकी अलतकैया चलाकर (धोखा देकर) अर्थात इस्लाम के शांति के मजहब होने का भ्रम फैलाकर इसमें शामिल होते हैं। सभी मुसलमान जिहाद का हिस्सा हैं। इनका मकसद दुनिया को कब्जे में लेकर इस्लामी हुकूमत स्थापित करना है।**

गैर-मुस्लिम शांत, अपने आप में मस्त और बहुसंस्कृतिवाद एवं धर्म की स्वतंत्रता में विश्वास करते हैं। इससे शक्ति संतुलन बिगड़ रहा है। इस असंतुलन के कारण इस्लाम को अपनी शुरुआत से धार मिल गई। उनके उग्र स्वभाव और दूसरों की सहिष्णुता के कारण, मुसलमानों ने काफी ताकतवर देशों को भी काबू में कर लिया है। इन कामयाबियों की वजह से मुसलमानों का दुस्साहस, घमंड और बढ़ गया है। यदि गैर-मुस्लिम देश इस्लाम के प्रसार को रोकने के लिए खड़े नहीं होते हैं तो इस्लाम जीत जाएगा और दुनिया से सभ्यता का विनाश हो जाएगा।

दृढ़-संकल्प वाले मुट्ठीभर आतंकवादी सबको काबू में कर लेते हैं और बड़ी संख्या में अनजान नागरिकों को बंधक बना लेते हैं। मुहम्मद डींगें हांकता था, 'मैं आतंक से विजेता बना हूं।'[390] और मुसलमान उसी के उदाहरण

का अनुसरण करते हैं। गैर-मुस्लिम बेखबर होते हैं, तैयार नहीं होते हैं और यही इनकी कमजोरी है। जब तक हम इस्लाम को शत्रु के रूप में नहीं देखेंगे, हमारी सभ्यता पर खतरा बना रहेगा। हमें आगे आने वाले और कठिन समय के लिए तैयार रहना होगा।

समय का पहिया बहुत तेजी से भाग रहा है। यदि इस्लाम को जल्द से जल्द नहीं हराया गया तो हम भविष्य में उसी विभीषिका के मुहाने पर पहुंच जाएंगे, जो द्वितीय विश्वयुद्ध के समय हुई थी।

इस्लाम एक ऐसी मानसिक महामारी है, जो एक व्यक्ति से होते हुए इस मजहब को मानने वाले लोगों को भी अपनी चपेट में ले चुकी है। खुद को अल्लाह से जोड़ने की यह मनोविकृति इसे मानवता के लिए और अधिक शातिराना और खतरनाक बनाती है। ऐसा खतरा हमने पहले कभी नहीं देखा होगा। इस खतरे को भांपने और अविलंब रोकने में नाकामी मानव जाति को उस भयावह आपदा की ओर ले जाएगी, जिसकी हमने कल्पना नहीं की होगी।

हम किधर जा रहे?

मुसलमान हर तरीके से मुहम्मद की तरह होना चाहते हैं। मुल्ला रसूल की सुन्नत सीखने के लिए सालों अध्ययन करते हैं और फिर इसे मुसलमानों को सिखाते हैं। मुसलमान बदले में बिलकुल मुहम्मद की तरह बनने की कोशिश करने लगता है। सुन्नत के जरिए मुसलमान सीखते हैं कि मुहम्मद नमाज कैसे पढ़ता था? अपना हाथ-पांव और चेहरा कैसे धोता था? वे जानने की कोशिश करते हैं कि मुहम्मद अपने दांत, नाक और कान कैसे साफ करता था? मुसलमान जानना चाहते हैं कि मुहम्मद कैसे खाता था? खाने के बाद कौन सी उंगली चाटता था? क्या खाना पसंद करता था, क्या खाना नहीं पसंद करता था? कैसे सोता था? क्या पहनता था? उसके कपड़े का आकार कैसा होता था? उसके कपड़े किस चीज से बनते थे? उसकी दाढ़ी कितनी लंबी होती थी? वह अपनी बीबियों के पास जाने से पहले या फिर बाद में स्नान करता था? शौच जाते समय कौन सा पैर आगे करता था? वह खड़ा होकर पेशाब करता था या बैठकर? शौच के लिए किस दिशा में मुंह करके बैठता था? बैठते समय अपने शरीर का भार अधिकतर किस पांव पर डालता था? अपने गुप्तांगों को किस हाथ से साफ करता था? मुसलमानों के लिए धार्मिकता का अर्थ बिलकुल वही है, जो मुहम्मद ने किया था। इब्ने-साद ने मुहम्मद के एक साथी के हवाले से हदीस लिखी है कि उसने अपनी धार्मिकता दिखाने के प्रयास में कहा है, उसने देखा कि मुहम्मद को कुम्हड़ा खाना अच्छा लगा तो उसके बाद उसे भी यह सब्जी अच्छी लगने लगी।[391]

मुसलमान के विचारों में मुहम्मद के विचारों का अक्स और उनके काम में मुहम्मद के काम की झलक दिखती है। जिस क्षण कोई मुसलमान बनता है, उसी वक्त से सोचना बंद कर देता है। मुसलमानों ने अपना पृथक व चेतन अस्तित्व खत्म कर दिया है और स्वयं को मुहम्मद की प्रतिकृति बना लिया है। यह कहना एक भूल होगी कि मुसलमान लोगों के विभिन्न समूह हैं। ये सारे के सारे अपने रसूल के प्रतिरूप होते हैं। इसकी मात्रा कुछ कम या अधिक हो सकती है, पर हर मुसलमान मुहम्मद की नकल करता है। इससे मुसलमानों में हिंसा के स्तर का निर्धारण होता है। सार यह है कि सभी मुसलमानों की मानसिकता, मूल्य और रवैया एक जैसा होता है। बहुत से अच्छे लोग भी हैं, जो खुद को मुसलमान कहते हैं, लेकिन सच्चे मुसलमान पाखंडी कहकर इनकी निंदा करते हैं। उम्मत में ऐसे उदार मुसलमानों की तादाद काफी होती है, लेकिन इन लोगों की आवाज को दबा दिया जाता है, क्योंकि कुरान में इनके जैसे विचारों की जगह नहीं है।

दूसरे शब्दों में ये लोग उदारवादी तो होते हैं, लेकिन व्यवहारिकता में ये भी भेड़ों की तरह कट्टरपंथियों के पीछे चलते हैं। या कह सकते हैं कि कुत्ते की पूंछ कभी सीधी नहीं हो सकती। ये तथाकथित उदारवादी मुसलमान वास्तव

में ढोंगी होते हैं। यदि ये कुरान में सिखाई गई हिंसा में विश्वास नहीं करते तो फिर अपने आप को मुसलमान क्यों कहते हैं? ये लोग क्यों नहीं इस्लाम छोड़कर नफरत और हिंसा के चक्र को खत्म कर देते हैं। ये लोग भी इस्लाम की हिंसा और नफरत को आगे बढ़ाने के जिम्मेदार हैं। इनकी चुप्पी से जिहादियों का मकसद हल होता है। ये लोग इस्लाम की घिनौनी हकीकत से नावाकिफ होते हैं, लेकिन उनका यह बहाना अब नहीं चलने वाला। इन लोगों के इस्लाम में बने रहने से उन सच्चे मुसलमानों की हिम्मत बढ़ती है, जो मुहम्मद के पदचिह्नों पर चलकर आतंकवादी बनते हैं, निर्दोष लोगों की हत्याएं करते हैं और ताकत के बल पर दुनिया पर कब्जा करने की कोशिश करते हैं।

इसका परिणाम यह है कि इनका समाज नारकीय हो गया है, जहां सुधार की कोई उम्मीद नहीं है, जहां हर व्यक्ति घुटन महसूस करता है और किसी को नहीं पता कि इस नर्क से मुक्ति कैसे मिलेगी। विडम्बना यह है कि ये अपनी मुक्ति के लिए इस्लाम के जितना करीब जाते हैं, उतना ही इनका कष्ट बढ़ता जाता है। यह ऐसा षडयंत्रकारी चक्र हो चुका है कि दिन-ब-दिन हालत और खराब होती जा रही है।

इस्लाम के कारण दुनिया में जितनी जानें गई हैं, उतनी किसी और वजह से नहीं गईं। इस्लाम के कारण करोड़ों लोगों की हानि हुई है और अभी भी लोग झेल रहे हैं। यदि हिटलर के पागलपन से 50 मिलियन लोग मारे गए तो मुहम्मद द्वारा अपने अनुयायियों को वसीयत में दिए गए पागलपन के कारण करोड़ों लोगों को जान गंवानी पड़ी और ऐसा अभी भी हो रहा है। हिटलर द्वारा दिया गया दर्द अब इतिहास है। लेकिन **मुहम्मद और उसके उत्तराधिकारी अनुयायियों द्वारा दिए गए जख्म से आज 1400 साल बाद भी खून बह रहा है। ये खून अभी तक बह रहा है और बहता रहेगा, जब तक कि इस्लाम का समूल नाश नहीं कर दिया जाता।**

पीपुल्स टैम्पल की तरह ही इस्लाम के प्राथमिक शिकार भी इसके अपने ही अभागे अनुयायी हैं। इनके मन-मस्तिष्क में अंधविश्वास और मन में नफरत ठूंस-ठूंस कर भर दी जाती है। जहन्नुम की आग के डर से इनका दिमाग काम करना बंद कर देता है। ये लोग करुणा के पात्र हैं, पर ये सोचते हैं कि दूसरे धर्म के लोग इनसे द्वेष रखते हैं। मुस्लिम समाज परेशान रहता है, इनके देश तानाशाह होते हैं और इनका जीवन बिखरा हुआ होता है। हालांकि इन्हें ही सच से मुंह मोड़ने की प्रवृत्ति छोड़कर इस कटु सत्य का सामना करना होगा कि इस्लाम एक झूठ है और उनकी दुर्दशा का प्रमुख कारण है। यदि मुसलमान ऐसा नहीं कर पाते तो यह उसी कयामत की ओर बढ़ रहे हैं, जैसा कि जिम जोन्स के अनुयायियों के साथ हुआ था।

गैर-मुस्लिम इसलिए दोषी हैं, क्योंकि वे अभी भी अनाड़ी बने हुए हैं। ये वही लोग हैं, जो इस्लाम को एक सच्चे धर्म के रूप में मान्यता देकर चरमपंथ को हवा दे रहे हैं। इस्लाम वास्तव में क्या है, यह जाने बिना ही ये लोग अपने देश में इस पापी संप्रदाय के बेरोकटोक प्रचार की अनुमति दे रहे हैं। इस्लाम किसी और धर्म या प्रणाली को जायज होने की मान्यता नहीं देता। हुकूमत आने पर इस्लाम सभी मानवाधिकारों को खत्म कर देता है।

पश्चिमी देशों में मुस्लिम प्रवासियों की बाढ़ आ गई है और इन देशों में मुसलमान इस इरादे से जा रहे हैं कि वे उस भूमि पर कब्जा करेंगे। अदूरदर्शी और धूर्त राजनीतिज्ञ वोट की खातिर मुसलमानों का तुष्टिकरण करने और इस्लाम को शांति का मजहब बताते हुए प्रशंसा करने की होड़ में हैं।

कुछ राजनीतिज्ञ तो इस हद तक चले गए हैं कि इस्लाम की आलोचना पर प्रतिबंध लगाने के लिए ईशनिंदा कानून पारित कराने पर आमदा हैं।

पश्चिम में मुसलमानों की संख्या तेजी से बढ़ रही है। ऐसा मुख्यत: उनके अप्रवासन और उच्च जन्म दर के कारण हो रहा है। इस्लामिक देशों में मुसलमानों की बड़ी आबादी दुनिया के लिए खतरा बन रही है। निश्चित रूप से वे अपने देश के अल्पसंख्यकों का जीना हराम करेंगे और उनकी जिंदगी नर्क बनाएंगे। यह और दर्दनाक है कि दुनिया

के इस्लामिक देशों का ध्यान इस्लामिक देशों में अल्पसंख्यकों के साथ हो रहे अत्याचार की ओर नहीं जा रहा है। क्या यह मानवता के लिए खतरा नहीं है ? गैर-मुस्लिम देशों में मुसलमानों की बड़ी आबादी गंभीर खतरा बन चुकी है। यदि अपने देश में मुसलमानों की संख्या कई गुना हो जाती है तो वे और गरीब हो जाएंगे। फिर वे आपस में ही एक-दूसरे से लड़ेंगे और कमजोर होंगे। इससे वे खुद को नुकसान पहुंचा सकते हैं, लेकिन विश्व की शांति व स्थिरता के लिए खतरा नहीं बनेंगे। पर यदि उन्हें वे पश्चिम के देशों में बढ़ने का मौका दिया गया तो लोकतंत्र खत्म हो जाएगा और इसका अर्थ यह है कि पश्चिमी सभ्यता समाप्त हो जाएगी। यदि हम पश्चिम को हार जाने देंगे तो मानवता ऐसे अंधकार युग में चली जाएगी, जहां से लौट पाना असंभव होगा। यह मानवता के समक्ष अब तक का सबसे बड़ा खतरा है। यह भी ध्यान में रखना होगा कि पश्चिम के देशों में मुसलमान इस्लामिक देशों के मुसलमानों की तुलना में अपने धर्म प्रचार के प्रति अधिक समर्पित और उग्र हैं। लोकतंत्र मुसलमानों को अपनी विषबेल फैलाने के लिए उपजाऊ भूमि उपलब्ध कराता है। अधिकतर इस्लामिक देशों में इस्लामिक चरमपंथी जेल में डाल दिए जाते हैं, जबकि पश्चिम में वे खुलेआम घूमते हैं।

हमें यह सवाल जरूर पूछना चाहिए: क्या इस्लाम लोकतंत्र और पश्चिमी मूल्यों के अनुकूल है ? **यदि मुसलमानों को अपने बीच बेरोकटोक बढ़ने का मौका दिया गया तो क्या हम सुरक्षित रह पाएंगे ? क्या बहु-संस्कृतिवाद में यह भी आता है कि जो विचारधारा बहु-संस्कृतिवाद, बहुलता-वाद और लोकतंत्र के खिलाफ है, उसे भी फैलने का अवसर दिया जाना चाहिए ?**

बहुसंस्कृतिवाद मानता है कि प्रत्येक संस्कृति में सीखने के लिए कुछ न कुछ मूल्यवान चीजें हैं। यह इस धारणा पर चलता है कि सभी संस्कृतियां एक-दूसरे के साथ समरसतापूर्वक रह सकती हैं। जबकि इस्लाम का अलग-थलग समुदाय बनाने का साबित रिकार्ड है। इस्लामी समुदाय अक्सर स्थानीय गैर-इस्लामी लोगों का विरोध करते रहते हैं और अपने आसपास के लोगों के साथ शांति से रहने के बजाय उनके साथ संघर्ष की स्थिति पैदा करते हैं। **इस्लाम कोई संस्कृति नहीं है और न ही यह दूसरी संस्कृतियों के साथ सार्थक एकीकरण करने में सक्षम है।** क्या फासीवाद और नाजीवाद को वैध विचारधारा के रूप में मान्यता देना और हमारे स्कूलों में, बच्चों के बीच इसके प्रसार की अनुमति देने का कोई लाभ होगा ? **क्या हमें उस विचारधारा के प्रति सहिष्णुता दिखानी चाहिए, जो स्पष्ट रूप से असहिष्णु, असमानता को बढ़ावा देने वाली, नफरत फैलाने वाली और आतंकवाद का प्रोत्साहित करने वाली है ?** किसी ऐसी मान्यता को अपने देशों में बढ़ने देना कितना तार्किक है, जिसका तानाबाना ही हमारी मान्यताओं के प्रति असहिष्णु है और हमारी मान्यताओं के दमन और विनाश का आह्वान करती है ? **इस्लाम कोई संस्कृति नहीं है, बल्कि यह दूसरी संस्कृतियों को नष्ट करने का लक्ष्य लेकर चलने वाला सिद्धांत है। यह धर्मों के इंद्रधनुष का एक रंग नहीं है, बल्कि अंधियारे का वह शून्य है, जो सभी रंगों को भकोस जाना चाहता है।** यदि कोई ऐसी संस्कृति है, जिसके संरक्षण की आवश्यकता है तो वह पश्चिमी, हेलेनो-क्रिश्चियन संस्कृति है। यही वो संस्कृति है, जिसने हमें ज्ञान, पुनर्जागरण और लोकतंत्र देकर ऋणी किया है।

ये तीनों हमारी आधुनिक दुनिया की नींव हैं। इस संस्कृति का संरक्षण न करना भयानक भूल होगी। यदि हम कुछ नहीं करते हैं तो हम ऐसे अंधकारमय भविष्य की ओर बढ़ जाएंगे, जहां लोकतंत्र और सहिष्णुता नहीं होगी और इस्लाम की आदिम प्रवृत्ति मानवता को निगल जाएगी। सभी संस्कृतियां समान नहीं होती हैं। ऐसा सिद्धांत जो महिलाओं और अल्पसंख्यकों के दमन की वकालत करता है, वह उस संस्कृति के बराबर खड़ा नहीं हो सकता है जो धर्म, लिंग या जाति से परे होकर सभी लोगों में समानता को प्रोत्साहित करता हो। **इस्लाम संस्कृति नहीं, बल्कि इसके विपरीत है। इस्लाम बर्बरता, क्रूरता और कटुता है। इस्लामी सभ्यता विरोधाभासी शब्द हैं, जबकि**

इस्लामी आतंकवाद इसका खंडहर है। हम अपनी स्वतंत्रता एवं आधुनिक सभ्यता लिए पश्चिमी संस्कृति के ऋणी हैं। यही वह संस्कृति है, जिस पर हमला हो रहा है और जिसके संरक्षण की आवश्यकता है।

डॉ. पीटर हैमंड ने अपनी पुस्तक स्लेवरी, टैररिज्म एंड इस्लाम: द हिस्टारिकल रूट्स एंड कांटेम्परेरी थ्रेट में बताया है कि जब किसी देश में अपने तथाकथित धार्मिक अधिकार की मांग करते हुए आंदोलन शुरू करने के लिए मुसलमानों की संख्या पर्याप्त होती है तो किस तरह इस्लामीकरण होता है।

जब राजनीतिक रूप से शुद्ध और सांस्कृतिक रूप से भिन्न समाज उचित अधिकार देने को तैयार हो जाता है तो मुसलमान अपने धार्मिक अधिकारों की मांग करने लगते हैं और इस अधिकार की आड़ में वे अन्य कई तरह की छूट हासिल कर लेते हैं। यहां देखिए, यह होता कैसे है। (प्रतिशत स्रोत सीआईए: द वर्ल्ड फैक्ट बुक 2007)

किसी देश में जब तक मुसलमानों की जनसंख्या एक प्रतिशत के आसपास रहती है, वे शांति प्रिय अल्पसंख्यक के रूप में दिखते हैं और किसी के लिए खतरा नहीं होते हैं। वास्तव में, ये लेखों और फिल्मों में अपनी रंगबिरंगी विशेषता में रमे समुदाय के चित्रण के रूप में स्थान पा सकते हैं:

संयुक्त राज्य अमरीका– 1.0 प्रतिशत, आस्ट्रेलिया–1.5 प्रतिशत, कनाडा–1.9 प्रतिशत, चीन–1.0 प्रतिशत, इटली–1.5 प्रतिशत, नार्वे–1.8 प्रतिशत

जब इनकी आबादी 2 और 3 प्रतिशत हो जाती है तो ये अन्य नृजातीय अल्पसंख्यकों और असंतुष्ट समूहों खासकर जेलयाफ्ता या आवारा गिरोहों के सदस्यों को फुसलाकर धर्मपरिवर्तन कराने लगते हैं:

डेनमार्क–2 प्रतिशत, जर्मनी–3.7 प्रतिशत, ब्रिटेन–2.7 प्रतिशत, स्पेन–4 प्रतिशत, थाईलैंड–4.6 प्रतिशत

जब आबादी में ये 5 प्रतिशत हो जाते हैं तो उस स्थान की जनसंख्या में अपने अनुपात के हिसाब से अत्यधिक प्रभाव का इस्तेमाल करने लगते हैं:

ये हलाल (इस्लामी मानकों से तैयार) खाने पर जोर देने लगते हैं, इसके बाद खाद्य पदार्थों को तैयार करने में मुसलमानों को नौकरी पर रखवाने लगते हैं। ये सुपर मार्केट चेन पर हलाल सामान रखने का दबाव बनाने लगते हैं और ऐसा न करने पर धमकी भी देते हैं: (अमरीका)

फ्रांस–8 प्रतिशत, फिलीपींस–5 प्रतिशत, स्वीडन–5 प्रतिशत, स्विट्जरलैंड–4.3 प्रतिशत, नीदरलैंड–5.5 प्रतिशत, त्रिनिदाद–टोबैगो–5.8 प्रतिशत

इतना होने पर ये सरकार पर अपने लिए इस्लामी कानून शरिया लागू करवाने के लिए दबाव डालने लगते हैं। **इस्लाम का अंतिम लक्ष्य दुनिया का धर्मांतरण करना नहीं, बल्कि पूरे विश्व को शरिया कानून के तहत लाना है।**

जब मुसलमान जनसंख्या का 10 प्रतिशत पहुंच जाते हैं तो ये अपनी हालत के बारे में शिकायत करने के साधन के रूप में उपद्रव करना शुरू करते हैं। (पेरिस में कारों को जलाने की घटना)। कोई भी गैर–इस्लामिक कार्य, जिससे इस्लाम आहत हो, होने पर बलवा करते हैं, धमकियां देते हैं। (एमर्स्टडम–मुहम्मद कार्टून):

गुयाना–10 प्रतिशत, भारत–13.4 प्रतिशत, इजराइल–16 प्रतिशत, रूस–10–15 प्रतिशत।

20 प्रतिशत पहुंचने पर छोटी–छोटी बात पर दंगा करते हैं, जिहाद के लिए आतंकी संगठन बनाते हैं, यहां–वहां हत्याएं करते हैं, मंदिर, गिरिजाघर, यहूदियों के उपासना स्थल और दूसरे धर्मों के पूजास्थल जलाते हैं:

इथोपिया– मुसलमान 32.8 प्रतिशत

जब मुसलमान 40 प्रतिशत से अधिक हो जाते हैं तो आप देखेंगे कि ये नरसंहार करने लगते हैं, लगातार आतंकी हमले करते हैं और गृहयुद्ध छेड़ देते हैं:

बोस्निया–40 प्रतिशत, चाड–53.1 प्रतिशत, लेबनान–59.7 प्रतिशत

60 प्रतिशत से ऊपर होने पर मुसलमान निरंकुश होकर गैर-मुस्लिमों और दूसरे धर्मों के लोगों की हत्याएं करने लगते हैं, छिटपुट जातीय नरसंहार करने लगते हैं, हथियार के रूप में शरिया कानून का प्रयोग करते हैं, इस्लाम को नहीं मानने वालों पर जज़िया कर लगाते हैं:

अल्बानिया: 70 प्रतिशत, मलेशिया-60.4 प्रतिशत, कतर-77.5 प्रतिशत, सूडान-70 प्रतिशत

80 प्रतिशत होने के बाद मुसलमान शासन-सत्ता के माध्यम से जातीय समूहों का सफाया और नरसंहार कराते हैं:

बांगलादेश-83 प्रतिशत, इजिप्ट-90 प्रतिशत, गाजा-98.7 प्रतिशत, इंडोनेशिया-86.1 प्रतिशत, ईरान-98 प्रतिशत, ईराक-97 प्रतिशत, जार्डन-92 प्रतिशत, मोरक्को-98.7 प्रतिशत, पाकिस्तान: 97 प्रतिशत, फिलिस्तीन-99 प्रतिशत, सीरिया-90 प्रतिशत, ताज़िकस्तान-90 प्रतिशत, तुर्की-99.8 प्रतिशत, संयुक्त अरब अमीरात-96 प्रतिशत

जब मुसलमान 100 प्रतिशत हो जाते हैं तो उसे 'दार-उल-इस्लाम' की शांति इस्लामिक शांति का घर कहा जाता है। यहां ये मानते हैं कि पूरी तरह शांति है, क्योंकि हर व्यक्ति मुसलमान है:

अफगानिस्तान: 100 प्रतिशत, सऊदी अरब-100 प्रतिशत, सोमालिया-100 प्रतिशत, यमन-99.9 प्रतिशत

तो क्या 100 प्रतिशत मुसलमानों के होने के बाद सच में उस देश में शांति आ जाती है? निश्चित रूप से नहीं। खून की प्यास बुझाने के लिए मुसलमान तमाम बहाना लेकर मुसलमानों को ही मारना शुरू कर देते हैं।

मैंने मन में दो लक्ष्य लेकर यह पुस्तक लिखी है: पहला मुसलमानों को सत्य का दर्शन कराने में सहायता करना और दूसरा इस्लाम के वास्तविक चेहरे को बेनकाब करना एवं इसके खतरे से आगाह कराना, ताकि विश्व जाग जाए और अपने को सुरक्षित कर ले। इस्लाम खुद को एक धर्म के रूप में चित्रित करता है और धार्मिक शब्दावलियों का प्रयोग करता है, लेकिन इसका लक्ष्य पूरी दुनिया को अपने अधीन कर हुकूमत करना है। यही लक्ष्य नाजीवाद और साम्यवाद का भी था। इस्लाम की महत्वाकांक्षाएं सांसारिक भी हैं और राजनैतिक भी। इसका आध्यात्मिक संदेश केवल मुखौटा है।

इस्लाम से न केवल विचाराधारा के स्तर पर, बल्कि राजनीतिक स्तर पर भी लड़ा जाना चाहिए और इसे हराया जाना चाहिए। चूंकि इस्लाम का सबसे बड़ा एजेंडा लोकतंत्र को अस्थिर करना और अपनी अधिनायकवादी विश्व व्यवस्था की स्थापना करना है, इसलिए इसे राजनीतिक विचारधारा के रूप में वगीकृत करना होगा। हमारे नेताओं का नैतिक कर्तव्य है कि वे ऐसी किसी भी अधिनायकवादी व्यवस्था जो हमारे लोकतंत्र के लिए खतरा हो, का विरोध करें। चाहे वह नाजीवाद हो, या फासीवाद, साम्यवाद अथवा इस्लाम। **इस्लाम के विरुद्ध लड़ाई प्रत्येक राजनेता की प्राथमिकता होनी चाहिए। इस्लाम सियासत है, इसका धार्मिक पहलू महज धोखा है। इसकी पद्धति अपने उजड्डु अनुयायियों को लड़ाई के लिए उकसाना है। उन्हें मौत के बाद वासनापूर्ण और असीमित अय्याशी करने का इनाम मिलने का फर्जी ख्वाब दिखाकर साम्राज्यवादी उद्देश्यों के तहत युद्ध के लिए तैयार करना है।** बिना सियासी एजेंडे के इस्लाम का अस्तित्व ही नहीं हो सकता। अधिकांश लोग इस खतरे से बेखबर बने हुए हैं। ये लोग सच जानते हुए भी अनजान बनने की कोशिश कर रहे हैं। इस खतरे को महसूस करने के लिए आपको बस वह सुनना होगा, जो मुसलमान कहते हैं। मुसलमानों के उग्र प्रदर्शन के दौरान उनके नारे को ध्यान से सुनिए। उनके प्लेकार्ड पर लिखे वाक्यों को गौर से पढ़िए। मुसलमानों की गतिविधियों पर नजर रखिए, आपको ऐसा लगेगा, जैसे कि आसपास की दीवारों पर चेतावनी लिखी हुई है। स्वतंत्रता पर जितने हमले आज हो रहे हैं, इतनी कमजोर हालत कभी नहीं रही। स्वतंत्रता मुफ्त में नहीं मिलती। पश्चिम के लोग स्वतंत्रता का आनंद इसलिए ले पा रहे हैं, क्योंकि उनके पूर्वजों ने इस्लाम की आक्रामकता का मुकाबला किया था। यदि ये लोग हार जाते तो, आज यूरोप की भूमि में भी उसी तरह की मनहूसियत बिखरी होती, जैसी कि इस्लाम ने मध्य एशिया और बाकी

दुनिया में बिखेरी है। पश्चिम ने दो क्रांतियां कीं। एक अमरीका में और दूसरा यूरोप में। पश्चिम ने स्वतंत्रता को बनाए रखने के लिए दो विश्वयुद्ध लड़े। युद्ध किसी को प्रिय नहीं होता, पर यदि स्वतंत्रता को अक्षुण्ण रखना है तो कभी-कभी युद्ध अपरिहार्य हो जाता है।

आज जिहादी प्रतिशोध की भावना से फिर उठ खड़े हुए हैं। इस बार ये जिहादी अप्रवासी और आर्थिक शरणार्थी के छद्म वेश में आए हैं। मुसलमानों का आप्रवासन इस्लामी ट्रोजन हार्स यानी खतरनाक वायरस के फैलने जैसा है। यदि पश्चिम के लोग इस समय इस खतरे को नहीं रोकेंगे तो उनके सामने ही सबकुछ खत्म हो जाएगा और वे देखने के सिवा कुछ कर पाने की स्थिति में नहीं होंगे।

हमारे सामने तीन विकल्प हैं:

अ) कुछ न करें और मुसलमानों को आप्रावासन के जरिए देशों पर कब्जा करने दें और उनका जनसांख्यिकीय विस्फोट होने दें। यह बस कुछ दशकों में होने वाला है। मुसलमान आप्रवासी यूरोपीय लोगों की तुलना में औसतन चार गुना बच्चे पैदा कर रहे हैं। मुसलमानों के ये बच्चे मेजबान देश की जनता के टैक्स के धन से इस आशा के साथ पाले जा रहे हैं, कि इन बच्चों पर हो रहा यह निवेश एक दिन लाभांश देगा, जब ये छोटे मुसलमान बच्चे बड़े हो जाएंगे और उन लोगों की पेंशन में कर के रूप में सहयोग देंगे, जिनके द्वारा दिए गए कर से उनका पालन-पोषण हो रहा है। जबकि यह एक खतरनाक भ्रम है। मुसलमान कभी भी गैर-मुस्लिम को मदद करने के लिए भुगतान नहीं करेंगे। जैसे ही ये बहुसंख्यक होते हैं, सत्ता पर कब्जा कर लेते हैं और पेंशन योजना को खत्म करने के साथ इसकी जगह इस्लामिक जकात (दान) की व्यवस्था करते हैं और इस्लामिक जकात (दान) केवल मुसलमानों के लिए खर्च किया जा सकता है। गैर-मुस्लिमों को ज़िम्मी-दोयम दर्जे का नागरिक बना दिया जाएगा और इन्हें उसी देश में मुस्लिम शासकों को जज़िया देना होगा, जो कभी उनका अपना देश हुआ करता था। पश्चिम के लोग अप्रिय स्थिति का सामना करने की ओर बढ़ रहे हैं। मुसलमान अप्रवासियों को पालकर वे खुद ही अपना दुश्मन तैयार कर रहे हैं। यह मानना मूर्खतापूर्ण है कि जो लोग आज दंगा-फसाद कर रहे हैं, जो आतंकवादियों द्वारा गैर-मुस्लिमों की हत्या की हर घटना पर खुशी मना रहे हैं, वे एक दिन जिम्मेदार नागरिक बन जाएंगे और अपने मेजबान देश के लोगों को ओल्ड एज होम में रखकर सेवा करेंगे। गैर-इस्लामिक देशों में मुसलमान संपत्ति नहीं हैं, बल्कि ये सबसे बड़ा खतरा हैं, जिनका सामना इनके मेजबान देश करेंगे।

ब) दूसरा विकल्प यह है कि वो मजबूत हों, इससे पहले ही हम अभी उनके साथ लड़ें। इसका नतीजा बड़े पैमाने पर अप्रवासी मुसलमानों को उनके देश वापस भेजना और गृहयुद्ध भी हो सकता है। तब भी मुसलमान जीत जाएंगे, क्योंकि औपनिवेशिक काल के बाद के पश्चिमी लोग अपराध बोध से ग्रस्त हैं और अपने अंतरआत्मा से बंधे हुए हैं। ये अंधाधुंध हत्याएं नहीं कर पाएंगे, जबकि डरावनी संख्या में मुसलमान ऐसा करने में बिलकुल नहीं हिचकेंगे। अच्छे मुसलमान कितने भी गैर-मुस्लिमों का कत्ल कर सकते हैं, यहां तक कि गैर-मुस्लिमों के बच्चों की हत्या करने में भी इनकी आत्मा इन्हें नहीं धिक्कारेगी। क्या आपको बेसलान याद है ? मुसलमानों को गैर-मुस्लिमों का कत्ल करने की स्वीकृति अल्लाह से मिली हुई है।

13 फरवरी, 2007 को सीबीसी ने एन्वायरनिक्स पोल प्रकाशित किया था। इस पोल के अनुसार, कनाडा के 12 प्रतिशत मुसलमानों ने कनाडा के प्रधानमंत्री को अगवा कर उनका सिर काटने, पार्लियामेंट

व सीबीसी को बम से उड़ा देने की नाकाम आतंकी साजिश को जायज बताया था।

इसका मतलब यह हुआ कि कनाडा में रह रहे 7 लाख मुसलमानों का 12 प्रतिशत यानी 84000 कनाडाई मुसलमान आतंकवाद को समर्थन करते हैं। 25 फरवरी, 2007 को ब्रिटेन के टेलीग्राफ ने एक रिपोर्ट दी कि एमआई5 की महानिदेशक एलीजा मैन्नीघम ने चेतावनी दी है कि 1600 से अधिक 'चिह्नित व्यक्ति' सक्रिय रूप से आतंकवादी हमलों की साजिश रचने में लगे हुए हैं। 200 ज्ञात नेटवर्क कम से कम 30 आतंकी साजिशों में शामिल हैं। ऐसा समझा जाता है कि साजिश में शामिल इस्लामिक आस्था से जुड़े ब्रिटिश नागरिकों की संख्या 2000 से अधिक हो सकती है। उन दूसरे देशों में भी हालात बहुत अच्छे नहीं हैं, जहां मुसलमानों के गुप्त समूहों की तादाद ठीक-ठाक है। मुहम्मद की सुन्नत और अंतरात्मा मर जाने के कारण मुसलमान अपने विरोधियों पर बढ़त बना लेते हैं। अंतरात्मा खत्म हो जाने के कारण ही मुहम्मद और उसके मुट्ठीभर लड़ाकों ने उतनी बड़ी आबादी पर जीत हासिल की थी, जो आज की तुलना में कहीं अधिक जटिल थी। जब सभ्यता और बर्बरता का आमना-सामना होता है तो क्रूर ताकतें हमेशा विजयी होती हैं। इतिहास उन किस्सों से भरा पड़ा है, जिनमें थोड़े से तलवारबाजों और लुटेरों ने बड़े साम्राज्य को धूल चटाई है।

स) तीसरा विकल्प यह है कि इससे पहले कि इस्लाम जनता की आलोचना को नष्ट कर दे और अभिव्यक्ति की आजादी हमेशा के लिए समाप्त हो जाए, इससे वैचारिक युद्ध किया जाए। यह देखना आसान है कि तीसरा विकल्प सर्वोत्तम है। यदि इस्लाम विचारधारा के आधार पर हराया जाएगा, तो बहुत सारे मुसलमान ही इसके खिलाफ खड़े हो जाएंगे। इस युद्ध में मुर्तद यानी इस्लाम छोड़ चुके लोग सबसे मजबूत सहयोगी साबित होंगे। ये लोग इस्लाम की बुराइयों को जानते हैं, ये स्वतंत्रता का मूल्य समझते हैं और ये लोग इसकी रक्षा के लिए प्रतिबद्ध हैं।

इस युद्ध में हमें विजय प्राप्त होनी ही है। हम इसलिए विजय प्राप्त करेंगे, क्योंकि हम शत्रु को एक मित्र के रूप में बदलेंगे। हमारा शत्रु अपनी शैतानियत को हराएगा और खुद को मुक्त करेगा। रक्तपात की आवश्यकता नहीं है। गोली चलाने की आवश्यकता नहीं है। इस्लाम को नष्ट करके हम नफरत के स्रोत को नष्ट कर देंगे और एक ऐसी दुनिया की नींव रखेंगे, जिसका आधार समझ और मानवजाति की एकता होगा।

इस्लाम को विचारधारा के आधार पर परास्त करने के लिए हमें खुलकर बात करनी चाहिए और इस्लाम से सवाल पूछने चाहिए। इस्लाम आलोचना नहीं सह पाएगा। इस्लाम ताश के पत्तों का महल है और सवाल पूछे जाने पर आसानी से बिखर कर नष्ट हो जाएगा। जो इस्लाम की आलोचना का विरोध करते हैं, वे मानवजाति के शत्रु हैं। ये मूर्ख मुसलमानों का तुष्टिकरण करने का प्रयास करते हैं और ऐसा करके वे अपनी कब्र तो खोद ही रहे हैं, मुसलमानों की भी कब्र खोद रहे हैं और हमारी भी। क्या यह बेहतर नहीं होगा कि इंतजार करके बमों से लड़ाई लड़ने के बजाय संवाद के माध्यम से युद्ध छेड़ें? क्या यह नेवाइल चैम्बरलिन जैसी गलती नहीं है, जो उन्होंने 1938 में म्यूनिख संधि के माध्यम से एडोल्फ हिटलर और नाजी जर्मनी को चेकोस्लावाकिया देकर तुष्टिकरण करके किया था। यह घटना यह मानने के लिए पर्याप्त है कि हमें कभी दुष्टों की मांग के आगे नहीं झुकना चाहिए।

डॉ. वैकनिन कहते हैं: 'नार्सिस्टिक दुष्ट अक्सर सफल हो जाते हैं...। उनके कुकृत्यों को अनदेखा किया जाता है, उनके दुर्व्यवहार को बर्दाश्त किया जाता है।'

'ऐसा कुछ तो इस वजह से होता है कि नार्सिसिस्ट पर्याप्त नाटकीय कौशल के साथ झूठ बोलने में माहिर होते हैं और कुछ इस वजह से होता है कि कोई भी एक ठग के साथ उलझना नहीं चाहता है, भले ही ठगी शब्दों और भावभंगिमा तक ही सीमित हो।'[392] क्या मुसलमान ऐसा ही व्यवहार नहीं करते हैं? क्या इनके दंगे और दम घोंटने वाले काम इस तरह डिजाइन नहीं किए जाते कि ये दुनिया को अपनी आलोचना करने से रोकने के लिए धमका सकें?

इस्लाम पर बहस शुरू हो चुकी है, लेकिन सत्य तक पहुंचना आसान नहीं होता और पुरानी जड़ जमा चुकीं सड़ी हुई मान्यताएं आसानी से नहीं मरतीं। इस्लामिक पक्ष समर्थक जैसे कि कैरेन आर्मस्ट्रांग, जॉन एसपोसितो और एडवर्ड सेड ने इस्लाम की एकतरफा और धोखा देने वाली खूबसूरत तस्वीर बनाने का जिम्मा अपने ऊपर ले लिया है। मुख्यधारा की मीडिया इस सकारात्मक तस्वीर को आगे बढ़ाना सुविधाजनक पाती है। जबकि ये गुमराह करने वाली, पर विशुद्ध राजनैतिक आवाजें उनका बचाव करती हैं, जो बचाव करने लायक नहीं हैं। उग्र मुसलमान हर समय उत्पीड़न करने, धमकी देने और मजहब का अनादर करने वाले की हत्या करने को तैयार रहते हैं और यह इस्लाम का अस्ली चेहरा दिखाता है।

यह एक निर्णायक बहस है। फेथ फ्रीडम इंटरनेशन (एफएफआई) इस बहस को 2001 से प्रोत्साहित कर रहा है, जबकि मैं यह काम 1998 से कर रहा हूं। मुझे उम्मीद है कि यह पुस्तक इस बहस को और आगे ले जाने में सहायक सिद्ध होगी। संवाद, तर्क और बुद्धिमत्ता का प्रयोग किया जाए तो इस्लाम को पराजित किया जा सकता है। झूठ क्रूर ताकतों और सेंसरशिप के सहारे तो जिंदा रह सकता है, लेकिन स्वतंत्र व खुली बहस में इसका जिंदा रह पाना असंभव होता है। सत्य के सामने आते ही झूठ ऐसे लुप्त हो जाता है, जैसे कि गर्मी पाकर आइसक्रीम पिघल जाती है।

राजनीतिक क्षितिज पर इस्लाम को पराजित करने के लिए हमें जन जागरूकता लानी पड़ेगी। राजनीतिज्ञ नेता नहीं होते हैं, वे अनुयायी होते हैं। यदि जनता के बीच की आवाज बुलंद होगी तो कोई न कोई उन आवाजों पर आगे बढ़ने के लिए तैयार होगा।

यह एक युद्ध है। इसमें शत्रु एक खास विचारधारा, मानसिकता है। हमें अपनी उदासीनता छोड़कर दुश्मन से सख्ती से निपटना होगा। शत्रु के आकार से भयभीत होने की जरूरत नहीं है। इस्लाम बहुत कमजोर जमीन पर खड़ा है। यह बस झूठ पर टिका हुआ है। इसे नेस्तानबूद करने के लिए हमें केवल इसके झूठ को बेनकाब कर देना है, फिर तो आतंक और धोखे का यह विशाल महल ढह जाएगा। मुसलमान मुक्त हो जाएंगे और विश्व इस्लाम के विष से बचा लिया जाएगा। हमारा अपने बच्चों के प्रति कुछ कर्तव्य है। यह हमारा उत्तरदायित्व है कि उनके लिए सुरक्षित और स्वतंत्र संसार छोड़ के जाएं।

2000 साल पहले एक यहूदी बढ़ई ने कहा था, 'सत्य आपको मुक्ति दिलाएगा।' यह स्वयंसिद्ध सत्य आज से अधिक प्रासंगिक कभी नहीं रहा। आइए, हम इस्लाम की गंदी सच्चाई लोगों को बताएं। आइए हम सत्य को एक अवसर दें।

---

387 Bukhari Volume 4, Book 54, Number 516:
388 (Quran. 2:18, 2:171, 6:39, 8:22)
389 http://www.zionism.netfirms.com/Mahathir.html
390 Bukhari, 4.52.220.
391 Tabaqat Volume 1, Page 374
392 Narcissism in the Workplace: online conference transcript healthyplace.com/Communities/Personality_Disorders/Site/Transcripts/narcissism_workplace.htm